# सिक जी सौग़ात

राम पंजवाणी

راشٽريہ سنڌي ٻولي وڪاس پريشد
National Council for Promotion of Sindhi Language

भारत जे राष्ट्रपति
डॉ. संजीवा रेढीअ
खां पद्म श्री जो
ख़िताबु हासिलु कंदे
प्रो. दादा राम पंजवाणी

सिंधियत जो एलची शैदाई ऐं ब्रहुगुणी उस्दात प्रो. दादा राम पंजवाणीअ खे सिंधियत जो एलची भाईंदा हुआ. देश ऐं विदेश में जिते बि दादा विया, सिंधियुनि खे पाण में जोड़ण जो कमु कंदा रहिया, खेनि सिंधी हुअण जो वड्डो फ़ख़रु हो. हू पाण विद्वान् ऐं साहित्यकार हुआ, संदनि रचनाउनि ते खेनि केतिरा इनाम हासिलु थिया.

सिंधियुनि जे इष्ट देव साईं झूलेलाल जो नारो हिंद में सिंधियुनि खे जोड़ण लाइ बुलंदु कयो. अजु सजे भारत ऐं दुनिया में झूलेलाल सिंधियुनि जो इष्टदेव ज़ातो वञे थो.

दादा सिंधियुनि जो पारखू, मुकमल सिंधी हो, असां सिंधियत जो दादा राम पंजवाणी, सदाईं अमर आहे.

# सिक जी सौग़ात

## संतनि जो सिनेहो

## (रूह रिहाण)

राम पंजवाणी
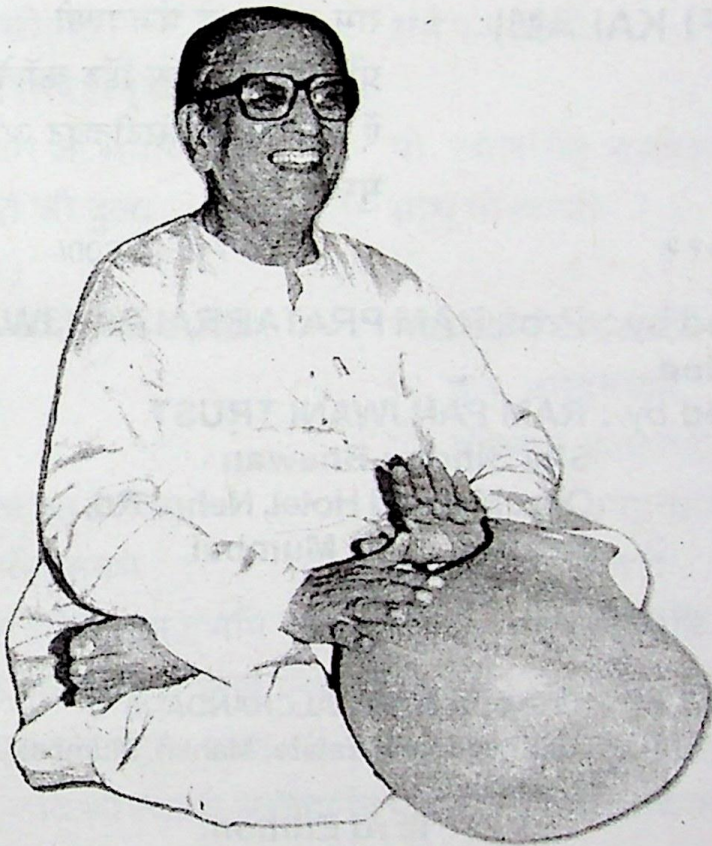
# सिक जी सौग़ात

## संतनि जो सिनेहो

## (रूह रिहाण)

**SIK JEE SAUGHAT**
**(SUFI KALAM)**

तर्तीब ऐं चूंड :
राम प्रतापराइ पंजवाणी
प्रो. सिंधी - जय हिंद कॉलेज
ऐं बसंतसंग इन्सिटीट्यूट ऑफ साईंस
मुम्बई

साल : २०१२

Price ₹ 200/-

**Compiled by : Prof. RAM PRATABRAI PANJWANI**
**IInd Edition**
**Published by : RAM PANJWANI TRUST**
**Sita Sindhu Bhawan**
**Opp. Midland Hotel, Nehru Rd,**
**Santacruz (E) Mumbai.**
**Ph : 26140405**

**Designed**
**& Printed by: Impressions (RAM LALCHANDANI)**
**212, Allied Industiral Estate, Mahim, Mumbai - 16**
**Tel : 9820883807**

**III rd Edition:**
NATIONAL COUNCIL FOR PROMOTION OF SINDHI LANGUAGE (NCPSL)
Ministry of Human Resource Development
Government of India
West Block-VIII, Rama Krishna Puram
New Delhi - 110066
Tel.: 26180104-07, Fax: 011-26180109
E-mail: ncpsl.delhi@gmail.com—

# सिक जी सौग़ात

सुफ़हो




मां सभिनी सज्णनि जो शुक्रगुज़ारु आहियां जिनि महिरबानी करे 'सिक जी सौग़ात' लाइ सिक भरिया स्नेहा मोकिलिया आहिनि.

महा मंडलेश्वर सति श्री स्वामी गंगेश्वरानंदु महाराज ऐं महा मंडलेश्वर सति श्री स्वामी अखंडानंद महाराज जो बि आभारी आहियां, जिनि सां ज्ञान गोष्ट करण करे 'रूह रिहाण' में आयलु रामायण जो आत्मिक अर्थु समुझाए सघियो आहियां. बैंगालीअ मां श्री कालेवर वेदांत वागेस जी आध्यात्म रामायण जो अर्थ बि चङो कमु आयो, जंहिं लाइ श्री वीरूमल मलाणीअ जो शुक्रगुज़ारु आहियां.

राम पंजवाणी

''सिक जी सौग़ात'' जो ब्रियों ऐं नओं छापो: जड़हिं विरहांङे खां पोइ मजिबूरु थी सिंधु पंहिंजो वतनु छड्डिणो पयो हो, पंहिंजे बचियल माल सामान सां गडु सिंधी साहित्य जा नायाब किताब बि के पाण सां खणी आया. मूंखे उहे किताब खणणु न ड्रिना वञनि हां, छाकाणि त मुंहिंजो सामानु धुके ते, चङी तरह खोलियो वियो हो ऐं केतिरियूं ई शयूं ब्राहिरि कढियूं वयूं हुयूं, चे, 'ही ऐतराज़ जोगि्यूं आहिनि, ही सिंधु में ई रहण खपनि.' चकास करण वारो ऑफ़ीसर अहिड़े ख़्याल जो हो, पर उन खां अग्रु ई मुंहिंजे चूंड किताबनि जो थेल्हो गाड़ी खाते में रहंदड़ु दादागीर क़दीरो, इस्टेंबर अंदर खणीं वियलु हो. केतिरनि सालनि खां कराचीअ में हू मुंहिंजो दुश्मनु थी रहियो. पर सिंधु छड्डण वक़्त मूंते ऐं मुंहिंजे घर ते हमिले करण खां पोइ, हू मुंहिंजो ख़ैर ख़्वाह बणिजी पियो ऐं धुके ते छड्डण आयो हो.

सिंधु में कुझु छड्डे अचण बैदि पाण सां जेकी सिंधी साहित्य जो ख़जानो लिकी छुपी खणी आयासीं, उन हिति हिंदु में बि पूरो पूरो रंगु लातो.

१९५९ साल में दादा राम पंजवाणी, 'सिक जी सौग़ात' किताबु छपायो, जंहिं में केतिरनि ई शाइरनि जो कलामु दर्ज़ु थियलु हुओ. उन वक़्त त एतिरी ब्रूझ न पेई पर हाणि जड़हिं इहो किताबु मौजूदु कोन्हे या जंहिं वटि बि हूंदो, उन किताब जो पनो ई टुकुरा टुकुरा थी वियो हूंदो.

पर हाणे जंहिं खे इहा हकीक़त झुंझलाए थी त एतिरनि शाइरनि जा कलाम हिन किथां कठा करे छपाया हुआ? ऐं खेसि उहो डुखियो कमु करण लाइ केतिरा महिना लग्रा हूंदा. छाकाणि त पारू, जंहिं ते ई हिन किताब जो ब्रियो ऐं नओं छापो छपाइण लाइ हीउ डुखियो कमु रखियो वियो आहे, हूअ गुज़िरियल टिनि महिननि खां राति जो ब्रीं बजे ताईं जाग्रंदी थी रहे, दादा राम पंजवाणी जे चूंड कयल कालमनि खे,

संदसि ई नक़्शे कदमनि ते हली, अहिड़ा ई सूफ़ी कलाम, जेकी अगु वारे किताब में छपियल न आहिनि ऐं केतिरा कलाम अगु ऐं हाणे जे शाइरनि जा लिखियल, जिनि खे गायो वञे थो या गाए सघिजे थो अहिड़ा अटिकल २०० ब्रिया बि कलाम हिन नएं 'सिक जी सौग़ात' जे ब्रिए छापे में विझी, हिन किताब जो मुल्हु ब्रीणो करे छड्डियो आहे.

जड्डहिं खां राम पंजवाणी ट्रस्ट जे ट्रस्टियुनि हिन किताब जो नओं ऐं ब्रियों छापो छपाइण जो फैसिलो कयो आहे, पारूअ जी सचु पचु त गोया निंड ई फिटी वेई आहे. अचानकु हिन खे कंहिं शाइर जो नओं कलामु थो यादि पवे त हूअ उथी थी विहे ऐं उन कलाम जा पूरा पूरा बंद_ग़ोल्हे लिखे थी, जीअं उहे कलाम बि हिन किताब में हुजनि.

पारू चावला जी महिनत ऐं जाखोड़ ते दादा राम पंजवाणीअ जो पूरो पूरो विश्वासु हो, इनकरे ई अगु छपियलु किताबनि, ''साहिड़ लहिजि संभाल'', ''जीअरे लाइ ज़ंजीर!'' ऐं, ''पोइ परुड़ियुमि में पंधु'', जा मुहाग़ दादा राम पंजवाणी ई लिखिया हुआ. अहिड़े क़िस्म जे मजमूए खे हिन खां पोइ वरी को मुश्किल छपाए सघे. हिन किताब में कोशिश करे सूफ़ी शाइरनि जा कलाम छपिया वया आहिनि. जीअं तसौफ़ में ऐतिबारु रखंदड़ जी सुग़ंध पाए सघिजे.

दादा राम पंजवाणी ऐं पारू सिंधी संतनि ऐं फ़क़ीरनि जे गुझ जी ग़ाल्हि ध्यान में रखी सिंधु जे शाइरनि जी महिराण मां टोब्रा बणिजी, बेबहा मोती चूंडे कडिया आहिनि.

उमेद न पर पक आहे त हीअ अटिकल २०० शाइरनि जो कलामु अलणु खां वठी यकूब ताईं, हज़ारनि में कलामु, हिक ई किताब में हुजणु, हिकु अदिबी ख़जानो आहे. **जेको असीं दादा राम पंजवाणीअ जे १०१ जन्मदिन ते ज़ाहिरु करे रहिया आहियूं.**

**ठाकुरु चावला**

# फहिरसत

| शायर | | पे.न. |
|---|---|---|
| | 17. राति मूड़े मारुनि जो | 26 |
| | 18. याकी थिएं वञी यार | 26 |
| | 19. इश्क़ जो ड्रिसु इस्रारु | 26 |
| | 20. पंहिंजो नंगु पालु, तूं त महिर | 27 |
| | 21. वेंदुसि ना त मरी | 27 |
| | 22. सिर इस्रारु हक़ीक़ी आहियां | 27 |
| | 23. सिरु सुबुहानी आहियां | 28 |
| | 24. तो बिनु अवर कोई जगि॒ विचि? | 28 |
| | 25. लुट नीतीअ दिलि सां ड॒े | 28 |
| | 26. जोगी॒ वाले वेस में कोई | 28 |
| | 27. साड़ी दिलि खसकी ज़ोर ओर | 29 |
| | 28. साड़ी नज़र तऊं दिलिबरु | 29 |
| | 29. बख़्श मेड़ी तक़सीर रांझन साईं | 29 |
| | 30. जाले साधू मीं संसारु, | 29 |
| | 31. इश्क़ लगा॒ तदबीरां चकियां | 30 |
| | 32. मोहन प्यारा करि आया बसंती वेसु | 30 |
| | 33. सूरत दा वापारी - आया साड॒े देसि | 30 |
| | 34. सिखु रमज़ विजूद विञावण दी, | 30 |
| | 35. मैनूं तुसा ड॒े यार | 31 |
| | 36. इश्क़ नहीं कोई चर्चेबाज़ी | 32 |
| | 37. चलो रे संइया चर्चा वेखे | 32 |
| | 38. इश्क़ दी उलटी चाल | 32 |
| १९.बेकस | 1.पल पल पवनि था पूर ड़े | 33 |
| | 2. जंजलु नींहं निबाहियो मूं | 33 |
| | 3. साजन सैरु करण लाइ आयो | 33 |
| | 4. अबाणनि जी उकीर | 34 |
| | 5. हिन हुन ब्रिन्हीं खां वयासीं | 34 |

| शायर | | पे.न. |
|---|---|---|

| शायर | | पे.न. |
|---|---|---|

# Foot Notes

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| 2 | 1) विरह - विछोड़ो, 2) विझल - ग़ाराणों 3) अरातो - दुखु 4) चेला - रस्ता 5) अरांगो - डुखियो 6) अशफ़ं - ऊच 7) अबलेस - शेतान 8) बुलातो - क़ाबू 9) द्वैती - ब्रियाई |
| 3 | 1) वल वल - हर हर 2) घत - विझी |
| 4 | 1) वार - वेल 2) पेशवाज़ - पोशाक 3) किश्ती - ब्रेड़ी 4) राहिब - मीरबहर |
| 15 | 1) पिड़ - मैदान. 2) पिर - प्रीतम. |
| 17 | 1) साहिलु - किनारो. |
| 22 | 1) हेहाति - अफ़सोस. |
| 30 | 1) व़जूद - हस्ती, 2) पुरिझे - समिझे, 3) शाही तबल - नग़ारो, |
| 31 | 1) बहर अमीक़ - ऊन्ही समुंड, 2) ज़ाति - ईश्वर, 3) सुफ़ात - दुनिया, 4) भिन - भजु , 5) अरूज नज़ोल - मथे हेठि, 6) दस्त - हथ, 7) चेटक - छेटक. |
| 32 | 1) सहलि - सौली, 2) नैन - अखियूं, 3) बसौंती - ब्रहारी, 4) गुलफ़ामा - गुलबदन, 5) हादी - सतुरु. |
| 33 | 1) गबरु - यहूदी. |
| 34 | 1) पीरु मुग़लनि - रहबरु. |

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| 35 | 1) मसरगनि - पबिंणें, 2) सपर - ढाल. |
| 37 | 1) सिरु - मथो. |
| 38 | 1) चा - खणी, 2) टोलीयां - ग़ाल्हियूं, 3) मरींदें - मारीं, 4) सहिरा - गीत, 5) हिज़ाबां - पर्दो. |
| 39 | 1) सैफ़ - कटार, 2) सतह - आदी, 3) अरूपा - बिना रूप, 4) आहूती - क़ुर्बानी, 5) रंगपुरु - माया, 6) सिफ़ाती - इन्सानी, 7) वहिदत - हेकड़ाई, 8) कसरत - घणाई. |
| 40 | 1) दामघ - फासण जो हंधु, 2) अबसु - नामुमुकिनि, 3) पोलार - ख़ालु, 4) महराण - दरियाह. |
| 41 | 1) वाहरू - मददगारु, 2) चहिचिटो - नज़ारो |
| 42 | 1) आगो - ईश्वरु, 2) अनहदु नादु - ईश्वरी आवाज़ु, 3) रहद - ककर, 4) ज़रीं - सौलो, * - आत्मा देवी इन्सानी रथ में थी पधारिजे. |
| 43 | 1) हफ़तरंगी - सतरंगी, 2) स्थिति - क़ायमु, 3) साखिना - शाहिदी. |
| 44 | 1) सज़ुरु - नएं सिरु, 2) मोशो - पासो, 3) क्लेशनि - दुखनि, 4) वरी - मोटी, 5) वर्चे - ककि थी. |
| 45 | 1) कदूरत - मेराई. |
| 46 | 1) रुसींअ- पहुतींअ, 2) मधुसूदन - कृष्ण, 3) सुतह - पाणमुरादो. |

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| 49 | 1) चश्म - त्रिकुटी, 2) मोतिया - अखि जो ख़राबु पाणी, 3) नाक़िसाई - मुहताजी. |
| 55 | 1) लिखंदो - ज़ाणंदो, |
| 56 | 1) कोल - वेझ़ो. वंहुं 2) अक़्रबु - कंध जी रग खां बि वेझ़ो, 3) दरसु - सबक़ु, 4 ) पखे - झ़ोपड़ी. |
| 57 | 1) मूं तूंअ - मरण खां अगु मरणु. |
| 58 | 1) क़ल्बु - अंदरि. |
| 60 | 1) जारऊं - जटि करे. |
| 63 | 1) बुलिबुलनि - बुदिबुदनि, 2) नाव - ब्रेड़ी |
| 69 | 1) मवास - मस्तु, 2) साउ - स्वादु. |
| 82 | 1) शफ़क़ - उभ जी लालाइणि,2) रफ़ीक़नि - साथियुनि, 3) सहर - सुबह. |
| 84 | 1) सर्व - सभु, 2) अनुभवी अनादु - असुली अंदिरियों. 3) विरिनाहि - भतारु / साईं, 4) साइल - किनारो. |
| 86 | 1) जाल - जामु, 2) भउजलु - भव सागरु,3) ड्रीप - ड्रीयो, 4) ड्रेरी - घर में, 5) लूंअ लूंअ - रग रग.6) सिकी - सिकायलु, 7) सारे - यादि करे,8) ड्रसे - बुधाए. |
| 88 | 1) आशियानो - आखेरो. |
| 107 | 1) छिनां - हिफ़ाज़त मां, 2) एबरू - भुरूं, 3) ज़मियत - आरामु, ४) दहदारु - अमलदारु. ५) सालारु - अगवान, 6) दस्तारु - पटिको |

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| 108 | 1) कोठारु - कोटवालु, 2) अड़ियां - अटिकियूं, 3) लड़िदियां - मिलनि थियूं,4) चाकां - आशिक़नि, 5) मंझीं - मेहारु, 6) भाल - भलाई, 7) बेग़ानी- धारिया, 8) पीयो - पीउ, 9) आखि - बुधाइ,10) डुखां सौलां - डुखनि सूरनि में. |
| 109 | 1) ब्रांडु - बंड 2) सेणी - सेणाह / तुरहो. |
| 110 | 1) पब्र - जबल, 2) हाड़े - डूंगर, 3) महरमु - ज़ाणू, 4) मेशाक़ - शुरूआति, 5) आशिनाई - वाक़िफ़ियत. |
| 111 | 1) ड्ररदी - डिज़ंदी. |
| 112 | 1) बेदारी - सुजाग़ी. |
| 114 | 1) ख़लीली - आज़माइशी. |
| 115 | 1)कदनि - घरनि,2) सफ़ाकी - ज़ोरावरी. |
| 119 | 1) दार - फासी |
| 152 | 1) अलमु - झंडो, 2) सुबह व शाम - सुबुह शाम. |
| 154 | 1) तकलम - गुफ़्तगू, 2) सैलाबु - चिश्मो, 3) सरिशारु - मस्तु. |
| 159 | 1) हमु आग़ोशु - भाकुर में, 2) मैनूश - शराबु पीअंदड़ु. |
| 161 | 1) मलाइकनि - फ़रिशितनि. |
| 175 | 1) ओछणु - पथरणी, 2) पथर - गलमु, |
| 176 | 1) कियाजे - तोड़े, 2) सालियां - सियाल जे रहंदड़. |

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| 177 | 1) होर - डपु, २) पखे - झोपड़ी. |
| 178 | 1) भेलो - कचो. २) झड़ झोई - झड़ करे. |
| 179 | 1) मलकनि - फ़रिशितनि. 2) मुलि - मुल्हु / क़ीमत |
| 180 | 1) अहद - ईश्वरु, 2) अबदु - ब्रान्हो, 3) तुलि - बराबर. |
| 181 | 1) कुन फ़ीकूं - थी पवे ऐं थी पयो. 2) दर्पनु - आरसी, |
| 182 | 1) छंदें - रमज़ सां, 2) खयो - ख़ुशु. 3) मेड़ख़ान - शराबुघरु |
| 183 | 1) पिर - प्रीतमु, 2) रोज़ु अज़ल - सृष्टीअ जे शुरुआत खां वठी. |
| 184 | 1) साहिरु - जादूगर, 2) हाली - बेख़ुदि, 3) क़ाली - ज्ञानी, 4) अज़ली - असुल खां |
| 185 | 1) लुट नेतियाई - लुटे वएं. |
| 186 | 1) सगु - कतो, 2) पणीअ - ख़ाक / मिटी, 3) पेज़ार - पीर / जुनी, 4) खिह - मिटी / ख़ाक, 5) सुरख़ी माइल - लालण ड्डे लड़ियल. |
| 188 | 1) अबदु - ब्रान्हो, 2) आज़ी - नीज़ारी, 3) अहल ज़ाहिर - ज़ाहिर ते हलंदड़, 4) मरग़ूब - वणंदड़, 5) आशनाईअ - दोस्ती. 6) मड़िगां - पंबणियूं, |
| 189 | 1) रक़ीबनि - ग़रनि, 2) तराना - गीत, 3) वादी - माथुरी, 4) संग व ख़ार - पथर ऐं कंडा. |
| 192 | 1) हानी - हाजी. |
| 204 | 1) माड़ियूं - बंगला, 2) मेड़ - वेनती, 3) तेलाहे - तंहिंकरे, |

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| 108 | 1) कोठारु - कोटवालु, 2) अड़ियां - अटिकियूं, 3) लड़िदियां - मिलनि थियूं, 4) चाकां - आशिक़नि, 5) मंझीं - मेहारु, 6) भाल - भलाई, 7) बेग़ानी- धारिया, 8) पीयो - पीउ, 9) आखि - ॿुधाइ, 10) ॾुखां सौलां - ॾुखनि सूरनि में. |
| 109 | 1) ब्रांडु - बंड 2) सेणी - सेणाह / तुरहो. |
| 110 | 1) पब्र - जबल, 2) हाड़े - ॾूंगर, 3) महरमु - ॼाणू, 4) मेशाक़ - शुरूआति, 5) आशिनाई - वाक़िफ़ियत. |
| 111 | 1) ॾरदी - डिॼंदी. |
| 112 | 1) बेदारी - सुजाॻी. |
| 114 | 1) ख़लीली - आज़माइशी. |
| 115 | 1) कदनि - घरनि, 2) सफ़ाकी - ज़ोरावरी. |
| 119 | 1) दार - फासी |
| 152 | 1) अलमु - झंडो, 2) सुबह व शाम - सुबुह शाम. |
| 154 | 1) तकलम - गुफ़्तगू, 2) सैलाबु - चिश्मो, 3) सरिशारु - मस्तु. |
| 159 | 1) हमु आग़ोशु - भाकुर में, 2) मैनूश - शराबु पीअंदड़. |
| 161 | 1) मलाइकनि - फ़रिशितनि. |
| 175 | 1) ओछणु - पथरणी, 2) पथर - गलमु, |
| 176 | 1) कियाजे - तोड़े, 2) सालियां - सियाल जे रहंदड़. |

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| 177 | 1) होर - डपु, २) पखे - झोपड़ी. |
| 178 | 1) भेलो - कचो. २) झड़ झोई - झड़ करे. |
| 179 | 1) मलकनि - फ़रिशितनि. 2) मुलि - मुल्हु / क़ीमत |
| 180 | 1) अहद - ईश्वरु, 2) अबदु - ब्रान्हो, 3) तुलि - बराबर. |
| 181 | 1) कुन फ़ीकूं - थी पवे ऐं थी पयो. 2) दर्पनु - आरसी, |
| 182 | 1) छंदें - रमज़ सां, 2) खयो - ख़ुशु. 3) मेड़ख़ान - शराबुघरु |
| 183 | 1) पिर - प्रीतमु, 2) रोज़ु अज़ल - सृष्टीअ जे शुरुआत खां वठी. |
| 184 | 1) साहिरु - जादूगर, 2) हाली - बेख़ुदि, 3) क़ाली - ज्ञानी, 4) अज़ली - असुल खां |
| 185 | 1) लुट नेतियाई - लुटे वएं. |
| 186 | 1) सगु - कतो, 2) पणीअ - ख़ाक / मिटी, 3) पेज़ार - पीर / जुनी, 4) खिह - मिटी / ख़ाक, 5) सुरख़ी माइल - लालण ड्रे लड़ियल. |
| 188 | 1) अबदु - ब्रान्हो, 2) आज़ी - नीज़ारी, 3) अहल ज़ाहिर - ज़ाहिर ते हलंदड़, 4) मरग़ूब - वणंदड़, 5) आशनाईअ - दोस्ती.6) मड़िगां - पंबणियूं, |
| 189 | 1) रक़ीबनि - ग़ैरनि, 2) तराना - गीत,3) वादी - माथुरी, 4) संग व ख़ार - पथर ऐं कंडा. |
| 192 | 1) हानी - हाजी. |
| 204 | 1) माड़ियूं - बंगला, 2) मेड़ - वेनती, 3) तेलाहे - तंहिंकरे, |

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| | 4) मान म - शल न. |
| 206 | 1) उठा - खणी. |
| 207 | 1) सुख़ा - बास, 2) वलियुनि - फ़क़ीरनि. |
| 218 | 1) कोदकनि - नंडिड़नि. |
| 220 | 1) जानि - साहु, 2) पहिचानि- सुञाणप, 3) जम- मौत, 4) कलि- साहु, |
| 221 | 1) बानी - बाति, 2) तानी - ब्रधलु, 3) बेद - वेद, 4) निहानी -लिकल 5) ख़्वानी - आवाज़ु. |
| 234 | 1) अदारक - अक़ुलु. |
| 235 | 1) अलस्तु - आहियां अव्हांजो ईश्वरु, 2) कालोबला - हाओ आहियां. |
| 237 | 1) आशियाना - आखेरा. |
| 238 | 1) छतनि - वारनि. |
| 240 | 1) दस्तर खवान - खाधे जी जाइ. |
| 241 | 1) छपर - जबल, 2) अज़ल - आदि, 3) कनेज़िक - ब्रान्हीं, 4) भेले - कची दिली, 5) वाहर - मदद. |
| 245 | 1) कलालनि - शराबु विकिणंदड़नि, 2) कोइ - घिटी. |
| 246 | 1) चरंदा - जानवर, 2) परिंदा - पखी, 3) अनासर - तत्व. |
| 247 | 1) भणे - घुमे, 2) तौलान - डेघ, 3) बहुतां - बक, 4) मस्रोरियो - ख़ुशु थियो 5) मुख़्तियारी - आज़ादी, |
| 248 | 1) कलर खेतु - कलराठी ज़मीन. |
| 250 | 1) काहली - सुस्तु. |
| 251 | 1) मैथि - लाशि |
| 256 | 1) चौपचो - यादिगिरी, |
| 257 | 1) अदम - परलोक, 2) आमिलि - कंदु. 3) शिरकु - ब्रियाई, 4) अताई - बख़्शीश 5) बरियां - सड़ियलु, |
| 258 | 1) गुलैज़ार - महबूबु, 2) मान - शानु. 3) मैदूम - गुमु, |
| 259 | 1) हफ़्तु किशोरु - सख़्तु खंडु. 2) सहिरा - बयाबान |

| Pg no. | Meanings |
|---|---|
| 260 | 1) संसो - फ़िक्रु.2) हल्क़ - गले/ निड़ी/ गलो. |
| 276 | 1) कश्ती बान - ब्रेड़ीअ वारो. |
| 277 | 1) रिंद - मस्तु |
| 278 | 1) खिड़की - दरी. |
| 284 | 1) अस्यान - गुनाहु |
| 290 | 1) ज़िंदा -क़ैदु, 2) अशिवह - नाज़ु, 3) मतीअ - हथ हेठि, 4) वसीअ - कुशादो, 5) निगरान - ड्रिसंदड़ु, 6) मज़ीद - घणा, 7) मफ़तूं - मस्तु. |
| 298 | 1)ड्रमु - सुहिणीअ जो मुड़ुस, 2) साइर - समुंड्रु. |
| 304 | 1) अज़मु - अदन/ यमन/ ख़तन/ मुल्कनि जा नाला |
| 305 | 1) आशियानो - आखेरो, 2) गुलीचीनि - माल्ही, 3) ख़िज़ां - सरउ, 4) शोरु व फ़ग़ां - दांहूं, 5) ख़ोरद व कलां - नंढो वड्रो. 6) याक़ी - परे भज़ंदड़, |
| 306 | 1) यके - ईश्वर, 2) बादशाह - मनु, 3) राणी - दुनिया, 4) गोलो - गुलामु, 5) दहिलो - ड्रह कर्म, 6) अठीं - इन्द्रियूं, 7) नउली - ज्ञानु, 8) सती - सत्पुरुष, 9) छके - छह शास्त्र, 10) चौंकी - चार वेद, 11) पंज - विकार, 12) टकीअ - त्रिमूर्ति, 13) ब्रिकीअ - ब्रियाई. |

# सिक जी सौग़ात
# संतनि जो सिनेहो
## (रूह रिहाण)

हिकु संतु, ग॒ोठ जे ब॒ाहिरां हिक वण हेठां आसणु लग॒ाए, अची वेठो. ब॒ ड॒ींहं गुज़िरी विया पर हिन प्रभूअ जे प्यारे जी कंहिं बि सार न लधी. टें ड॒ींहुं ब॒करार जी वञी नज़र पेई. ब॒करारु, खीर जी दुखी खणी, वटसि आयो. संतु, खीरु वठी पी वयो. ब॒करारु महात्मा जे मूंहं में जोति ड॒िठी, नूरानी नूरु ड॒िठो. ब॒करार पुछियो 'साईं, ब॒ियो बि खीरु खणी अचां?' दर्वेश, सब॒ाजे आवाज़ में वराणियो, 'यार पीयारींदव त पी वञिबो, न पीयारींदव त राज़ी रहिबो. हीअ बि वाह वाह त हूअ बि वाह वाह!'

ब॒करार ग॒ोठ में वञी, उनहीअ संत जो वर्णनु मुखीअ सां कयो. मुखी पंज पैंच साणु करे, अची महात्मा वटि पहुतो. महात्मा खे पेरें पई, मुखीअ नम्रता सां चयो, ' महाराज! भोज॒नु खणी आया आहियूं, स्वीकारु करियो.' महात्मा भोज॒नु वरितायो. मुखीअ पुछियो, 'ग॒ोठ जे ब॒ाहिरां छो अची देरो दमायो अथव स्वामी? तव्हांते ब॒करार जी नज़र न पवे हां त ईंए उपवास में ई रहो हा? अंदर ग॒ोठ में छोन आया?' महात्मा मुश्की, वराणियो, 'हित बि हू हुति बि हू. रोज़ी बि किथे बि रसाए सघे थो न? ब॒चा, ब॒करार जी नज़र मूं ते उनहीअ करे पेई जो नज़र वारे जी नज़र मूंते अग॒े ई हुई. ड॒ियणो होसि मथां पर कंहिंजे हथां! ब॒करार खे जसु मिलियो, ड॒िनो त उनहीअ ड॒ातार.' मुखीअ चयो, 'साईं, संतनि सां वादि विवादु करणु पापु आहे न त शंका थी उथे त हिन संसार जो कमु कारु कींअ हले जेकड॒हिं हरिको जीउ ईश्वर जे ब॒ाझ में उमीद रखे, बस करे, कंहिं कुंड में वञी विहे ऐं पक करे त हथ पेर हलाइण खां सवाइ, पेट जी पालना थी वेंदी? उदमु बि त ज़रुरी आहे, साईं!' महात्मा, मिठड़े आवाज़ में चयो, ब॒ार

जड॒हिं ज॒मे थो तड॒हिं कहिड़ो थो उदमु करे जो हिन जे ज॒मण सां माता जे छातीअ में खीरु अची थो वञे?

'ड॒ातरु जनम ड॒ियण ते नइं खीर जी वहाए

संसार में सफर खां पहिरीं समर अचे थो.'

उदमु भले कजे, कर्मु करणु इन्सान ते लाज़िमी आहे पर यादि रखु त मनशु कर्म फक़त पेट जे करें न थो करे. कर्म करण इन्सान जे सुभाव में आहे. सुभाणे खां मां तोखे, हिक महलात जे हिक आलीशान कमरे में, मेहमान करे टिकायां, तुंहिंजे खाधे पीते जो पूरनु बंदोबस्तु रखां, तुंहिंजे सुमहण लाइ सेज पलंगु तयारु हुजे, तुंहिंजियूं घुरिजूं पूरियूं हुजनि ऐं तोखे को बि कम करणो न हुजे, को बि कमु न! घणा ड॒ींहं उन्हीअ कोठीअ में जेकर बिना कम जे रहणु चाहीं?' मुखीअ तुरतु जवाबु ड॒िनो, 'साईं, कम खां सवाइ माण्हू चरियो थी पवे.' महात्मा चयो, 'तड॒हिं चइबो त कमु करणु मनुश जो मरकु आहे. ब॒चा, कमु भले कजे पर हिक शर्त सां त जेकी कजे तंहिं जो फ़लु साईंअ खे अर्पिजे. फ़लु सुठो त बि ठीकु, ख़राबु त बि ठीकु. उदमु जो रोज़ीअ सां तइलुक़ु कहिड़ो?

तेरी रोज़ी तुझ को ढूंढे दिल विच करि आरामु,

दाने दाने परि लिखा हिता है खाने वाले का नामु.

गुरु अर्जुन देव ऐं शिश लधे जी आखाणी कान ब॒ुधी अथेई?' मुखीअ जवाबु ड॒िनो, 'न.' महात्मा चयो, 'त ब॒ुधु.'

**दृष्टांत :**

गुरु अजुर्न देव वटि हिकु शिशु आयो. शिशु ग़रीबु हो. पोरहियो करे, जेकी कमाईंदो हो तंहिं मां कुटंब जी उदर पूरना कंदो हो. गुरुजन खां जड॒हिं मोकलाइण लग॒ो तड॒हिं गुरुजन चयो, 'पुट, ब॒ रातियूं असां सां गुज़ारे, पोइ मोटी वञिजि.' शिश, नम्रता सां, चयो, 'हितां जड॒हिं वेंदुसि तड॒हिं वञी कुझु पोरिहियो कुंदुसि ऐं जेका कमाई थींदी तंहिं मां पंहिंजनि ब॒ारनि लाइ सीधो सामानु वठंदुसि.'

गुरुजनि पुछियो, 'जेकड्हिं सुभाणे तूं मरी पवीं?' शिश, ठह पह, वराणियो, 'त हिननि जा बुरा हाल थी वञनि. बुख में ई मरी वञनि.' गुरुजनि चयो, 'त पोइ पुट ज़रुर वञु.' शिशु उथियो. गुरुजनि चयो, 'असां हिक चिठी लिखी था ड्रियूं, वाट ते फलाणे ग्रोठ में असां जे शिश खे पुहचाईंदो वञिजि.' लधो चिठी वठी निकितो. अची उहा चिठी गुरुजनि जे शिश खे ड्रिनाईं. शिश चिठी पढ़ही चयो, 'बाबा! साहिबनि जी आज्ञा आहे त लधो ब्र महिना तो वटि रहे. तोखे ब्र महिना असां वटि रहणो आहे.' लधो वाइड़ो थी वियो. शिश खे समझायाईं, ड्राढियूं दांहूं कयाईं पर हिन खेसि वञणु कोन ड्रिनो. लधो शिश जे घर में क़ैद में रहियो.

होड्रांहिं, लधो जो घर न मोटियो सो, संदसि माइटनि ग्रोल्हा कई. ड्राढियूं पुछाऊं कयाऊं पर मुड़स जो पतो निदारद! नेठि उन्हीअ फेसिले ते पहुता त को जानवर खाई वियुसि. रोई पिटी माइट वेही रहिया. ओरे पाड़े वारनि खे लधे जी मिस्कीनीअ जो पतो हो. हूअं त बे परवाह हूंदा हुआ जो लधो हणी धुणी वञे हंधु करे, कुझु न कुझु कमाए ईंदो हो पर हाणे त हू कोन हो सो पाण में वेही विचार कयाऊं त संदसि कुटंब जी कीअं सार लहिजे. कंहिं कणक ड्रिनी, कंहिं चांवर ड्रिना, कंहिं मिर्च मसाला आंदा त किनि गीहु आंदो. मतिलबु त महिने खन जेतिरो सीधो सामान अची कठो थियो. लधे जो पुटु सलालो हो सो हिक हट ते नौकरी में लग्रायाऊंस. घर जो कारोबार अग्रे खां बि अग्रिरो हलण लग्रो. छोकरे जी होशियारी ऐं ईमानदारी ड्रिसी, संदसि मालिक ख़ुश थियो सो पंहिंजे धीऊ जी मङ ड्रिनाईंसि. हट तां कुझु रुपया पेशगी वठी, छोकर घर खे रंग लग्राराया त घरु ब्रहिकिण लग्रो.

ब्र महिना गुज़िरिया. शाम जे वक़्त लधे जा बंद ख़लासु थिया. रोअंदो रड़ंदो, हू अची पंहिंजे ग्रोठ में पहुतो. चुपचापु सिधो पंहिंजे घर ड्रांहुं वियो. घर जी हालति ड्रिसी सोचण लग्रो, 'घरु कंहिं शाहूकार

ख़रीद कयो आहे न त मुंहिंजे कुटुंब वारनि खे कहिड़ी ताक़त आहे जो अहिड़ा रंग ड्रियारे सघनि!' हिब्रिकंदो अची पंहिंजे घर जे ब्राहिरां बीठो. ख़बर चार लहण लाइ दरु खड़िकायाईं. अंदरा आवाज़ु आयो, 'केरु आहे?' आवाज़ु सुञातांई त संदसि स्त्रीअ जो हो. ख़ुशीअ वारे आवाज़ में चयाईं, 'मां आहियां लधो, सखूअ माउ!' माई सुन में अची वेई. दरु न खुलियो, लधो हैरानु थी वियो. दर वरी खड़िकायाईं. हिन दफ़हे संदसि पुट जवाबु ड्रिनो, 'मोटी वञु बाबा जी आत्मा. असीं सुखी आहियूं, तूं का बि चिंता न करि.' 'बाबा जी आत्मा!' लधो इहे लफ़्ज़ ब्रुधी सरापजी वियो. सोचणु लग्गो त, 'समझनि था त मां मरी वियो आहियां ऐं हाणे वरी मुंहिंजो रूह पियो भिटिके!' ड्राढो लीलायाईं पर कंहिं बि संदसि न ब्रुधी. लधे जे आवाज़ ते ग्गोठ जो चौकीदारु आयो. चौकीदार बि जड्रहिं लधे जो नालो ब्रुधो तड्रहिं वठी, भूतु भूतु करे भग्गो. लधो समुझी वियो त हीअ लीला साहिबनि रची आहे. मोटी अची किरियो साहिबनि जे क़दमनि में. रोई साहिबनि सां हालु कयाईं. साहिबनि पुछियो, 'तूं जो ब्र महिना संदनि परघोर न लधी त हू सभु मरी विया? मूरख यादि करि

सिर सिर रिज़कु संबाहे ठाकुरु, काहे मन भव करिया?

हाथीअ खे मणु ड्रिए, किविलीअ खे कणु. सज्रे जग्गत खे खाराइण वारो हू ऐं अभिमानु करे जीवु ऐं समुझे त मां थो खारायां?' लधे जूं अखियूं खुलियूं. पछताउ ज़ाहिर कयाईं. साहिबनि लधे जे पुट खे घुराए, साणसु सरबस्ती ग्गाल्हि कई. पुटु पीउ गड्रिजी घर आया. लधे वरी कड्रहिं बि कीन चयो त मां थो घर खे पालियां.'

मुखीअ चयो, 'अहिड़ी तोकल त दर्वेश कनि, बाक़ी संसारी जीव लाइ त इहो कठिनु कमु आहे.' महात्मा चयो, 'तोकल माना कूड़ो विश्वासु'. पूरनु विश्वास वारो इंसानु आशावादी आहे. आशा प्रभूअ जे ब्राझ में. तोकल वारे इंसान खे पूरी पक आहे त जेकी थियणो आहे, सो अवसु थींदो ऐं जेकड्रहिं मालिकु राज़ी रहे त सबु

कुछु ठीकु ई थींदो. मुखी साहिब, आशा जो ब्रियो नालो ईश्वरु आहे. आशा ते संसारु तगे पियो. आशा जे द्वारां मनुष ऐं परमात्मा जो सभागो संबुंधु थो जुड़े, असां मां केरु आहे जो न थो चाहे त आत्मिक रोशनीअ जो तिरिविरो असांजे उंदहि खे तड़े कढे? थोरो सोचु, दुनिया जी हालति ड्रिसु. अज़ोकीअ दुनिया जी! आस्मान में का रोशनी ड्रिसण में अचई थी? सभु मुल्क ऐं क़ौमूं सभ्यता जे नाले में हिक ब्रे खे निघोसारु करण लाइ कमर कशे बीठियूं आहिनि. सभ्यता सची उहा आहे जंहिं में हक़ानी हुसुन जी झलक हुजे, जंहिंमें नेकीअ जो प्रकाशु हुजे ऐं जंहिं में रूहानी रोशनी हुजे, जा फ़िरंदड़ु घिड़ंदड़ु हालतुनि में बि मुहकमु हुजे.

आर्थिक या हुनुरी ज्ञानु, विज्ञानु या फौजी ताक़त कंहिं बि क़ौम खे तबाहीअ खां बचाए न सघिया आहिनि. जंहिं क़ौम जो धर्मु, जे दाइमी असूलनि ऐं चरित्रनि मां, विश्वासु निकिरी वियो आहे सा क़ौम केतिरो वक़्तु ज़िंदह रही सघंदी? इहा क़ौम विज्ञानी वाधारे ऐं आर्थिक तरक़ीअ करे भले त ऊची ड्रिसण में अचे, उनहीअ क़ौम में बेशकु ख़ुशिहाली नज़रु अचे पर अजु न सुभां खेसि दुनियवी पदार्थनि खे अहिमियत ड्रियण ऐं आत्मिक गाल्हियुनि खे नज़रअंदाज़ु करण जो ड्रंडु अवसु ड्रियणो पवंदो. हीउ जो अजु काल्ह जुदा जुदा क़ौमुनि में मन मस्ती थो ड्रिसीं सा ई संदनि तबाहीअ जो कारणु बणिबी. इन्सानु जो ब्रटाक थो हणे त मां परी पूरनु थी वियो आहियां सो अञां फ़ाथो पियो आहे. निकिरी उनहीअ परी पूरनता जे ख़ाम ख़्याल मां ब्राहिरि ऐं वञी अनंत जे पहाड़ ते त खेसि प्राप्तु थे अटल सहाइता ऐं सचो सुखु.' मुखीअ कुझु समिझो, कुझु न समिझो, त बि मथसि असरु काफी थियो. हथ ब्रधी सुवालु कयाईं 'साईं, आशावारो मनुष कड्रहिं बि कष्टु न थो ड्रिसे? असांजे गोरनि में या मनसूर पारनि आशिक़नि में आशा जी कमी हुई?'

महात्मा चयो, 'सियाणप जो सुवालु पुछियो अथई, बाबा!

इहा हक़ीक़त आहे त ऊच इन्सानु पंहिंजियूं जानियूं ड्रेई, साधारण मनुष जिआं, संसार मां सिधारे विया पर उनहीअ में तिर जेतिरो बि गुमानु कोन्हे त हू पोएं दम ताईं मुश्कंदा रहिया. अहिड़नि महापुरुषनि, मरंदे बि, मौत ते जीत पाती हू साबितु करे विया त दुखु ऐं सुखु सरीर सां लागू आहिनि, पर आशावारा जीव सचा संत आहिनि जे सरीर खां ऊचा आहिनि. मनसूर जो क़िसो बुधो अथई न?

मनसूर हंयो नारो अना अहलहक़ जो. चयाईं मां ख़ुदु ख़ुदा आहियां. मौलवियुनि खे ईहा ग़ाल्हि पसंदि न आई. ड्राढियूं तकलीफ़ूं ड्रिनाउंसि पर हू हर हाल में हसंदो रहियो. टंगूं कपायाऊंसि त पियो चवे, 'मां हिननि टंगुनि सां थोरेई होत ड्रे हलंदो आहियां?' अखियूं कडायाऊंसि त बि पियो चवे, 'मां दिलिबर खे हिननि दीदनि सां थोरेई ड्रिसंदो आहियां?' मां त मन जे अखियुनि सां खेसि पसंदो आहियां'. जड्रहिं ब्राहूं कपायाऊंसि तड्रहिं ब्रांहुनि मां वहंदड़ रतु खणी मूंहुं खे लग़ायाईं. कंहिं पुछियुसि, 'मनसूर हीउ छा कयउ?' जवाबु ड्रिनाईंसि, 'बाबा, ख़ून वहण करे मतां मूंहुं ज़रदो थी वियो हुजे ऐं ड्रिसंदड़ मतां ईहो अनुमानु कडनि त डप खां पीलो पइजी वियो आहियां, तड्रहिं रतु सां मूंहुं ग़ाड़हो कयुमि त भलि दुनिया चवे त मनसूर जो मूंहुं मरण वक़्त बि ग़ाड़हो हो.' मुश्कंदे चयाईं, हूंअं बि आशिक़नि खे वज़ू ख़ून सां ई करणु जुग़ाए'. ईहा कारि हुई असांजे प्यारनि गुरनि जी. मौत खां न डिना. सच ते क़ायमु रही सच जी जय करे विया. इन्सानी ज़िंदगी बेबक़ा आहे पर सची जीवन कड्रहिं बि पूरी थियण जी न आहे. हीउ जीवनु सचे जीवन जी पहिरीं मंज़िल आहे. पर ईहा मंज़िल बि अहम आहे छो त इनहीअ मंज़िल जे इख़लाक़ी सुफ्त ते मदारु आहे ईंदड़ जीवन जे जिन्स जो. हीउ जीवनु ईंदड़ जीवन जी शुरूआति आहे ऐं इनहीअ करे मौतु पंहिंजो अन्तुपिणो गंवाए थो विहे. जिनि खे प्रभूअ जो प्रेमु आहे तिनि खे मौत जो कहिड़ो डपु? जिनि पंहिंजे साईंअ सां पंहिंजा फ़र्ज़ पूरीअ रीति पालिया

आहिनि तिनि खे काल जो कहिड़ो कउ? फ़र्ज़ पाण ड्रांहुं पंहिंजे पाड़ेसिरियुनि ड्रांहुं, हमसफ़रु साथियुनि ड्रांहुं. मौत जो मुकाबिलो मुरकंदे उहे मनुष करे था सघनि जे महसूसु था कनि त मौत ज़िंदगीअ जे कशाले ऐं कशमकश जो अंतु थो आणे, दुख, दर्द, पीड़ा जो ख़ात्मो थो आणे ऐं नई ज़िंदगीअ जो आरंभु थो करे. इनहीअ नईंअ ज़िंदगीअ में मिलंदो आरामु ऐं आनंदु.

अहिड़नि मनुषनि लाइ मौत जो ड्रंगु कहिड़ो? अहिड़नि इन्साननि लाइ मौत जी कहिड़ी जीत? साईंअ जे राह ते हलंदड़ जीव खे वड्रो ब्रलु ऐं आथतु आहे. हू दुख जो आदरु करणु थो सिखे छो त दुखु न हुजे त सुख जो अनुभवु कींअ थिए? क़ुर्बानीअ खां सिवाइ क़दुरु कहिड़ो? इहो बारु भारी जेको शहीदनि कुल्हनि ते खंयो उहो बार हिन संसार में अज़ु काल्ह हरिको खणी बीठो आहे. इनहीअ बार लाइ तलाही पाण आहियूं पर हक़ीक़त इहा आहे त इहो बोजो तमामु भारी आहे. चौतरफ़ निहार त छा थो नज़रि अचे? दुख ई दुख. केड्री न मोतिमारि मेहनत थी करिणी पवे! छा त अण थक कोशिशूं करिणयूं थियूं पवनि? मुफ़्लसी, बुख, घुरिज, बीमारी ऐं ब्रियूं पीड़ाऊं आहिनि जिन जे हेठां जीव पियो चीभाटिजे. के त अहिंड़ा जीव बि आहिनि जिनि सवाइ दुख ऐं दर्द जे ब्रियो कुझु बि कोन ड्रिठो आहे. सारी उमरि हू रोईंदा रहिया. जन्म खां वठी श्मशान भूमीअ ताईं! इनहीअ बोजे जो अर्थु छा आहे? सचु आहे त हिन दुनिया जा नेक नियत इन्सान उनहनि मुसीबतुनि जो मुक़ाबलो कनि पिया ऐं हिन दुनिया खे बहितर बणाइण जो यतन कनि पिया पर उहो हू कहिड़ीअ न ढिलीअ रफ़्तार सां करे रहिया आहिनि! केतिरो वक़्तु लग़ंदो जग़त खे पीड़ा खां मुक्तु थियण में? घणो वक़्तु लग़ंदो? तेसीं इहो बारु कीअं सहिजे? एतिरी हिमथ किथां अचे? प्रभूअ जे प्यारनि जे पैग़ाम पढ़हण मां ऐं उनहीअ स्नेहीअ जे सच पखेड़ण मां.

हिमथ अचण सां इन्सान में आशा उभिरे थी. आशा ई मनुष

जे जीवन जे जहाज़ लाइ रोशनु मिनारु आहे! मनुषु आदि खां सपुननि जे संसार में रहंदो आयो आहे. सभु देश योजनाऊं पिया रथनि. प्रयोजन कहिड़ो अहिड़ियुनि रिथुनि रिथण जो? त इन्सान वटि सुखु ऐं सम्पति अचनि. अटो, लटो अझो, विद्या, दवादरमलु, कमु कार त हरि जीव खे खपे न? हिककरो मौक़ो सभु को इन्सानु चाहे थो. रहिणी करिणीअ जो दर्जो ऊचो थियणु खपे पर इन्सानु फक़्त पेट लाइ थो जीए छा? जिते रहण जो दर्जो ऊचो आहे उते हरुबरु सुखु ऐं शांति आहिनि छा? हरिको समझू जीवु पाण खां पुछे पियो त मां मेहनत त करियां पियो, पोरिहियो करे पघरु ग़ाड़िहियां पियो, नूरु निचोयां पियो क़ुर्बानीयूं करियां पियो पर आख़िर छा? वहम ई वहम! पृथ्वीअ ते ईंदड़ नसुलुनि लाइ सुर्ग़ु हूंदो, ईहो बि ठीकु. पर उनहीअ सुर्ग़ जी माना छा जंहिं में उन साईं जे संवारिनि जो को हिस्सो न हूंदो जिनि हड़ रतु ड्रेई सुर्ग़ु बणायो? या भला उनहीअ सुर्ग़ु जी माना कहिड़ी जंहिं में हलंदड़ ज़माने जे जीवनि लाइ सुखु नेसरु थींदो पर उनहनि खे को बि लाभु न रसंदो जे असां खां अग़ु मुसीबतुनि ऐं दुख में पंहिंजी ज़िंदगी बिताए विया? जवाबु मिले! जवाबु हिक लफ्ज़ में आहे. 'आशा!' याद करि त दुख खां पोइ सुखु ईंदो, ऊंदहि खां पोइ सोझरो ऐं मौत खां पोइ ज़िंदगी.

कहिड़ी न दिलि खे धीरु ड्रींदड़ु दिलिदारी! नईं ज़िंदगी! मौत खां पोइ नईं ज़िंदगी! भेदु ज़ाणण थो चाहीं त बसंत ऋतु खां पुछु. इहा छा चवे? चवे थी, 'मां हिकु करिश्मो आहियां. आशा जी जीअरी जाग़ंदी तस्वीर आहियां. सियारे जे सीअ करे संसारु सुसी वेंदो आहे पर मूंहुं जे आमद सां नएं सिर वधी वेंदो आहे. थधि में सीकाटियलु जीवु सिज उभिरण सां कीअं न पाण खे ताज़ो तवानो समुझंदो आहे! काल्ह जेके मुरिझायलु हो सो अज़ु सरसब्ज़ु आहे. मुंहिंजे अचण सां कीअं चौतरफ हरियाली थी वई आहे! कीअं वणनि में ब्रूर अची वियो आहे! कीअं पखियुनि में मिठी ब्रोली पेई

बुधिजे! कीअं न कुदिरत वरी पेई ब्रहिके, महिके ऐं मुश्के!' इहा अथेई आशा!

ड्रिसु त असांजे देस में बरखा ऋतु खां अगु कहिड़ी न आग पेई वसींदा आहे! धरती सुकी ठोठ थी वेंदी आहे. कीअं आस्मान ड्रांहुं निहारे पेई पाणीअ लाइ तड़फ़ंदी आहे! लुक पेई लोसाटींदी आहे, सज्री कुदिरत सुस्त थी वेंदी आहे ऐं पेई झूटा खाईंदी आहे. अहिड़े वक़्त जड्रहिं बरसात जो पहिरियों वस्कारो थींदो आहे तड्रहिं कीअं न ख़ुशि थींदा आहियूं? झोलो फ़िरी थधी हीर थी पवंदो आहे, पृथ्वीअ ते सावक ई सावक थी वेंदी आहे. वण टिण धोपी साफ़ु थी पवंदा आहे. लगुंदो ईअं आहे ज्रणु काइनात नएं सिरु ज़िंदगी पाए उथी आहे. धीरे धीरे फसुल त्यारु थी वेंदा आहिनि, जीवनु जीतनि ऐं पसुनि में नओं पसाउ अची वेंदो आहे ऐं सृष्टिअ में हरि चीज़ नईं जीवन अचण करे नाचु करण लगुंदी आहे. नईं जीवन! ख़ुशहालीअ वारे जीवन! मुक्त जीवन, अजीब ऐं अनोखो जीवन! बहार जी अहिड़े सुंदरु सबक़ खां पोइ असीं निरासु कीअं रहूं? आशा अथेई स्नेहो सूफियुनि जो, उमेद अथई पैग़ामु अलाह जे प्यारनि जो.

असीं जंहिं जुग में रहूं था तंहिं में शक शबहा आहे, इन्तज़ारी आहे, डपु आहे. असीं विज्ञान जे वसीले, कुदरत जे कुख में समायल भेदनि खां, वधीक वधीक वाक़ुफु थींदा था वञूं, असीं बेशक चंद्रमा ऐं ब्रियनि सियारनि ते पहुचण में काम्याबु थींदा पिया हलूं, विज्ञान ऐं ज्ञान बराबर वड्रो वाधारो कंदा पिया हलनि, हूअ जा ग़ाल्हि हज़ारनि सालनि में बि हलु न थी सघे हां सा अजु ड्रहनि सालनि जे अंदर हलु थे थी वञे पर अफसोस जी ग़ाल्हि न आहे त उनहनि सभिनी ग़ाल्हियुनि हूंदो बि जीवु ऊंदहि ऐं गुमनामीअ में पियो घुमे अञां पियो सुवाल करे, अञां मोंझारे में आहे, पंहिंजे जीवन जे क़दुर खां ग़ैरुवाकुफु ऐं पंहिंजे मन जे ब्रिज खां बेख़बरु!

महात्माऊं बुधाइनि था त असीं पाछन सुपननि वारीअ दुनिया

में पिया हलूं. इन्सानी जीवन में अहिड़ा त भयानकु हादसा थियनि था जो पेरनि खां ज़मीन निकरी थी वञे ऐं आशा लड़े थी वञे. इतिहासु साखी आहे त क़ौमन जी तारीख़ में अहिड़ा ख़ौफनाकु वाक़ा थिया आहिनि जिनि में लखें जीव नासु थी विया हुजनि ऐं तहिज़ीबूं तालानि थी वियूं हुजनि पर ईहे वाक़िया पाण इन्सान खे हिदायत था कनि ऐं सोच त सपुननि जी दुनिया जी पुज़ाणी कहिड़ी आहे ऐं किथां थी हक़ीक़त वारी दुनिया शुरू थे?'

मुखी ऐं पैंच महात्मा जे मूंहं में निहारींदा रहिया. महात्मा जो आवाज़ु कहिड़ो न मिठो हो! संदसि मूंहं मां कीअं न ज्योति पे झलका ड्रिना! मुखीअ पुछियो, 'महाराज, इहा आशा किथां हासुलु कजे?' महाराज वराणियो, 'सत्संग मां, संतनि जे ब्राणीअ मां, दर्वेशनि जे क़लाम मां. महात्माउनि जे ब्रोलियुनि मां वड्रो आथतु थो मिले. ब्राणीअ में समायलु आहे आशा, आनंदु ऐं शांती, फ़क़ीर जे क़लाम में समायलु आहे सचीअ ज़िंदगीअ जी राह जंहिं ज़िंदगी माणण लाइ जीवु तड़फे पियो. इहा जीवनि जंहिं में मनुष ऊचे पद ते पहुचे थो, जंहिं में संदसि सभु आरिज़ू पूरियूं थियनि थियूं, जंहिं में हो ऊचे अर्श ते उड्रामे थो, जिते न मौतु आहे न जीवनु, जिते केवलु आनंदु ई आनंदु आहे. तन जो आनंदु ऐं मन जो आनंदु! सर्वानंदु. सर्व अमरता!' मुखीअ श्रद्धा मां पुछियो, 'सत्संग जो एड्रो लाभु आहे?' महात्मा वराणियो, 'ऋषि विश्वामित्र जे हज़ारु वरिहयनि जे तप जो फलु हिक पासे ऐं वशिष्ट मुनीअ जी हिक घड़ीअ जे सत्संग जो फलु ब्रे तरफ. ख़बर अथई त कंहिंजो फलु वधीक मुल्हायतो थियो?' मुखीअ कंधु लोड़े चयो, 'न महाराज!' महात्मा चयो त, 'ब्रुधो इहो बि दृष्टांतु'.

### दृष्टांत

हिक ड्रींहु ऋषि विश्वामित्र ऐं मुनी वसिष्ट जो अची मतभेदु थियो. ऋषि विश्वामित्र चवे त हज़ारु वरिहयनि जे तप जे फल जो लाभु घणो आहे ऐं मुनी वसिष्ट चयो त सत्संग जी हिक घड़ीअ जो

फलु लाभु ज्यादह आहे. ब्रेई विया ब्रह्मा वटि न्याउ कराइण. ब्रह्मा मोकिलयुनि विष्णुअ वटि, विष्णूअ मोकिलियुनि महेश वटि ऐं महेश मोकलियुनि शेषनाग वटि. शेषनाग चयो, 'ब्रुई फल मूंखे अर्पियो. जंहिं फलु अर्पण सां मुंहिंजे मथे तां पृथ्वी खज़्रे सो ई फलु उत्तमु समिझिबो.' पहिरीं विश्वामित्र फलु अपिर्यो. पृथ्वी तिर जेतिरो मथे न खज़्रे. वशिष्ट जड्हिं पंहिंजे सत्संग जी हिक घड़ीअ जो फलु अपिर्यो तड्हिं धरती मथे खज़्री वई. महात्मा चयो, 'कारणु? कारण त तप जो लाभु फक्त कंदड़ खे मिले थो सत्संग जो लाभु न फक्त सत्संग कंदड़ खे पर ब्रुधंदड़नि खे बि मिले थो. जंहिं कार्य में स्वार्थ आहे सो निष्फलु समुझु ऐं जंहिं कार्य मां अनेकु जीवन खे लाभु मिले थो सो सफलु समुझु'.

मुखीअ पुछियो, 'दयालू! सत्संग जो लाभु केतिरो वक़्तु जटाऊ थो करे? असीं माया जे मोह में फ़ाथल इन्सान सत्संग में वञूं था त इहा घड़ी संतोष प्राप्त थिए थो पर पोइ जड्हिं वरी अची था दुनिया जे कम कार खे लग़ूं तड्हिं त वरी अची था महाज़ार में अटिकूं.'

महात्मा चयो, 'नांग ऐं नोड़ वारी कार आहे, पुट!' मुखीअ चयो, 'कहिड़ी कार महाराज?' महात्मा चयो, 'ब्रुधु ब्रचा, इहो बि दृष्टांतु.'

## दृष्टांत

नांग ऐं नोरु जी लड़ाई मशहूरु आहे. नांग सां लड़ंदे, नोरु जड्हिं थकिबो आहे तड्हिं डूह ड्रेई, पाण छड्राए, वण ड्राँहुं भज़्री वेंदो आहे. खिन खां पोइ वण मां ब्राहिरि अची वरी नांग सां दाउ पेचु कंदो आहे. जड्हिं संदसि शक्ती घटिबी आहे तड्हिं वरी पाणु छड्राए, वण ड्राँहुं भज़ंदो आहे. पल में वरी ब्राहिरि अची नांग सां युध कंदो आहे. इएं केतिरा दफ़हा नोरु पाणु छड्राए वण में वेंदो आहे ऐं ब्राहिर ईंदो आहे, जेसीं संदसि जीत थिए. इहो नोरु हर हर वण ड्रे छो वेंदो आहे? वण जी सुरहाण ते पाण खे सुरजीत करण. वण में का अहिड़ी

ब्रूटी लिकल हूंदी आहे जंहिंजे सिंघण सां हिन में नईं शक्ती अची वेंदी आहे. जेकड्हिं इहो नोरु यकसाईअ नांग सां लड़ंदो रहे त शायद मारे छड्डींदुसु. पर वण मां वञीं ब्रूटी सिंघण सां हिन में नईं जीवन अची वेंदी आहे ऐं हू चङीअ तरह लड़ी सघंदो आहे ऐं जीत पाईंदो आहे. साग्रीअ रीति मनुष रूपी नोरु जेकड्हिं माया रूपी बला खे मारणु थो चाहे त नाम रूपी वण ते वञे, सत्संग रूपी ब्रूटी सिंघे. संसारी जीव माया जे ब्रंधननि में फाथलु आहे पर जेकड्हिं हू चाहे त माया जे वकड़नि में विचिरजी पंहिंजो घातु न करियां त हिन खे वर वर करे सत्संग में वञिणो पवंदो ऐं इनहीअ ब्रल सां माया रूपी बला जो घातु करे पाण खे मुक्त करे सघंदो.'

मुखीअ चयो, 'इहा बला अहिड़ी का निगुरी बला आहे जो लखें दफ़हा मुई आहे ऐं लखें दफ़हा जीअरी थी पई आहे. आख़िरि ईहा बला कड्हिं निघोसारु थींदी?' महात्मा चयो, 'मरे कीअं?' हिक हुजे त मरे! हिते ते हर हिक जीव में फ़ण कडी वेठी आहे! सूफ़ी सग्रोरा कोठियुंसि नफ्स नादान. जेको इनहीअ नफ्स खे निघोसारु करे सो थियो मर्दु मजाहदु, महा मनुष! सत ऐं असत जी जंगि हर जीव जे जीअ में जारी आहे. रामायण ऐं ब्रियनि शास्त्रनि में इनहीअ युध जो कहिड़ो न चिटो मिसालु ड्रिनलु आहे!'

मुखीअ अजब मां पुछियो, 'रामायण में? रामायण त हिक कथा आहे जंहिं में श्री रामचंद्र जे जीवन जो वर्ननु कयलु आहे!'

महात्मा चयो, 'बराबर, पर महात्माऊं इनहीअ युध खे पंहिंजे अंदर में हलंदड़ युध जो नक़्शो समुझंदा आहिनि. वड्रो रहस्य भरियलु आहे रामायण में. रामायण आहे मन, चित वाद. समुझंदे रामायण जो आत्म अर्थु?'

मुखीअ चयो, 'महाराज मुंहिंजी हिक वेनती आहे, त तव्हां महरबानी करे, हीउ हंधि छड्डे असांजे ग्रोठ में हली रहो ऐं जेतिरो वक़्तु रहणु चाहियो ओतिरो वक़्तु उते रहो, सत्संगु करियो ऐं सभिनी ग्रोठ

वासियुनि खे कृतारथु करियो.' पैंचनि बि मुखीअ खे वठायो. हिननि जो प्रेम ऐं श्रद्धा ड्रिसी महात्मा हिननि सां गड्डिजी ग्रोठु हलियो.

ब्रिए ड्रींहु सज्रो ग्रोठु अची स्वामीअ जे दर्शन लाइ पलिटियो. स्वामीअ सभिनी खे आसीस कई ऐं शाम जे वक़्त सत्संग में अचण लाइ चयो. शाम जो ग्रोठ जा प्रेमी ऐं सत्संगी अची कठा थिया ऐं महात्मा रामायण जो अर्थु समिझायो.

महात्मा चयो, 'ए सजनो! राजा दसरथु आहे **(मन)**, जो हिन जो हिन सरीर रूपी रथ ते सवार आहे ऐं उनहीअ रथ खे छिकींदड़ आहिनि ड्रह घोड़ा, यानि **(इंद्रियों)**. राजा दसरथ **(मन)** आहे अयोध्या **(पंचकोश)** जो राजा. राजा दसरथ **(मन)** खे हुयूं टे राणियूं **(वृतियूं)**. हिक कोशल्या **(निवृति - रजो)** ब्री केकई **(प्रवृति - तमो)** टीं सुमत्रा **(भग्रवती - सतो)** राजा दसरथु **(मन)** ऐं राणी कोशल्या **(निवृति)** जे संग मां पैदा थियो भग्रवानु रामचंद्र **(ज्ञानु)**, दसरथु **(मनु)** ऐं सुमित्रा **(भग्रती)** जे संग मां पैदा थिया, लछमण **(विवेक)** ऐं शत्रुघन **(विचारु)** ऐं राजा दसरथ **(मन)** ऐं कैकई **(प्रवृति)** जे संग मां पैदा थियो भरतु **(वैराग्रु)**. राजा दसरथ पंहिंजे देस अयोध्या में पंहिंजियुनि टिनि राणियुनि ऐं चइनि पुटनि सां आनंद में गुज़ारण लग्रो विश्वामित्र आहे **(विश्वासु)** ऐं वसिष्टु आहे **(वेद)**. जड्डहिं विश्वास रूपी विश्वामित्र मन रूप दसरथ वटि आयो तड्डहिं राजा ड्राढो ख़ुशु थियो ऐं अचण जो कारणु पुछियाईं. विश्वामित्र चयो, 'महाराज! जड्डहिं मां यज्ञ थो करियां तड्डहिं मारीचि **(कामु)** अची थो यज्ञ में विघ्नु विझे. राजा दसरथ **(मनु)** रामचंद्र **(ज्ञानु)** ऐं लक्ष्मण **(विवेक)** खे विश्वामित्र विश्वास सां गड्डु मोकिलियो ऐं जड्डहिं ताड़ीका **(मिथ्या- कल्पना)** ऐं मारीचु **(कामु)** यज्ञ में विघ्नु विझण आया तड्डहिं ज्ञान रूपु रामचंद्र जे आज्ञा ते विवेक रूप लक्ष्मण पंहिंजे ब्राण **(निर्बान)** सां खेसि नासु करे छड्डियो. इनहीअ जी माना ईहा थी त जेको बि मनुषु को बि कमु कामना रखी थो करे सो निष्फलु

आहे ऐं इनहीअ कामना खे टाड़ण जो उपाउ आहे विवेकु. मतलबु आहे त विश्वासु चङो, पर इनहीअ में हुजे निष्कामता, निईच्छा.

यज्ञ में सफलता पाए ऋषी विश्वामित्र (**विश्वास**) श्री रामचंद्र (**ज्ञान**) ऐं श्री लक्ष्मण (**विवेक**) खे साणु करे विदेह नगरीअ में आयो. इनहीअ राज़ु जो राजा हो जनकु (**पिता - पैदा कंदड़ु**). जंहिं वक़्त श्री रामचंद्र (**ज्ञान**) जनकपुरी (**संसार**) में प्रघटियो तड़हिं उते जा पुरुष (**आत्माऊं**) ड़ाढो ख़ुशु थिया. उते श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जड़हिं धनुषु (**अहंकार**) खे टोड़ियो (**नास कयो**) तड़हिं हिन खे सीता (**शांती**) प्राप्त थी.'

मुखीअ चयो, 'इहो खोले समझायो महाराज!'

महात्मा चयो, 'बाबा! ज्ञानु, सचो उहो आहे जंहिं में अहंकारु न हुजे ऐं जेकड़हिं अंहकार आहे त शांती अलूपु आहे! श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जे आहे धनुषु (**अहंकारु**) ख़ुदु बख़ुदु टुटी पयो. जड़हिं धनुषु (**अहंकारु**) टुटो ऐं श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) खे सीता (**शांती**) प्राप्त थी तड़हिं परशुराम (**भुलियलु प्रेमु**) काविड़ियो. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) संदसि साराह कई ऐं पंहिंजे सचे स्वरूप जी ज़ाण ड़िनी तड़हिं परशुराम (**प्रेम**) संदसि स्तुति कई. इनहीअ जो अर्थु आहे त जो शरीर शब्द, रूप, रस, गंध, मथियनि वग़ैरह विषयनि में चितु रखंदड़ु आहे त श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) खे सुज़ाणण ज़ाणण जो अधिकारी नाहे. जेसीताईं परशुराम (**प्रेम**) जे चित में राग़ु द्वेष (**विकार**) मौजूदि हुआ तेसीं व्याकुल की जो की पियो बकंदो हो. जड़हिं इहो राग़ु द्वेषु (**विकार**) हटियो तड़हिं सचो स्वरूप ज़ाहिरु थियो ऐं खेसि ज्ञान जी पहिचाण थी.

श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) सां गड्ड ब्रियनि राजकुमारनि खे बि राजा जनक जे कुटुंब मां टे राजकुमारियूं प्राप्त थियूं. ज्ञानु रूप राम खे मिली शांती रूप सीता. विवेक रूप लक्ष्मण खे मिली उर्मिला (**नम्रता**) वैराग रूपी भरत खे मिली मांडवी (**विरक्ति**) ऐं विचार रूप शत्रुघ्न

खे मिली सुरितिकीर्ति (**समता**)

वक़्तु गुज़रंदो हलियो. हिक ड्रींहुं राजा दसरथ (**मन**) श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) खे राज़ु (**महान पद्वी**) ड्रियण जे विचार सां वसिष्ट (**वेदनि जी वाक**) ऐं समंत (**सकर्म**) सां सलाह करे वसिष्ट (**वेदनि जे वाक**) खे शब्द रूप रथ ते चाड़हे श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) ड्रांहुं रवानो कयो.

कैकई (**प्रवृति**) नाराज़ु थी. हिन (**प्रवृतीअ**) वठी रोदन मचायो (**खेल रचायो**). कैकई (**प्रवृतीअ**) जी इहा दशा ड्रिसी राजा दसरथ (**मन**) कैकई (**प्रवृतीअ**) खे घणो ई समिझायो पर कैकई (**प्रवृति**) हिक ते थी बीठी त राज़ु भरत (**वैराग**) खे मिले. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) खे जड्रहिं पतो पियो तड्रहिं यकदमु रज़ा ख़ुशीअ सां हिन पंहिंजे पिता दसरथ (**मन**) जे वचन जी पालना करण लाइ बनवास क़बूलियो ऐं भरत (**वैराग**) जे फायदे में राज़ तां हथु खंयो.

मुखीअ चयो, 'इहो त अन्याउ थियो महाराज!'

महात्मा चयो, 'अन्याउ न थियो. इनहीअ में गूढ़हो रहस्य आहे. इनहीअ जी माना इहा आहे त जेसीं मनु प्रवृतीअ जे चवण सां हलंदो तेसीं ज्ञानु वटसि रही न सघंदो याने जेसीं मनु वैराग जे साधन में सिध न थियो आहे, तेसीं ज्ञान जो अधिकारी नाहे.

लक्ष्मणु (**विवेक**) श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जी ग़ाल्हि ब़ुधी क्रोध में अची वियो, पर वड्रे भाउ जी आज्ञा ब़ुधी चुपु थी वियो ऐं गद्गद् थी संदसि चरननि में किरी पियो. हथ जोड़े चयाईं, 'मूंखे बि साणु वठी हलो. लक्ष्मण (**विवेक**) कीअं श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) खां सवाइ रही सघंदो?' जड्रहिं सीता खे ख़बर पेई, तड्रहिं चयाईं, 'जिते श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) आहे उते सीता (**शांती**) आहे ऐं जिते सीता (**शांती**) आहे उते श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) आहे. हू ब़ई हिक ब़े खां सवाइ रही न था सघनि. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) इहा ग़ाल्हि मञी, सीता (**शांतीअ**) खे साणु करे हलियो. तंहिंखां पोइ श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) लक्ष्ण (**विवेक**)

ऐं सीता (**शांती**) खे साणु करे राणी कौश्लया (**निवृति**) ऐं राजा दसरथ (**मन**) जा चरन छुही बन वञण लाइ त्यारु थियो. मंत्री (**सकर्म**) इनहनि खे ब्रह्म पर्ती पादक (**ब्रह्म जो निशचो कराइण वारो**) महावाक रथ ते चाढ़े निर्भय रूप बन ड॒े वठी हलियो. कुझु परे वञण खां पोइ हू गंगा (**ब्रह्मविद्या**) जे किनारे ते अची पहुता. हिक पातणी (**जिज्ञासा**). आत्म तत्व ज॒ाणण जी इच्छा पंहिंजे ब॒ेड़ीअ (**धारणा**) ते चाढ़े वठी वियो. पारि पहुची हू टई ज॒णा भरद्वाज मुनी (**स्वधर्म**) जे आश्रम ड॒े विया. उते राति सुख सां गुज़ारे प्रभात जो उथी त्रिवेणी संगम ते स्नानु कयाऊं. जंहिं जाइ ते ब॒ नदियूं (**नाड़ियूं**) जमुना (**अपरा**) ऐं सरस्वती (**पिंगला**) वञी गंगा (**सुषना**) में लइ थियनि ऐं पोइ उतां गंगा (**सुषना**) हिक ई धारा में वहे थी, तंहिं जाइ खे त्रिवेणी सड॒ींदा आहिनि. इश्नानु करे श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) श्री वाल्मीक (**दम**) सां मिलियो. वाल्मीक (**दम**) सां रुह रिहाण करे अची चित्रकूट (**साधु पुरुष**) में वासो कयाईं. साधु पुरुष आहे चित्रकूट. जीअं कोटु याने सांदाण ते लोहार लोह खे ठपींदो आहे त लोह जी शिकिल बदिलबी वेंदी आहे, पर सांदाण अहिड़े जो अहिड़ो ई रहंदो आहे. तीअं साधु पुरुष बि चोटूं खाईंदे साग॒े स्वरूप में रहंदा आहिनि ऐं कड॒हिं दांहं या कूक न कंदा आहिनि. इनहीअ स्वरूप खे कोठिबो आहे चित्रकूट (**साधु पुरुष**). सचे साधु पुरुष में ई ज्ञान, विवेक ऐं शांती वासो कंदा आहिनि. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) त वियो बनवासु पर श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) बिना दसरथ (**मन**) जो कहिड़ो हालु. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जे जाइ ते जड॒हिं भरतु (**वैरागु**) आयो तड॒हिं राजा दसरथु (**मन**) प्राण त्यागि॒या याने मोक्ष पातो. जड॒हिं श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) वयो बनवासु ऐं भरतु (**वैरागु**) आयो अयोध्या (**पंज कोश**)में कैकईअ (**प्रवृतीअ**) जे कए ते दुखी थियो. राजभाग॒ जी इच्छा छड॒े भरतु (**वैरागु**) श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जे पुठियां वियो.

हिक प्रेमीअ पुछियो, 'साईं, जड॒हिं पिता जी आज्ञा मञी

श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) बनवासु वियो तड़हिं भरत (**वैराग**) जो कमु न हो त पिता जी आज्ञा पाले ऐं राज़ुभागु हलाए?' महात्मा जवाबु ड्रिनो, 'ठीकु आहे, पर इहो बि सोचणु खपे न त ज्ञान जे योग खां सिवाइ वैराग जी सोभिया किथे? वैरागु ज्ञान सां गडु हुजे तड़हिं त मानु पाए. वैरागु आहे खीरु ऐं ज्ञानु आहे खंडु. वैरागु ज्ञान बिना राज़ु करे त संदसि कहिड़ी सोभिया रहे? ईह्नोई सबबु आहे जो भरतु (**वैरागु**) सोचण लग़ो त श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) बिना राज़ु अंगीकारु न करणु घुरिजे. सुखु, भरत (**वैराग**) जी श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) वटि पहुतो ऐं घणे समुझाइण ते वसिष्ट जे आज्ञा अनुसार श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जूं चाखिड़ियूं (**कृपा**) खणी हू अयोध्या (**पंज कोष**) वापसु आयो. कथा त वड़ी आहे, ऐं हरि ग़ाल्हि में भेदु समायलु आहे पर इहे सभु छडे असीं वठी था अचूं श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) लक्ष्मण (**विवेक**) ऐं सीता (**शांती**) खे पंचवटीअ में. पंचवटी छा आहे? पंचवटी आहे इन महापुरुष जो चितु, जंहिंखे पंजनि विकारनि शब्द, स्पर्श, रूप, रस ऐं गंध वेड़हे न छड्डियो आहे याने पंहिंजे दुख रूप छाया सां ढके न छड्डियो आहे. अगस्त मुनी (**अद्वैत**) जे सलाह सां हू उनहीअ पंचवटी (**शब्द चित**) में रहिया. को समो उते रहिया. हिक ड्रींहुं उनहीअ हंधि हिक स्त्री सूर्पंखा (**तृष्णा**) अची प्रघट थी. सूर्पंखा (**तृष्णा**) अची श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जे अग़ियां बीठी ऐं वडे नाज़ नख़िरे सां चयाईं त तूं मूंसा शादी करि. लक्ष्मण (**विवेक**) खे क्रोधु लग़ो सो खणंदे ई तलवार सूर्पंखा (**तृष्णा**) जो नकु कपे छड्डियाईं. सूर्पंखा (**तृष्णा**) ड्रिठो त मुंहिंजी न हली सो भग़ी सिधो खर ऐं दूषण (**मोह**) वटि. खर ऐं दूषण (**मोह**) पंहिंजे भेण सूर्पंखा (**तृष्णा**) जी पुकार श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) वटि पहुता, पर हिन खेनि खिण में मात करे छड्डियो. सूर्पंखा (**तृष्णा**) भग़ी रावण (**अज्ञान**) वटि. रावण (**अज्ञान**) कोठियो मारीच (**काम**) खे ऐं खेसि आज्ञा कई त वञी राम (**ज्ञान**) खे नासु कर. मारीच (**काम**) जंहिं अग़िमें ई विश्वामित्र (**विश्वास**) जे यज्ञ में मार

खाधी हुई सो राम (**ज्ञान**) ते हमिलो करण खां इन्कारु करे बीठो. रावणु (**अज्ञान**) क्रोध में अची वियो. मारीचु (**काम**) डिज़ी वियो. हू पंहिंजो रूप बदलाए याने हिरण जो रूप करे याने, मृग तृष्णा जो रूप धरे अची सीता माता जे (**शांती**) जे साम्हूं बीठो. माता सीता (**शांती**) उन्हीअ मृग (**माया**) ते मोहित थी पेई. सीता (**शांती**) राम (**ज्ञान**) खे उन्हीअ मृग (**माया**) खे मारण लाइ चयो. राम (**ज्ञान**) उन्हीअ हिरण (**माया**) जे पुठियां वियो ऐं पुठियां रावण (**अज्ञानु**) सीता (**शांती**) खे चोराए खणी वियो'. हिक प्रेमीअ सुवालु कयो, 'राम (**ज्ञान**) ज़ाणी ज़ाणणहारु सीता (**शांती**) जे चवण ते छो हलियो? लक्ष्मण (**विवेक**) सीता माता (**शांतीअ**) खे छड़े छो हलियो वियो? ऐं सीता (**शांती**) पाण खे खणण छो ड्रिनो?'

महात्मा वराणियो, 'अर्थु हीउ आहे त जंहिं वक़्त असत खें सत करे थो ज़ाणिजे तंहिं दमु सत ऐं असत खे ज़ाणंदड़ु विवेकु बि मुंझी थो वञे ऐं तंहिंकरे शांती बि गुमु थी थी वञे. राम (**ज्ञान**) खे ज़ाण हुई, पर जेसीं रावण (**अज्ञान**) स्त्रीअ सीता (**शांती**) खे न खणी वञे, तेसीं हू संदसि नासु कीअं करे?

सीता (**शांती**) खे रावणु (**अज्ञान**) खणीं थे वयो त जटाऊअ (**धर्म**) संदसि मुकाबिलो कयो, पर रावण (**अज्ञान**) संदसि खंभराटियूं कपे छड्रियूं. इन जो मतलबु इहो आहे, त अज्ञान खे मारण लाइ धर्म खां वधीक ज्ञानु आहे. जड्रहिं राम (**ज्ञान**) सीता (**शांती**) जी ग़ोल्हा में निकितो तड्रहिं जटाऊअ (**धर्म**) खे खणी गले सां लग़ायाई ऐं जटाऊअ (**धर्म**) खे अमरपदु बिख़्शयाईं. इनहीअ जो अर्थु आहे त जो जीउ श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) खे ज़ाणण सुञाणण लाइ कांखी थींदो सो पहिरियाईं जटाऊ (**धर्म**) जी ओट वठंदो, याने जंहिंमें धर्मु न हूंदो उनहीअ में ज्ञानु बि न हूंदो. जटाऊअ खे अमृत बख़्शे श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) अग़िते वधियो त शबरीअ (**प्रीतीअ**) जी झोपड़ी ड्रिसण में आयसि. शबरीअ (**प्रीतीअ**) वटि ब्रेरनि (**सची भावना**) खां सवाइ

ब्रियो त कुझु कीन हो जो श्रीरामचंद्र (ज्ञान) खे आछे, पर श्रीरामचंद्र (ज्ञान) ईहे ब्रेर (**सची भावना**) अंगीकारु कया'.

हिक संगीअ पुछियो, 'महाराज, शबरी जेकड्हिं प्रीती आहे त इन खे भीलणी ऐं चंडाल छो कोठियो अथनि?'

महात्मा जवाबु ड्रिनो, 'जो प्रीति ज्ञान खां धार आहे याने विषयनि में फासी रही आहे सा चंडालणि आहे. विषयूं आहिनि झंगल मिसल ऐं रहंदड़ प्रीति शुधि प्रीति न चइजे. जेका प्रीति ज्ञान प्राप्ति थी करे साई शुधि प्रीति आहे. विषयनि जी प्रीति चंडालनि में रहे थी, तंहिं करे महात्मा पुरुष इन खे भीलणी या चंडालणि करे कोठींदा आहिनि. इहा प्रीति जड्हिं विषयनि खे त्यागे, वञी ज्ञान सां गड्रिजी हिकु थी, तड्हिं हूअ शुधि पुरुषनि अग्रियां पूज्रा लाइक़ थिए थी. इहो ई सबब आहे त जड्हिं शबरी (**प्रीति**) श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जे चरननि में आई तड्हिं वञी मानु पाताईं'. महात्मा चयो, 'अज़्रोको प्रवचन पूरो थियो वरी सुभाणे इन्हीअ कथा खे समझण जी कोशश कंदासीं.'

संगत ब्रिए ड्रींहं अची मुखीअ जे ओताक़ ते कठी थी ऐं महात्मा वरी सत्संग शुरू कयो. प्रेम भरे आवाज़ में चयाईं, 'प्रेमियो, हाणे अचो त तव्हां खे समझायां, त कहिड़े कारण श्रीरामचंद्र सुग्रीव खे प्यारो ज़्राणी ब्रालीअ खे नासु कयो.' साधि संगत ध्यान सां ब्रुधण लग्री. महात्मा चयो, 'ब्राली आहे (**लोभु**) सुग्रीवु आहे (**संतोषु**) ऐं हनुमानु आहे (**सत्संगु**) श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जेकडहिं ब्रालीअ (**लोभ**) खे न मारे त संतोषु कीअं अचे?' हिक प्रेमीअ पुछियो, 'चइबो त श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) में बि राग्र द्वेषु हो, जो हिक खे प्यारु कयाईं ऐं ब्रे खे नासु कयाईं?'

महात्मा चयो, 'न, ईऐं कोन्हे. पीऊ खे सभु पुट हिक जहिड़ा आहिनि. पर जे पुटु आज्ञाकारी न हूंदो आहे ऐं नीचु थी पवंदो आहे त पिता उन खे संदसि ई भलाईअ लाइ सज़ा ड्रींदो आहे. श्रीरामचंद्र

**(ज्ञान)** जे नज़र में हूअं त ब॒ाली **(लोभ)** मरजाता ते क़ाइमु न हो तंहिं करे ई खेसि ड॒ंडु ड॒ियणो पियो. ब॒ालीअ **(लोभ)** जे मृत्यु ते संदसि स्त्रीअ तारा **(तितिक्षा - दुख सुख में समानता)** खे ड॒ुखु थियो. हूअ रोदनु कंदी अची श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** अगि॒या बीठी. श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** लक्ष्मण **(विवेक)** खे आज्ञा कई त खेसि ब॒ोधु ड॒े. लक्ष्मण **(विवेक)** चयो, 'तूं आहीं सहनशीलता जो रूपु. तोखे दुखु करणु नथो सूहें. तूं पाण पवित्र आहीं पर इन पवित्रता हूंदे बि तूं ब॒ालीअ **(लोभ)** सां संगु करे अज्ञानी थी पेई आहीं. हिन वक़्त ताईं तो ब॒ालीअ **(लोभ)** लाइ पे सभु कुझु सठो आहे, हाणे श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** लाइ कुझु सहु. वड॒ा भाग॒ अथई जो ब॒ालीअ **(लोभ)** खां जिंदु छुटी अथई.' तारा **(तितिक्षा - सहनशीलता)** श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** जे चरननि में झुकी पेई ऐं पंहिंजे पुट अगंद **(अक्रोध)** खे बि श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** जो दासु बणायईं. ज्ञान स्वरूप श्रीरामचंद्र लोभ बालीअ खे मारे संतोष रूप सुग्रीव खे राज॒ ड॒ई ऐं लोभ जे पुट अक्रोध रूप अंगद खे युवराज थापे आनंद सां वञी स्फटकु शिला **(निष्काम ऐं निष्काम चित)** में निवास कयो.

स्फटकु शिला **(निष्काम ऐं निष्काम चित)** जो अर्थु आहे उहो पुरुषु जंहिंजो चितु निष्काम कर्मनि ऐं उपासना द्वारा निर्मल थियो हुजे. इनहीअ साफु ऐं सुथरे संगमरमर जहिड़े चित जो नालो आहे स्फटकु शिला **(अछो पत्थरु)**. इनहीअ खां पो वरी ग॒ोल्हा शुरू थी सीता **(शांती)** जी. लक्ष्मण **(विवेक)** जी आज्ञा ते सुग्रीव **(संतोष)** पंहिंजे साथी हनुमान **(सत्संग)** सां केई बांदर **(संस्कार)** गडु॒ करे सीता **(शांती)** सीता जी ग॒ोल्हा में निकितो पर सीता जो पतो निदारद. थकिजी टुटिजी हू अची समुद्र जे किनारे ते वेठा. उते स्वयं प्रभा **(उपासना)** मां पतो पियुनि त सीता **(शांती)** खे रावणु **(अज्ञान)** लंका **(शंका)** नगरीअ में खणी वियो आहे. बांदर **(संस्कार)** समुद्र जो किनारो ड॒ेई हलण लग॒ा त उनहनि ते जटाऊ **(धर्म)** जे भाउ

संपाती (**सतोगुण**) खे ख़बर पई त हू केरु आहिनि तड॒हिं माफी घुरियाईं ऐं चयाईं, 'मां हिन जग॒हि ते रहियो ई इनहीअ करे पियो आहियां त तव्हां जी सहायता करे जसु खटां. अज्ञान रूप रावण शांती रूप सीता खे छलु करे चोराइ शंका रूप लंका में खणी वियो अथव. लंका (**शंका**) जे चौतरफ अथाहु समुद्र (**आशा**) ऐं इहो अथव भूपूर जलु (**मनोरथ**) सां. समुद्र (**आशा**) में घिड़ो त ख़बरदारु थिजो जो उनहीअ में घिड़ण शर्त सुधि-ब॒ुधि चट॒ु थी वेंदव. हिक प्रेमीअ पुछियो, 'महाराज, आशा रूप समुद्र में घिड़ण सां सुधि - ब॒ुधि छो चट॒ु थींदी?' महात्मा वराणियो, 'बाबा, उनहीअ समुद्र में घिड़ण सां समुझी न सघिबो आहे त किथां आयो आहियां? उनहीअ समुद्र में रुग॒ो राग॒ द्वेष रूप राकासनि जो वासो हूंदो आहे, जे उन में वेंदड़नि खे गि॒ही वेंदा इनहीअ समुद्र में उहो घिड़े जो समर्थ हुजे. जेको उहो समुद्र लताड़े तंहिंखे शांती रूप सीता जो पतो लग॒े. संपाती (**सतोगुण**) खां सीता (**शांतीअ**) जो ड॒सु वठी हनुमान (**सत्संग**) श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) खे हृदय में धारे समुद्र पारि लंघे लंका (**शंका**) में वञी सीता (**शांतीअ**) जी ग॒ोल्हा में लग॒ी वियो. पहिरियों पहिरियों लंका निवासी जंहिं सां हनुमान (**सत्संग**) जी गडि॒जाणी थी सो हो रावण (**अज्ञान**) जो भाउ विभीषण (**प्रायश्चित - शरण में आयलु**). हनुमान सां लड़ण बजाइ हू संदसि मददगारु थी पियो. हनुमान खे हिन मां पतो पयो त सीता (**शांती**) अशोक (**पल पर दुखु**) बाग़ में आहे. हनुमान (**सत्संग**) सीता माता (**शांती**) वटि पहुतो ऐं खेसि पंहिंजी सुञाणप श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जे मुंडीअ (**शब्द**) सां डि॒नाईं. सीता माता (**शांती**) प्रसन्न थी ऐं संदसि चवण ते इहा आसीस कयाईंसि त संदसि चितु हमेशह श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) ऐं सीता (**शांतीअ**) जो वासो रहे. पोइ सीता माता (**शांती**) पंहिंजे सिर जो मणियो चोटीअ फुलु (**श्रद्धा**) हनुमान (**सत्संग**) खे डि॒नो. हनुमान (**सत्संग**) पोइ बुख लाहण लाइ वियो फल फूल खाईंदो ऐं बाग़

उजाड़ींदो. जड़हिं रावण (**अज्ञान**) खे इहा ख़बर पेई तड़हिं गुसे में अची वियो ऐं पुट मेघनाद (**राग़**) खे हनुमान (**सत्संग**) खे पकड़े अचण लाइ मोकिलियो. राग़ रूप मेघनाद सत्संग रूप हनुमान खे पकिड़े आयो.'

मुखीअ पुछियो, 'महाराज, कौड़ो मोह सत्संग ते कीअं ग़ालिब पइजी वियो?' महाराज जवाबु ड़िनो, 'बाबा, अर्थु ही आहे त माया मुई लंका (**शंका**) जे सोभिया ते सत्संग रूप हनुमानु कुझु मोहितु थियो ऐं उनहीअ सोभिया ते हू पंहिंजो स्वरूपु विसारे वेठो पर उहो थोरे वक़्त लाइ. जड़हिं सत्संग रूप हनुमान खे सतोगुण रूप संपातीअ जो ड़िनलु सबक़ु यादि आयो तड़हिं वरी पंहिंजे रूप में अची मनवी मोह जा ब़ुंधन टोड़े शंका रूप लंका खे साड़े जितां आयो हो उते मोटी वियो ऐं अची श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) भेरो थियो ऐं खेसि प्रणाम करे सज़ी हक़ीक़त ब़ुधायाईं. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) सैना साणु करे लंका (**शंका**) ते हमिलो करण लाइ संभिरी निकितो ऐं अची समुद्र (**आशा**) जे किनारे ते पहुतो. विभीषण (**प्रायश्चित**) इहा रोबकारु ड़िसी रावण (**अज्ञान**) खे घणो ई समुझायो, पर हिन हिक बि न ब़ुधी. विभीषण (**प्रायश्चित**) सिधो आयो श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) वटि. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) संदसि आदरु सत्कारु कयो. चयाईं, 'जो मुंहिंजे शरणागत आयो, सो मुंहिंजो परमु भग़तु आहे. मुंहिंजी शरण में अचण जे करे तोखे तुंहिंजो भाउ रावणु (**अज्ञान**) जे नगरीअ जे राज़ जो मालिकु थो थाफियां. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) हाणे रावण (**अज्ञान**) खे नासु क़रण जी सिट सिटी. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) चयो त रावण (**अज्ञान**) खे जीतण लाइ पहिरयों क़दमु आहे महाराज (**गुरु**) जी आराधना करणु, ज्ञान दाता गुरु, शिव महाराज जी स्तुति करे आशा रूप समुद्र पारि लंघण लाइ लीला रूप सेतु (**पुल**) ब़धाई. अर्थु ही आहे त श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जी लीला आशा रूप समुद्र पारि करण लाइ हिक पुलु आहे. जो पुरुषु संदसि लीला जो श्रवणु कंदो ऐं उनजो हृदे में धारणु कंदो

सो बिना कंहिं कष्ट क्लेश जे आशा समुद्र पारि करे वेंदो. जड़हिं रावण (**अज्ञान**) जी स्त्री मंदोधरीअ (**मति**) खे ख़बर पेई त श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) लंका (**शंका**) में पहुची वियो आहे तड़हिं सिधो भग़ी पंहिंजे पतीअ वटि ऐं वञी खेसि श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जे शरण पवण लाइ चयाईं, पर हू मति मञण जे बजाए हेकारी क्रोध में अची वियो. मंदोधरी (**मति**) चुपु करे वेही रही. श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) लंका (**शंका**) ते हमिलो कयो. रावण (**अज्ञान**) मेघनाद (**राग़**) खे मोकिलियो. मेघनाद (**राग़**) पहिरियों वार लक्ष्मण (**विवेक**) ते कयो. शक्ती (**पदार्थी प्रेम**) जो ब़ाणु हणी खेसि मूर्छिति करे छड़ियाईं. विभीषण (**प्रायश्चित**) जे चवण ते सुशेन (**अनुराग़ प्रेम**) वैद्य खे घुरायो वयो. अज्ञानी रूप रावण जे संग में उहो सुशेन वैद्य (**अनुराग़ु** ) विषयनि जो अनुराग़ी हो, पर हाणे श्रीरामचंद्र (**ज्ञान**) जे साम्हूं अचण सां हू भग़तु अनुराग़ी थी पियो. सुशेन (**अनुराग़**) हथ ब़धी चयो, 'हे प्रभू, लक्ष्मण (**विवेक**) मुओ नाहे, पर मूर्छित आहे.'

हिक प्रेमीअ प्रश्न कयो, 'महाराज, विवेक रूपी लक्ष्मण खे मनो मोह रूप मेघनादु कींअं मूर्छितु करे सघियो?'

महात्मा उतर ड़िनो, 'विवेकी पुरुषनि खे कड़हिं कड़हिं संसारी पदार्थनि लाइ छिक थींदी आहे, जंहिं करे संदनि विवेकु मूर्छा में अची वेंदो आहे, पर हिकदमु नासु न थींदो आहे. पोइ जड़हिं हिननि जी आत्मिक वेसर लही वेंदी आहे ऐं खेनि सची यादिगिरी ईंदी आहे तड़हिं संदनि मोहु मरी वेंदो आहे. लक्ष्मण सां बि ईएं थियो. वैद्य सुशेन (**भग़वंत अनुराग़ीअ**) ड़सु ड़िनो त कोई पर्बतु (**शास्त्र**) तां संजीवनी (**स्मृति**) ब़ूटी खणी अचे त लक्ष्मण (**विवेक**) जी मूर्छा लही सघे थी. हनुमान (**सत्संग**) त्यारु थियो ऐं वठी उड़ाणो. शास्त्र रूप गंधमादनु पर्बत ते वञी पहुतो. उते अनेक प्रकारनि जूं ब़ूटियूं (**वाक**) ड़िसी मुंझी पियो. सोचियाईं त कहिड़ी खणी कड़िही खणां? सो विझी ब़ुख पर्बत (**शास्त्र**) खे वठी उड़ाणो. जड़हिं अयोध्या

**(पंज कोश)** मथां थे उड़ाणो त भरत **(वैराग्)** जो तीरु लगुसि सो अची हेठि किरियो. भरत **(वैराग्)** जड़हिं हनुमान **(सत्संग)** खे सुञातो तड़हिं खेसि पंहिंजे तीर जो आसिरो ड्रेई श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** ड्रांहुं मोकिलियाईं.'

हिक सत्संगीअ पुछियो, 'महाराज, ईहो चिटीअ तरह समुझायो.'

महात्मा चयो, 'भरत सोचियो मां वैरागी रूपु भरतु आहियां ऐं मुहिंजे ब्राण बिना हनुमान **(सत्संग)** ऐं ब्रूटियूं **(शास्त्रनि जा वाक)** लक्ष्मण **(विवेक)** खे जागाइण में कारगरु न थींदियूं. सचु आहे बि इएं. लक्ष्मण **(विवेक)** जंहिं पदार्थ जे मोह करे मूर्छित थियो तंहिं बाबति जेसीं वैराग् जो ब्राणु न लगेसि तेसीताईं मोह जी बेहोशी कीअं लहेसि?'

इहा समुझाणी ड्रेई महात्मा कथा अगिते हलाईंदे चयो, 'हनुमान **(सत्संग)** श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** ऐं भरत **(वैराग्)** जे कृपा जो कणो पाए धन्य थियो ऐं उतां रवानो थियो. ब्रूटीअ **(वाक)** लक्ष्मण **(विवेक)** खे सुरजीत कयो. रावण **(अज्ञान)** जो बुधो त लक्ष्मण **(विवेक)** सजागु थियो आहे सो कुंभकरण **(क्रोध)** खे उथारियाईं. कुंभकरण **(क्रोध)** श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** अगियां कीअं टिकी सघे? हिकु ब्राणु **(शांती वाक)** काफी हो. पोइ उथियो मेघनादु **(रागु)** पर उहो बि लक्ष्मण **(विवेक)** जे ब्राण अगियां न बी सघियो. मेघनाद **(रागु)** न रहियो त महीरावण **(द्वेष)** उथी खड़ो थियो. अहिड़ो त वठी छलु कयाईं जो श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** ऐं लक्ष्मण **(विवेक)** खे पाताल ड्रे खणी वियो. हनुमान **(सत्संग)** महीरावण **(द्वेष)** जो मुकाबिलो कयो ऐं खेसि नासु करे संदसि पुटु अही रावण **(निर्लोभ)** खे राजु ड्रेई श्रीरामचंद्र **(ज्ञान)** ऐं लक्ष्मण **(विवेक)** खे वापस वठी आयो.'

हिक सत्संगीअ पुछियो, 'महाराज! ज्ञान ऐं विवेक खे द्वेषु

ग़िरिकाए वियो?'

महात्मा खिली चयो, 'जिनि जे मन में भरमु बीठो हो त राम राकासनि ड्रे द्वेष भाव सां थो डि्से तिनि जे मन जो भरमु सत्संग रूप हनुमान हटाए छडि्यो.' कथा जो सिलसिलो ज़ारी रखंदे चयाईं, 'जड्हिं सभु राकस मरी चुका तड्हिं रावणु (अज्ञान) अकेलो युध में आयो. अज्ञानु आहे अंधेरो. अंधेरो ज्ञान स्वरूप रामचंद्र ज्योतीअ अग़ियां तग़ी सघंदो? श्रीरामचंद्र (ज्ञान) हिकु ब़ाणु (**निर्वाण वाक**) जो उछिलयो त रावणु (अज्ञानु) डही पियो. रावण मोह, राम जी जय थी. असतु नासु थियो, सतु खटियो.' महात्मा कथा समाप्त कंदे चयो, इहा आहे जंगि जा ड्रींहं राति पेई हले मनुष जे अंदर में. असांजे सभिनी शास्त्रनि में उनहीअ लड़ाईअ ड्रांहुं इशारो आहे पर के रिंद परुड़नि राज!'

मुखीअ चयो, 'महाराज! थोरा ड्रींहं थिया त असांजे ग़ोठ में हिकु सूफी सग़ोरो हो, तंहिं वरी असांखे असांजे लोक कथाउनि जी समुझाणी डि्नी. छा त सुंदरु, सिख्यादायकु सबकु डि्नाईं ऐं हिक हिक आखाणीअ जे अंदिरी माना समुझायाईं!'

महात्मा चयो, 'बराबर, सिंधु जे कहाणियुनि में सुंदरु समुझाणी समायल आहे. ज़ाहिर में लगन इश्क़ी किसा था पर आहिनि माना भरियल सूफियाणा सख़्तु सुहिणी हुजे या ससुई, मारुई हुजे या मूमल, हरिहिक सूरमे हिक सालक वांगुरु पंहिंजे महबूब जी ग़ोल्हा में पेई हले. न दरियाह जे दरंदनि जो डपु, न लहरुनि ऐं लोड्रनि जो भउ, न डूंगरनि जी परवाह, न ततीअ थधीअ जी काणि, न कोटनि जो कउ, न सोन रूपए जी लालच, न आग जी आड़ाहु जो ड्ररु, न फनाह थियण जो फिक्रु. कीअं न नाज़ुकु नारियूं पंहिंजे प्रीतमनि खे पाइण लाइ मुसीबतुनि जो मुकाबिलो थियूं कनि! असीं सालक उनहनि सूरमियुनि वांगुरु पिया मंज़िल मकसूद ते पहुचण जा यत्न करियूं. जेकी तकिलीफुनि ऐं कशालनि खां कउ खाई विहंदा से कीअं पिरींअ

ताईं पहुचंदा? यार सां निभाहिजे त सिर तां आहो खणणो पवंदो. सिंधु जे कहाणियुनि जी वेही माना समझायां त अंदर जूं ताकियूं खुली पवनिव! कहाणियूं त वयूं पंहिंजे जाहि पर छा त सूझ भरियल आहे. सिंधु जे फ़क़ीरनि जे क़लाम में दर्वेशनि जूं दर्द भरियूं दाहूं दिलि खे धोड़े छड्डींदियूं आहिनि. सूफ़यानी कलाम में दर्दु हिक तरफु आहे त हिदायत ब्रे तरफु. उनहनि हिदायतुनि ते को हले त काया पलिटिजी पवेसि.'

मुखीअ चयो, 'महाराज! तव्हां, वेदांती मति जो प्रचारु कंदड़ साधु पुरुष, सूफ़ी मति जी था महिमा करियो?' महाराज प्रेम भरे आवाज़ में चयो, 'हिक ई ग़ाल्हि आहे, फक़्त नालनि जो फेरु आहे. जहिड़ो ईश्वरु तहिड़ो अलाहु, जहिड़ो मनुषु तहिड़ो इन्सानु, जहिड़ी आत्मा तहिड़ो रूहु, जहिड़ी माया तहिड़ो हदूसु, जहिड़ो अहम ब्रह्म अस्मि तहिड़ो अनाअलहक़ु विशालु दृष्टिअ वारो इन्सानु अखरनि जे ओवझड़ में अड़जी विहंदो छा?' मुखीअ चयो, 'महाराज! हिते असांजे ग़ोठ में ग़ाइणा हाज़ुरु आहिनि. आज्ञा हुजे त सिंधी कलाम जी मौज मचायूं.' महात्मा चयो, 'हाओ, ब्रियो छा खपे? ब्रुधायो ब्रहग़णनि जी ब्राणी.' मिनटनि जी देरि हुई. साज़ अची विया. राग़ींदड़नि चौंकी शुरू कई. यकतारे ऐं दिले ते वाह जो ग़ोठणनि मौज मचाई. कहिड़ियूं न सुंदरु काफियूं ग़ायायूं!

हिक सिकायल साईंअ जे सिक में सोज़ भरी सदा कई :-

सिक में सिक ओ सिक में सिकीअ खे कीन सिकाइ ओ सूंहारा!

त ब्रे वैराग़ वृतीअ वारे दर्वेश दांहं कई :-

सिखु रमज़ विञावण दे नाहिं हाजत पड़हण पड़हावण दे.

हिक सुवालीअ साईंअ जे दरि झोली झले ब्राड़ायो :-

ब्राझ भरिया ब्रान्हीअ ते मन बि का ब्राझ पवई.

त ब्रे सभु कुझु खेसि स्पर्द करे चयो :-

वाग॒ डोलण तुंहिंजे वसि आउं का पाण वहीणी?

हिक लाहूती लाल महिर मङंदे चयो :-

लुतुफ़ सां पारि लंघाइजि, ओ ब॒ेड़ीअ वारा.

त ब॒े नियाज़ मंदी ज़ाहिरु कंदे चयो :-

पोरिहियत थी पाणी भरियां, पर ज॒े पोरिहियत कनि.

कंहिं मारई बणिजी मलीर खे यादि करे, नेणनि मां नीरु वहाईंदे चयो :-

जड॒हिं पवनि था यादि अबाणा,

मुंहिंजा रोअनि था नेण निमाणा.

कंहिं ससुई बणिजी जबल झाग॒ींदे पुकारियो :-

कोहियारा वे यार ब॒ारूचा वे यार

त कंहिं मूमल बणिजी रुठल राणे खे रीझांईंदे चयो :-

रुसु न रुसण में छा हे राणा!

कंहिं ब॒ान्हप जी ब॒ोली ब॒ोलींदे चयो :-

तूं सखीं आहीं सब॒ाझो, दरु अथमि तुंहिंजो झलियो.

त कंहिं अनाअलहक़ जो नारो हणंदे मस्तीअ में आलायो :-

सर सबुहानि आहियां सूरत खेल खिलायां

कंहिं जोग॒ी बणिजी अलखु ध्याईंदे चयो :-

ढके कफ़नी फ़क़ीरनि जियां रुलियसि दिलिदार जे ख़ातिर.

त कंहिं पंहिंजे नफ़्स खे निघोसार करण जी वाट ब॒ुधाईंदे चयो :-

जेके आशिक़ आप सड॒ावन था, से पहिरीं पाणु पचाइनि था.

कंहिं आगे दर इलितजा कंदे चयो :-

मूंहुं न मिठल एड॒हों, मोड़जाइ.

कंहिं आस मां उपासना कंदे चयो :-

अथमि उमेद मूंखे साईंअ मिलण जी.

त कंहिं स्तुति कंदे चयो :-

मिठा मुल्कनि में मश्हूरु तूं!
कंहिं तोबह ताइब थींदे चयो :-
मूं में ऐब अपार सजु॒ण तुंहिंजी ब॒ान्हड़ी आहियां!
त कंहिं शिकायत कंदे सुवालु कयो :-
वसीं वेझो वनयुनि में थो पिरीं पर्दो वरी छा जो?

अलाजे केतिरो वक़्तु समाउ पे हलियो. ग॒ाईंदड़ ऐं बु॒धंदड़ मस्तीअ में हुआ अनेक ग॒ाइणनि, अनेक कवियुनि जा उमंग ऐं तरंग ज़ाहिरु कया पर उनहीअ अलहदगीअ में बि केतिरी त एकता हुई! जुदाईअ में मेलापु डि॒सणो हुजे त का घड़ी चौंकीअ में वेही डि॒सो. हिक धाग॒े में भांति भांति जे रंगनि जा पत्थर कीअं जुदा हूंदे बि हिकु लग॒ंदा आहिनि! गुलदस्ते में क़िस्मे क़िस्मे गुल अनेक रंगनि जा हूंदे ब॒े कीअं न बे भेदु लग॒ंदा आहिनि! जड॒हिं चौंकी पूरी थी तड॒हिं महात्मा जे अखियुनि में आंसू हुआ. निर्मल आवाज़ में चयाईं, 'इहो कलामु कठो छो न करियो त ईंदड़ नसलनि लाइ बि लाभदायकु थिए?'

हिकु मास्तरु उथी बीही चयो, 'महाराज! मूं केतिरो कलामु कठो कयो आहे ऐं अञां पियो कठो कयां.' महात्मा चयो, 'शाल, उहो डीं॒हुं बि अचे जो इहो कलामु छपाए सघो.' उभो साहु खणी चयाईं, 'आहे कामिलनि जो कलामु पर मां जेकर कोठियांसि **"सिक जी सौग़ात"**.

साल गुज़िरी विया. वीहनि सालनि जी कोशिश खां पोइ हीअ सिक जी सौग़ात छपिजी ज़ाहिरी थिए थी. महात्मा जी कयल इच्छा अमिली सूरत अख़्तियारु कई आहे ऐं 'सिक जी सौग़ात' अव्हां अगि॒यां आहे. चारि साल अगि॒में जड॒हिं हिक किताबु शाइअ करण जो ख़्यालु ज़ाहिरु कयुमि तड॒हिं प्यारे मित्र काके रंजीत सिंह वास्वाणीअ मूंखे उत्साहु डि॒यारो. काको रंजीत सिंह साईं पारूशाह ऐं साईं वसणघोट जे दर ते विकाणियलु आहे. केड॒ो न प्रेमु आहे हिन

प्रेमीअ जे दिलि में ऐं केड्डी न अथसि श्रद्धा पंहिंजे शाहन लाइ! उनहनि सगूरनि साहिबनि जे दर तां पातो बि घणो अथसि. छोन पाईंदो? जो जगु छड्डे जानबन सां जीउ जोड़ींदो तंहिंजा कीअं न ब्रेड़ा पारि थींदा? पारूशाह ऐं वसणशाह जिनि जी लड़ सिंधु जा केई स्वाली लगा आहिनि तिनि जी कहिड़ी करियां ! दिलि अथमि त थोरे में ई उनहनि लाउती लालनि जो ज़िक्रु करियां ऐं संदनि स्थान आसाउ तड़ जो अहिवालु ड्रियां. बुधो इहो अहवालु :-

कैंप नं. ५ जे बैरेक नं. २०५३ में साईं वसण घोट ऐं संदनि गुरु पारूशाह जी दरब्रार आहे जंहिंखे कोठियूं था 'आसाउतड़'. हिन हंध जे 'आसाउतड़' खां सिंध जो 'आसाउतड़' अलहदो हूंदो हो. साईं जंहिं हाल में रखे तंहिंमें राज़ी रहणु खपे, त बि इन्सानी सुभाउ मूजिबु, रोहिड़ीअ जे टकिरियुनि ते सिंधु दरियाह जे किनारे ते अड्डियलु 'आसाउतड़' याद करे ऐं हीअ कैंप वारी भगल बैरेक में दरब्रार ड्रिसी अखियुनि में आंसू मिड़ी था अचनि. दस्तूर मूजिब ड्रियारीअ खां नव ड्डींहं अगु सांदहि हाणे बि मेलो लगे थो. दरब्रार जो संभालींदड़ भाई चेताराम पंहिंजे भाउ भाई गोपाराम सां गड्डिजी भगितियूं लगाराए थो ऐं लंगर कराए थो. हज़ारें स्वाली अजु बि अची साईं वसण राम ऐं साईं पारूशाह जे चाखिड़ियुनि अगियां सीसु निवाए पंहिंजूं मनोकामनाऊं सिध करे वञनि था त बि जिनि रोहिड़ीअ जो मौज ड्रिठी हुई तिनि जी आत्मा तृप्त न थी थिए. रोहिड़ी वारो 'आसाउतड़' अञां क़ाइमु आहे, पर उनहीअ में आसाऊतन अचण छड्डे ड्रिनो आहे. ज़माने जे गर्दिश जो शिकारु थी जड्डहिं हिंदू हलिया आया तड्डहिं कहिड़ो स्वाली वञीं साईंअ वटि सैन हणे? के एकड़ ब्रेकड़, लूला लंगड़ा, मुफ़लस महुताज अञां बि उते ईंदा आहिनि, जिति को दयालू रोटीअ टुकरु पहुंचाईंदो अथनि. पर किथे आहे उते सांझीअ सुबुह वारो कथा कीर्तनु. किथे आहे ड्डहें बजे राति ताईं दरब्रारि में मौज़? किथे आहे उहो भंडारो जो ड्डींहं राति चालू हो ऐं किथे रही

भंडारे जी ज़रूरत जिते खाइण वारो ई न रहियो? दस्तूर मूजिब हिन दरब़ार जो दरु हमेशह खुलियलु रहे थो पर दरु उनहनि यात्रियुनि जी आज़ियां करण लाइ न खुलियलु आहे जिनि जी ड्रीहं राति अचु वञु लग़ी पई हूंदी हुई पर उनहनि जलावतनि जोग़ियुनि जे इन्तज़ार में, जे मूंहं मोड़े विया आहिनि, जिनि देशु छड्रे वञीं परदेशु वसायो आहे ऐं जे वरी अलाएजे कड्रहिं मोटंदा! दरब़ार में ज्योति जले पेई, अखंड ज्योति, उहा ज्योति गोया ईहें पेई चवे, 'वटि सोरींदे विलिहा वयो तेलु ब़री - राणे काणि रड़ी राति विहामी ड्रींहुं थियो.' खुलियलु दरु ईएं पियो लग़े ज़णु दरब़ार मूंहुं खोले पेई चवे :-

पोएं पहर ताईं मां निहारींदसि,<br>
बिना तेल ड्रीओ ई ब़ारींदसि,<br>
वटि सोरे वफ़ा पेई सोरींदसि,<br>
दरु तो लाइ पटियो हरदमु रहंदो.

के सज़ण रोहिड़ीअ में मेलो लग़ाराईंदा आहिनि, पंहिंजे यथाशक्तीअ आहार शेवा कंदा आहिनि, निराधार लूलनि लंग़ड़नि, अंधनि मंडनि ऐं चर्यनि मस्ताननि जी वञी परघोर लहंदा आहिनि, पर जंहिं हंधि सिंधु जे चपे चपे मां माण्हू अची कठा थींदा हुआ जो बीहण जी जाहि बि न मिलंदी हुई, उते जो मुठि जेतिरा माण्हू वञी पाण में रूह रोहाण कंदा हूंदा तंहिं में कहिड़ी रौनक़ लग़ंदी हूंदी?

वाह साईं, तुंहिंजी क़ुदिरत! चाहीं त हिक पल में बादशाही महिल ज़मीन दोज़ करे छड्रीं, चाहीं त वीराननि में हिक पल में फुलवाड़ी करे छड्रीं. कहिड़नि लफ्ज़नि में तुंहिंजी महिमा ग़ायां? कहिड़नि शब्दनि में तुंहिंजी लीला जो इज़हारु करियां?

उनहीअ 'आसाउतड़' जो इत्हासु बि अनोखो आहे. ब़ुधो त ब़ुधायूं :-

घोटकीअ जो हिक ब्राह्मण हूंदो हो जंहिं खे रोहिड़ीअ में उड्रेरोलाल जो हिकु मंदरु हूंदो हो. उते हो सालियानो चेटीचंड जो

मेलो लगाईंदो हो. अहिड़े हिक मेले जी राति उनहीअ ब्राह्मण सपुनो लधो जंहिं में हिक संत खेसि चयो, 'मंदर जा मालिक अची विया आहिनि. तूं इहो मंदरु उनहनि खे डेई, वञी घोटकीअ आस्थानु ठाहे.' महाराज पुछियो, 'मां उनहीअ खे कीअं सुञाणां?' जवाबु आयो, 'सुभाणे जेके बि ज़ुणा पछाड़ीअ जो दर्शनु करण अचनि उहे आहिनि मालिक.' महाराज चयो, 'तथास्तु'. आवाज़ आयो, 'हिन मंदर ऐं जगहि डियण खां पोइ तूं जडहिं मोटी घोटकीअ वेंदें तडहिं तोखे स्टेशन ते पैंचायत वठण ईंदी.' बिए डींहुं केतिराई यात्री मंदिर में आया ऐं आख़िर में जेके ब ज़ुणा घिड़िया से हुआ ख़ैरपुर मीरस जा ब सत्संगी भाउर कुंदनदास ऐं ज्ञानचंदु. हू जीअं घिड़ी, वडीअ श्रद्धा ऐं प्रेम सां लाल साईंअ अगियां मथो टेके रहिया हुआ तीअं ब्राह्मण उमंग में अची वियो. उथी बिन्हीं भाउरनि खे पेरें पयो ऐं हथ जोड़े खेनि वेनती कयाईं त हिन मंदर ऐं मकान जा मालिक तव्हां आहियो. अञां हू कुछनि ई कुछनि त हरी हर जी धुनि लगाईंदो महाराजु बाहिरि निकिरी वियो. ब्राह्मण दरबार डेई घोटकीअ मोटियो. स्टेशन ते खेसि पैंचायत वठण आई हुई ऐं खेसि पैंचनि वेनती कई त घोटकीअ जी पैंचायत वारी जाइ खूह समेत तव्हांजी आहे. रोहिड़ीअ वारो मंदिरु जो बिनि भाउरनि खे मिलियो सो आहे 'आसाउतड़', जिते ब भाउर अची रहिया. कुंदनदासु वडी पहुच वारो माण्हूं हो ऐं वैरागी पुरुष हो. शादी कयल कान हुयसि. नंडे भाउ ज्ञानचंद जी शादी कयल हुई पर खेसि औलादु कोन हो. वडे भाउ जे आसीस सां खेसि पुत्रु संतान थियो. नालो रखियाईं वेड़हो. नंढड़ीअ भाजाईअ जडहिं पंहिंजो पुटु अची वडे डेर ऐं सत्गुरु भाई कुंदनदास जे गोद में विधो तडहिं भाई कुंदनदास चयो, 'माई ही वेड़हो वेड़हो वसाईंदो. हे तुंहिंजो पुटु महा प्रतापी ऐं डेह जो डीओ थींदो.' थियो बि ईंहें. इहो वेड़हो साईं पारूशाह जे मर्ज़ीअ मुताबिक़ फिरी थियो **वसण** जंहिं जा कारनामा डिसी संतनि महात्माउनि ऐं श्रद्धालु शिशनि खेनि सडियो 'वसण घोट या

वसण शाह'. काका रंजीत सिंह वास्वाणी अजमीर वारो कोठेनि 'बाबो साईं'. वसण घोट जी वॾाई मां कहिड़नि लफ़्ज़नि में करिया! संदनि सत्गुरु साईं पारूशाह ऐं संदनि शान में केतिरनि कवियुनि कविताऊं रचियूं आहिनि, केतिरनि ग्रंथकारनि ग्रंथ रचिया आहिनि जिनि मां निर्नय थिए थो त हू केॾीअ ऊच कोटीअ जा साहिब हुआ. हज़ारें ग़ाल्हियूं पयूं बुधिजनि जिनि में हुननि ब्रिनि दिलबर दर्वेशनि घुरजाउनि जूं घुरिजूं पूरियूं कयूं जेको जेको हुननि जे दर ते आस पाइ आयो सो पूरी करे वियो. हिन नंडढ़े लेख में मां उनहनि जा करिश्मा वर्ननु करे नथो सघां पर जिनि खे सची अहवाल ज़ाणण जी अभिलाषा आहे से श्री रंजीतसिंह वास्वाणीअ जा लिखियल छपायल पुस्तक 'दर्वेशन जो दूर ऐं चोर जो सिधक़' ऐं 'हिंद ऐं सिंध जा संत ऐं दर्वेश' पढ़ी पक कनि त कीअं साईंअ बे वड़नि सां वाड़ कया आहिनि, ऐबदारनि जा ऐब ढकिया आहिनि, घुरुजाउनि जूं घुरिजूं पूरियूं कयूं आहिनि, पतितनि खे पावनि कयो आहे ऐं रंकनि खे राजा बणायो आहे.

अजमेर में सरीनगर रोड ते काके रंजीत सिंह वास्वाणीअ जे घर घर में साईअ पारूशाह ऐं साईं वसण घोट जी ॾेविरी ठहियल आहे. हर उमास ते सत्संग थींदो आहे जिते वक़्त बिवक़्त मकानी ख़वाह ब्राहिर जा सत्संगी अची गुणवाननि जा गुण ग़ईंदा आहिनि. इन्हीअ ॾेविरीअ तां मूं खे जेका सरोपाऊ मिली सा पाए जिते किथे बाबे साहिब जा गुण ग़ाए चवंदो आहियां. इन्हीअ हंधि साईं पारूशाह जी गोदिड़ी (सेल्ही) हिक आलीशान शो केस में रखी आहे जंहिं जे अग़ियां हज़ारें माण्हू सिरु झुकाए रोहिड़ीअ वार 'आसाउतड़' लाइ तेल जा पैसा विझी, पंहिंजूं मनोकामिनाऊं पूरियूं करे वेंदा आहिनि. रोज़ नित नेम साईं वसण घोट ऐं साईं पारूशाह जे निशानियुनि अग़ियां वासु धूपु थींदो आहे.

१९४७ में वसण घोट जो जन्मु थियो. पूरनि सौ सालनि खां

पोइ १९४७ में लड़पलाण थी. जीअं सिंधु मां ब्रिया निकता तीअं साईं अमरूराम जा पुट भाई चेताराम, भाई गोपाराम ऐं भाई सखाराम बि निकता. पहिरियों ब्र वर्सियूं देवलालीअ में थियूं. जड्हिं देवलाली कैंप बंदु थी तड्हिं कल्याण कैंप नं - ५ में आया. कैंप सारी भरियल हुई पर ईश्वर जी क़ुदरत जो विच कैंप में इहा बैरक नं - २०५३ ख़ाली पेई हुई. भाई चेताराम इन्हीअ बैरक में अची 'आसाउतड़' अस्थापनु कयो.

हर सालि धाम धूम सां ब्र दफ़्हा मेलो लग़ंदो आहे साईं वसण घोट जी वर्सी ९ ड्रीहं हलंदी आहे ऐं साईं पारूशाह जी ७ ड्रींहं. इहे ७ ड्रींहं धरतीअ तां तड्रो न खज़ुंदो आहे. भग़तनि जे पुठियां भग़त ग़ाईंदा आहिनि, ड्रींहं राति धामधूम लग़ी पेई हूंदी आहे, लंगरु जारी हूंदो आहे, प्रेमियुनि जी अचु वञु चालू हूंदी आहे ऐं हरिको ग़ाईंदड़ु इनहीअ इंतज़ार में हूंदो आहे त कड्हिं थो वारो मिले ऐं चौंकी क़बूल पवे. सभिनी श्रद्धालुनि जो इहो निश्चयो आहे त साईं रोहिड़ीअ में बि आहिनि त असां वटि बि आहिनि. सत्गुरुनि जी महिमा अपर अपारु आहे. पल में जड्हिं लख मील लताड़े वञनि तड्हिं रोहिड़ीअ ऐं मुंबईअ में कहिड़ो पंधु? जड्हिं मां हिक मेले ते वयुसि ऐं चौंकी कयमि तड्हिं पहिरियों बैतु जो मुंहिंजे ज़िबान मां निकितो सो हो शाह लतीफ़ जो हीउ बेतु :-

**'सारी राति सुबहान, जाग़ी जंहिं यादि कयो,**
**तंहिं जी शाह लतीफ़ चवे, मिटीअ लधो मानु,**
**कोड़े कनि सलाम अची आसण उन जे.'**

दर्वेशनि जे दुवाउनि सां हीअ 'सिक जी सौग़ात' त्यारु आहे. पक अथमि त हीउ प्रेमियुनि जो पैग़ामु पसंदु पवंदो. जेको पुस्तकु सिंध जे सिरोमणीअ संत साधू वास्वाणीअ खे क़बूल पयो आहे सो ब्रियनि कामिलनि जे कलाम लाइ क़ुर्बु रखण वारनि वटि कीअं न कबूल पवंदो? हिन प्रभूअ जे प्यारे कहिड़ी न आसीस कई आहे!

केड्डी न ख़ुशी थी थियेमि ख़्यालु कंदे त हिन राज॒ऋषीअ जी हिन राग॒ाईअ ते केड्डी न महिर आहे! दिलि में थो अचेमि त जंहिं सुहिणे साजन अहिड़ो सिक जो स्नेहो ड्डिनो आहे तंहिंजे चरननि में मां बि के श्रद्धा जा फूल धरियां. 'धर्मु दर्शनु' मैगिज़िन में जेकी उमंग ज़ाहिरु कया हुअमि से ई खणीं थो दुहरायां :-

'सिंध दर्वेशनि जो देशु आहे. चवनि था त रोहिड़ीअ में ई सवा लख पीर हूंदा हुआ, सेवहण में इनहनि खां बि वधीक! जिनि अहिड़नि मौलाई जे मर्दनि जो दीदारु कयो तिनि जा भाग॒ वड्डा. असांजा वड्डा भाग॒ आहिनि जो उनहनि मां किनि ऊच आत्माउनि जो दर्शनु असांखे नसीबु थियो. अहिड़े हिक सच जो दीदारु करणु चाहियो था? अचो मूंसां. पूने में रहे थो. तेजस्वी ब्रह्मचारी, अभ्यासी आचार्य, ग़रीबनि जो यारु, दर्दवंद दीवानो, सब॒ाझो ऐं ब॒ाझरो. ८० वर्यह उम्र अथसि पर इनहीअ बृध अवस्था में बि कहिड़ो न सुहिणो थो लग॒े! अखियुनि में ज्योति पई ब॒रेसि, पेशानी चिमकाट पेई ड्डेसि, चपनि ते मुश्क पई लहिराइसि ऐं अखियुनि मां गंगा पेई वहेसि. नियाज़ ऐं निमाणीअ जी मजसम तस्वीर आहे. पवित्र पुस्तकनि में ऋषियुनि ऐं दर्वेशनि जा अहवाल पढ़िया अथऊं. अहिड़ो ऋषी अखियुनि सां ड्डिसिणों हुजेव त हली हिन हबीब खे हिकु दफ़हो ड्डिसो. रहे थो मीरां आस्थान में. कानाट हाऊस जे साम्हूं हिक वड्डे मकान में संदसि मक़ामु आहे जिते सवें अभिलाषी आसीस वठण लाइ अची था परे परे खां पहुचनि. सुबुह शाम सत्संग जी वर्खा थी थिए, जिते प्रेम प्यासी अची था प्यास ब॒ुझाइनि. उनहनि वक़्तनि ते जड्डहिं हीउ साधू अची थो रूह रिहाण करे तड्डहिं ड्डिसो त कीअं संगति संदसि लफ्ज़ लफ्ज़ झाटण लाइ थी परेशानु रहे, संदसि हर अदा तां ब॒लिहारु वञां संगति कोठेसि **'दादा '** पाण खे कोठे **'नूरी'** ऐं दुनिया कोठेसि **'साधू वास्वाणी'**.

साधू वास्वाणीअ जो नालो कहिड़े सिंधीअ ऐं हिंदीअ न ब॒ुधो

हूंदो? मीरां हलिचलि जो बानी! सिंधियत जो संतु लासानी.

साधू वास्वाणीअ जो सज़ो नालो आहे थांवरदास लीलाराम वास्वाणी. २५ नवंहम्बर १८७९, में संदसि जन्मु हैद्राबाद में थियो. नंडे हूंदे खां अभ्यास जो शौक होसि. एम.ए. ताईं पढ़िहियो ऐं हमेशा फर्स्ट क्लास में पास थियो. एम. ए. पास करे प्रोफेसर थियो. आख़िर में वञी दयालसिंह कॉलेज लाहोर जो प्रिंसीपाल थियो. आदर्शी आचार्य हो. कॉलेज जे कम खां पोइ हर रोज़ शाम जो पंहिंजी जाइ ते ख़ासि शागर्दिनि जो धर्मी क्लास वठंदो हो, जिते धर्मी विषयनि ते उपदेश कंदो हो. हिन अहिड़ो त नालो कढियो जो दुनिया जे धर्मनि जी जेका कॉन्फ़रेन्स जर्मनीअ में थी तंहिं में हिन खे एवज़ी करे मोकिलियो वियो. हिकु ख़्याल उचा, ब्री अंग्रेज़ी ब्रोलीअ में माहिरियत ऐं टीं ग़ाल्हाइण में फ़ज़ाहत! कॉन्फ़रेन्स में सभिनी जा वाज़ट वज़ाए छड्डियाईं. दुनिया जा सभु फ़ेलसूफ़ संदसि क़दुरु करण लग़ा. टैगोर ऐं मदनमोहन माल्वे पारां विद्वान संदसि वाखाण कंदा हुआ ऐं राधाकृष्ण ऐं ऋषी करवी पारा ज्ञानवाननि संदसि क़दुरु कंदा हुआ.

गृहस्थ जे झंझटनि खां पाण खे मुक्त रखियाईं. माता जी आस पूरी न थी. ज़मण सां ई जंहिंमें संस्कार संत जा हुजनि सो कीअं संसार में पाणु अटिकाईंदो?

नौकरी बि न करे हां जेकड्डहिं माता खे राज़ी न करिणो हुजेसि हां. नौकरी बि तेसीताईं कयाईं, जेसीताईं संदसि माता जीअरी हुई.

चालीह साल थिया अथसि संसार सां ब्रंधनु टोड़ए, पर हिक त्याग़ीअ वांगुरु हिमालय जे ग़ुफ़ा में कोन वञी वेठो आहे. पाण मुक्तु आहे पर हू ब्रियनि जी बि मुक्ती थो चाहे. सचो भग़तु आहे, ज्ञानी आहे ऐं कर्मयोगी आहे. गीता सां नींहुं अथसि, कृष्ण तां ब्रलिहारु आहे. कृष्ण तां फ़िदा आहे त किरसत सां बि अति प्रेमु अथसि, बाबे नानिक जो दासु आहे त सिंधियुनि जे सूफ़ियुनि तां बि सदक़े आहे. अहिड़नि महापुरुषनि लाइ कहिड़ो भेदु? हिन लाइ सभ रोशिनीअ जा

ब्रुचा!

मूं सां प्यार अथसि. मूं खे बि संदसि दरब्रार में गीत ग्राइण जो मौक़ो मिलंदो आहे. प्रेम मां भाकुरु पाईंदो आहे त लिंव लिंव ठरी पवंदी अथमि. मथे ते हथ घुमाए ख़ामोश आसीस कंदो आहे त सभ संसा ई मेटिजी वेंदा अथमि.

शाल वड्री आवरजा थींदसि. शाल अञां बि घणा साल साल इन्सान जाति जे उधार लाइ ज़िंदह रहंदो. ज़िंदह त वञण खां पोइ बि रहंदो. अहिड़ा महिबूब जे मरण खां अग्रे मरी चुका आहिनि ऐं जींअण खां अग्रु जीअरा आहिनि से हमेशह क़ायमु आहिनि. संदसि सखी मीरां हलिचलि क़ायमु त दादा क़ायमु. हाणे इनहीअ हलिचलि जूं पाड़ूं पाताल में आहिनि. हलो हलो हली हिकु दफ़हो हिन दर्वेश दादा जो दीदारु करियूं.

**'हलो हलो काक तड़ियूं जिते नैननि अछल**
**न का झल पल सभ का पसे पिरींअ खे.'**

किताबु लिखणु सवलो, पर इनहीअ जो छपाइणु ऐं नेकालु करणु कठिनु कमु आहे. पर साईंअ मुंहिंजी इहा बि चिंता लाहे छड्री आहे. मुंहिंजो हिकु सज्रण ई भग्रवानु तोलाणी वेठो आहे जंहिं मूंखे इनहीअ चिंता खां आजो करे छड्रियो आहे. इन जा प्रेम भरिया अखर मुंहिंजे कननि में ब्ररंदा आहिनि :- 'दादा किताब छपाईंदा हलो, वाध तव्हांजी खोट लाइ ब्रधलु वेठो आहियां'. इनहीअ प्रेमीअ जो पिता भाउ सतरामदास मुंहिंजो यारु हूंदो हो. मूंखां उम्र में वड्रो हूंदो हो. पर मूंखे पंहिंजो संगती करे समुझंदो हो. मां संदसि इज़्ज़त कंदो होसि ऐं खेसि चाचो समुझंदो होसि ऐं उनहीअ बि हमेशह मूंखे भाइटे खां कमु कीन समुझियो. ब्रियनि ब्रारनि सां गड्रु नंडे हूंदे जेकी नंडियूं नंडियूं ख़र्चियूं ड्रिनाईं से अज्रु बि यादि आहिनि. वड्रो संदसि हथनि में थियुसि. जीअं वड्रो थींदो वयुसि तीअं उन यार जो प्यारु वधंदो ई हलियो. हीउ दोस्तु हो जंहिं सां गड्रु पहिरियों दफ़हो मूं कराची ड्रिठी, हीउ ई यारु हो जंहिं पहिरियों दफ़ो मूंखे बॉम्बे ड्रेखारी. इन खे मूं

लाइ अति प्यारु हो. पाकिस्तान थियण खां पोइ बॉम्बे में बि अची गड्डु रहियासीं. जड्डहिं माहीम में अची क़्यामु कयाईं तड्डहिं घणो वक़्तु गड्डु हूंदा हुयासीं. संदसि मुरुकंदड़ु मूंहुं ऐं खुलियल खिल मूंखां कड्डहिं कीन विसरंदा. ग़ाल्हाइणु ब्रोल्हाइण में बेपरवाहु लग़ंदो हो पर सचु पचु वड्डख़्यालो हो. सिंध में ख़्वाह हिंद में वतंदो हो, नवां तज़ुरबा कंदो. जड्डहिं का बि रिथ ज़ाहिरु कंदो हो तड्डहिं ईएं लग़ंदो हो ज़णु सपना पियो लहे, पर जड्डहिं संदसि सपना बरस्वाबु थींदा हुआ ऐं खेसि दादा मिलंदो हो तड्डहिं यकिदमु चवंदो हो, 'साईं जेका रथी आहे, सा अवसु थींदी.' दुनियादारु इन्सानु हो. संसारु व्हंवार में पूरो पइजी कुटुम्ब परिवार सां बि पूरो पर मूंखे कोन सुझे त कड्डहिं बि गीता जे पाठ करण खां सवाइ घर खां ब्राहिरि निकितो. शौक़ीनु मुड़िसु हो, कपिड़े लटे ऐं खाइण पीअण जो चीको पर जड्डहिं वक़्तु आयो ऐं खेसि सादे में सादी ज़िंदगी बसरु करिणी पई तड्डहिं बि खेसि मलूल कोन ड्डिठुमि. 'शुक्र शुक्र' कंदो हो. कमु जो अवरच, कम में जुंबी पियो. ज़मीनदारी ब्रार मशीनरीअ जो कमु शुरू करे छड्डियो. कुजा ज़मींदारी ऐं कुजा मशीनरी! सभिनी अजबु खाधो पर उन दृढ इरादे वारे इन्सान साईंअ ते भाड़े ड्डुखए कम में हथ ग़ंडियो त इहो कमु बि आसानु थी पवे. कमु हलियो ऐं हीउ सज़णु इनहीअ कम मां वधीक वाक़ुफु थियण लाइ विलायत वियो. सैर जो सैर त धंधे जो धंधो. नंडो लालु बि अची सामाणो हो सो पुटु जी चिंता छड्डे हीउ दोस्त परदेस वियो. ख़ूबु घुमियो. नेठि वापस वरण जो इरादो कयाईं. रोम में पहुची दौरो ख़त्मु करिणो हुसि. असां वेठे सोचियो त कड्डहिं थो तार करे ऐं पंहिंजे अचण जो ड्डींहुं ब्रुधाए पर जंहिंखे वापस वरिणो ई कोन हो सो अचण जो कहिड़ो समाचारु सुणाए? रोम में पहुतो पर रूम मां निकितो कोन. अजलु खेसि उते नियो जिते मिटीअ जो पनोड़ो लिखियलु हुसि. उते पहुचण सां पाण खे ठीक न समुझयाईं. खेसि इस्पताल में नियो वियो. डाक्टर अची पहुता. सुयूं लग़ियूं, इलाज थियो पर 'फकियूं तड्डहिं फ़र्कु कनि जड्डहिं अमरु थिए उन जो.'

पंहिंजनि मिटनि माइटनि खां दूरि, पंहिंजे प्यारनि खां परे हू, हिन दुनिया जी विलायत मां इनहीअ वड़ी विलायत हलियो वियो. जितां को वापसु न वरियो आहे. अठसठा केड़ा हूआ, थी छा वियो! मुसाफ़िरीअ जी त्यारी हुई, मुसाफ़िरु वञी न सघियो, अहिड़नि वक़्तनि ते यादि ईंदी आहे सूफ़ियुनि जी ब्राणी :-

**मतां पंहिंजी तूं हलाईं, अलाए जे छा बणीं अथी,**
**ओ राही रब जा प्यारा ओ साथी ओ वणिजारा!**

**१. घिड़ु सोचे समुझी इनहीअ घेड़ में तूं**
**करि पेर पुख़्ता जो तिरिकणि घणी थेई. मतां ...**

**२. छड्रि कूड़ कूड़ा होड्री हठीला**
**कूड़ीअ दुनिया जी छो ग्रणिती ग्रणे अथेई. मतां ...**

**३. रहु राज़ी हरिदमु राधा रज़ा ते,**
**रही बाक़ी थोरी गुज़री घणी थी. मतां ...**

सभ गुज़र! वेंदो त हरिको पर प्यारनि जी यादि त क़ायमु थी रहे न! प्रतीम भाऊ सतरामदासु तोलाणीअ जी यादि क़ायमु आहे. रोज़ु नित नेम संदसि तस्वीर ते संदसि पुटु भग्रवानु फूल मालाऊं चाढ़ींदो आहे. हरि साल संदसि यादिगिरीअ में संदसि जन्मदिनु १, आक्टोबर खां संदसि देहांत जे ड्रींहं १२ आक्टोबर ताईं साहिबनि जो पाठु रखायो वेंदो आहे. १२ ड्रींहं सांदहि कथा कीर्तनु थींदो आहे, चौंकीयूं लग्रंदियूं आयूं ऐं धणीअ दर हिन सचियारा, फ़िराख़ दिलि, फ़र्ज़ु शनास ऐं तौकली सज्रण लाइ आसीसूं घुरियूं वेंदियूं आहिनि.

हिन होत जे हली वञण खां पोइ जड्रहिं बि को किताबु पाण छपाईंदो आहियां तड्रहिं खेसि ई अर्पींदो आहियां - हीउ 'सिक जी सौग़ात' सिक ऐं स्नेह सां हिन दुलर्भ दोस्त खे थो अर्पियां. भाऊ सतरामदास सूफ़याणे सुभाव वारो साजनु हो, तंहिंकरे हीउ सूफ़ी कलामु खेसि अर्पणु सूंहे थो. केड्रो न खेसि शौंक़ हो सूफ़ी कलाम लाइ.

इन पुस्तक में १७५ कवियुनि ऐं सघड़नि जा शइर ड्रिनल आहिनि पर तंहिंजी माना इहा न आहे त इनहनि खां सिवाइ ब्रिया शाइर कोनहनि जिनि जो शइर ड्रेई न सघिजे. हिन खां पोइ ब्रियो बि किताबु ज़ाहिरु कंदासि जिनि में ब्रियनि शाइरनि जो शइर दर्ज़ु कंदासि. इन किताब में ई ड्रिसण में ईंदो हैदर ऐं गुमनाम जहिड़नि शाइरनि जो शइर छाख़ न करे सघियो आहियां. हिन पुस्तक पूरे करण खां पोइ गुमनाम जा शइर नज़र ते चढ़िया. वणियमि. हसरत रहिजी वेंदी जे हिन जो हिकु बि शइर हिन किताब में न अचे. हिते ई खणी थो संदसि हिक कविता ड्रियां. जंहिंजो उनवानु आहे हसरत.

**दिलि में ही रहिया दिलि जा अरमान, होठनि ते अची राम पंजवाणी निकरी न सघिया!**

**सीने में उथिया उद माद घणां,पर हर्फ़ बणी उड्डरी न सघिया. हामोश रही जे कंहिंजी ज़बान, छो मुंहिंजी ज़बान ख़ामोश रहे. तूफान अंदर उभिरिया त घणा, ब्राहिरि से छुटी छुटकी न सघिया.**

**ज़ाहिरु जे करियां मां साफु कयां, दर्दनि जो बयानु थी ड्राढो ज़्यानतंहिंखां मूं चयो भुलिजनि से सयान, लेकिन से भली भुलजी न सघिया लोकनि खां लिकायमि पाण लिकी, का ब्राफ न मूं ब्राहिरि भड़िकी लुड़कनि खे छिपायुमि ख़ूबि छुपी, पर इश्क़ छुपी छुपिजी न सघिया दुनिया खां रहियो कुझु कीन लिकियो, बदनामु थियुसि हरि जाहि फिको, अफसोस मगर गुमनाम पिरीं, समुझी बि मूंखे समुझी न सघियो.**

## साहित्यकारनि जी समालोचना
### (रेडियो ते तक़रीर)

..... ब्रियो पुस्तकु जो नज़र चढ़ियो आहे सो आहे प्रोफेसर पंजवाणीअ जो पंजनि सवनि सूफ़ियुनि जी आलीशान 'चूंड सिंधी कलाम' जो मजमूओ जंहिं ते नालो रखियो अथसि 'सिक जी सौग़ात'. हीउ पुस्तकु हिक भरपूर भंडारा आहे जंहिं में पवण ब्रिनि सवनि सिंधी शाइरनि जा गीत ऐं संगीत, वायूं ऐं काफ़ियुनि संदनि नालनि मौजूबि अल्फु, बे, तर्तीब वारा ड्रिनल आहिनि. सभ खां घणो मालु अथसि सिंध जी मजज़ोब शाइर सचल जी कलाम तां याने सज़ा सारा चालीह टुकर, ब्रियों नं. बेदल जी काफ़ियुनि मां याने ३९ काफ़ियुनि ऐं टियों नं. आहिनि शाह जूं वायूं ऐं काफ़ियुनि जिनि मां चोटीहों नं. पेशु कयो अथसि. हाणोकिनि शाइरनि मां घणे में घणो काफ़ियुनि ऐं गीत आहिनि दुखायल, भोज़ल ऐं ज्योति मां ऐं तंहिं खां पोइ बेवसि मां. घणा शाइर त अहिड़ा आहिनि जिनि जो कलाम या जिनि जी कविता अग्रे छपायल न आहे, या घटि में घटि आमु सिंधीयुनि जे ध्यान ते न आयलु आहे. तंहिंजी माना त प्रोफेसर पंजवाणी रीसर्च या खोजना करे इनहीअ सुघिड़ शाइरनि खे आम अग्रियां रखियो आहे ऐं सिंधी साहित्य जे मुख्य विभाग्र, लोक गीत, खे प्रसिद्ध करण में वड्रो हिसो वरितो आहे. ही सौग़ात बेशकि सिक जी आहे न त हूंअ केरु एड्री जाखोड़ करे गुमनाम अधु गुमनाम शाइरनि जो कलामु गड्डु करे ऐं तर्तीब वार ठाहे ऐं छपाए? चूंड सिंधी कलाम जो ख़िताबु अल्बतु मुंझाईंदड़ु आहे छाकाणि त हिन मजमूएमे कलाम में आयल कलाम हिक ई नूअ जो आहे, हिक ख़ासि ड्रस ड्रे थो, नई, हिकु साग्रियो साग्रियो अलापु आहे. अंग्रेज़ीअ में हिन कलाम खे चऊं लिरीकलि पोइट्री याने गीत - संगीत. हिन कलाम ऐं ब्रे कंहिं कलाम में बिल्कुलु घणो फ़र्कु आहे. हिन गीत संगीत कलाम में

सरोद खपे, लहर खपे तुरतु दानु खपे. इन कलाम में बहिर कोन्हे, ठहरु कोन्हे विस्तारु कोन्हे. इनहीअ करे ई घणी ग़ोल्हा बैदि सामीअ जे सिलोकनि. मां ब़ टुकर हिन मजमूमी लाइ हथ अची विया आहिनि ऐं आग़ा जहिड़े शाइर मां सज़ा सारा छह. वक़्तु आयो आहे जो असांजा पारुखू सिंधी शाइर या कविता खे जुदा जुदा हिसनि में विराहाईं ऐं वरन वरनि कनि. मसला के कविताऊं ब्यानी आहिनि, के कविताऊं ज्ञानी आहिनि, के कविताऊं बैरवानी आहिनि, के जज़बाती आहिनि. किनि में लहर आहे, किनि में ठहर आहे, के गीत आहिनि, के भाषण आहिनि, के एकांत लाइ आहिनि, के मजलस जो मोरु आहिनि. राम पंजवाणीअ जो हीउ पुस्तक सिंध जे लोक-गीत, लोक-कविता, लोक-संगीत जो ...... वड़े में वड़ो ख़ासि में ख़ासु संग्रह आहे. जे हरि कंहिं शाइर जो .... अहिवालु बि शामिलु हुजे त इन पुस्तक जो मुल्हु अञां वधीक थिए.

लालसिंह आजवाणी

## दादा दर्वेश जी दुआ
## ब॒ अखर

प्रोफेसर राम पंजवाणीअ जे हिन पुस्तक जो नालो आहे 'सिक जी सौग़ात'. हिक हिक राति में सिक जी सितार जो सुरु आहे.

मूं जड॒हिं राम पंजवाणीअ खे पहिरियों दफ़हो बु॒धो, सिंध जे फ़क़ीरनि जा के कलाम मजिलस में गा॒याईं, तड॒हिं मूं पाण खे चयो त, 'हिन प्यारे जे गा॒इण में केड॒ी न सिक आहे!' हिन पुस्तक जे हिक हिक 'काफ़ीअ' में इश्क़ नियारी ऊन्ही उकीर आहे. सचीअ सिंधु जे सूंहं ऐं शक्ति उनहीअ निर्मल, पाक, मुहबत में आहे.

भारतु प्यारो उन सचीअ सिंधु खां अञां वाक़ुफु न आहे. भारत प्यारे जे प्रसिद्ध संत, रामकृष्ण परमहंस खे सूफ़ी फ़क़रीनि ऐं दर्वेशनि जी परूड़ हुई : महाराष्ट्र जे संत तुकाराम खे बि परूड़ हुई. हिन पुस्तक में प्रोफेसर राम पंजवाणी सिंध जे दर्वेशनि जी ब॒ाणी 'कलाम' ड॒ेई केतिरनि न दिलियुनि खे छिके रहियो आहे ऐं प्यारे भारत जी केड॒ी न शेवा करे रहियो आहे! हिन पुस्तक खे जेकर मां कोठियां: 'आत्म विद्या जा जवाहर' जीअं आस्मानु तारनि सां घिरियलु आहे, हिकु हिकु तारो चिमिकंदड़ु मोती, तीअं ही पुस्तक सिख्या जे मोतियुनि सां जुड़ियलु आहे: सूफ़ी सिख्या जो हिकु शास्त्र आहे! इहा विद्या उतम विद्या, सूफ़ी विद्या, फेलसूफ़ीअ जे अखरनि में न थी अचे : इहा विद्या अचे थी चिमिके उन में, जंहिंजे जीवन, ज़िंदगी, हिकु रा॒गु ई आहे. सिक सचीअ में उहो प्यारो रोज़ु रहे, रोज़ु पुकारे, वरि वरि निहारे, हिक ड॒ींहु वञी पहुचे उन पारि, जिते महबूबु पियो मुशके, बंसरी वज़ाए, गोपी दिलियुनि खे क़दमनि में छिके, हिक 'सूरत' जे ध्यान में रहे, दुखयनि जे शेवा में रतलु रहे!

हिक ताज़े 'गीत' में मूं लिखियो हिन तरह :-

सूफ़ी सालिम सोई सोई जंहिं सूरत आहे साफ़ सुञाती,
पुस्तक प्रचा वर्क़ फिटा करे परूड़ त पंहिंजी पाती पाती!
इलमु छडे जो आशिक़ु थियो, ऐं थियड़ो इश्क़ में मस्तानु,
वहंवारु दुनिया जो सभु आ! त्यागी, इक सूरत में ई थियो हैरानु!
न हिंदु तुर्क, न पंहिंजो पराओ, कोई सुञाणे, कोई सुञाणे,
जाति सिफ़ात न कोई कोई, इक इक में इक पछाणे
महमुद, मौलवी, नानक यूसुफ, इक नाम निरंजन, गाए गाए,
मनसूर जी मस्ती पाए पाए, इक अल्लाह खे ई ध्याए ध्याए!
क़ुरान, अंजील ऐं गीता में, आ! जोई पढ़े पियो इन ऐलानु,
राम कबीर ऐं ईशा में, आ! पसे थो जोई पसे थो इक अहसानु!
पुस्तकु परिचा जो तुर्क करे, थो गाए गाए इक ओई ओ,
इक नग़ारो नूरी वजाए, हू! हू! हू! हू! हू! हू!

वधीक लिखण जी ज़रूरत कहिड़ी? शल प्यारे पंजवाणीअ ते ऐं संदसि सुंदरु कम ते वधीक वधीक आसीस थिए! शल फ़क़ीरनि ऐं दर्वेशनि, ऋषियुनि ऐं रूहानी रागींदड़नि, संतनि ऐं भगतनि निमाणनि जो पैग़ामु वधीक वधीक पखेड़े, परे परे पहुचाए!

हिक दर्वेश खे मां हिक डींहुं मिलियुसि, जड़हिं हिक भेण मुंहिंजे हथ खे हिक रेशमी धागे (रखिड़ी) सां बधो. अहिड़ो हिकु सुंदर रेशमी धागो (रखिड़ी) आहे 'कलाम', दर्वेशनि जी बाणी. अहिड़े 'धागे' शल 'सिंधी' ऐं 'भारती' काबू रहनि ऐं गडिजी दर्वेशनि जे कमल क़दमनि में सिरु झुकाए, देस खे नओं कनि, आबादु कनि ऐं वठी हलनि इन सचीअ आज़ादीअ जी राह में जंहिं लाइ भगल भारत पियो पुकारे, पियो निहारे!

पूना, ११-१२-१९५८

साधू वास्वाणी

## आत्मिक वारस जी आसीस

प्यारे दादा जा 'ब़ अखर' अव्हांखे मोकिलियां थो जीअं पढ़ियम, पाण खे चयुमि :- ही अखर न आहिनि. अखियूं आहिनि जिनि सां निहारे असीं पिणु कयूं दर्शनु दीदारु!

मां छा लिखां?

अव्हांजो विचारु कंदो आहियां त वरी वरी उन राजा जी यादिगिरी ईंदी अथमि जंहिं बाबत हिक भेरे श्री ईशा पंहिंजे शिशनि सां ज़िक्रु कयो. वडो राजा हो. खेसि केड्रो न मुल्कु हो! केतिरो न पैसो पदार्थ केड्रो न ख़जानो! हिक डींहुं खेसि विचार अचे थो त जेकर इहो ख़ज़ानो किनि न किनि सां वंडियां. पंहिंजनि क़ासिदनि खे मोकिले थो - चवेनि थो त 'वञीं रस्ते ते बीहो. जेके बि माण्हू लंघनि उनहनि खे चओ त राजा अव्हांखे सडे पियो!' क़ास्द रस्ते ते बीहनि था. रस्ते तां केतिरा पिया अचनि, केतिरा पिया वञनि. हिक हिक खे राजा जो न्यापो ड्रियनि था पर हिक हिक पंहिंजे कम में पूरो. को गायूं प्यो चारे: को गाड्री पियो हकिले : को पंहिंजे दुकान डे प्यो वञे : को बीमार स्त्रीअ लाइ डाक्टर प्यो ग़ोल्हे. नेठि शाम अची थी आ. हिकु बि ज़ुणो कोन थो मिले जो राजा वटि हले. राजा जे दिलि में दुखु : कंहिं सां पंहिंजो ख़ज़ानो वंडे?

अव्हांखे प्रभू पंहिंजे महिर में अजबु ख़जानो ड्रिनो आहे दर्वेशनि जी ब्राणी. सत्पुरुखनि जा अमृत वचन अव्हांजे दिलि में पिणु प्यासा प्यास आहे त इहो ख़ज़ानो किनि त किनि दिलियुनि खे पहुचायो. इहा प्यास सांढे अव्हां शहरनि में वञो था, ग़ोठनि में घुमो था, हिंदुस्तान जे अंदर ऐं हिंदुस्तान खां ब्राहिरि रटन करियो था, नाम जी धूम मचायो था. हिक जी सितार ते सुरु चाढ़े चाढ़े, पंहिंजे मिठे मधुर आवाज़ सां दिलियुनि ते जादू लग़ायो था. अफसोस! असां मां केतिरा प्यारा वक़्तु विञाइनि वेसर में. कूड़ा धंधा, कूड़ा कमकार जे तिनि में याद न आहे यारु! शल अव्हांजे सुंदरु कार्य ते अहिड़ी आसीस अचे जो किनि न किनि दिलियुनि

खे छिके वठी अचे दर्वेश दर! शल के उथनि जे फिटा करे सभु ख़फत ऐं ख़्याल, बुधनि ऐं बुधाइनि अंदर जा अहवाल!

अव्हांजे दिलि जी प्यास जो हिकु रूपु आहे ही अजबु पुस्तक 'सिक जी सौग़ात'. बेशंक अमूलह पुस्तकु आहे. चांदी ऐं सोनु, हीरनि ऐं मोतियुनि खां महांगो जिति खोलियां उति नैननि जी निहार, इक प्रीतम जी पचार, प्यास जी पुकार, निर्मल ज्ञान जी गुफ़तार! शल अव्हांजो पुस्तक हिक हिक सिंधी घर में वञे! ऐं शल हिक हिक सिंधी दिलि जे अंदर इन पुस्तकु जो पैग़ामु वाज़ुट जीआं वञे!

इहो पैग़ामु कहिड़ो? इहो पैग़ामु जो फ़क़रीनि ऐं दर्वेश संतनि ऐं सत्पुरुखनि सदी बे सदी ड्रिनो आहे :- उथो, जाग्गो! आओ लोको! ग़फलत छड्रियो! न वक़्तु विञायो वेसर में, पर यादि रखो त आहियूं यात्री उन निज देस जा जिति जोति जग्गी अबिनासी! पंहिंजे मानुखु देह जो मुलहु सुञाणो! तृषनाउनि खे तड़े कढो! अभिमान खां परे रहो! माया जा ग़ुलाम न बणिजो! नामु जपियो! नामु जपायो! दिलि अंदरि रखो सची प्यास प्रभूअ वास्ते, जंहिं प्यास सां अचे थी सची शेवा, सची हमदर्दी दुखियुनि ग़रीबनि वास्ते! पंहिंजी आत्मा खे, पंहिंजे रूह खे आबादु करियो. ऐं यादि रखो त ज़िंदगीअ जो ज़ेब आह प्यारे प्रभू लाइ, आह सिक सज्ञण लाइ! इन सिक में ब्रियो सभु कुझु विसारियो! इक महबूब ड्रे निहारियो! इक प्रीतम खे पुकारियो! इक सभाग्गे ड्रींहड़े पंहिंजे मानुखु जन्मु सफलो करियो!

इहो आहे पैग़ाम 'सिक जे सौग़ात' जो. शल हीउ ग्रंथ घणियुनि दिलियुनि खे धोड्रे, नओं करे! पाठकनि अंदर हीउ हिकु **परूड़** खोले त सचो जीवन आह प्यारु! सचो धर्म आह प्यारु! सची शेवा आह प्यारु! सचो परोपकार आह प्यारु! सचो जपु, सचो तपु, सचो साधनु आह प्यारु! सभिनी संतनि सत्पुरुखनि जी सिख्या आह प्यारु! प्रभू आहे प्यारु! प्यारु ही प्यारु! इनकरे शल कमिकार कनि प्यार में. रोज़ रतल रहनि प्यार में, न पंहिंजे फ़र्ज़ खां मूंहुं मोड़िनि, पर हिक ब्रिए सां वंविार कनि प्यार में! इक प्यारु इक प्यारु ग्गाइनि, पंहिंजे मन खे फ़ना करे परम पदु, निर्वाण पदु पाइनि!

**जशन वास्वाणी**

# मुहागु

जड्हिं अहमदशाह अब्दुली, फुरुलुटु कातर, पंहिंजो कटक वठी अची सिंधु ते कड़िकयो, तड्हिं सिंधु जा हाकिम कलहोड़ा पाण अदम पैदा थी विया, पर काहींदड़ खे मूंहुं, दीवान गिदूमल खे, ड्रियणो पियो. दीवान गिदूमल, के वड्रियूं संदकूं भराए, शाह वटि आयो. शाह, हेड्रियूं वड्रियूं पेतियूं ड्रिसी, निहायत गद्‌गद् थियो. जड्हिं पेतियूं खोलियूं, तड्हिं संदसि ताज़ुब ऐं गुस्से जी हद न रही, छो त पेतियुनि में हीरनि जवाहरनि जे बजाए, हुई मिटी ऐं धूड़ि! दीवान गिदूमल समुझाणी ड्रेई चवे त 'असां जे लाइ क़ीमती वस्तु आहे दर्वेशनि ऐं फ़क़ीरनि जी पाक अस्थाननि जी ख़ाक'.

अहमदशाह अब्दुलाई जो गुस्सो गायबु थी वियो ऐं हुन हुकुम कयो त फ़क़ीरनि जी पवित्र पिणीअ खे मां ड्रींदड़ हाकिमनि खां को बि नज़रानो वठण में न अचे. जड्हिं दर्वेशनि जे अस्थाननि जी मिटीअ जो एड्रो मानु आहे त छा मानु हूंदो ख़ुदि दर्वेशनि जो ऐं छा हूंदो मानु इनहनि जे कलाम जो?

सिंधियुनि जो आला ख़ज़ानो आहे सिंध जे दर्वेशनि जो कलाम, जो असां खे धन पदार्थनि खां हटाए, रब जे राह ड्रे वठी थो वञे. असां जे दर्वेशनि जे कलाम में सिंधीअ सभा जा उचा उमंग, आदर्श ऐं आशाऊं समायल आहिनि. कंहिं साहिब सचु चयो आहे त 'जेकड्हिं कंहिं बि क़ौम जी आत्मा जो दर्शनु करिणो हुजे त उहो उनहीअ क़ौम जे माण्हू जे कलाम मां प्राप्त करे सघिबो ऐं न उनहीअ जे ठाहियल क़ानून ऐं क़ायदनि मां.'

मूंखे निहायत ख़ुशी आहे जो प्रोफेसर राम पंजवाणीअ, जीअ खे जफ़ाऊं ड्रेई, असांजे लाई ख़ज़ाने जी हिफ़ाजत कई आहे ऐं हिन 'सिक जी सौग़ात' में इहे काफ़ियूं ऐं गीत ड्रिना आहिनि जे सिंधी सालिक़नि ऐं संतनि जा उचार्यल आहिनि. राम हिक टोब्रे वांगुरु सिंध

जे शाइराणी महाराणी मां बि बे बहा मोती चूंडे कढिया आहिनि. हू पाण बि हिकु ख़ुशु आवाज़ु ग़ाईंदड़ु आहे ऐं संदसि आवाज़ में सिंध जे दरबारियुनि जे कीर्तननि ऐं दरगाहनि जी चौंकियुनि ऐं सोज़ ऐं सिक समायल आहे.

सिंधु जे सरज़मीन ते तसूफ़ जेके गुलज़ारियूं लग़ायूं तिनि जी सुगंध कड़हिं बि वञण जी न आहे. हक़ जी ग़ोल्ह ऐं हर चीज़ में संदसि सूंह पसण खे तसूफ़ थो चइजे. सिंध जे सूफ़ी शाइरनि जे कलाम में हक़ ऐं हुस्न जा हुका आहिनि, सिंध जा माण्हू क़िनाइत, तोकल ऐं सादगीअ जा पूज़ारी आहिनि. हिननि खे एकांत ऐं गोश नेशीअ सां ख़ासि मुहबत आहे. ग़ोठड़नि में रहंदड़ देहाती क़ुदरत सां रिहाणियूं. हिननि खे जानब जी जुस्तजू ऐं साईंअ जी साराह करण लाइ काफी फ़ुरसत हूंदी आहे. हू पंहिंजियूं शिकायतूं रब खे रीझाइण में सरफु कंदा आहिनि. हिकु अग़ेई संदनि सुभाउ अहिड़ो, वेतर जो वक़्तु बि वक़्त सिंध ते धारियुनि क़ौमुनि जा हमला पिए थिया, तिनि खेनि ब़ाहिरें गोड़ बखेड़े खां बिनह बेज़ारु करे छड़ियो, ऐं अंदर में झाती पाइ महबूब जी मुशाहदे माणण लाइ मज़बूर कयो. धीरे धीरे, सिंध जे सभ्यता में ब़ियूं ब़ाहिरियूं तहिज़ीबूं बि जुज़ब थी वयूं ऐं इनहीअ मेलाप मां हिकु गुलदस्ते मिसल संस्कृती वजूद में आई.

सिंध जो सूफ़ियानो कलामु जड़हिं ओतारनि ऐं राग जे मजलसि में ग़ायो वेंदो आहे, तड़हिं ब़ुधंदड़नि जे दिलियुनि खे हिकु अजीबु रूहानी राहत ईंदी आहे. सिंध में राग़ जूं मजलसूं संझा खां शुरू थींदियूं हुयूं ऐं प्रभात जो पूरियूं थींदियूं हुयूं. सारी राति ब़ुधंदड़नि ऐं ग़ाईंदड़नि ऐं ख़ुदु साज़, सुबुहां जी साराह में महू हूंदा हुआ. शुक्र आहे जो विरहाङे खां पोइ असां इहा परि साणु खणी आया आहियूं, छो त वेदांत ऐं तसूफ़ जी सिख्या असांजे रग़ रग़ में समायल आहे.

वेदांत जे प्राचीन फ़लसूफ़ी जो ब़ियो नालो तसूफ़ आहे. सिंध जे शाइरनि जे शइर मां ज़ाहिरु आहे त इनहनि ब़ियनि सभिनी धर्मनि जो ज़ोहर जुज़ब कयो आहे. शाह, सामी, सचल, बेदल, दिलपत ऐं रोहल जूं वाणियूं इहा शाहदी थियूं ड़ियनि. हिननि महापुरुषनि जे कलाम में,

सिंध में आयल अनेक संस्कृतियुनि जी मिलियल झलक पेई ड्रिसण में अचे. वेदांत जो प्रभाउ, अर्बी तहिज़ीब जो असरु ऐं ईरानी शाइरनि जी आज़ाद कलामीअ जी झलक इनहनि बुज़ुंग शाइरनि जे कलाम मां ज़ाहिरु आहे. अरबिनि जे अचण खां पोइ आहिस्ते आहिस्ते, तसूफ़ सिंधु में ज़ोर पकिड़ींदो वयो छो त तसूफ़ में सादगी क़िनाइत ऐं पवित्रताईअ जे आदर्श ते ज़ोरु डिनलु हो. वेदांत ऐं ब्रोधी नेमनि ते हलंदड़ भाण्हुनि खे तसूफ़ जा असूल निहायत वणिया ऐं ईरानी शाइरनि जे इतिहास ड्रियण ते हू अची गीतनि में छिटिकिया, जिनि में संदसि अहिसास, असूल ऐं आरज़ू समायल हुआ. इहे रमज़ भरिया राग॒ हरहंधि ग॒ाइजण लग॒ा ऐं इलाही आवाज़ जो आलाप जहिड़ो खेतनि मां बु॒धण में आयो, तहिड़ो अवतारनि मां.

सूफ़ी मत जी आज़ादी वारे सिधांत, केतिरनि तंगि दिलि तहज़ीबनि खे ताउ ड्रेई छड्रियो, जंहिंजो नतीजो इहो निकितो, जो सोरहीं सदीअ में समे सरदार बिलावल खे घाणे में पीड़ायो वियो ऐं अरड़ींह सदीअ में शाह इनायत खे कुहायो वयो. सूफ़ियुनि खे वड्रो सदमो रसियो पर हुननि सच जी रहा न छड्री, तां जो पंजाह साल पोइ, जड्रहिं सचलु सरमस्त अनाअलहक़ जो नारो हयों तड्रहिं ख़ुदि ख़ैरपुर जो वाली मीरअली मुरादख़ान अची संदसि मुरीद थियो. शाह साहिब सतिरीहं सदीअ में जेके रूहानी राज़ पंहिंजे पोशीदे नमूने में समुझाया, से पोइ सचल सरसमस्त खोले खोले बु॒धाया ऐं सामीअ त साफ़ु चई ड्रिनो :
'वेदनि जी वाणी, सिंधीअ में सुणायां'

सिंधु जे जलावतंयुनि , सिंधु छड्रण खां पोइ, पाण सां अमूलह ख़ज़ानो आंदो आहे. मूंखे ख़ुशी आहे त इनहीअ जी संभाल चड्रीअ रीति पेई थी. जड्रहिं संभालींदड़ थिया डा. रोचलदास, साधू वास्वाणी, निमाणो फ़क़ीरु ऐं राम पंजवाणी पारां तड्रहिं असां खे कहिड़ो डपु? ब्रिया बि सवें हज़ारें पिया तसूफ़ ऐं वेदांत जी जोति जग॒ाईंदा अचनि. 'सिक जी सौग़ात' इनहीअ ग॒ाल्हि जी साबिती थी ड्रिए. केतिरनि कवियुनि जो कलामु हिन किताब में कठो थियलु आहे. फ़ख़ुर पियो थे, उमंग पिया अथनि ऐं पढ़ण सां वेतर बि पक थे थी त तसूफ़ हिकु तरीक़ो आहे, ज़िंदगीअ जी राह आहे. सूफ़ी लाकोफ़ी आहे, वैरु वहेणो

न आहे, कटर जा कणा अखियुनि में कोन अथसि. इन जे अंदर में ईर्खा कान्हे हू हरि कंहिं जो भलो चाहींदड़ु, हरि शइ में जानीअ जो जलवो पसंदड़, हर हाल ते राज़ी रहंदड़ु, वड़ी दिलि वारो दर्वेशु आहे, ऐं हिन खे इन्सानी जुज़बनि जो वड़ो क़दुरु आहे. हिक कशमश वारे ज़माने में, तसूफ़ ई ततल दुनिया ते ठारु विझी सघे थो छो त तसूफ़ जो पैग़ामु ऐं उपदेशु आहे प्रेमु, विश्वासु, पाकीज़गी ऐं सादगी!

'सिक जी सौग़ात' जहिड़ा ग्रंथ पढ़ी, शल असांजे हृदे में, इहे उत्तमु गुण सदेव प्रेवशु कंदा रहनि. हिकु वारु वरी बि प्रोफेसर राम पंजवाणीअ खे धन्यवाद थो ड्रियां.

क.ल. पंजाबी

मुंबई, २० डिसंबर, १९५८ (आए.सी.एस)

## आरज़

हिंदुस्तान में अचण सां दोस्त पंजवाणीअ 'सिंधी कलाम' छपायो हो, जंहिं जी दीपाचीअ जे आख़िर में मूं लिखियो हो : पिछाड़ीअ में प्रो. साहिब खे वेन्ती आहे त बाक़ी जेकी लिकल लाल वटसि आहिनि से पधिरियूं करे, ऐं पंहिंजे अदिबी खोजना जो साउ ब्रियनि साहित्य प्रेमियुनि खे बि वठाए उन संग्रह में चौरासी काफ़ियूं हुयूं.

मज़ाण मुंहिंजो अर्ज़ु आनाए सघई 'सिंधु जी सूखड़ी' शाइय कयाईं, जंहिं में १०२ शाइरनि जे अल्फु ब वार नालनि हेठि धक घटि ३०० काफ़्यूं ऐं क़लाम दर्ज कयल हुआ. इहो किताबु बि हथूं हथ खपी वियो, तंहिंकरे उनखे वधाए हाणे 'सिक जी सौग़ात' नाले टियों मजमूहो पधिरो करे रहियो आहे, जंहिंमें १७५ शाइरनि जा शुमार हज़ार कलाम छपियल आहिनि.

तहक़ीक, प्रीतम पंजवाणीअ वटि लोक कविता जो को अथाहु खज़ानो आहे, जो खुटण जो न आहे. शाल न खुटे, बल्कि वधंदो वीझंदो रहे!

मुंबई : १०-०१-१९४९ ई. (प्रोफेसर) मंघाराम मल्काणी

# अभ्यासीअ जा इशारा

'जोशौं जलाए जिस्म खे जीअ में के पाइजि झातिड़ियूं'

(बेदल)

हिक आला दर्जे जो शाइर थो फरमाए त 'शैर जो दफ्तर रूह जो बागु आहे. उन जे हर वर्क़ वराइण सां, हिक नएं टिड़ियिल गुल जो मुशहिदो मेसर थो थिए'. सिंधी शइरनि जे कलाम जे हक़ में बि इहें चइजे त रवा आहे. सिंधी शाइर जे चमन जो दीदारु, दिलियुनि खे शगफ़त (टिड़ियल) ऐं बहार कयो छड़े.

बुल्बुलियूं हज़ार आहिनि, तरानो हिकु. सिंधु जा सूफ़ी शाइर बि घणेई आहिनि पर संदनि तंवार हिक आहे. महबूब हक़ीक़ीअ जे इश्क़ में हिननि पंहिंजियूं दिलियूं कबाब करे छड्यूं आहिनि ऐं रगूं रबाबु. जीअं बुलबुलु गुल जे शौक़ बेखूद थी ग़ाईंदी आहे, ऐं संदसि हुसुनु पसी, मस्तीअ जे आलम में अची रक़्स (नाचु) कंदी आहे तीअं असांजे शाइरनि, अज़ली (आदि) माशूक़ जे फ़राक़ में तोड़े संदसि मशहदो माणींदे, पंहिंजो वजूद विञाए ग़ायो आहे. संदनि कलाम बुधंदे असांजे दिलियुनि ते हिक अजीबु कैफियत (हालति) तारी थी वञे थियो. उन वक़्त रूहानी ख़्याल वारनि जा क़लब, वजूद ऐं हाल में (मस्ती) अचे, रड़नि ऐं फथिकनि था.

जीअं माखीअ जी मखि, हर बिरख (पन) व गुल मां रसु चखे, पंहिंजे ख़लूतख़ाने में वञी, 'हलवाई सदरंग' (सौ क़िस्म जूं चाशिनियूं) वठे, तीअं सूफ़ी बि हर धर्म ऐं ग्रंथ जोहर, पंहिंजे बातुन (अंदर) में जुज़ब करे, पंहिंजे एकांत जे ओतारे में, वहदत जे प्याले मां ग़ैबी साक़ीअ जे हथां ख़्याल जूं सुर्कियूं थो पिए. नेठि हू साक़ीअ सां हिकु थी पाण साक़ी थियो पवे ऐं मुहबती मैख़ाने जे मुश्ताक़नि खे जामन ते जामु पियो पियारे. सिंध जे सूफ़ी शाइरनि जे कलाम में अज़ली ख़ुमार आहे.

हकु हक़ीक़ी जे हुस्न खे हर रूप ऐं हर रंग ड्रिसण खे (तसूफ़) थो चइजे. क़दीम फ़ेलसूननि, हक़ीक़ी जुस्तजू थें (ख़्यालु) सड्रियो आहे. 'जिनि खे इश्कु अमीक़ जो, से खिलवत ख़्याली (शाह). इहो (ख़्यालु) दिमाग़ी जहन ऐं ज़काउ नाहे, जानब जो जमालु, जिस्मानी अखियुनि जे पसण खां परे आहे ऐं अकुल जो आदाकु समुझु जे दाइरे खां ब्राहिरि. उन जो मुशा अदो अंदर जे सजदह गाह में मौजूद आहे. सूफ़ी आरफ़ उनहीअ सजदह गाह जे सहन में (अङण) में ख़ीमो खोड़ियो वेठा आहिनि ऐं उतां हरि कंहिं खे 'हकीक़त जी हकल' पिया कनि. हू हस्तीअ जो क़ैदु भज़ी, उनहीअ आलम में मंज़िल अंदर आहिनि, 'जिते नको परीअ पेर, न को बुहि बशर जी' (बेदल) हिननि जो सेर, आदम खां अग्रु वारो आहे ऐं संदनि विलायत उहा आहे, जिते न माह जी मूरत आहे, न सूरज जी सूरत, जंहिं जंती गुलशन मां इन्सान जे रूह जो पखी, हिन राहे गाह (क़ैद) में आयो आहे, तंहिंजी यादि असां खे सिंध जो सूफ़ियानो कलाम थो ड्रियारे. सिंधु जो वतनु असां खां वयो आहे, पर विसिरियो नाहे. साग्रीअ तरह आलम आरिवाह असांखां वियो आहे, पर सूफ़ी शाइरनि जे कलाम जे बरकत सां असांखे असांखे उहो विसरिणो नाहे.

मुहिंजे दोस्त पंजवाणीअ जी 'सिक जी सौग़ात' में हक़ीक़ी तोड़े, इख़लाकी ख़्यालनि जो समायलु आहे. असां मां जेकी बि आला वसफ़नि खां आवारह (वांझियल) थिया आहिनि, तिनि खां उन मां पूरी रहबिरी वठणु घुरिजे. मुहब पंजवाणीअ जूं अदिबी तोड़े मौसक़ी (संगीत जूं) सिरगर्मी, आज़ारियल दिलियुनि जे ख़िज़िमत में तसली ऐं तस्कीन जो सामानु पेशु थियूं कनि. संदसि हेठिएं बैत में जा हिदायत समायल आहे सा हिन बंदे लाइ शमा राह आहे.

'राम हिन जी राह में, कोने लिबासनि जो लिहाज़,
दिलि ड्रिसी दिलबर निवाज़ियो, तोड़े कफनी पोश होसि.'

(प्रो. कल्याण आड्रवाणी)

# साहित संगीत संगम

यारह वरियह अगि़में असीं शान मान सां जिंदह रहण जी तमना खणी, भारत में आयासीं. इन आरज़ूअ जे बरसवाबी लाइ असां वटि मूड़ी कहिड़ी हुई? घरु घाटु ऐं धंधा धाड़ी त जन्मभूमीअ सिंधु में छडे़ आयासीं. नईंअ भूमीअ में, नएं सिरि पाड़ूं कहिड़े आधार ते हणूं? सिंधीपिणो क़ायमु रखंदे, नयूं पाड़ूं हणणु मुमिकिनि आहे? ज़िंदह रहण लाइ असां खे सिंधियत जी आहूती त न ड्रियणी पवंदी? इनहनि ऐं अहिड़े क़िस्म जे अनेक सुवालनि सिंधी अग्रवाननि, आक़ुलनि ऐं अकाबरनि खे मुंझाए छड्रियो. कुझु वक़्तु त इएं पे नज़र आयो त सिंधियत जी नाव खे सुतड़ हथु न ईंदो ऐं ईहा पक ई पक कतड़ ड्रांहुं हाकारींदी रहंदी. सखाँ बिना सिंधियत जी ब्रेड़ी, लड़, लहरुनि ऐं लसलेट में लुढ़ंदी रहे, तूफ़ानी वीरुनि जूं थफड़ूं खाईंदी रहे. उणटीहीं ऊंदाही ख़त्मु थियण जो नालो ई न खणे.

झूना ऐं आज़मूदेगार मांझी, मुंझी, वझि रखो पासीरा थी वेठा. उनहनि मां किनि ग़ाण ग़ुणियनि हिमथ जो संदरो न छोड़ियो. मर्द मुजाहिद थी पंहिंजी पंहिंजी जाइ ते मुहकम रहिया. इन विच में नवां मांझी बि सिर सट में रखी मैदान अमल में आया. साहित्य ऐं संस्कृतीअ जो विकासु सिंधियत जे नाव जो नओं सखां बणिजी पियो किनि मांझी मुड़सनि साहित्य खे संभालियो, किनि संस्कृतीअ खे. सिंधियत जे डूंडी हिक दफ़हो वरी सुतड़ ड्रांहुं हाकारण लग़ी, हाकारींदी रही.

जसु आहे उनहनि सभिनी साहित्यकारनि ऐं कलाकारनि खे जिनि सिंधियत जी ब्रेड़ीअ जो मुखु मोड़ियो. वधीक जस जो भाग़ी आहे प्रोफेसर राम पंजवाणी जंहिं ब्रिन्हीं मोर्चनि ते बख़ूबीअ पाण मोखियो आहे. पंजवाणी साहिब क़लम, फ़सीह ज़बानी ऐं सभ खां वधीक संगीत द्वारा सिंधियत जो परचमु बुलंदु रखियो आहे. अज़ु उन परचम लाइ न सिर्फ़ु सिंधियुनि खे बल्कि बेशुमार ग़ैरसिंधियुनि खे साग़ी इज़त आहे, श्रद्धा आहे.

पंजवाणीअ साहिब जूं साहित्य ऐं संस्कृतीअ जे खेत्र में कयल ख़िज़िमतूं भुलजण जूं न आहिनि. हिक ख़िज़िमत लाइ त हू साहिबु

असांजे दिली धन्यवाद जो मसतहक़ु आहे. हू साहिबु वक़्त बि वक़्त सिंधी काफ़ियुनि ऐं रागनि जो ज़ख़ीरो कठो कंदो रहे थो ऐं आम अगियां पधरो कंदो रहे थो. अवलि 'सिंधी कलाम' पूरी पोइ 'सिंधु जी सूखड़ी' ऐं हाणि 'सिक जी सौग़ात'. सिंधी कलाम ऐं सिंधु जी सूखड़ी चइजे खणी गुटिका हुआ, 'सिक जी सौग़ात' ते हेड्डो सारो ग्रंथु आहे!

'सिक जी सौग़ात' असां लाइ त फ़ख़ुर लाइक़ु आहे ई पर असां खां वधीक फ़ख़ुर लाइकु रहंदी असांजी आईंदह नसल लाइ.

'सिक जी सौग़ात' हिकु क़ीमती किताबु आहे, केतिरियुनि गाल्हियुनि में लासानी आहे सिंधी साहित्य में पहिरियों दफ़ो अटिकल १२०० कलाम हिक ई मजमोए में सिक जी सौग़ात बणिजी पिया आहिनि. इन में क़दीम दर्जे जे बुज़ुर्गनि शाइरनि जो कलामु आहे त जदीद दौर जे नौजवाननि शाइरनि जा नज़म बि आहिनि. इन में नालेरनि कवियुनि जूं कविताऊं आहिनि त घटि मशहूरु शाइरनि जूं रचनाऊं बि आहिनि. के शाइर अहिड़ा बि आहिनि जिनि सां मुंहिंजी परिचय 'सिक जी सौग़ात' मैरिफ़त थी आहे. इन में हिंदू शाइरनि ख़्वाह मुस्लमान शाइरनि, भारती ख़्वाह पाकिस्तानी - एकड़ ब्रेकड़ खे छड्डे सभिनी सिंधी शाइरनि शरकत कई आहे. 'सिक जी सौग़ात' जी सब खां वड्डी ख़ूबी आहे त सभु कलाम सलीसु आहिनि, ज़िबान ते सवलाईअ सां चढ़ी सघनि था ऐं गाए सघिजनि था. मूंखे यक़ीनु आहे त वक़्त गुज़िरण सां 'सिक जी सौग़ात' जो क़दुरु वधंदो रहंदो ऐं ईहो मौलफ़ लाइ जीअं पोइ तीअं वधीक खां वधीक जसु खटंदो रहंदो.

हहिड़े क़िस्म जे मजमोए जी सिंधी साहित्य में वरिहियनि खां ज़रूरत हुई. पंजवाणी साहिब इहा वक़्ताइती ज़रूरत पूरी कई आहे. जंहिं लाइ सिंधी पुश्त बि पुश्त हिन जा थोराइता रहंदा.

मां 'सिक जी सौग़ात' लाइ पंजवाणी साहिब खे दिलि सां दादु ड्डींदे ईहा उमीद थो रखां त सिंधी शइर जे सागर में वक़्त बि वक़्त टुब्रियूं हणी, हू साहिबु अमुलह मोती चूंडे, यकिजा जमाह करे, सिंधी साहित्य जे प्यार वारनि अगियां रखंदो रहे, खेनि उत्साहु ड्डियारींदड़ रहंदो ऐं यादि ड्डियारींदो रहंदो त अहिड़ा सिंधी शाइर बि थिया आहिनि जे कंहिं बि ब्रोलीअ जे शाइरनि सां बरिमिचे सघंदा.

**कांदेवली, मुंबई** **०३-१२-१९५८** **गोबिंद माल्ही**

# सिक जी सौग़ात

## (अलफु)

### (१ अलण)

तुंहिंजे गंज में आ कमी कान काई
तुंहिंजो दरु सख़ा जो खुलियलु आ सदाई

१) करीं शाह पियादा ड्रीं पियादनि खे शाही
जेका तुंहिंजी मर्ज़ी थींदी नेठि साई

२) तुहिंजे दर तां सुवाली वञे कीन ख़ाली
जहिड़ी आस जंहिंजी तहिड़ी तूं पुज॒राई

३) वेचारा विरह में सड़िया सव सिकनि था
उन्हनि जे अंदर में तो ई लिंव लग॒राई

४) अलण आह ज़ारी करीं छो हजर में?
जड्रनि जो जियापो जानिबु आहि जाई.

### (२ आइल)

नाले धणीअ जे ब्रेड़ो तारि मुंहिंजो,
निधरि आहियां निमाणीं आहे आधारु तुहिंजो.

१) आहि ड्राढी चंडी दुनिया दुरंगी,
बिना धणीअ पंहिंजे न को यारु कंहिंजो
नाले अलख जे ब्रेड़ो तारि मुंहिंजो.

२) ड्राढो आहि सतायो दुनिया जे गर्दिश,
मुंहड़ो मटायो मिटनि माइटनि
नाले अलख जे ब्रेड़ो तारि मुंहिंजो.

३) दर तुंहिंजे जो साइलु अर्ज़ुदारु आइ॒ल,
करि ब्राझ ब्रान्हीअ ते ड्रे दीदारु पंहिंजो
नाले अलख जे ब्रेड़ो तारि मुंहिंजो.

## (३ आसर)

१) लाग़र्ज़ साणु लाग़ामि, लाशिकु मूं नींहुं लातो,
जेड्रियूं दुआ कजो तां, निबिही अचेमि नातो.

२) हिन बहर बेहदीअ में, कान्हे कंधी पुज्रण जी,
वेई परूड़ भुलिजी, जंहिं वेर पेरु पातो.

३) कड़िका पवनि कुननि जा, वोरुनि जे वहिकिरे खा
लहिरुनि संदी लड़ट खां, ब्री सुधि न ड्रींहं रातो.

४) वांदो[1] विरह[2] वझल खां, हीअ हाइ पल न आहियां,
ड्राढो फिराकु ड्रुखियो, हिकु अहिंजु ब्रियो[3] अरातो

५) हीला ब्रिया वसीला, चित तां वियामि[4] चेला,
अग्रें सिरु ड्रियण रे, चारो न होमि ज्रातो.

६) मुश्किल में आहि मुश्किल, ही इश्कु हड्डु[5] अरांगो,
तंहिं हाल साणु मस मस, मूं तां सज्रण सुञातो.

७) अशर्फ़[6] कयोड़ आदम, [7]अबलेस कींअ बछाईअ?
चे: आह आज़िमूदो रहु इश्क़ में[8] बुलातो.

८) लाए बिरह बंदे सां, छो पाण खे छुपायुइ?
चे: दिलि मंझां[9] द्वैती , लाइ तूं ड्रिसु लबातो.

९) आशिक़ु मदामु मच में, मंझि पिर्त तो पचनि था,
चे: सुख इतेई ज्राणिजि, हरिगिज़ु न थे हुजातो.

१०) तूं थो करीं कराईं, बेवस जो ड्रोहु कहिड़ो?
चे: नफस मन निजस जो, रथ रदि कई न का तो.

११) तूं पाकु ऐं पवित्र हरु रंग छो समाईं?
बेअंत जे बयान में, थी बे ज़िबां ब्रातो.

१२) नाहे मजाल कंहिंखे, कुदिरत जो खेलु समुझे,
तूं बहिर उन मां कुझु भी, पीतो न आहे धातो.

१३) गुस्ताख़ु थी न गोला, पुछु ग़ुछु छड़े सबुरु करि,
आहे इयां तुंहिंजो, हित रोज़ु नामो खातो.

१४) आहे उम्मीद तुंहिंजी, मंझि महिर सच मिलण जी,
चे : कंबु, कति, अदबु रखु, आसरु न थिजु आतो.

## (४ ईसर)

जंहिंखे रांवल रमज़ चखाई, सा दिलि करंदी माही माही.

१) इश्क़ माही दे कीता उदासी, बिरह लायां तिनि बाहियां,
हीर रांझो दे, लिंव लिंव लायां, ड्टींदे मुल्क गंवायां,
ब्री हरिका, माउ पीउ दे ज़ाई, हीर इश्क़ दे ज़ाई.

२) सुहिणीअ खे सिक साहिड़ जी, जेका घरि में मूलि न घारे,
सुरिकी पीताई सोज़ जी, वल[1] वल पाण संभारे,
बुड़ंदे बुड़ंदे मेहर कयाईं, अधु दरियाह विचि आई.

३) ड्रेर त मुईअ सां ड्राढु करे विया, करहलि केच क़तारे.
काणि पुन्हल जे पेरें पियादी, काहिल रोज़ु कूकारे,
लग़सि बंद बलूचियां वालियां, क़ादिर क़लम वहाए.

४) कोट में आणे क़ैद कई तो, कंहिं ड्रमर सां ड्र थाणी,
जीअरे मिलां शाल मारुनि सां, साहिब थींदुमु साणी,
मुरिकी मुल्क मल्हायां पंहिंजो, खीरु खंडू गडु खाई.

५) लीलां लुड़ी लाडु कयो, जंहिं हार ते वरु मटायो,
मूमल मुठीअ पंहिंजे माणे, सूमल राउ सुम्हारियो,
पाए मयारूं ग्रिचीअ ग़ारियूं राणे रोज़ु निवाई.

६) ज़लख़ा यूसफ़ काणि जोग़ियाणी, जंहिं रोई हाल विञाया,
इश्कु लैला दे, मजने अंदर, भड़िका[2] बिरिह बछाया,
सूरीअ ते मन्सूरु मारायुइ, घति फ़िक्र दे फाहे.

७) सौदा वणिज वापार घणां, हिकु इश्कु न मुल्हु विकाए,
ईसर अर्ज़ु इहोई आहे, जो दमु दमु रोज़ु लीलाए,
सिरु ड्रेई सुल्तानु थियासे, चारण तंदुरी वज़ाए.

## (५ अमीदु अली)

वरी न ईंदइ[1] वार, नचु नाचू अथी वेल नचण जी.

१) हरि कंहिं वेल वज़नि थियूं साईं,
कंझूं मंझि कपार,
नचु नाचू अथी वेल नचण जी.

२) सुरिमो पाइजि सिक जो साईं, अखि अदब जी धारि,
नचु नाचू अथी वेल नचण जी.

३) पेशिवाज़[2] पहिरिज प्रीति जी साईं, ग़हिणा मिड़ेई ग़ारि,
नचु नाचू अथी वेल नचण जी.

४) फेरी ड्रिजु फ़िक्र जी साईं, चुस्त रखी चौधारि,
नचु नाचू अथी वेल नचण जी.

५) अमीदु अली चवे ब्रियो नचणु अजायो, बिना पिरींअ पचार,
नचु नाचू अथी वेल नचण जी.

## (६ आग़ा)

तेड्रा मकान वाह वाह, जिति किथि वसीं बि तूं.

१) चलो त आस्मानु वेखूं, आग़ा हली पसूं,
आस्मान मिड़योई तारा, तारनि जो चंड्रु बि तूं.

२) चलो त बाज़र वेखूं, आग़ा हली पसूं,
बाज़ार मिड़योई आदमु, आदम जो दमु बि तूं.

३) चलो त दरियाह वेखूं, आग़ा हली पसूं,
दरियाह मिड़ोयोई लहिरूं, लहिरुनि जो लालु तूं.

४) चलो त मंदरु वेखूं, आग़ा हली पसूं,
मंदरु मिड़योई मूरत, मूरत जी सूरत बि तूं.

५) चलो त किशिती[3] वेखूं, आग़ा हली पसूं,
किशितीअ में रहे राहिबु[4], राहिब जो साहिबु तूं.

## (2)

चोरिजि ख़्याल सां,
इहा तार तूं प्यारा, चोरिजि ख़्याल सां.

१) कतणु ज़ाण कान्हे पाण, करियां वसु वड़ाई,
हहिड़ा हाल जीअ जंजाल, विथी वारि न काई,
चोरिजि ख़्याल सां.

२) चरिखो चूरि कयां ज़रूर, फोरी मूं न मुंझाई,
कतिया कीअं चवां हीअं, पवणी आहि पराई,
चोरिजि ख़्याल सां.

३) आग़ा ओरि चरिखो चोरि, छड्डे पचर पराई,
सग़ो साह जीअं आहि, कंदा पाण पूराई,
चोरिजि ख़्याल सां.

## (3)

मोर मुकुट घनश्याम, अची राधा सां करि रीझ का,
मोर मुकुट मुंहिंजा यार,

१) घोट घणियूंई गोपियूं तोखे, तूं ई मुंहिंजो भतारु,
अची राधा सां करि रीझ का.

२) तुंहिंजे ड्रिसण लाइ श्याम प्यारा, हृदो कयुमि हरिद्वारु,
अची राधा सां करि रीझ का.

३) तूं आग़ा जो, आग़ा तुंहिंजो, सांवला सरदार,
अची राधा सां करि रीझ का.

## (4)

हरी हरी हरि नाम, हृदय शोर मचाया है.

१) कृष्ण लक्षमण गोतमु ज्ञानी, सीता राम भी तुम हो प्रानी,
जल जमुना का पीले जामु, सत्गुरु सबकु सिखाया है,
हरी हरी हरि नाम.

२) सुनो ड़े बिनती साधू मेरे, बाति सची ना मेरी तेरी,
वह ही कुफ़र है वह ही इस्लाम, अन्त न ये किस पाया है,
हरी हरी हरि नाम.

३) राम रहीम का सारा लेखा, चेले चरन गुरु में देखा,
गुरु तेरे गुगुदाम, आग़ा अलखि जग़ाया है,
हरी हरी हरि नाम.

## (5)

साधु सङ्डाइणु आहे सौखो, रामु रीझाइणु औखो आहि,

१) साधुनि जो संगु ज़ाहिर सौखो, कुरुबु कमाइणु औखो आहि,
राम रीझाइणु औखो आहि.

२) गंगा जमुना जावणु सौखो, मन खे मारणु औखो आहि,
राम रीझाइणु औखो आहि.

३) शख़्री पीरी सभुकुझु सौखी, सख़ी सङ्डाइण औखो आहि,
राम रीझाइणु औखो आहि.

४) आग़ा इश्क़ु थी अवलु सौखो, नींहुं निभाइणु औखो आहि,
राम रीझाइणु औखो आहि.

## (6)

खणी छड़ि आसिरो गुल तां चमन छड़ि ऐं उड़रु बुलिबुलि,
हज़ारें जे पढ़हीं जादू न तुंहिंजो गुलु थिए बिल्कुलु.

१) चमन मां आशियां पंहिंजो खणी बुलिबुलि हली रोई,
चयाईं ए सुबा तोखे अथी परितो ही मुंहिंजो गुलु.

२) फ़सलु गुलु आहि ड़े ज़ालिम रहमु करि बाग़िबां मूंते,
घड़ी हिकड़ी त छड़ि गुल सां, हली हेकर करियां मैफ़िलि.

३) छड़ायिउ छो चमनु मूखां, चयो सुड़का भरे बुलिबुलि,
इनहीअ में छा थियो आख़िरि, अव्हां खे बाग़बां हासिलु?

४) न रहु आसिरे गुल जे, न थी बदिनामु ए बुलिबुलि,
उड़रि छड़ि आशियां, गुल सां मिलणु तुंहिंजो आहे मुश्किलु.

५) न गुल खे दिलि में आ उल्फ़ति, न की आ बाग़बां पंहिंजो,
उनहीअ खां हाणि ए आग़ा छड़णु आहे, चमन अफ़ज़लु.

## (७ आशा)

जेड़ियूं ड़े पंहिंजे यार सां - मां कंदसि रुह रिहाणु,
सालनि खां जंहिंजे सिक में - मूं माणियूं न कोई माणु.

१) चयो हो हादीअ हक़ ते, तूं मुंहिंजो हक़ु सुञाणु
२) कड़ण ख़ातिर कुन मां, अजु पहुता अची पाणु
३) लोड़ा थे खाधमु लहरुनि में, मूंसां थिया अची साणु
४) लुड़हंदे लधो समंड मां, मूं मोतियुनि जो महिराणु
५) मुंहिंजे उंदह अङण आया, सोझिरो खणी साणु
६) आशा संदा ड़ीआ ब़ारे, ड़िनऊं इश्क़ जो अहञाणु

## (2)

कन खोले तूं ॿुधु ए ॿोड़ा - यारु अंदरु पियो ॿोले
जिस्म आ तुंहिंजो सुवासु आ हिन जो - हले पियो थो होल

१) पाण खां पासो कंदें जे प्यारा, पाणेही दर्शनु ॾींदुइ,
वहिदत वारो जामु जो पीअंदें, यारु ॾिसण में ईंदुअ,
ॾिसण वारियूं अखियूं खणी जे, यार ॾिसीं मंझि चोले.

२) सियाणनि जो हिति को कमु कोन्हें, गोली थी त गुज़ारि,
भोराईअ में भाल कंदो, भोलनि जो आहे यारु,
कूड़ छड़े तूं सच जी ॿूटी, पी वञु घोले घोले.

३) दुनिया कूड़ी छड़ि कूड़ खे, सच जी राह में अचु,
पको थींदें तूं प्रीति जी पिड़ में, ॿारे मुहबत जो मचु,
तिर तां जे तूं तिर्की पवंदें, विझंदें पाण खे रोले.

४) मंदिर मसिजिद परे रहिया थी, यारु त दिल दर्पन में,
चाहीं पल में ॾिसीं इन्हीअ खे, देरि कान्हे दर्सन में,
झाती पाए ॾिसु तूं आशा, मन जी खिड़िकी खोले.

## (3)

कहिड़ी करियां तारीफ़ मां तुंहिंजी, मुंहिंजो रखियो तो मानु-शल जीव

१) आख़िरि पाड़ियइ पंहिंजी ॿोली, मुंहिंजी भरी तो लालण झोली
मूंते कयउ अहिसानु - शल जीवें

२) पिड़ में पंहिंजे प्यारल विहारिउ, मइ मुहबत जी मूंखे पियारिउ
साक़ी आहीं सुबहानु - शल जीवें

३) चांउठि तुंहिंजीअ जो चाकरु आहियां, ख़ादिमु तुंहिंजो सिक मां सड्राया
तुंहिंजे दरि दरिबानु - शल जीवें

४) आशा तुंहिंजो आशिक़ु आहे, तोखां सवाइ ॿियो कंहिंजो न आह
आहे ज़रा नादानु - शल जीवें.

## (4)

कांगा, कांगा ओ कांगा, हालु त मूं हीणी संदो,
रोई ॿुधाइजि होत खे, चई ॿुधाइजि होत खे, कांगा, कांगा ...

१) मूं मिस्कीन जो अजु खणी मञु, ख़तु ही मुंहिंजो कांगा खणी वञु,
पढ़िही ॿुधाइजि होत खे, कांगा, कांगा ...

२) परिदेसियुनि खां पंधिड़ा पुछाए, जल्दी मोटिजि मुहिबु मञाए,
रोई रीझाइजि होत खे, कांगा, कांगा ...
३) हालु ब॒ुधण खां हू जे नटाए, हथिड़ा ब॒धी तूं सीसु निवाए,
मरी मञाइजि होत खे, कांगा, कांगा ...
४) मोटी मूंखे ड॒िजाइं वाधाई, न त आशा अथेई उमिरि अजाई,
हीइंड़े लाइजि होत खे, कांगा, कांगा ....

## (5)

जे रहम जी हुजे हा, सुहिणा न तो में आदत,
घर घर में कीन थिए हा, मालिक तुंहिंजी इबादत. जे रहम ...
१) मुजिरिमु न को हुजे हा, हाकिमु न तूं हुजीं हा,
सुहिणा सुञी रहे हा, हरिदमु तुंहिंजी अदालत. जे रहम ...
२) तूफ़ान में जे कंहिंजी, लोड॒ा थी खाए ब॒ेड़ी,
मलाहु बणिजी मालिक, तूं ई करीं हिफ़ाज़त. जे रहम ...
३) अखिड़ियुनि में लुड़क मुंहिंजे, तुंहिंजा ई ड॒िनल आहनि,
मोटाए वठु तूं मूखां, दाता पंहिंजी अमानत. जे रहम ...
४) रहिमत ते तुंहिंजे, मुंहिंजे ड॒ोहनि खे नाज़ु आहे,
बख़शींदें हरि गुनाह तूं, तुंहिंजी आ बादिशाहत. जे रहम ...
५) आशा रखां मां दिलि में, तो खां सवाइ ब॒िए कंहिंजे,
तूं ई आधारु मुंहिंजो, तूं ई आ मुंहिंजी ताक़त. जे रहम ...

## (6)

करे लख थोरा पर हिकु न ग॒णे, मुंहिंजा बार पिरीं पियो पाण खणे,
मुंहिंजो सज॒णु चई खणी बसि करि, दिलदारु चई खणी बसि करि ...
१) मुंहिंजा कम थो सुहिणो पाण करे, अचे हिक सड॒ड़े ते पेर भरे,
मुंहिंजो सज॒णु अहिड़ो रहिमी आ, हरिदमु थो मुंहिंजो ध्यानु धरे. मुंहिंजो सज॒णु ..
२) आहे अहिड़ो हू दिलिदारु सज॒णु, ड॒िए हरिदमु पंहिंजो प्यारु सज॒णु
हुस्न संदसि सुबुहानी आहे, आहे चंड खां बि सुहिणो यारु सज॒णु. मुंहिंजो सज॒णु ...
३) पंहिंजे सज॒ण जो अजबु शबाबु ड॒िठुमु, तिखो तारनि में हिकु ताबु ड॒िठुमि,
नूरु संदसि नूरानी आ, हिन दुनिया में लाजवाबु ड॒िठुमि. मुंहिंजो सज॒णु ...

## (7)

दरु यारु खोलींदो मगरि हिकवारि खड़िकाए त ड्रिसु,
हू सड़ में सड़ु ड्रींदो, मगरि हिक वारि बाड़ाए त ड्रिसु.

१) खोले करि तूं हालु दिलि जो, हू बुधण वारो अथई,
तूं बि हिन खे तंहिंकरे, हिक वारि वाझाए त ड्रिसु, दरु यारु ....

२) बार बोजा सभु खणण लाइ, हू सदा वाझाए थो,
तूं बि हिनखे तंहिंकरे, हिक वारि वाझाए त ड्रिसु, दरु यारु ....

३) हू प्यार जो आहे बुखियो ऐं प्यार वारनि लाइ सिके,
आशा वेही प्यार मां हिक वारि, परिचाए त ड्रिसु, दरु यारु .....

## (8)

जीए मुहिंजी सिंधु, मां त घोरियां पंहिंजी जिंदु,
पंहिंजे अबाणे वतन तां, अबाणे वतन तां, सिंधु जे चमन तां.

१) कीअं विसारियां, सिंधु जा निज़ारा, साधिब्रेले मनहोड़े वारा,
चंड जूं रातियूं ऐं बहिराणा, लाल जा पंजिड़ा गाईंदड़ मुहाणा. जीए...

२) सूफ़ियुनि संतनि जी आहे सिंधुड़ी, मस्त फ़क़ीरनि जी आहे सिंधुड़ी,
शाह सचल सामीअ जो जिति देरो, शाल वञां उति आऊं हिकु भेरो. जीए ...

३) मोहन जो दड़ो जंहिंजी निशानी, जेको न समुझे करे थो नादानी,
जेको सिंधु विसारणि चाहे, सचो सपूति सो सिंध जो नाहे. जीए ...

४) मारुई वांगुरु पियो थो ब्राड़ायां, अझा अबाणा शाल वसायां,
झूलण आशा कंदो हीउ पूरी, झमिरियूं पाईंदुसि उमिरि समूरी जीए...

## (८ अहसन)

तुंहिंजा मञियां अहिसान, साहु सिसी सिरु घोरियूं घोरियां!

१) सुहिणल तुंहिंजो कोन्हे सानी, ड्रेहु सज़ोई तुंहिंजो सानी,
तूं त सुहिणनि जो सुल्तानु,साहु सिसी सिरु घोरियूं घोरियां!

२) यार तो रखी मूंसां यारी, साहु सदिक़े तो तां सौ सौ वारी,
जानि करियां कुर्बानु, साहु सिसी सिरु घोरियूं घोरियां!

३) नेण खणी जड़हिं मूड़े निहारेयुइ, दामु विझी दिलि दोस्त धुतारेई,
मुहिब कए मस्तानु, साहु सिसी सिरु घोरियूं घोरियां!

४) नाज़ुकु तुंहिंजा नाज़ निराला, पंबिणियूं अबिरो नेज़ा भाला,
कुर्बऊं हणे थो कान, साहु सिसी सिरु घोरियूं घोरियां!
५) ड़ंदनि सां कीअ मोती तोरिया, लाल यमन जा लब तां घोरियां,
मटि न थिए मरिजां, साहु सिसी सिरु घोरियूं घोरियां!
६) आऊं त असुल खां गोली आहियां, सीनो सजु़ण तोसां कहिड़ो साहियां?
शाही सजु़ण तुंहिंजो शानु, साहु सिसी सिरु घोरियूं घारियां!
७) घोड़ो सजु़ण मूं तो लाइ सींगारियो, घोट अची अव्हीं उन में घारियो,
थी मुहिब अची महिमानु, साहु सिसी सिरु घोरियूं घोरियां!
८) लालनि लाइक़ु करि तूं पंहिंजा, ऐब न ड़िसू तूं अवगुण मुंहिंजा,
करि अहसन ते अहिसानु, साहु सिसी सिरु घोरियूं घोरियां!

(2)

नेण खणी पिए निहारियां, साहु सजु़ण तोखे सारे संभारे.

१) ड़ींहं ड़िठे थिया, मनड़ो मांदो, कोड़ें कांग उड़ायां:
वागु़ अल्लह लगु़ आऊ तूं वारे.
२) पेचु पिरीं पुख़ितो पातुमि, वेल न हिकिड़ी विसारियां:
लालनि आहिनि तुंहिंजी लारे.
३) तोरीअ साइत साल थी भांयां, गूंदर में ई गुज़ारियां:
वेहु वलहीअ खे कीन विसारे
४) दिलि में दर्दनि दूंहों दुखायो, होत हंजूं वेठो हारियां:
क़ौल पिरीं अचु पंहिंजा पाड़े.
५) तार अंदर में तुंहिंजी आहे, पलि पलि पिरिति पचारियां:
बाहि बिरह जी विऐं तूं ब़ारे.
६) बाक़ी ज़िंदगी गड़िजी घारियां, तोखे ड़िसी आऊं दिलिड़ी ठारियां,
आऊ अची रहु मुंहिंजे ओतारे.
७) अहसन खे आहे ओर अव्हांजी, वाई न ब़ी का वारियां:
तार अंदर जी थी तोखे तंवारे.

(3)

इश्क़ु विञाए आरामु - सबक़ सूरनि जा यादि कराए.

१) इश्क़ु अची जिते पेर थो पाए, अक़ुलु उतां सामानु खणाए
इश्क़ु असुल खां इमामु - कुफ़ुर जा कलमां कोड़ पढ़हाए.
२) इश्क़ु कडे कंहिंजो, काणि न कंहिं पर शाहनि खे करे गोलो गदागर
बिरहु करे बदिनामु - ख़ुवारी मलामत ख़ल्क़ खिलाए.

३) इश्कु न ज़ाणे शानु शरीअत, कोन रखे थो मज़हबु मलत
कुफ़ुरु नको इस्लामु - पढ़िहियलु पंडितु पीर भुलाए.
४) इश्कु असां वटि अहसन आयो, सूरु सीने में सरसु सवायो
नींहं बिना नाकामु - मुहबत रीअ को मानु न पाए.

(4)

छिने कीन छड्डणु तोखे यार खपे,
नातो नींहं ग॒ंडणु तोखे यार खपे.
१) मुंहिंजो वसु त सज॒ण आहे अर्ज़ु करणु
ब॒ांहूं ब॒ई त ब॒धणु पेरें सिरिड़ो धरणु
पोइ त अर्ज़ु मञाणु छड्डे रीत रुसणु
अची मुर्की मिलणु तोखे यार खपे.
२) रातियां ड॒ींहं रूअणु तुंहिंजूं वाटूं ड॒िसणु
पांधी रोज़ु पुछणु तो लइ यार सिकणु
भरे पेर अचणु का संभार लहणु
अहिड़ो क़ुर्बु करणु तोखे यार खपे.
३) तोखां दूरि थियणु थियो विहु त विहणु
कोन्हे सुखु थी सुम्हणु न को खाइणु पीअणु
थियो जंजालु जीअणु तंहिंखां वधि आ मरणु
हाणे गड्डिजी रहणु तोखे यार खपे.
४) अहसन दिलिड़ी ड॒ियणु सख़ितियूं सूर सहणु
कंहिंखे कीन चवणु इहा रीति रखणु
दिलि दोस्त लुटणु पोइ मुंहड़ो मटणु
इएं कीन हुअणु तोखे यार खपे.

(5)

दोस्त न थी दम धार - होत अला जे छाहे हयाती
१) वात वञण जी करि न वाई - घोट सदा गड्डु घारि
मुहिब मतां थिए मुंहिंजी ममाती.
२) ड॒ींहं ड॒ुखनि जा ड॒ाडा ड॒िठा मूं, सूर सठमि सदबारि,
छीहूं छीहूं थी वेई छाती.
३) वरिहिय लंघे विया वेठें विसारे - वाग॒ वसुल जी का वारि
तुंहिंजे ड॒िसण लाइ दिलिड़ी आती.

४) दीद ड्रेखारे दिलिड़ी फुरें वएं - दूरि रहें दिलिदारि
ग़ालिह ईहा मूं अग़ु न हुई ज़ाती.

५) ड्रेहु सज़ोई ड्रोरे ड्रिठो मूं - कोन तुंहिंजो मटि यार
लिंव बि सज़ण मूं तोसां लाती.

६) अहसन जो मञ्ञु अर्ज़ अल्लह लग़ि - वारिसु कीन विसारि
जानिब पाए वञ्ञु जूदूं झाती.

## (6)

ताति तलब तिनि तारी - मुहब मिठा थमि तुंहिंजे मिलण जी

१) नींहुं नंडे लाइ तोसां लातुमि - यार असुल खां हुई यारी
छो थो छिनी करि ग़ालिह ग़ुंढण जी.

२) इश्कु अव्हांजो आफ़त आहे - तोबह तोबह मुंहिंजी ज़ारी
बाति बिरह जी नाहे लिखण जी.

३) रग रग में तुंहिंजी रमज़ लग़ी वेई - ग़ल ग़िचीअ तुंहिंजे ग़ारी
कीअं पोइ छिनायां नाहे छिनण जी.

४) साल लंघे विया सिकंदे सिकंदे, घोट न विझु तूं घारी
आउ अल्लह लग़ु करि का अचण जी.

५) तोरीअ वाह वसीलो नाहे - करि का सज़ण सरिदारी
छड्रि तूं राणा रीति रुसण जी.

६) अहसन खे आहे सिकड़ी सदाईं - दोस्त ड्रियो दिलिदारी
वात मिठा करि वाई वरण जी.

## (९ असद)

यार न छिनु तूं यारी वे - माफु मिठीअ जूं करि तूं मदायूं

१) विरह तुंहिंजे में वल्हा आऊ, रोज़ु वसायां वारी वे
मुहब मिलण जी मुंहिंजे मन ते, ताति रहे थी तारी वे
रातियूं विहंदे विहंदे विहायूं.

२) घोट! घड़ी का तुंहिंजे हिजर में, मूंखां न थिए थी घारी वे
सारी मुहबत तुंहिंजी साजन, रतु रोई करियां ज़ारी वे
इश्क़ अड़ांगे वायूं विञायूं.

३) मुहबत तुंहिंजीअ मुहिब मुठी हीअ, मुदत खां अगिमें मारी वे,
दर्द वंदीअ खे तो रीअ दिलिबर, केरु डिए दिलिदारी वे
मोटि विछोड़े वाहूं विञायूं.

४) मोटी आई मुंद मींहं जी, बाग़नि में थी बहारी वे
ईद मल्हाए सभिनी डिसंदी, झड़ फड़ मेंघ मल्हारी वे
अखिड़ियूं असद जूं आहिनि उञायूं.

## (2)

लगाए नींहुं जो नारो - निसंगु नांगा नची के के
डुखिए पिड़ पत में जे पेर पाईंदा अची के के.

१) न सौखो इश्कु आहे तूं न करि सध बवालहोसि नाहक्कु
हिते मरंदा वरी जीइंदा पतंग वांगे पची के के.

२) कसौटी क़ुरुब जी अहिड़ी - मिठे महबूब वटि आहे
खरियल खोटा भञी विया सभु - थिया रेटा रची के के.

३) हज़ारें हुलु हुलाचा हिन जहां जे इश्क़ में आहिनि
बरी हिन बहरि मां निकिता बहादुरु पर बची के के.

४) न ग़ाल्हियनि सां खटी आहे कड़हिं कंहिं क़ुरब जी बाज़ी
मुहबत जी ए यारो डोर डोरींदा कपे के के.

५) लिबास ज़हदि सां सजादह ते वेठा घणा डिसिबा
ख़बर सुहणे संदी सादिक़ सुणाईंदा सची के के.

६) डिज़ी आख़िर भञी विया के कंहीं जो वियो निशानु गुमु थी
असद मंज़िल ते पहुता मर्द थी मांझी मची के के.

## (3)

दिलड़ी विधइ वेचारी घोरनि सां यार घाए

१) पलि पलि सजुण जी सारियां, जरु जामु रोज़ि हारियां
तोखे किथे निहारियां, मुंहिंजी हिजर हेकारी, महिबूब मति मुंझाई.

२) सिरु साहु सचु त तोतां, करियां मिठा मां क़ुर्बानु
हिकिड़ो दफ़हो करम सां, करीं जे क़ुरुबदारी, वागूं वरी वराए.

३) मुंहिंजियूं सुणी सदाऊं, ही दर्द मां तूं दांहूँ
आऊ ए पिरीं ओराहूं, मूं हीअ उमिरि गुज़ारे, वारियूं विरह वसाए.

४) जंहिंजी असद मां ब्रान्हीं, विछिड़ी वयो सो जानी
नाहे संदसि को सानी, हीअ आहि ताति तारी, मालिकु वरी मिलाए.

## (१० अहमद)

जिनि जे हथां वियड़ा पिरीं, तिनि खूं पुछो सुधि सूर जी.

१) हींअरो ब॒धाऊं ब॒ांधाण में, कंहिं कुर्ब वारीअ काण में,
असां पिरियुनि जी पाण में, हुई दोस्ती दस्तूर जी.

२) जानिब बिना जा कूं जीआं, सभु सूरड़ा सुड़कियूं पीयां,
ड॒सड़ा ड॒खनि जा कंहिंखे ड॒ियां, मारियसि इनहीअ मज़िकूर जी.

३) अहमद चवे वाग॒ं वरियूं, आया पिरीं अखिड़ियूं ठरियूं,
जेके दर्द जूं हुयड़ियूं दरियूं, से पिरीं ड॒िठे वयूं पूरिजी.

## (2)

हिति न छड॒िजि यार बर में बंदियाणी
निंड में निमाणी, पुन्हल पाण सुञाणु.

१) ससुई जा ज॒ाई सूरनि में आई,
विझी त संदूक़ी समुंडें लोड़हाई
सूर ड॒िना हुआउंसि साणि - पुन्हल पाण सुञाणु.

२) जिनि जा वर वञनि से कीअं निंडूं कनि
ग॒ोड़हा ग॒िलनि तां लुड़िकियो लाल वहनि
हलिया विया जिति जवाण - पुन्हल पाण सुञाणु.

३) असुली आरीअ ग॒ाल्हियूं कयाऊं
मुहिब मुंहिंजे ड॒ांहुं नियापो मुकाऊं
संडु त मुंहिंजे काणि - पुन्हल पाण सुञाणु.

४) हुजे मुंहिंजो मुरिशिदु साईं सलामति
अहमद हुजमु चवे आहियां अमानत
रखिजांइ दीन ईमानु - पुन्हल पाण सुञाणु.

## (११ असग़र)

हितिड़े असांजो ही हालु तोखे पंहिंजा सांग सेबाणा

१) आउ त परचूं पाणमें - जीअड़ो विझी जंजाल में
तोखे पंहिंजा सांग सेबाणा.

२) रोई रञीदसि रतु में लिंङ कंदसि सभु लालु
तोखे पंहिंजा सांग सेबाणा.

३) असिग़र चवे इश्क़ मां, भला करि तूं भाल
तोखे पंहिंजा सांग सेबाणा.

(2)

यार बदियूं लखें ताना, शुक्राना सठमि सिर ते.
१) कान्हे काणि कुठनि खे कंहिंजी,
ब॒धनि छोड़िनि पाणमें पंहिंजी, शौंकूं कनि शुक्राना.
२) लोक सारे नूं झेड़ा जुठियूं,
सिर ते सहंदे मुहबत मुठियूं, पाए ग॒िचीअ ग॒लि ग॒ाना.
३) अर्ज़ु अज़ीबनि खे कुर्बऊं करियां,
उते बेहदि बिल्कुलु भरियां, तंहिं जानिब खे लखें जाना.
४) आश्क़ि असग़र खे लातो लोरे,
जानि करियां साईंअ तां घोरे, घोरियां माल ख़ज़ाना.

## (१२ आसिफ़)

कीअं पलियां मां पाण - जानब सां जीउ जुड़ियो जुड़ियो.
१) आदम खां अग॒ु अग॒ु ड़ी अदियूं - सुहिण साजन साणि, मुंहिंजो अंग हो आड़ियो.
२) लालण ख़ातिरि लोकसज़ेजी पियम कढिणी काणि, लिखियो आख़िरि पड़ियो पड़ियो.
३) ग॒ऊं चारींदुसि ग॒ोठ सज़े जूं पंहिंजे प्यारल काणि, मन जंहिं सां मड़िहियो मड़िहियो.
४) हुजत हलंदुसि होत सां आहि मञी मूं आणि, कुर्ब इन्हीअ जे कड़ियो कड़ियो
५) आसिफ़ जी जंहिं दिलड़ी धुतारी सोई साईं आणि, साहु सूरनि में सड़ियो सड़ियो.

## (१३ अशरफ़)

1

लग॒ी तार हुई तन में पिड़ में तूं पेरु पाइ.
१) मच में मज़ाकु नाहे, घिड़ंदा से घोरिया,
घिड़ंदा उहे से ग़ाज़ी, हरि कंहिंजे नाहे जाइ.
२) मच में मचीं तूं जिनि लाइ, जिंदु जान सभु जलाइ,
लिकंदें त लोक खिलंदुइ, हरि जाइ जो पंधु पछाइ.
३) अशरफ़ चवे अंदर जा, विस्वास सभु विञाइ,

2

जेसीं पसीं तूं पिर खे, जेकी लग॒ई सो लाइ.

## (१४ अयाज़ (श))

करे केरु थो ही पखनि मां पुकारूं
न मुंहिंजो मलीरु आ, न के मुंहिंजा मारूं.

१) अचनि पार खां थियूं पिरीअं जूं पुकारूं
मतां देरि सबबां ड्रियनि हू मयारूं.

२) वञू था पिया सीर जे अजु सहारे
न तुरहो ई ताणियूं न के आहियूं तारूं.

३) विरह तुंहिंजी वस्ती वरिहिय थिया विसाणे
खणी चिणंग चोलीअ हलियो केरु पारूं?

४) रहे गूंजंदी कूक काई फ़िज़ा में
उड्रामी वयूं कूंजड़ियुनि जूं क़तारूं.

### (2)

तूं मूंखे, मां तोखे ग॒ोलियां
लिकी लीआ पायां - वाझ विझी वाझायां.

१) रोज़ि अज़ल जूं रमज़ूं तुंहिंजूं
सिर में कीअं समायां? ग॒ोड़हनि में कीअं ग॒ायां?

२) सूर सवें सांढे मां तड़िफां
तोखे बि तड़िफायां - लूंअ लूंअ मंझि लुछायां.

३) बाति बिरह जी ग॒ोड़हिनि ग॒ाड॒ड़ि
मुरिकी कीअं मचायां? सुड्रिकनि साणु सुणायां.

४) सारी राति सजु॒ण मां सोचिया
तारनि खे तरिसायां - ग॒ाल्हि ग॒ुझी ग॒ाल्हायां.

५) तूं चंडु त मां चांडोकी तुंहिंजी
पाछो थी पछितायां - चऊ तोखे कीअं रीझायां.

### (3)

तुंहिंजी ताति तंवार,

१) अजु त तमना तन में लाती, अजु त मुहबत झाती पाए
छाया मेंघ मलार - तुंहिंजी ताति तंवार.

२) अजु त उञायां रोज़ि अज़ुल जा, तुंहिंजे चपड़नि ते जे पहुता
प्यास बुझाए प्यारु - तुंहिंजी ताति तंवार.
३) अजु त सुतल सव रग जगाया, तन जे तारुनि में तड़िफाया
मुंहिंजी साह सितार - तुंहिंजी ताति तंवार.
४) मन सागर ते छाईं सांझी, ऊन्ही ऊंदहि मुंहिंजा मांझी
जंहिंजा आर न पार - तुंहिंजी ताति तंवार.
५) तू मुंहिंजी मां तुंहिंजो साहिलु, केसीं झागींदी रहंदी दिलि
मौजूं ऐं मंझिदारि - तुंहिंजी ताति तंवार.

## (4)

किथे आ मुंहिंजी मंज़िल साईं, किथे आ मुंहिंजो मागु?
१) राति अंधेरी वेल अवेरी, चंडु तारा मुंहिंजा वेरी
अची कड्हिं मूंसां मिलु साईं, भुली पियो आ भागु
किथे आ मुंहिंजो मागु?
२) वेही वंझु हणां मां केसीं? लहिरुनि साणु लड़ा मां केसीं?
किथे आ मुंहिंजो मागु?
1
३) सुझे न कोई साहिलु साईं? साम्हूं समुंडु अझागु?
किथे आ मुंहिंजो मागु?
४) साथ उनहीअ जो, संगु उनहीअ जो, नींहुं उनही जो नंगु उनहीअ जो,
गोला में आ शामिलि साईं, मूंसां मुंहिंजी रागु,
किथे आ मुंहिंजो मागु?

## (5)

अड़े चंड अड़े चंड, पिरीं तो त ड्रिठो नाहि
संदसि रूपु संदसि रंगु, ईएं आहि जीअं तू.
अड़े राति अड़े राति, पिरीं तो त ड्रिठो नाहि
संदसि वार संदसि विंगु, ईएं आहि जीअं तू.
अड़े फूल अड़े फूल, पिरीं तो त ड्रिठो नाहि
संदसि साथु संदसि संगु, ईएं आहि जीअं तू.
अड़े हीर अड़े हीर, पिरीं तो त ड्रिठो नाहि
संदसि साथु संदसि संगु, ईएं आहि जीअं तू.
अड़े नांग अड़े नांग, पिरीं तो त ड्रिठो नाहि
संदसि ड्रांहु संदसि ड्रंगु, ईएं आहि जीअं तू.

## (6)

चंड तुंहिंजी निंड तोखां कंहिं खसी?
चंड तोखे घाव कंहिंजा घाए विया?

१) अज़ु वरी हू आरिज़ू ओते करे
ज़िंदगीअ जे जाम खे ज़ुरिकाए विया.

२) राति उड़िरी रूह मुंहिंजे मां चकोर
गाए गाए चंड खे रीझाए विया.

३) ओ खिलण वारि ब्र टे मुखिड़ियूं त ड्रेमि
पांद सभ जा तो वटां गुल पाए विया.

४) हिक घड़ीअ में ए पिरीं तुंहिंजा कवल
आगि काई ज़ुणु लिङनि में लाए विया.

५) राज़ु जेको कंहिं पैग़ंबर हलु न कयो
ए पिरह तुंहिंजा पखी समुझाए विया.

६) थी अज़ुल खां ज़िंदगी सागर भरे
रिंद छा छा मैकदह छलकाए विया?

७) यादि कंहिंजी आई तोखेए अयाज़?
केरु तोखे ओचितो मुरिकाए विया?

## (7)

टिड़ी पवंदा टारियें जड्हिं ग़ाड़हा गुल,
अलो मियां तड्हिं मिलंदासीं.

१) ओ - ओ जड्हिं वरंदियूं कुंजड़ियूं, हुर हुर करे, हुर हुर करे हुलु,
अलो मियां! तड्हिं मिलंदासीं!

२) ओ - ओ जड्हिं ग़िलनि ग़ोड़हा टिमंदा, जड्हिं मोतियुनि, जड्हिं मोतियुनि तुल ,
अलो मियां! तड्हिं मिलंदासीं!

३) ओ - ओ विछोड़े जा ड्रींहड़ा, भोराए जी, भोराए जी भुल,
अलो मियां! तड्हिं मिलंदासीं!

## (8)

सहंदो केरु मयार, ओ यार
सिंधिड़ीअ ते सिरु केरु न ड्रींदो सिंधिड़ीअ ते ....
सहंदो केरु मयार!

१) झोल झली जंहिं वक़्तु भिटाईअ,

किरंदा कंध हज़ार ओ यार! सिंधिड़ीअ ते ....

२) नेठि वडीदड़ वढिजी वेंदा,

कुंबंदी नेठि कटार ओ यार! सिंधिड़ीअ ते ....

३) घड़ा खणी घिड़दियूं सभु सुहिणियूं,

बणंदा सभु मेहार ओ यार! सिंधिड़ीअ ते ....

४) सिर जी सैं हणी ड्रिसु चारण,

ब्रीजल थी ब्रेहार ओ यार! सिंधिड़ीअ ते .....

## (१५ अयाज़ (क़))

विएं छड़े जिनि खे उहे तोखे था प्यारा यादि कनि
सा ज़मीन सो आस्मानु से था सितारा यादि कनि.

१) ज़िंदगी गुज़िरी थे जिनि दिलकश नज़ारनि खे ड्रिसी
सुबुह जा से शाम जा रंगीन निज़ारा यादि कनि.

२) मौसम गर्मीअ में खुड़ ते चाह मां ड्रिसिबा हा जे
से नखुट, टेड़, कुतियूं ऐं चंड तारा यादि कनि.

३) जंहिं सबब विहंदा हुआसीं बाहि ते घर में छिपी
जनवरीअ में से सियारे जा था पारा यादि कनि.

४) जे था उभ में छांइजनि कारा ककर कड़िको करे,
से विज़ुं से खिंवण जा खिलंदड़ि इशारा यादि कनि.

५) जिनि हसीननि सां कबी हुई राह वेंदे छड़ि छाड़ि
से घरनि मां खूह वेंदड़ि माह पारा यादि कनि.

६) अज़ु बि यकतारे घड़े ते ख़ूबु थियूं चौंकियूं लग़नि
से भिटाई ऐं सचल जा राग़वारा यादि कनि.

७) आश्क़िनि जे सिर जियां अज़ु भी क़लम था संग थियनि
सवनि जियां अन जा भरियल ब्रनियूं ऐं ब्रारा यादि कनि.

८) वहिंजिबो जिति हो जिते हणिबियूं टुब्रियूं हुयूं शौंक़ सां,
लाट पइबो हो जितां से ई किनारा यादि कनि.

९) तड़ितकड़ि में पेरु तिरकी फह पुठीअ किरिबो हो जिति
नांग जियां सी वरवकर पर पेच चारा यादि कनि.

१०) जिति धर्म ऐं दीन जो झगिड़ो नकी तक्रारु हो,
एकता वारा से सूफियुनि जा ओतारा यादि कनि.

११) जे मिले तोखे किथे भी क़ुर्ब मां चइजेसि अयाज़,
तोखे परदेसी पिरीं था देस वारा यादि कनि.

## (१६ अख़्तर)

इश्क़ु न सोखे लागु - वेह न थी न वसीलो.

१) वर वरांगा, लकियूं लांघा, झागण थिया त अझाग
वेहु न थी तूं वसीलो.

२) गेसर करीं कहिड़े कारण? झागि उथी तूं झागि
वेहु न थी तूं वसीलो.

३) निंड निदोरी छडि तूं जानी - झाग मंझूं डेही झाग
वेहु न थी तूं वसीलो.

४) ग़फ़िलत छडि ए यार, उथी तूं थीउ सफर लाइ सुजागु
वेहु न थी तूं वसीलो.

५) अख़्तर आजिज़ ते थे इनायत, लोचे लहु सो लागु
वेहु न थी तूं वसीलो.

## (१७ आज़ाद)

तेज़ बिजलीअ खे मिलियल रफ्तार छाजी? ख़्यालु करि!
ख़ासि गुल में थी रहे हुब्रकार छाजी? ख़्यालु करि!

१) के रसिया ऐं के किरिया, चढ़हंदे क़ज़ा जी कोट ते
थी वरी पोइ सोभ कंहिंजी हार छाजी? ख़्यालु करि!

२) गरजना बादल में थी - गजगोड़ सागर में रहे
ऐं मिठी बलिबुलि में थी-ललिकार छाजी? ख़्यालु करि!

३) हिकु जुज़ो ब्रिए सां मिले - वियो गोल में पलिकार सां
गोलु ठाहियो जंहिं वरी-पलिकार छाजी? ख़्यालु करि!

४) ख़ासि नूरानी नज़र खे, जोति ज़ाहिरु थी बखे
रोशिनी हुन जी त पोइ-अधंकारि छाजी? ख़्यालु करि!

५) लोह जे ज़रड़नि खे चक़मकु, जींअ करे केड़ी कशिशि
हुस्न खे थे तीअं कशिश ए यार छाजी? ख़्यालु करि!
६) मुहब लाइ जे सूर सख़्तियूं पाण ते नाज़ल करे
आरिज़ू कहिड़ी रहे दरिकार छाजी? ख़्यालु करि!
७) जानि जंहिं क़दमनि में तुंहिंजी आह अर्पी अजु अची
तंहिंखे तुंहिंजी थी सुझे तलवार छाजी? ख़्यालु करि!
८) राति कारीअ सोज़ वारीअ प्रेम प्यारीअ दिलि अंदरि
चाहिना सुहिणीअ रही हिन पार छाजी? ख़्यालु करि!
९) हथ लगनि पुखराज किनि खे के कढनि कसियूं कणियूं
समुंडु सागियो पर जुदा थी कारि छाजी? ख़्यालु करि!
१०) फूल श्रद्धा सां करे पूजा अंदरि दिलि प्रेम सां
तख़्तु दिलि ते केरु आ, दरबारि छाजी? ख़्यालु करि!
११) बंस में आज़ाद जे आलाप बुधिजनि था मिठा
बंस पोरीअ में रहे सुर तार छाजी? ख़्यालु करि!

(ब)

(१८ बेदल)

पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया, वञी ओखीअ मंझ अड़िया,
ज़हरी ज़ल्फ़ ज़ोरावर जा, तोखे दुहरा दाम पिया.
१) छो थो पंहिंजा पर पटीं, तोखे पुख़ता पेच पिया,
फथिकी फथिकी साहु छडींदें, ज़ार न छुटण जा.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.
२) वारनि जे त वराकनि में, कअें कामिल क़ैदु थिया,
हिन काक ककोरिया केतिरा, हिति केई ढोंग ढरिया.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.
३) मांडियुनि मांडिया कीन के, ऐं जोगियुनि कीन झलिया,
विहु रखनि वासींगनि वांगुरु, आहिनि ज़हर भरिया.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.
४) चुणंदे दाणा ख़ाल संदा, तोखे कल न पई का,
हाणे है है थो करीं, जड़हिं वार अथई विचिड़िया.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.

१०) जिति धर्म ऐं दीन जो झगि॒ड़ो नकी तक्रारु हो,
एकता वारा से सूफियुनि जा ओतारा यादि कनि.

११) जे मिले तोखे किथे भी कुर्ब मां चइजेसि अयाज़,
तोखे परदेसी पिरीं था देस वारा यादि कनि.

### (१६ अख़तर)

इश्कु न सोखे लागु॒ - वेह न थी न वसीलो.

१) वर वरांगा, लकियूं लांघा, झागु॒ण थिया त अझागु॒
वेहु न थी तूं वसीलो.

२) गेसर करीं कहिड़े कारण? झागि॒ उथी तूं झागि॒
वेहु न थी तूं वसीलो.

३) निंड निदोरी छडि॒ तूं जानी - झागु॒ मंझूं डे॒ही झागु॒
वेहु न थी तूं वसीलो.

४) ग़फ़िलत छडि॒ ए यार, उथी तूं थीउ सफर लाइ सुजागु॒
वेहु न थी तूं वसीलो.

५) अख़तर आजिज़ ते थे इनायत, लोचे लहु सो लागु॒
वेहु न थी तूं वसीलो.

### (१७ आज़ाद)

तेज़ बिजलीअ खे मिलियल रफ्तार छाजी? ख़्यालु करि!
ख़ासि गुल में थी रहे हुब॒कार छाजी? ख़्यालु करि!

१) के रसिया ऐं के किरिया, चढ़हंदे क़ज़ा जी कोट ते
थी वरी पोइ सोभ कंहिंजी हार छाजी? ख़्यालु करि!

२) गरजना बादल में थी - गजगोड़ सागर में रहे
ऐं मिठी बलिबुलि में थी-ललिकार छाजी? ख़्यालु करि!

३) हिकु जुज़ो बि॒ए सां मिले - वियो गोल में पलिकार सां
गोलु ठाहियो जंहिं वरी-पलिकार छाजी? ख़्यालु करि!

४) ख़ासि नूरानी नज़र खे, जोति ज़ाहिरु थी बखे
रोशिनी हुन जी त पोइ-अधंकारि छाजी? ख़्यालु करि!

५) लोह जे ज़रड़नि खे चक़मकु, जींअ करे केड़ी कशिशि
हुस्न खे थे तीअं कशिश ए यार छाजी? ख़्यालु करि!
६) मुहब लाइ जे सूर सख़्तियूं पाण ते नाज़ल करे
आरिज़ू कहिड़ी रहे दरिकार छाजी? ख़्यालु करि!
७) जानि जंहिं क़दमनि में तुंहिंजी आह अर्पी अजु अची
तंहिंखे तुंहिंजी थी सुझे तलवार छाजी? ख़्यालु करि!
८) राति कारीअ सोज़ वारीअ प्रेम प्यारीअ दिलि अंदरि
चाहिना सुहिणीअ रही हिन पार छाजी? ख़्यालु करि!
९) हथ लगनि पुखराज किनि खे के कढनि कसियूं कणियूं
समुंडु सागियो पर जुदा थी कारि छाजी? ख़्यालु करि!
१०) फूल श्रद्धा सां करे पूजा अंदरि दिलि प्रेम सां
तख़्तु दिलि ते केरु आ, दरबारि छाजी? ख़्यालु करि!
११) बंस में आज़ाद जे आलाप बुधिजनि था मिठा
बंस पोरीअ में रहे सुर तार छाजी? ख़्यालु करि!

(ब)

(१८ बेदल)

पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया, वञी ओखीअ मंझ अड़िया,
ज़हरी ज़ल्फ़ ज़ोरावर जा, तोखे दुहरा दाम पिया.
१) छो थो पंहिंजा पर पटीं, तोखे पुख़्ता पेच पिया,
फथिकी फथिकी साहु छड़ींदें, ज़ार न छुटण जा.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.
२) वारनि जे त वराकनि में, कअें कामिल क़ैदु थिया,
हिन काक ककोरिया केतिरा, हिति केई ढोंग ढरिया.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.
३) मांडियुनि मांडिया कीन के, ऐं जोगियुनि कीन झलिया,
विहु रखनि वासींगनि वांगुरु, आहिनि ज़हर भरिया.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.
४) चुणंदे दाणा ख़ाल संदा, तोखे कल न पई का,
हाणे है है थो करीं, जड़हिं वार अथई विचिड़िया.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.

५) बेदल ड्रंग झलियासीं ड्राढा, आहिनि ओखेड़ा,
हेबती हैरानु, अलड़ी! अञां कीन मिड़िया.
पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया.

## (2)

सालिमु सनेहा हू ब हू पहुता, पिरियुनि जे पार जा
साथी सब्राझी मूं उतासी, दरसु तंहिं दिलिदार जा.
१) वाक़ुफ़ विसारे कीअं वेठें, उहे उहद जे इक़रार जा
जेकस सेबायई साह खे सुखड़ा, इनहीअ संसार जा.
२) आश्क़ अलस्ती यादि करि, हिति गडु हीअ गुफ़तार जा
कयुइ इश्कु कंहिं औक़ात में, ख़ासी कंहीं ख़ुमार जा.
३) हुएं तूं असांसां हिकु अगे थी, कयइ नफ़ा दीदार जा
विसिरी विया तोखे मगरि, मनसुब इनहीअ अवतार जा.
४) तोड़े असांजी आहि सदा, तन मन मुहबत तार जा
बेदल बिरह जी बाति सुणि, लारा छड़े लाचार जा.

## (3)

कांग लवीं मिठी लाति, मुहब मुसाफ़िर ज़ाणु के ईंदा.
१) जेकस दांहूं दर्द मुंहिंजे जूं, पंहुंतियूं उते प्रभाति,
अथम उमेद त हींअ न छड़ींदा - कांग लवीं मिठी लाति.
२) वरंदासी साड़ीह ते सुज़ाणां, तालिब जंहिंजी आहे ताति,
गोली पंहिंजी गडु गड़ींदा - कांग लवीं मिठी लाति.
३) ईंदइ जूइ में जानिब जाई, वाई जंहिंजी अथमि वाति,
दोस्त दिलासो मूंखे ड्रींदा - कांग लवीं मिठी लाति.
1
४) दर्द फ़िराक़ उनहीअ जी मूंखे, हालूं कयूं हेहाति,
वटी विसाल जी शाल वडींदा-कांग लवें मिठी लाति.
५) बेदल बिल्कुलु थीउ न मांदो, संझ सुबह की राति,
होत अची तोसां हिकु थींदा - कांग लवीं मिठी लाति.

## (4)

तोरीअ ऐन अज़ाबु, ऐन अज़ाबु, तोड़े बाग़ बहिशत जा.
१) पसण धारां इन पिरींअ जे हूरां महज़ि हिजाब, महज़ि हिजाबु.
२) ड्रोरूं भज़े ड्रोह खां वेझो खां सवाबु.
३) कंधु न मोड़िजि काड्रहिं जंहिंजो नींहुं नवाबु.
४) पेही वञु पाताल में हथूं हिजाबु, छड्रि हिजाबु.
५) बेदल हथूं होत जे कुसी थीउ कबाबु.

## (5)

आउं आहियां इस्रारु - आलिम लेखे आदमी
१) अरिशऊं अची इत हीं, इश्कु केई इज़हार.
२) कीन हले थी कुर्ब में, दीन कुफ़ुर जी कार.
३) ब्रान्हप ब्रोली नाह का, नूरु आहियां निरवारि.
४) बेदल बंदो नाह तूं, आणि इहो ऐतिबारि.

## (6)

थीउ ग़रिकु बिहर अमीक़ में, ब्राहिरि त पोउ ब्री पारि.
१) धारियनि जी दावा खे छड्रे, ड्रिसु को दरूं दीदारु.
२) हलाज हालत कयूं यारी, ही अजबु सिरु बारु.
३) आंदो अलो हेत संदो, जंहिं पाण ते ऐतबारु.
४) बेदल उनहीअ दरियाह में, विझु पाण बे इख़्तियारु.

## (7)

देसु छड्रे परदेसु तूं आएं वतन तूं कीम विसारि.
१) सभु ज़ुमांदर जालीउ जिन सां साथी से तुरत संभारि.
२) तो खूं उहिद वरता तिनि कहिड़ा पंहिंजा तूं वअदह पाड़ि.
३) सरितियूं रोज़ु संभालिनि तोखे पलि पलि करन पोकार.
४) अरजए जी कीन कड्रहिं पई कन तुंहिंजी कोकार?
५) कसरत वारो क़ैदु भञी तूं पिर उन्हीअ जी पारि.
६) वेड़िहीचा वहदत जा वासिल तोखे करनि तंवारि.
७) बेदल उड्रिरी वञु ओड्रांहीं गोंदर कीन गुज़ारि.

## (8)

सूरत जो सरिदारु भली करे आयो.

१. वड़दह पंहिंजा सभेई पाड़िया - सुहिणे यार सचार.
२. अङण असांजे पेर घुमाया - महिर मंझूं मनठार.
३. पाणूं ज़ाणी पंहिंजे पाज़ीअ जो ग़ोर कयो ग़मख़ुवार.
४. अची अचानक सार लधाईं जानिब जीअ जियार.
५. बेदल असलूं आहे विकाणल दर तुंहिंजे दिलदार.

## (9)

इश्क़ संदो आसारु, नकी गुझो रहंदो,

बिरह संदो बीमारु, नकी लिको रहंदो.

१. शौक़ जो शैलो क़ौलूं फ़इलूं, नेठि थींदो निरवारु - नकी ....
२. दीद बाज़नि जी जग में जाए, इश्कु कंदो इज़िहारु - नकी ....
३. लिंव लगीअ खे केरु लिकाए, पवे पधिर यकिबारु - नकी ....
४. मन ख़ुदा चयो मौज इन्हीअ में, आशिक़ बे इख़्तियारु -नकी ....
५. बेदल इश्क़ खे आरु न ज़ाणिजि, ड्डींदअ मरद मयारु - नकी ....

## (10)

लाहूती से लाल, पाणऊं जिनि पासो कयो.

१. जोगी निकता जोग खूं, छड्डे जिस्म जंजाल.
२. नांगा जालनि नांह में, कयड़ा नींहं निहाल.
३. आधूती इस्बाब जी, मुरिकियो कनि मक़ाल.
४. हू वञीं पहुता हाल खे, माण्हुनि लेखे महाल.
५. बेदल रहु बैराग में, पाण कना पलि ख़्याल.

## (11)

राए पंहिंजे यार प्यारो, आयो हिन इस्रार में.

१) माना मुल्क खूं आयो सुहिणो, सूरत जे संसार में.
२) अची ज़हूर कयाईं सारो, इन्सानी अवतार में.
३) लुटियूं दर्द मंदनि जूं दिलियूं, सुहिणे हिन सींगार में.
४) नूरु न्यारो आयो इशकऊं, तसबीह व ज़नार में.
५) बेदल छड्डि ब्रान्हप जी ब्रोली, जाई हर जिन्सार में.

## (12)

तूं त जो आहीं, सो आहीं.

१) जाइ बि जाइ तो झाती पाती, काथे गुझो तूं नाहीं.
२) हाज़िरु नाज़िरु हर रंग हर जाई, ठाह अजायब ठाहीं.
३) नाउं निशानु न कोई तुंहिंजो, सहिसें नाम सड्डाईं.

४) आशिक़ जो जामो पहिरे सूरत मंझि समाईं.
५) काथे लाहे लाग॒ा लालनि पेर पधर थो पाईं.
६) काथे बेदल थी आलिम में पंहिंजो ज़ाति छिपाईं.

## (13)

मूंसां पेचु पुन्हूंअ जो पियो ड़े जेड़ियूं.
१) आऊ बि हुयसि अक़ुल वारे नींहन निहोड़े जेड़ियूं.
२) अखियूं अड़ायमि होशु गंवायुमि, मनु मस्तानो थियो ड़े जेड़ियूं.
३) मूंखे बेख़ुदिबे इख़्तियारी केफ़े, नेणनि कयो ड़ी जेड़ियूं.
४) मौज़ मन्सूरीअ जोशु जग॒ायो वहमु, दुईअ जो वयो ड़े जेड़ियूं.
५) पाणूं पाण सां लिंव लाताईं बेदल भांइं न ब॒ियो ड़े जेड़ियूं.

## (14)

थीउ ग़ैब में तूं ग़ैबु, लंघे ऐब सवाबूं.
१) तालिब न थीउ तक़वे संदो पी शोक़ शराबूं,
छड़ि हस्ती घन मस्ती, सुणु रमिज़ रबाबूं.
२) तोरीअ नको ब॒ियो आहि, हली आउ हजाबूं,
आहीं नूरु करि ज़हूरि, थी निरिवारु नक़ाबूं.
३) बेज़ारु ख़ुदि ख़्याल खूं, बेदार थी ख़्वाबूं,
पेही पसु हक़ीक़त पांहिंजी, मूंहुं मोड़ि किताबूं.
४) कजि नुकितो तोहीद जो, हासुलु हरि बाबूं,
बेदल वठि पाणीअ खे, भरि भरि हबाबूं.

## (15)

कड़ी ईंदें मुंहिंजा जानी, रोज़ु थी राहूं निहारियां.
१) वाइदा पंहिंजा पिरीं तूं पाड़िजि, सघिड़ो अची थीउ साणी,
सदा तोखे संभारियां.
२) नाज़ अव्हांजे दिलिड़ी मुंहिंजी, कई जा निधर निमाणी,
गोंदर में थी गुज़ारियां.
३) आब अखियुनि खां आ रत जहिड़ो, इश्क़ तुंहिंजे में आरियाणी,
होत हबीब थी हारियां.
४) कोन ड॒िठो मूं शहर भंभोर में, सूंहं संदो जो सानी,
केरु पिरीं तोसां पाड़ियां?
५) बेदल तो लइ वती उदासी, वहलो करि का वराणी,
घड़ी घड़ी ड॒खी गुज़ारियां.

## (16)

जोशूं जलाए जिस्म खे, जीअ में पाइजि के झातिड़ियूं,
रे दर्द सभु ग़ाल्हियूं फिकियूं, वहवाह विरह जूँ बातिड़ियूं.

१) जे तो तलब तकिरार आहि, गूंदर गुज़ारिजि रातिरियूं,
तो सिर सघो थींदुयूं अदा, बेशक बिरह बरसातिड़ियूं.

२) रखु सुरिति साह पसाह ड्रे, सुणु से लतीफ़ी लातिड़ियूं,
नेही नेण थी पाण खूं, ड्रिसु इश्क़ जूं इसबातड़ियूं.

३) वेसाहु वहिदत जो रखिजि, छा सैर छा दर जातिड़ियूं,
बेदल बिरह जी बाति सुणु, चोखियूं तलब जूं तातिड़ियूं.

## (17)

राति मूं ड्रे मारुनि जो, नओं न्यापो आयो, ड्रुखियो ड्रोरापो आयो.

१) जिस्मानीअ जे कोट में, रखियइअ रहण जो रायो.
२) मुल्क मारुनि जो निति बिहारियो, तो कीअं चितिड़ो चायो?
३) वेढ़ीचनि ड्राहुं वञीं ऐड्रांहु, तो कीअं ख़्यालु आयो?
४) मारुनि ड़ीअ हिननि माड़ियुनि में, तो छा सां मनु परिभायो?
५) हिति संभारनि सांगी तोखे, हुति कंहिं सांगु रहायो?
६) केही सेऊं तो, हिन ड्रींहें, ड्रीहों ड्रोड़ि ड्रसायो.
७) वर साड़ेह ड्रे सघिड़ो, बेदल उथी संबिरु करि सेयो.

## (18)

याकी थिएं वञीं यार, नको पियुइ ख़्यालु असांजो.

१) तो हूं धारां इन सिपरीं, दिलि खे नांहिं क़रार, जीअणु जंजालु असांजो.
२) मिलु त मांदाई लहे, निर्मलु थीउ निरिवारु, मिठा मञु सुवाल असांजा.
३) बेदल वेचारो छड्रे, मणियो पूरबु पारु, हीअ हीअ ड्रिसु हालु असांजो.

## (19)

इश्क़ जो ड्रिसु इस्रारु, सभु सूरत में यारु समायो.

१) यारु युगानो काणि ज़हूरी, सवें करे सींगार,
पाण पिरीं कसरत में आयो?

२) ड्रसु हम जो पाण ड्रिनाई, आशिक़! करि ऐतबारु,
हर जा यारु तमाशो लायो.

३) ख़्याल उनहीअ सां जे तूं जालीं, तुरतु लहीं तक्रारु,
वहिदत जे सिर जो सरमायो.

४) उथंदे विहंदे चवंदे ब॒धंदे, तन रखु हीअ तंवार,
सेकल सां सफ़ा करि कायो.

५) बेदल छड्डि न हथूं तूं हरिगिज़ि, वहिदत जो करि वापारु,
सालिक अथी ही ख़्यालु सजायो.

## (20)

पंहिंजो नंगु पालु, तूं त महिर नज़र मड़ि भालु, यार जाई!

१) पाणई लातो नींहुं निधर सां, पंहिंजो सो तूं नंगु पालु, यार जाई!
२) खणु असां हूं हिजाबु दोईअ दा, बख़्शि तूं कुर्बु कमालु, यार जाई!
३) करि इमदादी यार असां ते, इश्क़ वारो इहवालु, यार जाई!
४) बख़्श पिरीं पांहंजी पाजीअ खे, शाह हलाल जो हालु, यार जाई!
५) साणि निगाह निवाज़ु निमाणो, भला पंहिंजो भालु, यार जाई!
६) हरि जायूं ड्रेखारि तूं जानी, जलवो जोति जमालु, यार जाई!
७) क़ाइमु रखु बेदल जे दिलि ते, हिको हिकु ख़्यालु, यार जाई!

## (21)

वेंदसि मां त मरी, मोटिजि दोस्त मुईअ जा.

१) जीअरें जुदाई न सहां, अचु तूं यार वरी.
२) चके ड्रोंगर चोटईं, सघे तां न चड़िही.
३) तोरीअ शहर भंभोर में, हा घारियां कीन घड़ी.
४) अखियुनि अग॒ तूं नांइ अल्लह जे, पासे थीउ न परे.
५) पिरीं वठी वञिजि पाण सां, हीअ कमीनी कूड़ी.
६) दिलि बेदल जे सिपरींअ, चेटक कई आहि चरी.

## (22)

सिरु इस्रारु हक़ीक़ी आहियां, सूरत को इन्सानु.

१) ज़ाति सफ़ाति खूं आहियां न्यारो, नको नांऊ निशानु,
सिरु इस्रारु हक़ीक़ी आहियां.

२) फ़र्श इते थो अबद सड्डायां, अर्श उते रहिमानु,
सिरु इस्रारु हक़ीक़ी आहियां.

३) जिस्म दे रोले ड्रितमि ड्रखोले, आहियां जां जहानु,
सिरु इस्रारु हक़ीक़ी आहियां.

४) बेदल सैरु सभोई मुंहिंजो, ला मकानी मकानु,
सिरु इस्रारु हक़ीक़ी आहियां.

(23)

सिरु सुबुहानी आहियां, सूरत खेल खिलायां.

१) अर्शऊं उतिरे फ़र्श उते थो, परितूं पेर घुमाया,
आदम हवा कयमि बहानो, सहसें नावअ सड्डायां.

२) काथे पहिरु रसालत जामूं, अबिदी रमज़ रलायां,
सुबुहानी मा एज़म सानी, काथे तबल वज़ायां.

३) बेख ज़लेखां यूसफ़ में, मुहबत मचु मचायां,
शीरीं फरहाद शिकिल थी, आणे अखियूं अटिकायां.

४) कड्डहिं मंझि क़सूर थी, ज़ाहिर सोज़ूं सीसु कटायां,
कड्डहिं विच दराज़नि वेही, दर्दूं दूदु दुखायां.

५) बेदल सूरत करे बहानो, चालि अजबु चलायां,
ज़ाति सफ़ात खां आहियां न्यारो, हिति हुति ठाहु ठहायां.

(24)

तो बिनु अवर कोई जग़ विचि? कंहिं थूं आप छुपावंदे हो ढोलिया.

१) बिरह लावण कीते बेरंगी, सहसे रंग समावंदे हो ढोलिया.

२) आपनूं आपे बिनि बिनि सूरत, ज़ोरोअ बिरह बिछावंदे हो ढोलिया.

३) मन्सूरी जामे विच जानी, 'अनाअल्हक़' अलावंदे हो ढोलिया.

४) अपने हथें आप नूं सुहिणा, सौली सिरु सलावंदे हो ढोलिया.

५) अपने ज़ाति छिपावण कीते, बेदल नाम सड्डावंदे हो ढोलिया.

(25)

लुटि नीतीअ दिलि सां ड्डे, हुणु करींदाई माणा.

१) दर तेड्डेते सुहिणा साईं, रूह असांड्डा विकाणा.

२) वेखके तेड्डियां बेपरवायां, साड्डा जीउ कुमाणा.

३) इवें न लाइक़ु तैनूं लालन, मारण मौतु निमाणा.

४) शौक़ तेड्डे दा शग़ल चंङिड़ा, साड्डे साहु सेबाणा.

५) शमअु हुसन दा बेदल आशिक़ु, तहदिलि थे परिवाणा.

(26)

जोगी वाले वेस में कोई राइ मुसाफ़िर आया.

१) बेखु बैराग़ी मुख विचि मुरली, दर्द कहीं धमिकाया.

२) मुरली उनहीं दी तन मन अंदरि, ड्डाढा शोरु मचाया.

३) कूके दर्द फ़िराक़ दी जख़िमूं, घूर नेनां दी गाया.

४) सैयां अमीं जोग़ीअड़े शानूं, जादू जोड़ बछाया.

५) मैं बि माउ बेराग़ण थीवां, सामीअ सहर चलाया.

६) बेदल नाल असां ड्डे रांझन, पेचु पिरिति दा पाया.

## (27)

साड़ी दिलि खसके ज़ोरावर वेंदा, साड़ी दिलि लटकी जादूगर जो वेंदा.

१) बेख बैरागी करि तख़त हज़ारूं, रंगपोर राह पुछंदा.
२) तख़त हज़ारे दा साहिब वेखो, गलियां विच फिरेंदा.
३) हीर सयालण नूं सामी सैलानी, नैन अड़ाके जो नींदा.
४) दर्द फ़िराक़ां विचि होके ख़सतह, रो रो सूर सलींदा.
५) बेदल रमज़बाज़ी वेखु रांझो दी, इश्क़ जा खेल खलींदा.

## (28)

साड़ी नज़र तऊं दिलिबर, क्योंकर जो मुखु छुपाया.
सांनूं क़बूल सुहिणा, जीवें तिसाड़ा राया.

१) फेरीदार वांगि फेरा, तेरी गली मैं मेरा,
हरदमु हज़ार भेरा, चेटक अजब तो लाया.
२) आऊ दरि तेड़े विकाणी, आश्क़ अझल अयाणी,
मोहन ताड़े माणे, ड्राढा बिरिह बछाया.
३) दिलड़ी लुटीअ जिन्हा दी, फ़रियाद सुणु तंहां दी,
करि ग़ौर भी उन्हां दी, जिनि दमु लबां ते आया.
४) बेदल ग़ुलामु दर दा, असुली क़दीमु बर दा.
सटि सांग अपनी सरदा, सुख तेड़िड़ा आया.

## (29)

बख़्श मेड़ी तक़िसीर रांझन साईं - बख़्श मेड़ी तक़सीर.

१) दर तेड़े ते आहे विकाणे, हीअ निकार ड़ी हीर.
२) इथां उथां तेड़ड़ी आहियां, दिलबर दामंगीर.
३) जीइंदे मरंदे विसरि न वेसी, ख़ूब तेड़ी तसिवीर.
४) तेड़े ब्राझूं कौन करेसी, दर्दमंदां दे दिलिधीर.
५) हुसन हैरत विचि बेदल वसंदा, सालिक छोड़ सरीर.

## (30)

जाले साधो मैं संसारु, जीवें मुसाफ़िर वाटा वाहो.

१) कामु, क्रोधि ऐं मोहु विञायो, आदेसी अहंकारु.
२) संत छड़े सुखु खंयो ड्रुखनि जो, सिर ते बारी बारु.
३) करे अभ्यासु चड़ही आकासें, बांको बे अख़्तियारु.
४) मनु हसिवारु पवन जो घोड़ो, करे सो गगनि गुज़ारु.
५) बेदल आश्क़ु, इनहीअ भगत जे, सुरत रखिजि सभ पारि.

## (31)

इश्क़ लगा तदिबीरां चुकियां, अक़ुल दा ग़या अख़्तियार.

१) नावक नाज़ दा लगड़ा जंहिं नूं, रूंदा ज़ार व ज़ार.

२) आलम फ़ाज़ल अशूं हूंदी, बे सिर बे दस्तार.

३) शद रांझू कनूं इश्कु छोड़िया, केवीं तख़्त हज़ार.

४) हुकिमा आणे विचाया इश्क़ी, यूसफ़ विच बाज़ार.

५) पीर तरीक़त ख़ोक चरावे, ग़िल दे विचि ज़नार.

६) शाह मन्सूर नूं ब्रर ही कीता, सूली दा हसिवार.

७) बेदल दर्द इश्क़ दी कश्ती, तुरतु पुज़ावे पार.

## (32)

मोहन प्यारा करि आया बसंती वेसु, सुहणे सरूप तूं सदक़े जावां.

१) मुख सूरज गुल, अखें गुल नर्गिस, संबल काले केस.

२) सर्व चमन ख़ूबी दा सुहिणा, लालन ख़ासि लबेस.

३) नवल बहार बहिशिती सयां, ख़ूब खिली चो देस.

४) 'वहदत' दी ख़ुशबूं थूं हूंदा, रंग ड्रोई दा, नेस.

५) बेदल हर गुल सर्व अलाही, इन्सानी आबेस.

## (33)

सूरत दा वापारी - आया साड़े देस.

१) इश्क़ दी कीते रांझन कीता, छोड़िके तख़्त हज़ारे, जोगी वालिड़ा वेस.

२) रंगपुरु दे विचि देरा करके, शाह फ़िरे बिखयारी, दर्द कीता दर्वेश.

३) दर्द फ़िराक़ूं दर दर रांझू, रो रो करिंदें ज़ारी, इश्क़ दा ही आबेस.

४) आऊ इथांहीं सिर ते चातसि, बार ड्रखांदे बारी, परत लाई परदेस.

५) बेदल जेहे केती यारो, हज़ारें हकिवारी, नावुक नाज़ दी नेस.

## (34)

सिखु रमज़[1] वजूद दे दी, नाहें हाजत पढ़ण पढ़ावण दी.

१) अखरां दे विच जो कोई अड़िया, इश्क़ दी चाड़ही मूलि न चढ़या,
इसबानी दा इलम जो पढ़िया, मौज उनहां सिर सांवण दी.

२) नाल दलील न लभसे दिलबर, अक़ुलु न थियसीं ओड़हीं रहिबर,
पुरिझे[2] माम को सूफ़ी बे सुर[3], शाही तबल वज़ावण दी.

३) बारिश बिरह जी जंहिं सिरि आई, सोज़ इश्क़ में जले सदाईं,
बेदरिदां नूं कल न काई, दर्दी दूद दुखावण दी.

४) बहर[1] अमीक़ में जोई पवसी, दीन कुफ़िरु दा वर्क़ा धोसी,
सारी सुधि उनानूं होसी, ज़ाति[2] सुफ़ाति[3] समाण दी.

५) बेदल वहिदत दी ग़लि मन तूं, वहम तिलसम दुई दा भन[4] तूं,
विचि उरूज[5] नज़ोल दी घिनु तूं, लज़त आवण जावण दी.

## (35)

मैनूं तुसा ड़ी यार, चिंता लग़ रही है.

१) अंदर ब़ुहां मैनूं ब़ुहण न आवे, ब़ाहर फिरां तेड़ा बिरह सतावे,
फ़ौज हुसन दी चड़ह चड़ह आवे, जोर करे जिंसार,
जज़िबी दिल जरी है.

२) नाज़ नैनां दे कीता निमाणां, जितां किथां ई वतां विकाणां,
मुइआं दे नालि कयूं करिंदे माणा, जड़िड़ा जीअ जियार,
दिलिड़ी दर्द भरी है.

३) बिरह क़ासाई दे दोस्त[6] पयोसीं, हुसन कीते कुर्बान थियोसीं,
सिरु निशानां नाज़ कीतोसीं, तीर सितम ख़ूनख़वार,
घावंदा घड़ी घड़ी है.

४) तख़्त हज़ारां दा जोग़ी आया, इनहीअ असानूं चेटक[7] लाया,
घूर नीनां दी दिल नूं घाया, नींहुं थीसीं निरिवार,
बिरहीं बाहि बड़ी है.

५) बेदल छोड़ बुर्ज़ुगी सञे, पीछे सुहिणे यार दे वञे,
बंदि हयाती शर्म दा भज़े, नैने वेख नज़ारा,
इश्क़ी दीद अड़ी है.

## (36)

इश्कु नहीं कोई चर्चे बाज़ी, सूरीअ सिरु संभाई है.

१) जाम इश्क़ दा जोई पीवे, लख लख वारी[1] मर मर जीवे,
सोई राज़ दा वाक़फ़ थीवे, सहलि नहीं लिंव लावण दे.

२) इश्क़ असां नूं द्रुतिड़ी दुखाली, अखनि ग़ल अलहंदी मुहालु,
देख उनां दे हिमथ आली, बार ग़मा सिर चांवण दे.

३) इश्क़ मन्सूर दे नाल कीया केता, आशिक़ दर्द दा प्याला पीता,
इश्क़ मौज नैना दे नीता, चका उसे मर आवण दे.

४) इश्क़ ख़ूं ख़ासां दा हारिया, सूफ़ी दा सिरु नीज़े चाड़िहिया,
इश्क़ नहीं कोई अशरत हारिया, सीने सोज़ि समावण दे.

५) बेदल जोई दम तूं जीवें, दर्द इश्क़ दा तालिब थीवें,
सोज़ गदाज़ दा तालिब थीवें, ब्रिया सभ कूड़ कमावण द.

## (37)

चलो रे सैंइया चरिचा वेखें, आप चमन में आया जी.

१) आया शाह हुसन दिलिजानी, बाग़ सिफ़ाती विचि सयानी,
रांझन को प्या राया जी.

२) अल्फ़ दी सूरत सिर सूंहारा, इस्बानी नूं कर इज़िहारु,
वहम वज़ूद विञाया जी.

३) हरि गली दे विच ख़ुश्बूइ हिकाई, वहदत दी वञु बोड़ि ब्रियाई,
छोड़ि ब्रिया फ़िक्र अजाया जी.

४) नरिगिसि[2] नैन बसौंती[3] जामा, गुल बनफ़शी रुख़ु[4] गुल फ़ामा,
बेरंगी रंग लाया जे.

५) बेदल सूरत साग़ी हरि जा, हरहंधि गुल गुलिज़ारी वाह वाह,
हादी[5] हक़ु फरिमाया जे.

## (38)

इश्क़ दी उल्टी चालि, बिरह दी उल्टी चालि.

१) राह इन्हीं विचि केई दिलावर, दर्द केती पाइमालि.

२) ना मैं मरंदियां ना मैं जियंदियां, हइ हइ मेड़ी हालु.

३) रंगपुर दे विचि मूल न रहिसां, वेसां माही दे नालि.
४) तो ब॒ाझूं साड़ा जीअ निमाणा, महिर नज़र मड़ि भालि.
५) बेदल कसिरत छोड़ि त थीवे, वहिदत नालि विसाल.

## (१९ बेकस)

पलि पलि पवनि था पूर ड़े, सज॒ण सदा हे सूर ड़े.

१) जोशूं जिगर वियड़ा वजिली, कंहिंखे सलियां दिलि जी ग॒ली,
सूरीअ सज॒ण चाड़िहियो हली, जीअं चड़िहियो मन्सूर ड़े.

२) कंहिं ग॒ालिह खूं वेड़ियुनि छड॒े, गोली न नेई पंहिंजी गड॒े,
हिति हुति आहियां तुंहिंजी तड॒े, चेटक किनो आहि चूर ड़े.

३) दमि दमि संभारियां साह सां, जानी जुदा कयो पाण खां,
है है न घुरिजे हीअं अव्हां, जो ड॒ेई दर्द वएं दूरि ड़े.

४) ताना तुनिका सभिको सदा, ड॒े इश्क़ वारनि खे अदा,
महिणा मलामत जग॒ सदा, से सभ मूंखे मंज़ूर ड़े.

५) बेकस मिलाइमि यार सां, मू नंदी मिठे मन्ठार सां,
दिलिड़ी पंहिंजे दिलिदार सां, जंहिं लइ थियसि मशहूरि ड़े.

## (2)

जंजलु नीह निबाहियूं मूं, पाण ड॒ाढनि सां नींहुं न लाइजे.

१) आऊ ड॒ुखी छा ड॒ुखनि मां ज॒ाणां, सूरनि साथु संबाहियो मूं,
पाण ड॒ाढनि सां नींहुं न लाइजे.

२) आऊ अयाणी इश्कु न ज॒ाणा, इश्कु अजब सिरु आयो मूं,
पाण ड॒ाढनि सां नींहुं न लाइजे.

३) वेठड़ी आहियां वाट ते, मूला मुहिबु मिलायो मूं,
पाण ड॒ाढनि सां नींहुं न लाइजे.

४) बेकस सां अची मिलु तूं प्यारा, तुंहिंजी तालिब प्यारा तपायो मूं,
पाण ड॒ाढनि सां नींहुं न लाइजे.

## (3)

साजनु सैरु करण लाइ आयो, नाउं रखी इन्सानु.

१) काथे काफ़िरु गबरु यहूदी, काथे हिंदू मुस्लमान,
साजनु सैरु करण लाइ आयो.

1

२) काथे पढ़हे थो पोथियूं रामाइणु, काथे पड़हे थो क़ुरान,
साजनु सैरु करण लाइ आयो.

३) काथे मज़िहब जो मोंझारो, काथे बेईमानु,
साजनु सैरु करण लाइ आयो.

1

४) काथे बेकस तालिब थिए थो, काथे बेदिलि पीरु मुग़लनि,
साजनु सैरु करण लाइ आयो.

## (4)

अबाणनि जी उकीर, रातियां ड्रीहां थी रुआरे.

१) आउ हिति मांदी मारूअरनि लाइ, हुति खिलियो पियनि खीर,
साहु संघारनि खे संभारे, अबाणनि जी उकीर.

२) क़िस्मत वारे कोट मां, कढु तूं उमर ज़ाम अमीर,
ग़ाराणो थो ग़ारे, अबाणनि जी उकीर.

३) अबाणनि जे आसरे, लोई थियड़मि लीर,
पति पन्होर जे पारे, अबाणनि जी उकीर.

४) बेकस वसि नाहे वेड़ीचनि, तोड़ं हुई तक़दीर,
केरु लिखे खे टारे, अबाणनि जी उकीर.

## (5)

हिन हुन ब्रिन्हीं खां वियासीं, पखी पिरत जे पियासीं,
हीअ बार दर्द ग़म जा, चुमी सिर मथे चायासीं.

१) चुस्तीअ जी चोट हणु तूं, हस्तीअ जी ओट भणु तूं,
मस्तीअ जी ग़ोट खणु तूं, सूरीअ जे सिर हलयासीं,
हिन हुन ब्रिन्हीं खां वियासीं.

२) शब रोज़ु करींदे ज़ारी, दर यार दिल वेचारी,
सड़ गई हीअ ज़िंदिड़ी सारी, कंहिं अंग में अड़ियासीं,
हिन हुन ब्रिन्हीं खां वियासीं.

३) बेकस न कंहिं में अड़ंदा, सिकंदे सूलीअ ते चढ़हंदा,
दम दम ही सगि दर्दा, हरिग़िज न कंहिं झलियासीं,
हिन हुन ब्रिन्हीं खां वियासीं.

## (6)

मारे विछोड़े वर तूं, जीअ जा जीयारा जल्दी.

१) शब रोज़ इन्तज़ारी, कई बिरह बेक़रारी,
लख लख करियां थी ज़ारी, दिलि जी दवा का मिलंदी,
मारे विछोड़े वर तूं.

२) कूकां करियां पुकारियां, ॿाड़ायां थी ॿाकारियां,
तोखे अखियुनि विहारियां, कंहिंखे न सूर सलंदी,
मारे विछोड़े वर तूं.

३) मारी फ़िराक़ आहियां, को दमु जीअरी न आहियां,
सॾु तोसां कहिड़ो साहियां, ॿान्ही तोसां ई हलंदी,
मारे विछोड़े वर तूं.

४) बेकस फ़क़ीर जूं दांहूं, ॿुधंदो अल्लह आहूं,
ॿहग़णु ॾींदो तोखे ॿाहूं, ॿे दरि पोइ छो रुलंदी,
मारे विछोड़े वर तूं.

## (7)

ख़ूनी ख़ुमारियूं चश्मां चटिनि थियूं - ॾिसण सां आश्क़ि केई कुहनि थियूं.

१) इहे नाज़ परिवर नाज़िकु निमाणियूं - आश्क़ि कुहण लाइ शायदि सामाणियूं
तिखा तीर मसरगनि[1] जा बेशक हणनि थियूं.

२) तिखा तीर मसरगनि जा अबरू कमानी[2] - सपर सीनो मुंहिंजो अची हण तूं जानी
इहे नाज़ वारियूं असल ना मुड़नि थियूं.

३) इहे कन सौदो सदाई थियूं सिर जो - ॾिसी तालबो तड़ कड़हिं कीन मुड़िजो
ज़ोर इन ज़ोर ज़ोरी उहे बांवरियूं अड़नि थियूं.

४) इहे नाज़ पारिवर नींहुं ना निभाईन - चयो मूंखे मुर्शिद असलु बेवफ़ा हनि
बेकस सां बाज़ार में उमालक अड़नि थियूं.

## (8)

नाहि मुनासिब मिठिड़ा तोखे, बेकस सां बेपरवाही,

१) वयुसु बसंत में ड्रईं ड्रेखारे, घटि घटि तुंहिंजा नेण ख़ुमारी, शानु रखियो तो शाही!

२) बिरिह बसंतु खुलियो चौधारी, काथे दाम त काथे मारी, मुंद अजाइब आई!

३) वेखो सिन्यां यार प्यारा, ज़ाहिरु बातनि नूरि न्यारा, शाह करे गदाई!

४) वेसु मटाए आयो अथाईं, ज़ाहिर 'बेदल' मुर्शिद साईं, रखंदा ख़्यालु ख़ुदाई!

५) बेकस बेवस नींहं जो नारो, हणु तूं वहिदत खे करिवारो, इश्कु अजबु इलाही!

## (9)

थलु : कड्हिं राज़ी थी मिलंदे राणा, सोडल यार सियाणा.

१) काक कोमाणीं वेल वहाणी, भींग थिया सभु भाणा.

२) जंहिं ड्रींहुं लाकर राणा रुसी वईं, मूंखे सख़ित्यूं सूर समाणा.

३) बेकस वेचारो दर तुंहिंजे ते, केई विलीह विकाणा.

## (10)

निमाणनि सां न रुसु सुहिणा, रुसी विहंदे त छा थींदो!
कढी कावड़ि ड्रेई माफ़ी, अङण ईंदें त छा थींदो!

१) न करि कावड़ि, न करि माणो, न ड्रे दड़िका, न रुसु मूंसां,
घिटियुनि में ख़ून आशिक़ जो, वहाईंदें त छा थींदो! निमाणनि .....

२) ख़ता मूं कई महिड़ मूंड्रे, तूं बे ऐब, तूं बे ड्रोही,
पलउ पाए करियां ज़ारी, जे बख़्शींदें त छा थींदो! निमाणनि .....

३) लोधारियुनि जे सवें भेरा, न धरु छड्रियो आ मूं तुंहिंजो,
वठी हीअ ब्रांहं बान्हीं जी, संभालींदें त छा थींदो! निमाणनि .....

४) जे तूं बेदिलि त मां बेकस, जे तूं साईं त मां ब्रान्हों,
सिकायल खे सड्रे सुहिणा, विहारींदें त छा थींदो! निमाणनि .....

## (२० बुलेशाह)

थलु : बुले नूं समझावण आया, भेणां ते भाज्रायां.
मन वे बुलाशाह साड्रा कहिणा - तो कीअं लीकां लायां.

१) नाना तेड्रा पाक मुहमद - तेड्रे दोस्ती नाल आरायां.
लोक असांदे करंदे ख़िज़िमत - तो कीअं ख़ुवारियां चायां.

२) जोई बुले नूं सैदि सड्रंदा - दोज़ख़ु तिनि दे जायां.
जेको बुले नूं कहे आराईं - बहिशते पींघा पायां.

३) वेखो भेणां बाग़ बहारियां - थीसां चाकर नाल आरायां.
ज़ाति बुलेशाह दी क्ही वलि पुछंदे - ख़ाक मिटीअ ब्रुकि छायां.

(2)

क्या जाने दमु कोई वो यार, क्या जाने दमु कोई.

१) सपिने अंदर साजन मिलिया, ख़ुशीआं करि को सोई,
उठु ब॒हां मैनूं नज़र न आवे, ड्रूंड्रुयुमि शहर सभोई.

२) चोले अंदर जोई बोले, यार त मेड़ा सोई,
जिन्हीं दे नालि मैं नींहड़ा लाया, मैं भी ज़ाति उहोई.

३) बुलेशाह नूं शाह इनयात, शौंक़ शराब ड्रितोई,
मइ जो पीवण मस्त जो थीवण, साफूं साफु थियोई.

(3)

मतां करीं अरिमान वो माही यारा, हे बुतु ख़ाक मकान बंदे दा.

१) पट पुटीहर पट दे धाग॒े, गिल्इ विच चंदनहार, वो माही यारा.

२) सथ्रण ढालण दी नो नो वाली, जामा जलवेदार, वो माही यारा.

३) आप ठ़ाहींदा आप डाहींदा, आपे आप कुंभार, वो माही यारा.

४) बुलाशाह फ़क़ीर निमाणा, रोईंदे ज़ारों ज़ार, वो माही यारा.

(4)

प्रेम नगर दी सैर, अब हम गुमु होया.

१) वहिदत दे दरियाह उछिलिया, सि़रु रहिया ना पैर, प्रेम नगर दी सैर

२) जिति जानूं तिति जाइ रहियो है, ना वेरी ना वेरु, प्रेम नगर दी सैर

३) हम तुम होया, तुम हम होया, ना रहिया कोई ग़ैर, प्रेम नगर दी सैर

४) आज त हुण मैं मुई पई हां, **शाह बुले** दा ख़ैर, प्रेम नगर दी सैर

(5)

सारी ख़लक चले चलि जांदी रही, सानूं कल्ल न काई पवंदी हे.

१) पेके साहुरे इहा ग॒णीं ही, खारीअ चड़िहिया मैं हिकिड़ी ज॒णी हे
ब॒ाहिरि ब॒ुंभे ते ज॒ञ खड़ी हे, पोइ पेके राति न रहंदी हे.

२) ख़ूबु खुलियूं हिन हन बाज़ारूं, सोदा, घिनि ले, करि वणिज वापारूं,
पीछे थेसे हट जूं तारूं, पोइ दिलिड़ी अरमान कंदी हे.

३) काल नग़ारा वज॒ंदा हे, लोक सारा सभु लुड्रदा है,
जो ज॒ाया, सो मरंदे है, इहा राह रबानी, पेई वहंदी हे.

४) उथो ड़े सैनिया करियो त्यारी, **बुलेशाह** जी हणि वारी,
तुसां केती हे निंड प्यारी, विचु ग़फ़िलत, उमिरि गवंदी हे.

## (6)

थिया थिया करि यार तुसां ड्रे, मैं इश्क़ नचाया.

१) सिरु गुजराती गुल पेशिवाती, कंगणु कड़ियां नथिली पाती,
मन प्यारल पावीं झाती, तेड्रे सांगे यार हण मैं सांगा बनाया.

२) धोती ब्रुधके जणिया पासां, तिलक पा मैं मंदिर जासां,
बत आगे मैं सीसु धरीसां, इश्क़ हुआ गुर पीर जंहिं साड्रा कुफ़्र विञाया.

३) ड्रे सुहागु सुहागिणि थींवा, सरितियां दे विचि तेड्रे नाम सलीवां,
इक डुकु जाम विसाल दा पीवां, जग्गु सारे विचि हण मैं महिणा चाया.

४) खोलु ज़ुल्फ़ वलि बंदि कीतोई, बे तक़सीर यतीम कठोई,
राह मुसाफ़िर मारि घतियोई, बुला आखे सचु यार हुण तैकूं हथि क्या आया?

## (२१ बहावल)

दम दम दे विचि सुहिणल साईं, ड्रेवनि तैकूं लोलीआं,
मिठियां मिठियां ब्रोलीआं.

१) कुर्बूं असां वटि क़दम घुमावीं, सुहिणल फेरा पल पावीं,
1
सिर चा अपना घोलीआं.

२) यारु रीझाइणि एवीं आवन, नाचू बिनिकर फेरियां पावां,
2
3 करि करि सुहिणा टोलियां.

३) ताना तुनिके लोक मरींदें, हसि हसि सुहिणा टोक धरींदें,
4 मैं तां झलियां झोलियां.

४) चलो सहेलियां सहिरा गावो, छेड़ीआ पावो नाचु नचावो,
गेड़अ रतियां चोलियां.

५) बहावल बख़त थिया सवाया, दोस्त त साड्री घर विचि आइया,
5
यार हिजाबां खोलियां.

## (2)

शल नींहु न कंहिंसां अटिके, ड्राडी ज़ोरि नैनां दे झटिके.

१) शाह हुसुन दइयां फ़ोजां चढ़िहियां, कात नैना दे कढु करि खड़ियां.
पेरु पीछे नाहीं हटिके, शल नींहु न कंहिंसां अटिके.

२) देखि नैना दी बेपरवाही, लुटु ड्रींदे हनि अमीरी शाही,

खावनि मासि यतीमां पटिके, शल नींहुं न कंहिंसां अटिके.

३) जो कोई नालि इन्हां दे अड़िया, सिरु ड्वेवण बिनि मूल न वरिया,
सिरु सूलीअ ते लटिके, शल नींहुं न कंहिंसां अटिके.

४) आशिकु बहावल मूलु न हटिकनि, पतंग वांगे शमह ते लटिकनि,
1
सैफ़ सीने विचि सटिके, शल नींहुं न कंहिंसां अटिके.

(3)

बहारी कई सख़ी मौलाया, अचनि आवाज़ हू हू हू,
आहिनि आशिक़ ज़िक्र ग़ल्तानि, अचनि आवाज़ हू हू हू.

१) सदाईं ग़रक़ु वहिदत में, फिरनि था मस्तु मुहबत में,
दराज़े शाह उल्फ़त में, अचनि आवाज़ हू हू हू. बहारी ....

२) महू थिया मस्तु मूरत में, सचे सत्गुरुअ जे सूरत में,
वसलु वहदत जे सूरत में, अचनि आवाज़ हू हू हू. बहारी ....

३) बहारियो बिरह गुलशन जो, नएं सिरि नूरु थियो रोशनु,
जलियो ख़ाकी जिस्मु ऐं तनु, अचनि आवाज़ हू हू हू. बहारी...

४) मुबारक इश्क़ जे आशिक़ु, हुजे हरबार तूं आशिक़ु,
किया महबूब लख लायकु, अचनि आवाज़ हू हू हू. बहारी ..

५) खुलियो बहावल वसल जा दरु, इलाही नूरु थियो इज़िहरु,
ज़ोइक़ूं थियो क़ल्ब मां ज़ाहिरु, अचनि आवाज़ हू हू हू. बहारी ..

(२२ बेवस)

जगत में आत्मिक जोती जग़ाईं जोति वारा थो,
2
सुतह प्रकाश पंहिंजे सां भरीं तारा सितारा थो.
3

१) अरूपा! रूप मंदर में जलाए प्रेम जी अग्नि,
4
ड्रियण लइ आपु आहूती रचीं दिलि जा दाआरा थो.

२) अपारे आदि खां ई थो बखीं बेअंत रचना मां,
5
थी बेरंगी, रचाईं रंगपुर में रंग नियारा थो.

6
३) सिफ़ाती वेस में साईं! पसीं थो हुसुन ज़ाती खे,
7 8
रचे वहिदत मंझां कसिरत करीं केड्रा पसारा थो.

४) बणी महिराणु मोजन जो महा आनंद मां छलिकी,
भरीं हिन प्रेम नगरीअ में अजबु अमृत जी धारा थो.

५) न दुनिया दामघ फाही मगर क़ुर्बानघु शाही,[1]
चयों रांझन छड्डियां हिक हीर लाए तक़्त हज़ार थो.

६) अखियुनि में आहि दिलि ड्डे दग़ु वञण जो पर न मोटण जो
अची दिलि में छुटणु तुंहिंजो अबसु ज़ाणां दिलारा थो.[2]

७) पिरिति सां पुज़ु गंगा में हयों जंहिं ज्ञान जो ग़ोतो,
सफ़ा दिलि दर्सनीअ में सो पसे नूरी नज़ारा थो.

८) दिलियूं सालिमु थियनि जंहिंसां सचेरो शाइरु सो बेवस,
गहिरे संसार हरि साइत में सालिमु दिलि सचारा थो.

## (2)

तूं ई सिज में सोझिरो ऐं चंड में चांडाण तूं,
सूंहं ऐं सोभिया गुलनि में, पिणि सुग़ंध सुरिहाणि तूं.

१) बादलनि मां थो वसीं बरसाति जूं बूंदुं बणी,
तेज़ विजलीअ जो तिजलो ऐं ककर - काराणि तूं.

२) छा पटापटि इंडिलठ में थो बखे तुंहिंजो लक़ाउ,
सुबुह जो थिएं सोन रंगों, शाम जो ग़ाड़हाणि तूं.[3]

३) पुर करीं थो पाण सां पोलार हिन संसार में,
थी ग्रह, तारा, सितारा ऐं अखुट नीलाणि तूं.

४) थो लुड़ीं लहिरुनि मथां, छोलियुनि मथां छुलंदो वतीं,
समुंड जी सख़्ती बि तूं महराण जी माठाणि तूं.[4]

५) तेखु तुंहिंजो वाउ, वाचूड़े, तिखे तूफ़ान में,
हीर में हलिकाणि तूं ऐं ब्राफ में आलाणि तूं.

६) माक मोतियुनि हारि थी सींगारु सब्ज़ीअ जो करीं,
तूं जवाहर में झलक, ललनि अंदरि लालाणि तूं.

७) सरसु तूं साहिब संदे आहे सिफ़त साराह खां,
ख़ासि ख़ूबियुनि जो ख़ज़ानो ऐं गुणनि जी खाणि तूं.

८) बिरह बेवस! थो उथे हरि रूप मां तुंहिंजे रंगी,
ताणि तूं मुंहिंजी तलब खे पारि पंहिंजे आणि तूं.

## (3)

महिर करि महिर जा वाली निमाणनि माणु तूं,
जंहिंमें निति मुंहिंजी चङई ड्रे सची सा ज्ञाण तूं.

१) करि दुखियुनि लाइ दर्दु पैदा मुंहिंजे हिन हृदे अंदरि,
दिलि उजड़ि करि सब्जु साईं! प्रेम जल सां पाण तूं.

२) थो सुझे संसार में ए ड्रातार तो जहिड़ो न को,
पंहिंजे बेहद जे भंडार मां भरे ड्रणु ड्राण तूं.

३) आहि तो जहिड़ो न को वेझो, वसीलो, वाहरू,[1]
सोड़ह, सख़्तीअ में सचा साथी, सदा रहु साणु तूं.

४) वास्ता टोड़े मां जोड़ियां तो ई हिक सां वास्तो,
पाण[2] बिनि, ब्रिए जे अंदर में छड़ि छिनी छिकताण तूं,

५) चहिचिटो जंहिं खां ड्रिसां हरि चीज़ में तुंहिंजो चिटो,
अहिड़े चित में करि चिटी चमिकाट सां, चांडाण तूं.

६) निति रहनि नेणनि में मुंहिंजे नींहं जा निर्मल नशा,
ड्रे अड्रे बेवस को अहिड़ो मुहबती मांडाण तूं.

## (4)

सभु कनि तुंहिंजी साराह, क़ुदिरत वारा, निर्मल जोती नूर नज़ारा

१) कोटां कोटि बणायइ धरितियूं, सहिसें सिज चंड तारा कतियूं,
जिनि जो अंतु न पारा .... क़ुदिरत वारा.

२) गुलनि अंदरि सुरहाणि धरीं थो, मोतियुनि सां महिराणु भरीं थो,
हीरा लाल हज़ारा .... क़ुदिरत वारा.

३) जड़हिं वणनि ते वाउ अचे थो, पन पन मां परलाउ अचे थो,
छनु न न जा छिमकारा .... क़ुदिरत वारा.

४) चुंहिंब चतनि ऐं चीहनि खोली; बुलिबुलि कोयलि ब्रोली बोली,
मोर नचनि नाम्यारा .... क़ुदिरत वारा.

५) अजबु बनाया बिजिलियूं बादल, बूंदूं बरस बरस कनिथा बादल,
वाज़ुट कनि वस्कारा .... क़ुदिरत वारा.

६) क़ादुरु क़ुदिरत मंझि समायो, बेरंगीअ ही रंगु रचायो,
चेतन जा चिमिकारा .... क़ुदिरत वारा.

७) मुलिकु मिड़ियोई मंदरु आहे, आगो[1] सभ जे अंदर आहे,
देहुनि मंझि दुआरा .... क़ुदिरत वारा.

८) सास अंदरि जो सासु खज़े थो, बेवस अनहदु[2] नादु वज़े थो,
मोहन मुरलीअ वारा ... क़ुदिरत वारा.

## (5)

नेण दरसन लाइ खोलियो शहसवारी थी अचे.
दिलि अंदर दरबार लगंदी ज़ाति बारी थी अचे.

१) छोह मां छुटिके हवा कखु पनु उड़ी पासे थियो.
वाऊ शहरवाह ते पाइण ब्रहारी थी अचे.

२) अतुरु छिणिकारियो पटनि ते बादलनि बूंदूं हणी,
गुल छटण लाइ अण मया खणंदी बहारी थी अचे.

३) ड्रारि जे ड्रोंकनि सां वण छीज़ुं हणनि था हेज मां,
पन लुड़नि ताड़ियूं वज़नि पदिमण प्यारी थी अचे.

४) रहद[3] जा वज़ंदे नक़ारा कई पखियुनि शरना शरुअ,
खिंवैण दिलि खोले नचे नौबत नियारी थी अचे.

५) थियो हकुमु सिज खे त सोना वर्क़ रस्तनि ते चढ़हनि,
ड्रिसु न किरिणनि जी कमियुनि जे कीअं क़तारी थी अचे.

७) आसिमान ते कयो सितारनि ज़ौक़[4] मां ज़रीं लिबास,
हीअ सलामीअ लाइ नज़र तकिड़ी तैयारी थी अचे.

८) चंड जी साबुण चकीअ सां चिटु लगी चमको खलियो,
साफु गज धरतीअ मथां ज़णु खीर वारी थी अचे.

९) कंहिंजे आमदि लाइ ही बेवस जशनु जलिसो लग़ो?
ग़ैब जे पर्दे मंझां कहिड़ी (*) कुमारी थी अचे?

## (6)

थो बखे पर्दे पुठियां कंहिंजो लक़ा? समुझी चओ
सुरत आड़ो थो अचे कंहिंजो समा? समुझी चओ.

१) पल में सौ मीलनि तां आणे नक़श ऐं आवाज़ खे
आहि बिजलीअ जे अंदरि कंहिंजी सता? समुझी चओ.

२) कीअं जुज़ा, पूरे वज़न में था मिली मरिकब थियनि!
जड़ अंदर हीअ आहि कंहिंजी जाॻता? समुझी चओ.

३) कंहिं धारिया लालूं जवाहर पेट पथर - खाण में?
मींहं फुड़े मां कंहिं कयो मोती सफ़ा? समुझी चओ.

४) भाणु, धरिती, वाउ, पाणी, रोशिनी साॻिया मगर
छो छिकिनि था ॾार - गुल रंग बड़ जुदा? समुझी चओ.

५) वणु वधी ॿिज मां थियो, ऐं संगु दाणे मां बणियो!
था कणे मां केच थियनि, कंहिंजी कला? समुझी चओ.

६) हफ़त[1] रंगी रोशिनीअ मां ख़ासि शइ, को ख़ासु रंगु,
कीअं रखे हकु! ऐं हटाए थी ॿिया? समुझी चओ.

७) ॿारु आज़िख़ूदि ज़ुमण सां ई खीरु धाइण थो लॻो,
केरु ज़ुमंदे खेसि ड॒िए थो ईअ सिख्या? समुझी चओ.

८) हालुतिनि सारू तफ़ावतु आहे तिर तिर ते रखियल,
छो भला, हिकु शाहु थियो, ॿियो थियो गदा? समुझी चओ.

९) आहि जे, क़ानूनु कुदिरत असुल खां स्थिति[2] अटरु,
आहि कंहिंजे ज़ोर जी हीअ साखिना[3]? समुझी चओ.

१०) लीक, जिनि टुॿुकनि बणाई से त बे मक़िदारु हा,
डेघ आई लीक में छा खां भला? समुझी चओ.

११) बेसुफ़त टुॿिको त हिकु ई थी सघे ऐं न ॿियो,
पर अचे थो लीक में कीअं जा बजा? समुझी चओ.

१२) दरिसिनीअ खे दरिसिनीअ जे साम्हूं रखु ऐं निहारि!
एक मां कीअं थो थिए बे इंतिहा? समुझी चओ.

१३) बन्स पोरीअ ऐं संऐं में फूक फूक पाण थो,
वरनि बेवस जे सुख़नि में आह छा? समुझी चओ.

## (7)

वसीं वेझो वतियुनि में थो, पिरीं पर्दो वरी छा जो?
बणी ख़ुदि प्रानु प्राननि जो, विचूं वेछो वरी छा जो?
१) जिगिर में जाइ ख़ुदि जोड़े, ब्रियाईअ खे छड़ेए ब्रोड़े,
करे दिलि में अंदर देरो, दोई दोखो वरी छा जो?
२) हिते नाहीं, किथे नाहीं, हींअर नाहीं, कड्हिं नाहीं,
जे गडु नाहीं, त हडु नाहीं, मिलणु मौक़ो वरी छा जो?
३) जगत जे आदि खां अगु थी चुकी, 'तो - मूं' संदी शादी,
नएं सिरि मेलु मिलण जो, सज़ुरु[1] सेयो वरी छा जो?
४) न हाजत का हज़ूरी मं, सफ़ारत या वकालस जी,
सधी शाह राह उलफ़त में, वसीलो ब्रियो वरी छा जो?
५) मुहबत रे न ज़ाणण थिए, बिना ज़ातेई न उलफ़त थिए,
विझनि था ज्ञान भगितीअ में, फड़ो फेरो वरी छा जो?
६) बणी हरि चीज़ में चश्को, करे हैरान[2] हर खाईं,
अजाइब ऐश दुनिया खां, मिठा मोशो वरी छा जो?
७) फिटाए फोह में हिकड़ियूं, रेचीं रांदियूं नएं सिरि ब्रियूं,
करे को जोड़, तंहिंखे टोड़ में सिर्फु वरी छा जो?
८) कलेशनि[3] या कि एशनि में, जे हिकु आहीं त हकु आहीं,
जिते भी जाइ ड्रे जानी, ख़ुशी ख़तिरा वरी छा जो?
९) सघे ब्राणी न ब्रुधि ज़ाणी, वरी[4] वाणी जितां वर्चे[5],
जो रोशनु पाण तंहिंते ज़ाण जो, चमिको वरी छा जो?
१०) मिलण जे आसिरे बेवस, हयातीअ खे हलायां थो,
रही जे आस अणपूरी, निधरु नातो वरी छा जो?

## (8)

अखि लुड़क सां, मुंहं मुर्क भरियो यादि कंदासीं,
फ़रहत भरी दुनिया में न फ़रियाद कंदासी.
१) झरंदासीं ऐं झिज़ंदासीं न ख़ुदि बार खां दिल जे,

सचु फ़हम न हड़ वहम सां बरिबादि कंदासीं.

२) ख़ुदि ग़रज़ि निगाहुनि में लिकल आहि ख़राबी,
बे ग़रज़ि थी बंदि राह खे आज़ादि कंदासीं.

३) बे गुल न सझे ख़ार को बे ख़ार घणा गुल,
हिन आस ते नाशाद दिलियूं शादि कंदासीं.

४) तरतीब सां तक़दीर ते तदिबीर लड़ाई,
वीरान मां आबादि खे आबादि कंदासीं.

५) रैडियमु जे तरह ईंदासीं ईथरि तां उड़ामी,
ग्रहनि ते घुमण लाइ नईं एजादि कंदासीं.

६) ऊंदह जे चढ़ही चोट ते तारे ड़े निहारे,
चिमकाट ते हरि आस जो बुनियादि कंदासीं.

७) जीवत जो कशा कशि में, चंबा लाल - दुनिया में,
कुझु प्रेम जी प्रशाद मां इर्शादि कंदासीं.

८) बेवस जे ज़शन ख़ान में कंहिं ड्रींहं ए जानी!
पी बादि ग़मा बादि खे बरबादि कंदासीं.

## (9)

आहे मश्हूरु आलम में, जफ़ा तुंहिंजी वफ़ा मुंहिंजी,
हक़ीक़त में मगरि आहे, वफ़ा तुंहिंजी जफ़ा मुंहिंजी.

१) हज़ारें चश्म रोशन सां, अचीं तारनि सितारनि तां,
1
तड़हिं भी दिलि कदूरत खां, न थी आहे सफ़ा मुंहिंजी.

२) नमकु तुंहिंजो सदा खाई, निमित तुंहिंजे न ड्रियां पाई,
जग़त में आहि हीअ जाई, सख़ा तुंहिंजी ख़ता मुंहिंजी.

३) करियो सींगार सव साईं, मिलण लाइ होत हिरिखाइनि,
न पर पेरो अंदरि पाइनि, ड्रिसी घटि चाहिना मुंहिंजी.

४) सुखनि मां साफ़ु विसरीं वड़, दुखनि में यादि मस मस पिएं,
तड़हिं बि ड्रात ड्रातर ड्रिऐं, तबड़ जी बे हया मुंहिंजी.

५) कहां कहिणी घणी सुहिणी, रहां रहिणी मगरि सखिणी,
वड़ाई लइ वहिमु वहिणी, थी बेवस वासिना मुंहिंजी.

## (10)

तो अची मौज में मोहन जा वज़ाई मुर्ली,
सा त मूंखे थी रहे यादि सदाईं मुर्ली.
१) लोड़ लामुनि में लग़े लहर में पन पन लटिके,
नाचु छिम छिम जे छाछनि न सां नचाए मुर्ली.
२) जोश जमुना में उथियो छोह मां छोलियूं छिटिकियूं,
कछ मछ मस्तु थिया मौज मचाए मुर्ली.
३) गोप गोपियुनि जो वयो सीने मंझां साहु खज़ी,
अहिड़ी तो चाह मां चित चोर चलाईं मुर्ली.
४) कीअं रसींअ [1] श्याम सुंदर जे तूं मनोहर मुख ते,
कहिड़ी तो ख़ासि कई आहि कमाई मुर्ली?
५) प्रीति में मूं त कयो पाण खे बेवस पोरो,
तड़हिं मधुसूधन [2] मुख साणि मिलाई मुर्ली.

## (11)

१) मुंहिंजे दिलि जा देवता! तुंहिंजो लहां मंदरु किथे?
इश्क़ जो जंहिंमे उजाला आहि सो अंदरु किथे?
२) दरिबदरि थियो दादिला! तू बिन हयातीअ जो जहाज़ु,
बिरह वारनि लाइ आहे बैठिकी बंदरु किथे?
३) वियो तजे मथुरा ऐं गोकुलु, नाह जमुना जग़-पती,
शहर शेवा में वञी पुछु मुहिबु मुरलीधरु किथे?
४) कुदिरती तासीरु जंहिंजो थो करे टामे खे ज़र,
आह सो दर्दी दिलियुनि में कीमया गरु किथे?
५) वितु विछोड़े जो न सारे बिरह में बैरानु थे,
निति निहारिनि नेण नेंहीं दिलि घुरियो दिलिबरु किथे?
६) जोग़ु, जपु तपु, साधना, भग़ती, समाधी ज्ञान में,!
थो डुंगे ही मस्तु माया जो असरु अजगरु किथे!
७) जंहिंते पहुचण सां न कड़हिं काणि ब़ी कढिणी पवे,
आहि सो भरपूरु भंडारीअ जो दाता दरु किथे?
८) हिक झलक जंहिंजे सां रोशन था रहनि शमस व क़मर,
सो सुतह [3] प्रकाश वारो सूंहं जो सागरु किथे?
९) सख़्तु छोली मार सागर, आहि बंदरु बेमुनार,

हिन अंधारे ड्रोझरे में रोशिनी रहिबरु किथे?

१०) हुई पली सेजा सुखनि ते, पर कई पुख़्ती प्रीति
नाज़ु नाज़ुकु तनु किथे, ड्रहिलियो ड्रुखियो ड्रूंगरु किथे!

११) थियो हज़ारा तख़्तु त्याग्रे राउ रावीअ ते धनारु,
राज़ु ऱाजेसर किथे! ऐं नींहं में नौकरु किथे!

१२) सड्डु, पराड्डो आहि साग्रियो पर ब्रुधण में छो ब्र थिया?
समुझ सा सोचे सही करि, आहि वाईअ वरु किथे?

१३) ख़्वाब में बेवस ब्रुझी वएं ख़्वाब जे सामान सां,
सुरति सारी, होशि धारे, ड्रिसु त आदी घरु किथे?

## (12)

१) गुप्त गंगा ज्ञान जी थी अमृती वेले वहे,
जो सचो टोब्रो हुजे, सो भलु असुलु मोती लहे.

२) कीअं न थींदी जंगि जारी, धर्मु राज़नि वास्ते?
जो किताबी क़ैद लइ थो तख़्तु दिलि जी तान लहे!

३) मनु त पाणीअ जां हमेशह वहिक हेठाईं वठे,
पर विवेकी पम्प सां दब्रिजी मथाईं ते वहे.

४) थियो उजड़ु दिलि जो मंदरु दिलिबरु जो घरु वीरानु आहे,
काम राजा जिति वसे कीअं राम वेचारो रहे?

५) सख़्तु विल्ह, बरसात में, कंहिं राति सवड़ियुनि मां उथी,
ड्रिसु त ब्राहिरि बे अझनि लइ वैलु छा छा थो वहे!

६) दर्द जी देवी करे थी मनुश खे आली उत्तम,
थिए तंहिं खां अनु आजो ग्राह में जीअं जीअं ग्रहे.

७) अज़ ग़रीबनि जूं कखायूं झूपिड़ियूं मालिकु घुमी,
थो मिड़हीअ, मस्जिद, मन्दरु, देवल, टिकाणे खां टहे.

८) जूण चकर में चवनि उनतीअ संदो इमकानु था,
अक्सरु बहितर ठहण लाइ जाइ झूनी थी डहे.

९) आत्मा रूपी अंदर में थी अमरि जोती जग्रे,
कोश कुहिना पया बदिलजनि मौतु थी मिटी सहे?

१०) मूं पचारा ख़ासि ग्रोड़हा शैइर जा मोती कया,
किथि सराफी परख वसि, कींझर कहे कोड्रियूं कहे.

११) हलु त गुल ताज़ा टिड़ियल चरननि अग्रियां बेवस धरियूं,
कीन कूमाणियलु कचो थो पुष्पु ठाकुरु लाइ ठहे.

## (13)

१) होत हृदे में विञायुमि, थियो अबसु ब॒हिरि लहणु,
दिलि छड़े दिलिदार लइ पियो मुफ़त ग॒ोला में ग॒हणु.
२) ग॒लि गि॒चीअ पियल हार जो पाणीअ अंदरि पाछो ड्रिठुमि,
सचु छड़े, पाछे पुठियां पियो मुफ़त वाहड़ में वहणु.
३) जोग॒ु, जपु तपु, साधना, फ़िक्रात ऐं फ़ाक़िय कशे,
राह उल्टीअ जे ख़ता जूं सौ सज़ाऊं थियूं सहणु.
४) दिलि अंदरि जे गुप्त कोठियूं, से करे गिर्वी ड्रिनमु,
पंहिंजे प्रीतम जे मंदर में थियो परावनि जो रहणु.
५) जंहिं अंधारी ड्रियोरे में मूं विहारियो ड्रेव खे,
उन भग॒ल भूंगी जो बहितरि आहि डींगो ई डहणु.
६) तूं रुठो आहीं पिरींअ खां, पर रुसण खां हू परे,
पाण ख़ुद्दि-पुछु पाण खां कीअं थींदो ठाकुर सां ठहणु?
७) पिरिति स्पर्श सां ख़ुदी मिटिजे ख़ुदाईअ में अचे,
कीमियागरु क़ुर्बु आहे लोह लाए पारसु पहणु.
८) अज॒ु तमाशा गाह क़ुदिरत में, उघाड़ो नाचु आहि,
आह हरि कंहिं चीज़ जो बुरक़नि नकाबनि खां टहणु.
९) बरकती बूंदूं बिरह जूं, प्रेमु पिचिकारीअ मंझां,
लाल रंग जूं लाड्रिला! के ख़ासि बेवस खे त हणु.

## (14)

१) छा कंदी तदिबीर उति, जिति सख़्ति दिलि सयादि आहि,
बुलबुलियुनि सां बाग़ में अज॒ु अणपुछियो बेदादु आहि.
२) बूंद शबिनम में ड्रिसो नक़ुली हयातीअ जो क़िसो,
ज़िंदगी लंहिज़े अंदरि आबादि ऐं बरबादि आहि.
३) ख़ासि लाग॒ापो तड़े जो इश्क़ आमीअ में अड़ियो,
सो बदन दुनिया ब्रिन्ही जो बंद में आज़ादु आहि.
४) मर्म जे पर्दे मां निकिती दांहं नाज़ुक दर्द जी,
कहिड़ी कहिड़ी तुंहिंजे हेठां ए फ़लक फ़रियादु आहि.
५) श्याम जी मुर्ली वज॒े शेवा मंदर में धूम सां,
अज॒ु न बिंदिराबन संदो ऊधव! अगि॒यों सो दादु आहि.
६) चशम रोशन लाइ हर जा फ़ेलिसूफ़ी थी नचे,

ऐनक़ी अखि लाइ मगर केड्डी किताबी वादि आहि.
७) फ़िक्र सां फोला कजे हरिहंधि शीरीं थी लभे?
पर असां में तोजिहो जज़िबो किथे फ़रिहाद आहि?
८) ख़ुश लक़ा दुनिया जे मूंहं तां लाहि दुख दरिसी नक़ाब,
सुख दरस लाइ हूर दुनिया दिलिरुबा दिलशाद आह.
९) छा संदसि तशबीह बेवस माहिताबां सां कजे,
रूअि ख़ूबां आशिक़नि लइ ख़दि ख़ुदा आबादु आहि.

## (15)

१) गुप्त घिड़ु दिलि जे मंदर में प्रेम पूजा वास्ते,
साणि खणु श्रद्धा फुलनि मुठि भोगु, भेटा वास्ते.
२) मिलु हली महराज खे मौहताज जे अहित्याज में,
गोलि का दर्दी दुखी दिलि श्याम शेवा वास्ते.
३) कांग दुनिया ते न हणु हीरे कणी चिंतामणि,
दम मिलियो आदमु बणिएं आतम उतमता वास्ते.
४) मुंझ न मज़हब मख़्तलिफ़ु खां घणि अंदरि घब्रिराइज.
बाग़ दुनिया जा जुदा गुल सूंहं सोभ्या वास्ते.
५) टीं पटी तो तुरत तड़हिं मूं जड़हिं ब्रूटियूं ब्रई,
आह बेनाई बराई[1] चश्म बीना वास्ते.
६) चाह केरे चोट तां फेरे थी कोटां कोट में,
आह ख़्वाहिश में ख़राबी मोट मन्शा वास्ते.
७) दीदु दूरी थी पसाए, पर न वेझड़ि ते वहे,
कोन थो दारूं सुझे, हिन बंदि[2] मोतिया वास्ते.
८) लाल अंदरि लालु हो, लालन लिकाए कीअं सघे,
आहि उछल आनंद जी ब्रियो नाउं माया वास्ते.
९) दाइरे इमकान खां तूं लामकां ब्राहिरि रहीं,
आहि आखेरो न कंहिं भी जाइ इनक़ा वास्ते.
१०) घुरि न हरिगिज़ घुरिज अंदरि[3] नक़िसाईअ जो निशानु,
फ़िक्रु बेवस करि फ़ना तलिब व तमना वास्ते.

## (16)

१) तो बिना माना न आहे मुहिब! मिल्कियत माल खे,
धन, बिना दिलि जे, वधाए ज़्योती जंजाल खे.
२) जंहिं सिखया सां राह रोशन थिए न तुंहिंजी राह ड॒े,
सा सुधारे जे औज़, उल्टो करे अइमाल खे.
३) नेक जज़िबे जे चिणंग फूके उमंग सां आगि करि,
का सुठी साइत संवारे थी सघे सौ साल खे.
४) बुख न मरु भरि ते बिही हिन बरकती भंडार जी,
वक़्त जी ख़ासी खाण आहे, खोट ऐं लह लाल खे.
५) कोबि अहिड़ो कोटु नाहे जिति न पुहुचे दर्द थो,
कष्ट कामिलु, कीमयागर थो करे कंगाल खे.
६) वयो मरी माज़ी छुटी, ईंदड़ वहीणो आस जी,
हिन ज़माने में हुकूमत आहि हासिल हाल खे.
७) मौत जी मौजुदिगीअ में जशन थियनि, जल्सा जलूस,
कीन लेखे थो अंदर वारो अकाली अकाल खे.
८) जिनि किताबी धर्म झाग॒े कर्म ते क़ब्ज़ो कयो,
सूरमा से देसि पुहता औज ऐं इक़्बाल खे.
९) आहि पल पल जे पने ते मुहिर तुंहिंजे महिर जी,
का घड़ी गुज़रे नथी जंहिं में भुलाईं भाल खे.
१०) ज़ल्फ़, मड़िगां, अबरो दिलबरु ख़ुदि बख़ुदि आया नज़रि,
रोशनीअ सां गर्चु ड॒िसणो हो रुग॒ो हिक ख़ाल खे.
११) हरि मंदाईअ जे मर्ज़ लाइ ख़ासि बेवस ही इलाजु,
वहम जे तल्वार आड॒ो फ़हमु जी धुरु ढाल खे.

## (17)

१) खणु समरु सवलो सब॒रु ऐ हलु सफ़र जे वास्ते,
वझु मिलियो संसार में आहे समर जे वास्ते.
२) खाणि आहे ख़ुदि ख़ुशीअ जी, अंतु आनंद जो न आहि,
दर्द दुनिया मां खणी हलु दोस दर जे वास्ते.
३) प्रेम जे पाछे अंदरि थो माठि में मेवो पचे,
पिरिति जहिड़ी चीज़ नाहे पर पचर जे वास्ते.
४) क़ीमती हीरे कणीअ खां आहि क़तिरो क़ीमती,
ख़ून जो, हारियलु ख़ुशीअ सां पर पघर जे वास्ते.
५) थी वठी वेंदें हिता, वेड़हे पुराणा वास्ता,

थियो पालणु पेकनि में गोया घोट घर जे वास्ते.

६) आम अखि में ख़ाम जे अटिकियो बणी जो ख़ारु थी,
थियो नज़ारो नूर जो निर्मलु नज़र जे वास्ते.

७) था लभनि जे समुंड जे लहिरुनि मंझां मोती सचा,
थो वहे सो राति जे पोएं पहर जे वास्ते.

८) बहर वह्दत में वञी जे वीर वेरियुनि वरु चढ़िहिआ,
से कंदा सायो वरी कहिड़ो कपर जे वास्ते.

९) दौरु दुनिया जो फिरे कुहिने मर्ज़ जे थो मिसाल,
थी मिले बेवस दवा उल्टे असर जे वास्ते.

## (18)

अहिड़ी वजाई कृष्न कनईए जा बंसिरी.

१) विस्मइ जो राज़ु थियो शुरू कल काइनात में,
गोया गगन मंडल अची वियो तलस्मात में,
टिमिकण संदो न ताबु हो तारनि जे ज़ाति में,
आंदी अजीबु सांत करामात राति में,
आकाश मां आलाप थिया जय जय हरी हरी,
अहिड़ी वजाई कृष्न ....

२) जमुना में सख़्तु जोशु थियो लहरूं नचण लगियूं,
पाणीअ जे तार तार मां तूतारियूं वगियूं,
मछिलियूं मथाछिरे ते मधहोशु थी भगियूं,
बेहदि बिरह जे बाहि मां मारण लगियूं खगियूं,
आयुनि अखियुनि में प्रेम खां पाणी तरी तरी,
अहिड़ी वजाई कृष्न ....

३) वण अमृती रसु प्रेमु पी झूलण झुलण लगा,
ड्रारुनि जे गुंच गुंच मां पन पन खिलण लगा,
टारियुनि जे बूर बूर मां गुल फुल फुलण लगा,
मेवा मिठास खे रसी छुलकण छुलण लगा,
वण राइ वाह वाह थी हीअ जा हरी भरी,
अहिड़ी वजाई कृष्न ....

४) गोपियूं ग्वाल गोप थिया बेसुरुत बेख़बरु,
मुरिलीअ जे मधुर सुर में जादूअ भरियो असरु,
हो ध्यानु बेगुमान धुनी ध्यान में मगर,

बिनि श्याम श्याम श्याम जे आयो नकी नज़र,
हरि दिलि में बिरह बाहि थे भड़िकी ब॒री ब॒री,
अहिड़ी वज॒ाई कृष्न ....

५) थी ब्रजि सुर्ग॒धाम वयो, मौज़ूं मचण लग॒ियूं,
विया मृघ मोर मस्तु थी, डेलूं नचण लग॒ियूं,
सरसब्ज़ गाह ख़ुश्कि थिया, पोखूं पचण लग॒ियूं,
आनंद लहर ब्रज में वेई वरी वरी,
अहिड़ी वज॒ाई कृष्न ....

६) सीतलि हवा सुधीर हली हीर फ़रतही,
लाती उड॒ामकनि बि अजबु लाति क़ुदरती,
जीतनि मिरुनि में मौज़ महानु मौज जी मती,
थी वेई बिंदराबन संदी बेवस उतम गती,
चश्मनि में बर्फ़ थी वियो पाणी ठरी ठरी,
अहिड़ी वज॒ाई कृष्न ....

## (२३ बिरदह (सिंधी))

''तोखे साहु संभारे'

वेठें कीअं विसारे मिठिड़ा, तोखे साहु संभारे!

१) ककर कारोंभार उथिया ऐं पूरब पर फड़िकाया,
तुंहिंजा पूर करे पहु पको, मुंहिंजे मन ते छाया,
आवारह कंहिं संदरीअ वांगे खिंवण खली अखि मारे, मिठिड़ा!
नख़िरा करे निहारे!

२) हरि वण टिण जे ग॒ति झले, पियो ड॒े धांधोला छू हो,
नाज़ुकु नेण चुंभाए ज़ोरीअ, ज़ालिम लाओ रोहो,
ग़ैरतमंद हठीले वर जीएं गाजि गड़ेअ डेज॒ारे, मिठिड़ा!
बीठो आहे उलारे!

३) झातियूं झुड़ मा पाए तारा, लिकी लिआका पाइनि,
जीअं शरीर सहेलियूं मुरिकी, हिक ब॒े ड॒े वाझाईनि,
चंडु लज़ोड़ी कुंवारि जीअं पियो, मुंह ते घूंघटु ढारे, मिठिड़ा!
विखिरियल वार संवारे!

४) बिरदह बूंद बहारी लाती, चोलीअ अंग न मापे,

आऊ अङण तूं मोर मिलण लाइ, अज़ु कंहिं सांग सियापे,
वेठी वाट वाझायां, रोआं तो लाइ ग़ोड़हा ग़ारे मिठिड़ा!
जीअरे मौतु न मारे.

## (2)

नींहुं निभाइण जा ड्रींहं आया, आई ऋतु मस्तानी, आऊ वरी तूं जानी!

१) नहर किनारे, कंगु तंवारे, सारियाईं को साथी,
'पी पी' करे पपीहे पंहिंजे, मन तां मोंझ न लाथी,
केरु चवे? ही माक जा क़तिरा, लुड़क उदासी दिलि जा,
वारीअ ते ही छोलियूं ज़ापनि, फथिका कंहिं बिस्मिल जा,
ओ शल जवानी माणी मिठिड़ा, मिलु आ महिल सहानी, आऊ वरी तूं जानी!

२) सियारे जी हरि राति हेकांदी, मूं आ सुड़की काटी,
उल्के खां सेरांदीअ सीरे, रखां रोज़ु ड्रियाटी,
बेही चाउंठि वटि चितायां, रोज़ु सुबुह जो राहूं,
भेर ड्रिसां को तुंहिंजे भूरल, दिलि मां निकिरनि दाहूं,
पर न अणासीअ जा अझिड़ा तो, अची कई अहसानी, आऊ वरी तूं जानी!

३) अंबनि ब़ुरु झलियो, निमि हाणे कका पन थी छाणे,
आई आहि बहारी, तूं बि आऊ परीं हिन टाणे,
नीरा गुल चणनि जा नासी, मूरी जा गुल मुरिकनि,
संग झंडोला कूंअरा कूंअरा हीर ते बीठा ढिरुकनि,
हाइ जीअं लहिराइनि पोखूं, झूमे दिलि दीवानी, आऊ वरी तूं जानी!

४) भेज़ु भिनीअ जो, भिनीअ फ़िज़ा में, तुंहिंजी यादि सताए,
सा झटि भाग़ु सुहाग़ु जे भायां, लालण लीअड़ो पाए,
पासा चोरियां ऐं कर मोड़ियां, हाइ अचनि ओब़ासियूं,
इश्क़ जो मुश्कु छुली पियो छपिरें, ग़ोठ ग़लियूं सभु वासियूं,
सीने सां लग़ाए रोआं, बिरहह नैननि निशानी, आऊ वरी तूं जानी!

## (3)

मोहियो तूं महिबूब मोचारा, दरिसु ड्रेई दरिसन - मुंहिंजो मन!

१) सूरत, सीरत, नाज़ निहूड़ियो, जादू लाइ, जिस्मु वकोड़ियो,

मुरिकी लाल लबनि - मुंहिंजो मनु!

२) छतड़नि जी छिनु, कीन तूं यारी, खिलि मिलि, डोल लहे मोंझारी,
कीन विसारि वचन - मुंहिंजो मन!

३) मुंहिंजी दिलिड़ी, मनु मस्तानो, फुरिक़त जे ग़म, कयो दीवानो,
पसे थिया परसन - मुंहिंजो मनु!

४) डुख सुख बसि हिक ख़्यालु महफ़ूफु, सूरनि सां सरवेच मशरफु,
मस्तु बीठा मुरकिनि - मुंहिंजो मनु!

५) कतिरे खे क़ल्ज़म जी चाहत, महिज़ मिलण सां ख़ूबि थी राहत,
उथी मौज़ मिलनि - मुंहिंजो मनु!

६) बिरदह जे दिलि, बैत मज़न आ, तुंहिंजी तलब में, रोज़ मगन आ,
अचु! थिए रश्कु अदनु - मुंहिंजो मनु!

## (२४ उस्ताद बुख़ारी)

आऊं कीअं सेज सुम्हां - आऊं कीअं सेज सुम्हा
मुंहिंजा मारुअड़ा पधरे पट सुम्हनि.

१) लीमा, अंब, निमूं, ताल्हियूं बाग़नि में,
तोसां कीअं करियां ग़ाल्हियूं बाग़नि में,
आऊं कीअं छांव विहां, आऊं कीअं छांव विहां.
मुंहिंजा सींगीअड़ा बीठा ग़ाह ग़हनि - आऊं कीअं...

२) तुंहिंजे मेज़नि ते सौ सौ ताम अचनि,
खाईनि कांग कुता झूठा जाम बचनि,
आऊं कीअं लूणु चखियां, आऊं कीअं लूणु चखियां,
मुंहिंजा मारुअड़ा रोज़ा रोज़ रखनि - आऊं कीअं...

३) तो वटि ईद ख़ुशियूं, शादियूं काज विहांव,
रेश्म वेस वग़ा ड्रींहों ड्रींहं नवां,
आऊं कीअं सींधि ढकियां, आऊं कीअं सींधि ढकियां,
मुंहिंजा मारुअड़ा नंगे अंगि घुमनि - आऊं कीअं...

४) उस्ताद ओसीअड़ा जेड्रियुनि सरितियुनि खे,

ठोके बाहि ड्रियां सखिणियुनि कोठियुनि खे,
आऊं कीअं गीत चवां, आऊं कीअं गीत चवां,
मुंहिंजा मारुअड़ा गूंगा कीन कुछनि - आऊं कीअं....

## (ब्र)

## (२५ बुढल)

इश्क़ संदी आड़ाह में आश्क़, जीअरे जानि जलाइनि था.

१) रातियां ड्रींहां रूह पंहिंजे में, वेठा रामु रीझाइनि था.
२) अड्रीअ ईद उनहनि जी आहे, जेके कोपा कंध कपाइनि था.
३) जिनि मुल्क जी जाइ न जाती, पेर उते नेई पाइनि था.
४) इश्कु बुढा थी इमाम इनहनि जो, जेकी सजदे सीसु निवाइनि थो.

## (2 राग्र-काफ़ी)

दर्द बिना ब्रियो समुझे केरु, उल्टी बाज़ी इश्क़ जी आहे.

१) बाहि बिरह जी ड्रे थी भड़िका, मच में घिड़े को मर्दु मथेरु
२) हीअ तां कार कुसण जी आहे, रांदि खटे को शेरु दिलेरु
३) जीअरे जान जलाए पंहिंजी, पोइ पाइ हिन पिड़ में पेरु
1
४) समुझ बुढल हिन ग्रा़ल्हि ग्रुजीअ जो, लाहूती को लिखंदो भेरु

## (3)

सज्रुण रीअ थी सिकां, मुहिबत मारी आहियां.

१) खणदियसि खांन पुन्हल ड्रे, वहिदत वारियूं विखां
२) काग़ज़ केच धणीअ ड्रे, रोयों रोयों लिखां
३) दिल में दिलिबर यार जा, सबक़ वेठी सिखां
४) नींहं बुढल निरिवारि कयो, हाणे काड्रे लिकां

## (4)

इश्कु अजबु इसरारु ड्रिठुमि, बिरिह जो बारी ड्रिठुमि

१) मजने खे लिंव लैलीअ लाती, रोईंदा ज़ारूं ज़ार ड्रिठुमि

२) मन्सूर खे कंहिं मुहिबत मारियो, सूलीअ ते हसिवारि ड्डिठुमि
३) सूफ़ीअ जो सिरु नेज़े चाढ़िहियांऊं, स्वामी सख़न सचियार ड्डिठुमि
४) यार ब़ुढल[1] जे कोल हमेशह, दम दम जो दीदारु डिठुमि.

## (5)

पंहिंजो ग़ोले ड्डिसु तूं पाण, आदम कीअं कोठाईं तूं
रंग इलाही आहीं तूं.
१) तो में कैब तूं में क़िबलो, ज़ाति मूं ज़ाति जाग़ाईं तूं,
बणिया बाग़ त दिलि जे अंदरि, हरिदमु हुकुम हलाईं तूं.
२) दलदलि वांगे बुतु बनायुइ, तंहिंखे आपु नचाईं तूं,
वंहु अक़्रब[2] आपु अलायुइ, हुणु क्यूं पाणि लिकाईं तूं.
३) पाण घुमाईं, पाण घताईं, बाज़ी आप पिनाईं तूं,
सूरीअ ते मन्सूरु चढ़ाईं, अनाहलहक़ु अलाईं तूं.
४) ब़ुढड़ो आखे हरि मज़हर ते विच,आपे रंग रलाईं तूं,
आपे मुलां आपे क़ाज़ी, आपे दरसु[3] पड़िहाईं तूं.

## (6)

जेका रांझन रमज़ रलाई, सा त अजबु ड्डिसण में आई.
१) रातियां ड्डींहं तलिब तव्हांजी, ख़्यालु वयो तनु खाई
२) ज़ोर अव्हांजे निसंग निहोड़ियो, चश्मनि चोट चलाई
३) मुहबत तुंहिंजे मच मचाया, दूंहें दर्द दुखाई
४) रोज़ु अज़ल खूं यार **ब़ुढल** खे हरिदमु ख़्यालु ख़ुदाई.

## (7)

घड़ीअ घड़ीअ सिरु घोरींदुसि, मां त ड्डेहु पुन्हल लइ ड्डोरींदुसि
१) हीउ सिरु यार सज्जण जे अग़ु तूं, कंधु कुल्हनि तूं कोरींदुसि
२) रातियां ड्डींहां रूह पंहिंजे में, सिक जा सग़ा मां सोरींदुसि
३) पखे[4] ब़ुढल जे आउ तूं पेही, हालु अंदर जो ओरींदुसि

## (8)

खोलियो नींहं नक़ाबु, अक़ुलु सभु इश्क़ उड्डारियो.
१) रमज़नि वारे राज़ सां, भग़ो होत हिजाबु

२) रोज़ वज़े थो रूह में, रग रग मंझि रबाबु
३) कुर्बनि वारे कात सां, कुहे त करे थो कबाबु
४) अची कड़कियुमि ओचिते, बिरिह जे बहरी अक़ाबु
५) रोज़ अज़ल खूं असुल बुढल खे, बिरह पढ़ायो बाबु

## (9)

असां रहिबर रिंदि सड़ायूं था, सिर जो सांगो लाहियूं था.
१) ग़ुझिड़ी ग़ुझिड़ी रमज़ रलाए, नौबत नींहुं वज़ायूं था.
२) झेड़ा जुठियूं लोक ताना, चुमी सिर ते चायूं था.
३) मूंतूंअ[1] वारे माम परूड़े, सूरीअ सिरु नवायूं था.
४) इश्कु बुढल खे रोज़ अज़ुल खूं, गीत अनाअहलक़ गायूं था.

## (10)

बार मलामत चावीं तूं, मर्द मरीं पअु जीअरे जग में
१) रातियां ड्रींहां अलफ़ सां ओरिजि, रूह में राम रीझावीं तूं.
२) दीन कुफ़्रि जी छोड़ि तूं दावा, अग़िते क़दमु उठावीं तूं.
३) मरण कनूं तूं मुड़ि न आशिक़, सूरीअ सिरु सहावीं तूं.
४) दर्दु बुढल रखु दिलि में दाइमु, हू दा हुलं मचावीं तूं.

## (11)

महर मन में हुइयूं हुइयूं, मेख़ां मुहबत वारियूं.
१) सुरक सुहबत जे साह सफ़ा कियो, वयो होत हथनि सां ड्रिंयूं ड्रियूं.
२) दीदां दिलिबर दोस्त सां, मुंहिंजो क़ाबू कड़िजी वयूं वयूं.
३) रातियां ड्रींहां यार पंहिंजे ड्रे, ख़्यालु वञे थो खयूं खयूं.
४) ग़ुझिड़ियूं ग़ाल्हियूं रोज़ु बुढल खे, रूह अंदर मंझि रहियूं रहियूं.

## (12)

साइत कीन सरे ड़े सरे ड़े, मुहबत लइ हां मांदी.
१) सरितियूं सूर थिया थमि सून्हां, दर्द दुखाया दिलि मंझि दूंहां,
मन में थो मचु ब़रे ड़े ब़रे ड़े, वार न आहियां हिक वांदी.
२) सरितियूं सज़ण जी आऊ सिक में सिकां थी, ख़त परिवाना रोज़ु लिखां थी,
ग़ोड़हनि ग़ाटु भरे ड़े भरे ड़े, वेठी पुछायां पांधी.

३) जानिब जीअरे अची पातमि झाती, बेवसि मुंहिंजी दिलिड़ी जो फाथी,
आहे मंझि अड़ी ड़े अड़ी ड़े, बिरह कई हां बांदी.
४) नींहुं बुढे खे हो नंढिड़े लाकूं, हयांउ फ़िराक़नि फुटे कयो फाकूं,
मारियसि ज़ोक़ ज़री ड़े ज़री ड़े, केच धणीअ वर कांधी.

## (13)

लाए लिंव हणी वियो यारु मियां, जंहिंजे बिरिह क्यो बीमारु मियां.
१) होत हणी वियो हथ सां, सो त कुंढो मंझि कापार मियां,
जिनि खे लगो से ई ज़ाणंदा, हिन दर्द जो धुन्धकार मियां.
२) नेणनि नार नवां कया, से त रुअनि ज़ारों ज़ारु मियां,
हंध पथिणड़ियूं होत लाइ, से त घोरिया सभु सींगार मियां.
३) अठई पहर अजीब लाइ, मांखे अंदर में अधिमादि मियां,
1
सूरनि साड़ियो साह खे, अचे क़ल्ब कीन क़रारु मियां.
४) मूं में मदायूं थी घणियूं, से त बेहदु बेशुमार मियां,
कंदो ब्राझ बुढो चवे, वेंदो साथु गड्डियूं सरिदार मियां.

## (14)

मर्दु थी मैदान में, ड्रे सिरु सींगारे यार खे.
१) सिर जी दावा छोड़ तूं, मुंहुं न मच खां मोड़ि तूं,
जायूं जीअ में जोड़ि तूं, ड्रिसु दिलि अंदरि दिलिदार खे.
२) अलफ़ु करि अल्लह तूं, वठु पिरियां जो राह तूं,
छो थियो आहीं गुमराहु तूं, यादि करि पंहिंजे इक़रार खे.
३) दिलि जा पर्दा खोलि तूं, रूहु न ब्रे घरि रोल तूं,
पाण में पेही ग्रोल तूं, ड्रिसु नूरी तिजिलेदार खें.
४) खटु बुढल बाज़ी इहा, लाहे छड्डि से लोक जा लियाका तूं,
ख़्याल वढि ख़तिरा ब्रिया, ड्रिसु सिक मंझूं सरिदार खे.

## (15)

तुंहिंजे बिरह ब्रधा अथमि बार,
मिलु यार तुंहिंजी तार मुईअ खे मिलण जी.

१) वठी विरह वकोड़ियो, वांदा नाहिनि वार.
२) पालिजि पोरहियाइत खे, मा में थी ऐब हज़ार.
३) हुजु हमेशह हितिड़े, दिलिबर थीउ न धार.
४) करिका ब्राझ बुढो चवे, साहिब लगि सतार.

## (16)

सिघो मोटिजि यार तोखे वेठा सारियूं, सच जे सुरक साफु वईं का पियारियूं.
१) तुंहिंजे सूरनि जी कहिड़ी ग़ाल्हि करियां, पाए पांदु गिचीअ पिर जे पेशु पवां, अबिरू आशिक़ ते कनि था कान संवां, ड्राढ छोह छड्रियूं विरहनि वीचारियूं.
२) तुंहिंजे सिक में यार सदा थी सिके, परिवाना पिर ड्रे रोयो रोज़ु लिखे, मन के मुहिब अचनि वेठी वाट तके, मुंहिंजे फटनि जो तो वटि दोस्त दारूं.
३) इश्क़ु हो बुढल खे ब्रंधणनि लाकूं, छो मुहिब ढकीं मुंहुं अजीबु असां खूं, रूहड़ो आहि रतोतनि ही तव्हांखूं, दमि न थिजाइं धार तो ड्रे था निहारियूं.

## (17)

ब्रारोचे ब्रोली रे यार, सेखारियुमि सूरनि जी.
१) खणंदसि पेरु पुन्हल जो, ग़ोठनि में ग़ोले.
२) ड्रेई विया ड्रेर ड्रुखीअ खे, ड्रूंगर जी ड्रोली.
३) पोरिहियत खणंदा पाण सां, गड्रींदा गोली.
४) अठई पहिर अंदर में, हींअड़े में होली.
५) सिक बुढल खे सेदा, पाकु पसां टोली.

## (18)

ड्रुखनि जूं ग़ाल्हियूं चवंदसि पुन्हल खे, अथमि उमेद वरी मिलंदो शाल.
१) रमज़ सज़ण जी दिलि आहि रेही, पुन्हलु पुखे मुंहिंजे ईंदो पेही, सदिक़ो सज़ण तूं मड्रियूं ही माल.
२) ताना तुनका माण्हूं ड्रियनि महिणा, पोइ उहे पातुमि करे ग़लि ग़हिणा, से मूं सूंहनि था मोती दर लाल.
३) मर्ज़ु मुहबत जे जो आहि डभु नको दारूं, हयांउ फ़िराक़ुनि फटे कयो फारूं, भला करे भेरो नंगी नंगपालु.
४) सरितियूं सूरनि सबक़ु सेखारियुमि, मूंहुं तूं घूंघट वरी इश्क़ु उतारियुमि, दर्द लाइ आणे दिलि ते धमालु.

५) लज़ त शर्मु इश्क़ विञायुमि, केच कशालो पेरें पंधु आयुमि,
बीहणु भंभोर में मूंखे आहि जंजालु.

६) मोहियो बुढल खे मोटी इश्क़ अव्हांजे, च्रि कई दिलि तलब तव्हांजे,
साइत सज़ण रीअ भांयां सालु.

## (19)

अथी मुल्कु असांजो अगे अगे, असां झटि झालण वारा जोगीअड़ा,

१) नेण धरींदइ ख़ाक मिटीअ में, सिर जा भाई सगे सगे,
असीं पलक टिकण वारा परडेहीड़ा.

२) पार पिरीं ड्रांहु केरु झलींदो, ज़ोर न कंहिंजो लगे लगे,
असां अमर मञण वारा मारूअड़ा.

३) सिजि चंड न हो कतियां तारे, असां उनहीअ खूं बि अगे अगे,
ड्रेहु ड्रोरण आया सी ड्रोथीड़ा.

४) बुढल चवे नेठि जो नींदो, वेरे मथे ते वगे वगे,
असां सांग करण आया आहियूं सांगीयड़ा.

## (20)

ड्राढो नींहु पुन्हल मूं सां लाइ लायो तो, लायो तो बिरिह बछायो तो.

१) सुती पेई हुयसि सेज पलंग ते, जारऊं यार जगायो तो.

२) शौक़ मुहबत जूं छिमिकनि छेड़ियूं, नाचूअ जां त नचायो तो.

३) यार बुढल खे रोज़ु अज़ुल खूं, जानिब ज़ामु पिलायो तो.

## (21)

इश्कु अजबु इस्रारु, जंहिंखे लगो तंहिं खूं पुछिजे,
लगो तंहिं खूं पुछिजे, लगो तंहिं खूं पुछिजे. इश्कु अजबु ....

१) नींहुं मूंखे नंढिड़ो नियापो, कमु न सुझे ब्रियो कारु,
जेसीं न थो तोखे ड्रिसिजे, न थो तोखे ड्रिसिजे, ओ तोखे न थो ड्रिसिजे,
इश्कु अजबु ....

२) मूं जहिड़ीअ मिस्कीन सां, विथी न विझिजे वार,
रती मूर न रुसिजे, मूर न रुसिजे, मूर न रुसिजे,

इश्कु अजबु ....

३) साईं बुढल खे इश्कु अव्हांजो, बिरह कयुसि बीमारु,
पेर भरे तिनि खूं पुछिजे, भरे तिनि खूं पुछिजे, भरे तिनि खूं पुछिजे,
इश्कु अजबु ....

## (प)

## (२६ लखमीचंद 'प्रेम')

तुंहिंजो बि नेठि हिक ड्डींहु बुलिबुलि-बहार ईंदो,
गुलड़नि जा नेण छुलंदा तिनि में बि प्यारु ईंदो.

१) रहंदी ख़िज़ां न हरिदम उमीद जे चमन में,
उड़िरी बहार तो वटि थी बेक़रारु ईंदो.

२) कोसी हवा में तुंहिंजो घुटिजे जो दम बदनु दम,
पक ज़ाण हीर - झोंको पिणि बारि बारि ईंदो.

३) हाणे गुलनि पननि जी अखि - बूट रांदि बंद आ,
मस्ती खणी उनहनि वटि ब्रेहर ख़ुमारु ईंदो.

४) ज़ाणां थो तुंहिंजो बुलिबुलि गुलशन उदासु आहे,
मुखिड़ियूं हज़ार टिड़ंदियूं दिल खे करारु ईंदो.

५) छांयल दुखनि जो बादलु चौतरफ़ आहि तुंहिंजे,
सुख जो खणी संदेशो गिरिदव ग़ुबारु ईंदो.

६) अहिड़ो त मस्तु थींदींअ पंहिंजो बहारु पाए,
ख़ुदि पाण ते न तोखे पिणि एतिबारु ईंदो.

७) मिठिड़ी बहार लइ, उथु स्वागत जी करि त्यारी,
हू 'प्रेम' प्रेम में थी बे अख़ित्यारु ईंदो.

## (2)

उमर मुंहिंजा मारू हुति आहिनि ड्डुखनि में,
लोई कीअं मां लाहियां विहां कीअं सुखनि में?

१) ज़ोरी करि न ज़ालिम न रहंद सदाई, कढो इहा छड्डि तूं मन मां मंदाई,
ग़ारे थी जुदाई मरां थी बुखुनि में, उमर मुंहिंजा ....

२) ड्डिनी माऊ लोली ब्रिन्हीं खे अदा गड्डु,

इनिहीअ बंद बुछिड़े मां मूंखे कढी छड्डि,
सदा सांगी कनि सड्ड अबाणानि कखनि में, उमर मुंहिंजा .....

३) मूंखे वतन पंहिंजे जी हुब थी सताए,
मिठनि मारूअड़नि जो ड्डसु को बताए,
चवां थी चिताए आहे प्रेम पखनि में, उमर मुंहिंजा .....

## (२७ पीर बख़्श)

सूर सज़ण जा मूं सठा ड़े सरितियूं, सूर सज़ण जा!

१) सिक इनिहीअ सौ सालिम साड़िया, क़ुर्ब करोड़ें कुठा ड़े सरितियूं!
२) पीर फ़क़ीर अमीर हज़ारें, मुहबत मुहिब जी मुठा ड़े सरितियूं!
३) मूरि न माम परूड़ियमि, वो पिर जे, रीति कहिड़ीअ खां रुठा ड़े सरितियूं!
४) पीरबख़्श प्रीति मंझारे उन, मींहं विरह जा वुठा ड़े सरितियूं!

## (2)

ख़ुशि थी वज़ाईंदुसि खरिताल, उहे राग़ सुणे शल राणो!

१) साज़ सभेई वियो सोडलु साड़े, सारींदे मूं थिअड़ा साल
२) राणे ब्राझूं राज़ु उनहनि खे, हरिदमु भायां थी हरिताल
३) सेज पलंग ते साजनु ईंदो, करे भलाई पंहिंजो भालु
४) ग़ाइणु ग़चु न ज़ाणां असुल खां, कूड़ो तो तिरिकियो अथमु तालु.
५) पीरबख़्श चवे परिची प्यारल, नंगु सुञाणे अचे नंगपालु.

## (२८ पहलाज)

भेनरु हुयसि ब्रांभियाणी, धोब्रनि मूंखे धोब्री कयो.

१) पेट रूपी पेतीअ में पाए, दुनिया दरियाह में छड्डियूं लोड़िहाए,
नींगरु हुयुसि निमाणी, धोब्रनि मूंखे धोब्री कयो.
२) धोब्रियुनि जे संग धोब्री बणायो, नालो ससुई मूंते रखायो,
ख़लक सड्डे थी खटियाणी, धोब्रनि मूंखे धोब्री कयो.
३) वरिहियनि खां मूं वरु घरु पातो, पर न पापिणि मां पुन्हलु सुञातो,
वेठे वेल विहाणी, धोब्रनि मूंखे धोब्री कयो.
४) मन रूपी मकिरान उन में वेंदसि, पुन्हल पहिलाज मां पंहिंजो पसंदसि,
थींदसि साग़ी सियाणी, धोब्रनि मूंखे धोब्री कयो.

## (2)

हरिगिज़ न करि भरोसो, फ़ानी आ ज़िंदगानी,
पाणीअ जे बुलिबुलनि[1] जा, तुंहिंजी थी नौजवानी.

१) पाणीअ में लूण वांगे, रहंदी न का निशानी.
२) काग़ज़ जे नाव[2] वांगे, मिनटनि संदी महिमानी.
३) क़ाइमु न रहंदी कंहिंजी, धरतीअ ते राज़धानी.
४) पहिलाज प्रेम करि तूं, आहे जो जीअ जानी.

## (3)

दुनिया दुरंगी, ब़ेई रंग रचाए.

१) कड़हिं घोटु घोड़ीअ ते चाड़िहे, बाजा बिगल वज़ाए,
कड़हिं इहो घोटु गुलाबी, चिख्या मथां चिड़िहाए.
दुनिया दुरंगी, ब़ेई रंग रचाए.
२) कड़हिं हाकिमु हुकुम हथनि में, वेठो हुकुमु हलाए,
कड़हिं नीलु लोही हथकड़ियूं, हथनि मंझि त हणाए.
दुनिया दुरंगी, ब़ेई रंग रचाए.
३) कड़हिं सोभा सिज चंड जहिड़ी, सभु को पियो साराहे,
कड़हिं मर्ज़ लग़ाए मूंह में, वेझो कोन विहाए.
दुनिया दुरंगी, ब़ेई रंग रचाए.
४) कड़हिं घर में मट माया जा, लेखो केरु लग़ाए,
कड़हिं मानीअ लाइ माण्हुनि खे, पेनुनि वांगे पिनाए.
दुनिया दुरंगी, ब़ेई रंग रचाए.
५) कड़हिं महल में मोहन जहिड़ा, नींगर पेई नचाए,
कड़हिं ईहे महल ऐं माड़ियूं, बेगाना पेई बणाए.
दुनिया दुरंगी, ब़ेई रंग रचाए.
६) दुनिया आ पहिलाज दुरंगी, कंहिंसा नेबहु नाहे,
दया करे हिन धूतीअ खां, भगिवंतु शाल बचाए.
दुनिया दुरंगी, ब़ेई रंग रचाए.

## (4)

रातियूं बि विजायूं तो मूर्ख ड्रींहं बि विजाया,
सत्नामु जपे कोन कयइ स्वास सजाया.

१) इन्सानु बणी तो न अहिसानु सुञातो,
भुलिजी बि कड॒हिं तो न भग॒वानु सुञातो,
अठई पहर अंधा रहीं ऐश में आतो,
उमरि विञाई तो करे ख़्याल अजाया, रातियूं बि विञायूं....
२) डी॒हं त विञाए तो छड॒िया घिटियुनि घुमण में,
रातियूं त विञाए तो छड॒ियूं सभेई सुमहण में,
स्वास विञाए तो छड॒िया रुलण पिनण में,
लोकु ऐं परलोकु ब॒ई तो त लज॒ाया, रातियूं बि विञायूं....
३) पहिलाज प्रभूअ जे बिना को न थी कंहिंजो,
बिना भज॒न बंदा थींदे अंत में अहिंजो,
स्वास स्वास सिमरि तूं सतिनाम थे सहिंजो,
बाहि मां जंहिं ब॒िलीअ संदा ब॒ार बचाया, रातियूं बि विञायूं....

## (२९ पीरलु)

थलु :- जंहिंखे तार लग॒ी आहे यार जी,
सा क़ीअं कंदी घरब॒ार जी.
१) गोली वया गूंदर गडे॒, हीअ निमाणी हिति मरे,
ख़बर लहिजु ज़रे ज़रे, बिरह जे बीमार जी.
२) जहिड़ी तहिड़ी तुंहिंजी आहियां, तो बिनि काडे॒ मां काहियां,
सीनो कहिड़ो तोसां साहियां, दवा करि आज़ार जी.
३) पीरलु अचिजि ओरे हली, मुर्शिदु कंदो कुल जी भली,
चाऊंठि चुमां चश्मिन चले, उमत जे आधार ते.

## (2)

ख़ुशि थो गुज़ारीं मुंहिंजा मिठा, आशिक़ तुंहिंजे त अज़ाब में.
१) जिनि खे लग॒ी जीउ में जड़ी, सिक सोज़ में वियड़ा सड़ी,
तिनि मारूअड़नि खे वरी, मूंहड़ो डे॒खारिजि ख़्वाब में,
ख़ुशि थो गुज़ारीं मुंहिंजा मिठा.
२) ब॒नु पयो जुदाईअ जो जीअणु, तंहिंखां ज़हर जो प्यालो पीअणु,
पंहिंजे यार खां दमि दमि धार थियणु, आहे कहिड़े त किताब में?

ख़ुशि थो गुज़ारीं मुंहिंजा मिठा.

३) लीअड़ो पातुमि लोकूं लिकी, उमिरि विञायमि सारी सिकी,
तक़दीर रब ड्रूं हुई लिखी, है है बंदीअ जे बात में.
ख़ुशि थो गुज़ारीं मुंहिंजा मिठा.

४) पीरलु चवे त पक ज्ञाणु तूं, ड्रुख जा गुज़ारिया ड्रींहं मूं,
सरिकारि रब जे रूबरू, हरिको ईंदो त हिसाब में.
ख़ुशि थो गुज़ारीं मुंहिंजा मिठा.

## (3)

सभिको चवे घुरिजे सबुरु, दिलि जी ख़बर दिलिदार खे.

१) सिक सां सबुर छा लगे, तीरनि चिटियो सो कीअं लगे,
निशान नेणनि खां अगे, काड़े कंदो ई कार खे.

२) आफ़िरीं वारा रड़ंदा वतन, सिक में सड़िया सड़ंदा वतनि,
गुझ में गरिया गिरंदा वतन, तिनि खे दिलासो दिलिदार खे.

३) निंडड़ो असुल नेणनि न अथनि, सौ सूर में सिजड़ा लथनि,
लोकूं लिकायो था वतन, हिन इश्क़ जे आज़ार खे.

४) पीरल पिरीं जा जे थियनि, से मरु ज़हर जा प्याला पीअनि,
तोड़े मरनि तोड़े जीअनि, नाहे ग़मु गमख़ुवार खे.

## (4)

आयल आदेसनि जा मूंखे पलि पलि पूर पवनि,
जीजल जोगीअड़नि जा मूंखे, पलि पलि पूर पवनि,
पलि पलि पूर पवनि, वो मलंग शाल मिलनि.

१) दुआ करियो त देसु वसे, मन अवधूती बि अचनि,
लंगड़ हणी लाहूती लड़ी विया, पूरब पंध पुछनि,
जीजल जोगीअड़नि जा मूंखे.

२) वेठी आहियां वाट ते, मन सामीअड़ा सरिचनि,
वाग वराए विलहीअ ते, मुंहिंजे ऐबनि ड्रे न ड्रिसनि,
जीजल जोगीअड़नि जा मूंखे.

३) अज़ असांजे अङण ते नांगा नाथ नचनि,
कुर्ब सुज्ञाणी पंहिंजो मन पीरल सां परिचनि,
जीजल जोगीअड़नि जा मूंखे.

## (३० परमानंद)

ड़िसण वारो लख अखियुनि सां तोखे सदिवारि ड़िसंदो आ,
ज़ाणण वारो सभ थो ज़ाणे, पर मूंह सां कुझु न कुछंदो आ.

१) केड़ी करीं थो तूं चतुराई, दाता सां दोखेबाज़ी,
तूं समुझीं थो तुंहिंजे कपट ते राम थींदो राज़ी.
हू तुंहिंजे हरिहिक हरिकत खे नाथ नज़र में रखंदो आहे - ड़िसण ....

२) जेकी करीं थो तूं बुछिड़ायूं, समुझी थो फब्रिजी वेंदियूं,
पाप जूं ग़ठिड़ियूं जेके ब्रधीं थो, समुझी थो दब्रिजी वेंदियूं,
कुदिरत वारो कैमेरा सां तुंहिंजा फ़ोटा कढंदो आ - ड़िसण ....

३) हिन जा मुलाज़िम तुंहिंजे पोयां, साए वांगुरु फिरंदो आहिनि,
सैकंड सैकंड ऐं मिनिट मिनिट जो, तुंहिंजो लेखो लिखंदा आहिनि,
पाप पुञ जा परमानंद वेही तुंहिंजा चित्र चिटींदो आ - ड़िसण ....

## (३१ पारू ठाकुर)

जग़ में आयो नानिकु शाहु - जग़ में आयो नानिकु शाहु,
नानिकु शाहु - मुंहिंजो शाहनु शाहु.

१) कालूअ जे घरि जन्म लधाईं, तिलिवंडीअ जो मानु कयाईं,
बे वाहनि जो आहे वसीलो, हीणनि जो हमिराहु - जग़ में आयो...

२) भग़तनि ते जड़हिं भीड़ ड़िठाईं, , निकरी तिनि जा कार्ज कयाईं,
पंजनि कोड़्युनि ते ब्रेड़ो तारियाईं, आहे हू दानाहु - जग़ में आयो...

३) कलिजुग़ जो अवितारु हू आहे, ओखीअ जो आधारु हू आहे,
जेको पुकारे सिक सां हिनखे, ड़से थो संईं राह - जग़ में आयो ...

४) सदा बाबल जो ध्यानु धरियां मां, दरि गुरुअ जे रोज़ वञां मां,
ब्रिया सभु जग़ जा नाता टोड़े, रखां बाबल सां चाहु - जग़ में आयो ...

## (2)

तौकल सां ई तरंदे तार, रखु झूलण ते, रखु लालण ते!
ब्रेड़ो तुंहिंजो थींदो पारि, रखु झूलण ते, रखु लालण ते!

१) समुंड्र अथाहु पुराणी नैया, ख़ालिक़ु तुंहिंजो आहे, खिवैया,
पाणही लहंदो सार! रखु झूलण ...

२) हूई ख़लिक़े, हूई पाले, हूई सुख दुख मंझि संभाले,

हूई साहिबु रबु सतारु! रखु झूलण ...

३) वालीअ खे हरि जीवु वणे थी, हरि कंहिं जो बारु खणे थो,

तुंहिंजो भी हू खणंदो बारु! रखु झूलण ...

४) ब्राझ ब्रेड़ीअ में हलंदो चाड़िहे, भाल भलाए हू बिनि भाड़े,

सुणी सुवालिणि जी त पुकार! रखु झूलण ...

## (भ)

## (३२ भोज़ल)

वाह वाह क़ुदिरत तुंहिंजी क़ादुर, आहे बेहदि बे पायां.

१) काथे सालिक सलूक जो साईं, काथे मुहबत मंझि मस्तानु.

२) आहीं भी सभ में सभ खूं न्यारो, ही सभु आहे तुंहिंजो मकानु.

३) वजूद सारे में तूं ई वसीं थो, आहीं अखियुनि मंझि ईमानु.

४) भोज़ा क़ुदिरत तुंहिंजी ड्रिसी, आहे हैरत मंझि हैरानु.

## (2)

बादलु आयो बहार मीयां, करि का यार वसण जी,

१) गुल गुलाबी कंवल कूमाणा, तोड़े चमन चौधरि मियां.

२) करि वस्कारो भरि तूं ब्रारियूं, ख़िड़नि गुल गुलिज़ार मियां.

३) वण सुका सभु सावा करि तूं, थियनि अंब अनार मियां.

४) भोज खे निति आस जा आहे, सुहिणा लहंदे तूं सार मियां.

## (3)

सन्हियूं सन्हियूं ग्राल्हिड़ियूं आंऊ, जानिब साणि कंदसि.

१) अठई पहिर पंहिंजे यार पुन्हल सां, ओराँ वेही ओरींदियासि.

२) पांदु ग्रिचीअ ग्रलि आंऊजो पाए, माफ़ी सभु मंगिदियासि.

३) ब्रान्हनि जी आंऊ हरिदमु ब्रान्ही, रोज़ो शबु रहंदियासि.

४) आस भोज खे आहे अंदर में, मुहिबनि खे मिलंदियासि.

## (4)

तन जिन्हीं जी तार मियां, से कीअं विसिरनि यार ड़े.

१) रातियां ड्रींहां वाई इहाई, जेका सुणाए दिलिदारु मियां.

२) ओर अंदर में सदा जानिब जी, नाहे का ब्री पचार मियां.

३) दमि दमि सार दिलिबर जी आहे, लूंअ लूंअ मंझि ल़ग़ार मियां.

४) भोज खे सिक तुंहिंजिड़ी आहे, मिलु मुहिब मंठार मियां.

## (5)

यारनि जी यारी मूं, निकिरी चश वेई.

१) यार अज़ोका आहिनि कहिड़ा, तोड़े केतिरा हुजनि केई.

२) यार तुंहिंजो खे ब़ियो को मिले, दम में छड्रे वञेई.

३) सचो सज़णु सत्गुरु आहे, जो हरिदमु साणु हुजेई.

४) यार जहानी छड्रे सभु भोज़ा, ग़ोलिजि सज़ण सेई.

## (6)

नींहं संदो निर्वारु, ब़ाणु मुर्शिद जो जंहिंखे लग़िड़ो.

१) रातियां ड्रींहं रमज़ इनहीअ में रहे सदा सो सरशार.

२) दमि दमि रखे तात ईहाई, रहे मुहबत मंझि मतिवारु.

३) अठई पहिर आबु अखियुनि में, नंदियूं वहाए थो नार.

४) भोज़ा ब़ी ब़ियाई सभु छड्रे तू, करि अना अलहक़ इज़िहारु.

## (7)

जहिड़ी आहियां तहिड़ी यार पंहिंजे जी, कीन ड्रिसो मुंहिंजे ऐबनि खे.

१) चरी कयड़ुसि क़िस्तम पंहिंजी, कहिड़ो ड्रोहु ड्रियां पंहिंजे ड्रेरनि खे.

२) आऊं आहियां यर निधर निमाणी, छा कयां ब़ियनि सेरनि खे.

३) ख़बु ख़ुशालियूं मां नितु करियां थी, ड्रिसी धणीअ जे पेरनि खे.

४) गुण धणीअ जे वेठी ग़ायां थी, कीन ड्रिसां कंहिंजे मेहणनि खे.

५) भोज़ो चवे साईंअ दर त धणीअ जे, वेठी निहारियां नेणनि खे.

## (8)

जिनिखे इश्क़ जो लग़ड़ो आज़ारु, सुहिणा से कीअं सूर सहनि.

१) कार कतण जी कीन विसारिनि, छिकियों अचनि का तंदुड़ी तंवार.

२) काहे हलिया केच ड्रे मियां, करे सो पंधु क़हार.

३) दूंहां दर्द जा दमि दमि दुखनि था, हींअड़े मंझि हज़ार.

४) भोज़ा पाणु सुञाणे पंहिंजो, कजि न ब़ी का पचार.

## (9)

रांदीगर जी इहा रांदि, ड्रिसी मुंहिंजो मनिड़ो ठरे थो.

१) हरिदमु वेठो ठाहे ऐं डाहे, घड़ी न हिकिड़ी अथसि वांद.

२) काथे क़ैदी क़ैदूं कढाए, काथे नाहक़ु रखे थो बांद.

३) बाज़े दर मुहिबत सरूर गरिदद, बाज़े बर माशूक़ मुशिताक़ मांद.

४) मुर्शिदु वारी माम तूं भोज़ा, रखिजि पलइ पंहिंजे पांद.

## (10)

मुहिब मिठा ड्रे दीदारु, सिमिरिणियूं सिक जूं यर वेठा था सोरियूं.

१) तो लाइ जानिब दिलिड़ी दीवानी, मुहबत में थी रहे आहे मस्तानी
ग़ुतल ग्रिचीअ जा हार, आहिनि अंदर में यर तुंहिंजूं होरियूं.

२) सिक में पेई दिलिड़ी जलंदी, सूर कंहिंखे कीन जो सलींदी.
वेहु मुहब तूं यार, ओरां अंदर जूं वेही के ओरियूं.

३) दमि दमि वेठी तोखे सारियां, तो लइ जानी हंजूं हारियां,
वठी तुंहिंजड़ी तार, चरिख़ो इहो वेठा असीं था चोरियूं.

## (11)

आहे अंदर में इहा आस, शाल गड्रींदा पाण सां गोली.

१) दमि दमि अथमि तुंहिंजी वाई, सिक जी तो जा यार सुणाई,
बिरिह मूं कयड़ुमि बासि, रहंदेसि जानिब तां आंऊ घोली.

२) तुरिति तयारी तिनि आइ कीती, सुहिबत सुरकी जिनि आ पीती,
मंझि मुहबत थी मवास[1], चाक करनि था पंहिंजी चोली.

३) मुहिब मिलंदो दिलिबरु तिनि खे, सिक सुहिणल जी आहे जिनि खे,
थींदा न उहे निरासु, ब्रुधी जिनि आहि बिरिह जी ब्रोली.

४) बाहि बिरिह जी भोज़ा बारी, सूरहिय सहनि सिर ड्रेई सारी,
ख़ुदु उहे थी ख़ासि, हर जाइ ड्रिसनि, होत जे होली.

## (12)

जेड्रियूं छाहे मुंहिंजो हिन जग़ में, पारि अबाणे नेठि त हलिबो.

१) साह सारोई थो दमि दमि जानी, मुहिब वसीं रग़ रग़ में,
सूरु सिक जो पोइ छो न सहिबो?

२) हीअ निमाणी वियरा निहूड़ी, वाट वेंदी कंहिं दग़ में,
हालु ईहो वरी कंहिंखे कहिबो?

३) उठनि क़तारूं काहे जो वियड़ा, कीन आंदाऊं कंहिं सग़ में.
छा चई वरी छा चइबो?

४) मुर्शिद भोज़ा थियो जड़हिं साणी, वाट वठियूं हलियो उहा अग़ में,
साउ[2] जनिहीं जो कीअं सलिबो?

## (13)

मुंहिंजो मुश्किलि थिए त आसानु, ध्यानु धणीअ जो धारियां जे.

१) लैलीअ वेचारी मजिनूअ कातिरि हर हर थी त हैरानु,
पसण कारणि यार पिरियां जे.

२) छो न मिलां पंहिंजे पुन्हल खे ससुई चवे सुबिहानु,
वेई निति आऊ करियां जे.

३) मुहिब पसनि थियूं सेई पंहिंजो छड्रे पंहिंजो शानु,
पाइनि पिरीं पिरियां जे.

४) भोज़ो आखे बिरिह मंझिरूं पसनि सेई सुल्तान,
जीअरे पाणही मरियां जे.

## (14)

१) आहे सूरत तुंहिंजी सुहिणी सारी वे, मुंहिंजे मन खे लग़ी आहि प्यारी, तुंहिंजी यारी.
२) सहिसें रूप ब्रहू वेस धारियअ, काथे काराओ काथे कुड़िमी कारी, काथे हारी.
३) काथे शाह अमीरु तूं आहीं, काथे बणीं थिएं बेखारी, काथे मारी
४) काथे गोपियुनि ग्वाल बणीं थो, काथे मुर्ली वज़ाईं तूं मुरारी, अनहद वारी.

## (15)

केरु आहीं काड्रहूं आएं वेंदे कहिड़ी वाट तूं.
छड्रि सूत्रा जेको सीनो साहीड़ कीन नींदें के साथि तूं.

१) ख़्याल ख़ुदीअ जा सभु छड्रे वठु राह वहिदत जी वरी,
ख़ुदीअ मंझारूं ख़ौफ़ु जो आहे ड्रिसु वीचारे इहा बात तूं.

२) मां मेरीअ जी खंई अथई सा न हलंदै तोसां संगु,
वेंदें सभु तूं हठु छड्रे रखु ईहा ग्राल्हि यादि तूं.

३) सत्गुरु जे हिन शब्द जो ब्रुधु वेही निति आवाज़ु तूं,
ख़्याल दुईअ वारा सभु छड्रे डिसु असुलु पंहिंजी ज़ाति तूं.

४) भोज़ा सरन सत्गुरुअ जे अची रखु इहा बात ख़्यालु तूं,
शब्द सत्गुरुअ जे बिना ब्री न वाई करि वात तूं.

## (16)

सत्गुरुअ जे हिन शब्द सां साईं, रूह पंहिंजो था रीझायूं,

हू हू जी हूंगार सां साईं, गीत धणीअ जा निति था ग़ायूं.

१) जाड़े ड्रिसां ताड़े हू हू हले, हू हू बिना नांहिं को,
मौज मस्तीअ मंझि अची था, सिक सुहिबत जी लाहियूं.

२) हीअ दुनिया सभु आहे फ़ानी, नां हले थो कोई संगु,
जिन्हीं समुझो तिन्हीं पातो, कहिड़ा वेई गुण ग़ायूं?

३) बंगला माड़ियूं मंडल तुंहिंजा, वेंदें सभु तूं हिति छड्रे,
भाइर भाइटिया कुटुंब क़बीला, साणु न हलंदै जोड़ियल जायूं.

४) भोज़ो आखे थी जा मूंते सत्गुरु तुंहिंजी अज़ु कृपा,
दम दम सां वेही करे थी, निति अना अलिहक़ु अलायूं.

## (17)

सत्गुरु जिनि खे ड्रसिड़े वाट, सोहंगु शब्दु कमाइनि था,
सोहंगु शब्दु कमाइनि था, से रूह में रामु रीझाइनि था.

१) अखर ओइनि जी अथनि वाई, सूरत सभ में ड्रिसनि उहाई,
घड़िनि था ईहे घाट, जोश में जीउ जलाइनि था.

२) मां मारे खणी माति कयाऊं, पंहिंजो पाण में पाणु पसियाऊं,
अची वरिताऊं इहा वाट, अना अलिहक़ु अलाइनि था.

३) कमर कशोला छिके ब्रधाऊं, पूरब संदा पंध कयाऊं,
नांगा थिया निर्वारु, ख़्याल में अलखु जग़ाइनि था.

४) भोज पाण में भेदु न ज़ातो, नींहुं लग़ुसि वञी राम सां नातो,
अथसि इहा ओसाट, जंहिंजो जापु जपाइनि था.

## (18)

यारो देखो यह कैसा पसारा है! कोई दुश्मन बना कोई प्यारा है.

१) कहां बादिशाह होके हकु हलईंदा, कहां बिखारी होके बीख मंगीदा,
कहां मन्सूर होके सूलीअ चड़िहंदा, ए सभु उस दा उजियारा है.

२) किथे बनिके बैठा है पीरु फ़क़ीरु, किथे नानक यूसफ़ यार कबीर,
किथे क़ैद होके पाता ज़ंजीर, किथे ए सभ ते ओ न्यारा है.

३) करना है जो कर कुझु कर ले भाई, काम न आवे बाप और माई,

सूरत सभ में ओ ही समाई, जिसि दा ए इज़हार है.

४) भोज़ा यह सभु जूठा है संसारा, माति पिता हो या सुति दारा,
और मिथ्या है सगिली छावा, इस्थर एक ओ ओंकारा है.

## (19)

इज़बु करींदा इस्रार मियां, वेखे तमाशे यार मेड़े दी.

१) नाल नेणां दे घूरां करंदा, घतंदा सौ घाअ हज़ार मियां.

२) दाम ज़नूं दा दिलबर विधड़ा, बिरिह कीता बे अख़्तियार मियां

३) नाज़ दिलिबर दे नींहं निहोड़े, मुहबत कीता मतिवार मियां.

४) मुहबत यार दे वेख के हरिदमु, भोज़ा भया है बहार मियां.

## (३३ भारती)

१) चारि ड्डींहड़ा मौज मस्ती, चारि ड्डींहड़ा होशु हस्ती,
चारि ड्डींहड़ा शादि रहंदी, ख़ुशिनुमा आबादि बस्ती,
चारि ड्डींहड़ा ऋतु सुहानी, चारि ड्डींहड़ा ज़िंदगानी!

२) चारि ड्डींहड़ा शानु रहंदो, मानु ऐं अभिमानु रहंदो,
चारि ड्डींहड़ा आस्मान में, ऊचि तुंहिंजो गानु रहंदो,
चारि ड्डींहड़ा हुकुमरानी, चारि ड्डींहड़ा ज़िंदगानी!

३) चारि ड्डींहड़ा सूंह सारी, लालि ग़िल अखिड़ियूं ख़ुमारी,
चारि ड्डींहड़ा वार कारा ऐं उनहनि जी प्रेम - ज़ारी,
चारि ड्डींहड़ा जोभन जवानी, चारि ड्डींहड़ा ज़िंदगानी!

४) चारि ड्डींहड़ा चांदनीअ में, रुह रचंदो राग़िणीअ में,
नेठि मिलंदो तेजु तुंहिंजो, कंहिं औखी रोशनीअ में,
आत्मा थींदी रवानी, चारि ड्डींहड़ा ज़िंदगानी!

५) तनु संदुइ शमशान ईंदो, आग खे उत्साह ड्डींदो,
फ़र्श ते ऊचे फ़लक ते, ख़ाक ऐं दूंहों छड्डींदो,
कीन रहंदी का निशानी, चारि ड्डींहड़ा ज़िंदगानी!

५) ड़े! छड्डींदुइ जगु जलाए, जगु छड्डींदें तूं भुलाए,
मौत खां पोइ तूं न जग़ लाइ, जग़ नकी तो लाइ आहे,
तूं बि फ़ानी हू बि फ़ानी, चारि ड्डींहड़ा ज़िंदगानी!

## (2)

बहारु वेंदो, अरिहड़ ईंदो, सब्ज़ु चमनु ज़णु मसाणु थींदो,
ओ मूर्ख! जग़ खहंबो चटको, छो थो मनु भरिमाईं?
छो पंछी! प्रीति लग़ाईं?

१) कारा कारा, बादल प्यारा, कनि जे बूंदनि जा वसिकारा,
पखिड़ी वेंदा, हिते न रहंदा, जिनि सां दिल विंदुराईं,
छो पंछी! प्रीति लग॒ाईं?

२) शबनम रोए, फूल खिलाए. तेज़ हवा तिनि खे तड़िफाए,
को सींगारे, को आज़ारी, कअं सभ मां सुख पाईं?
छो पंछी! प्रीति लग॒ाईं?

३) प्रीति पकी आ परिवाने जी, अमिटु मुहबत मस्ताने जी,
प्रीतिम लाइ हू पाण बचाए, पर तूं थो घब॒राईं!
छो पंछी! प्रीति लग॒ाईं?

४) प्रेम - पेचिरो आहि अणांगो, उलफ़त जो मुल्ह आहि महांगो,
सोचि समझु तूं अड़े अयाणा! पोइ मतां पछिताईं,
छो पंछी! प्रीति लग॒ाईं?

## (3)

अनोखी अखड़ियुनि जी बरसाति!

१) हूंअं सावण में बूंदूं बरसनि, सावण लइ पर नेण न तरिसनि,
रोज़ु बिरह जा बादल गरिजनि, रोज़ु अंधेरी राति,
अनोखी अखड़ियुनि जी बरसाति!

२) हाइ! पुराणी यादि सताए, बिजिली बणी वराका खाए,
पल भरि लइ चित खे चमिकाए, परदेसीअ जी ताति,
अनोखी अखड़ियुनि जी बरसाति!

३) नेण टिमनि जलु जामु वसाईं, मूरि न मन जी प्यास बु॒झाइनि,
उटिलो दिलि में आगि दुखाइनि, जाग॒ाइनि जज़िबाति,
अनोखी अखिड़ियुनि जी बरसाति!

४) ही नेणनि जा टिमि टिमि पयाला, था जल में भड़िकाइनि ज्वाला,
हाइ! हिननि जा खेल निराला, ख़ूब वसनि ड॒ींहं राति,
अनोखी अखड़ियुनि जी बरसाति!

## (4)

१) करे सफ़र जो सारो सायो, मुर्की साजनु मूं वटि आयो,
मूं थे सभुकुझु साफ़ु सुणायो, खोले दिलि जो राज़ु बु॒धायो,
पर अखि छलिकी, दिलि घबि॒राई, मन जी बाति न मुख तें आई.

२) हाइ! हलियो वियो साजनु प्यारो, मूं भोरीअ खे ड॒ेई ड॒ुझारो,
हाणे कहिड़ो साथु सहारो? राति रुआं ड॒ुख में ड॒ींहुं सारो,
मूं छो नाहक़ु प्रीति लग॒ाई? मन जी बाति न मुख ते आई.

३) कीन वणनि थियूं हीऊ बरिसातियूं, लामनि ते पनिछुनि जूं लातियूं,
दिलि न लुभाइनि रोशनि रातियूं, तारनि जूं पिणि गुपु चुपु बातियूं,
बुरी लगे थी साफु सुहाई, मन जी बाति न मुख ते आई.
४) कूके कूकू कोयल कारी, दिलि जो सोज़ु वधे हेकारी,
ओ मन मंदिर जा पूज़ारी, तो बिनि व्यर्थ जीवति सारी,
प्रीति जी बाज़ी मूं हाराई, मन जी बाति न मुख ते आई.

## (5)

जोगिणि फिरे उदासु - पिरींअ बिनि, जोगिणि फिरे उदासु.
१) तन ते भभूति, गले में माला, मदिमस्तीअ में अंग मतिवाला,
भोगी थी बनिवासु - पिरींअ बिनि, जोगिणि फिरे उदासु.
२) निर्मलु मनु ऐं सुंदरि मुखिड़ो, कंहिं सां ओरे दिलि जो दुखिड़ो,
कंहिंखे पवंदो क़्यासु? - पिरींअ बिनि, जोगिणि फिरे उदासु.
३) घाईंदड़ि ख़ामोशु निगाहूं, सोज़ गले में सर्दि सदाऊं,
ज्वाला जां हरि सास - पिरींअ बिनि, जोगिणि फिरे उदासु.
४) मन में मन जो भेदु छुपाए, पलिकनि में थी लुड़िक लिकाए,
घुटे विरह जो वासु - पिरींअ बिनि, जोगिणि फिरे उदासु.
५) पन पन में थी प्रीतिम गोले, टिमंदे टेई लोक टटोले,
जलु, थलु ऐं आकासु - पिरींअ बिनि, जोगिणि फिरे उदासु.

## (6)

१) तूं मधुरु, मनोहरु साज़ु पिरीं! मां साज़ सदो आवाज़ु पिरीं!
तूं मनु मोहींदड़ नाचु पिरीं! मां नाच संदो अंदाज पिरीं!
तूं दिलि जो कोमलु भावु पिरीं! मां सवली सुंदरि भाषा,
तूं भव सागर दुशिवारु पिरीं! मां पारि वञण जी आशा.
२) तूं शाइरु, मां जज़्बातु पिरीं! तूं बादलु मां बरिसाति पिरीं!
तूं पूरब जो ब्रालकु - सूरजु! मां शर्मीली प्रभात पिरीं!
तूं वणु मां तुंहिंजो ड्रारु पिरीं! तूं प्राणु अमटु, मां काया,
तूं सति, चिति, आनंदु, ब्रह्म - रूपु, मां महा मोहिनी माया.
३) तूं सागरु ऐं मां बूंद पिरीं! तूं रागु मिठो, मां गूंज पिरीं!
तूं दूरि पहाड़ी आखेड़ो, मां दग में भिटिकियलु कूंज पिरीं!
तूं फागु त मां सावक पिरीं! तूं चंडु त आऊं सहाई,
तूं मुश्किल वारो मागु कठिनु, मां अथकु, साहसी राही.

४) तूं निंद्रा मां सुपनो साईं! तूं वस्तु ऐं मां परछाईं!
तूं अर्शु पिरीं! मां ऊचाई, तूं लाहु सज़ुण! मां हेठाहीं,
तूं उभु ऐं मां नीलाण पिरीं! तूं लज़ु आहीं मां लाली,
तूं कामदेव जी सूंह सज़ुण! मां प्रीति मुगध मतिवाली.
५) तूं मैइ, मां मैइ जी मदिहोशी, तूं प्रेमु सज़ो, मां ख़ामोशी,
तूं मारण वारो महाकालु, मां अंत - काल जी बेहोशी,
तूं श्यामु सलोनो, मां मुर्ली , तूं शिव शंकरु, मां शक्ती
तूं आज्ञाकारी रामचंद्र, मां हनुमान जी भक्ती.
६) तूं दीपकु ऐं मां लाट पिरीं, तूं मंज़िल ऐं मां वाट पिरीं!
तूं महाभयंकरु राति पिरीं! मां कारी कारी ब़ाट पिरीं!
तूं मालिकु, मां मिस्कीनु पिरीं! तूं दाता, आऊं भिखारी,
त बि तूं मूंतां ब़लिहारु पिरीं! ऐं मां तो तां ब़लिहारी.

(7)

१) जड्हीं बहार, थींदो फ़रारु, सावा पन पीला थींदा,
मुरिझायल मुखिड़ियूं, टुटल फूल, ग़म जा ग़ोड़हा ग़ाड़े,
हरि टारि टारि, हर फूल फूल खे जड्हिं सरउ सटींदो,
छा तड्हीं साजनु ईंदो?
२) सुहिणियूं रातियूं, ही बरिसातियूं, थी वेंदियूं जड्हिं पूरियूं,
बाग़नि मां भंवरा, पोपटिड़ा, उड्रिरी वेंदियूं भंभोरियूं,
ऊन्हारे जी उस खाईंदी, लुक लग़ुंदी, सिजु साड़ींदो,
छा तड्हीं साजनु ईंदो?
३) दिलि जी तरंग, मन जी उमंग, अरिमान जोभन जा जिस्म मथां,
सभु रंग उड्रामी वेंदा,
जंहिं वेल ब़ुढापो पेशानीअ ते पंहिंजा उहिञ छड्रींदो,
छा तड्हीं साजनु ईंदो?
४) जड्हीं कारनि, काजल वारनि, नेणनि में नूरु न रहंदो,
बे-रंग चपनि, रुख़्सारनि तां, ग़ोड़हनि जो दर्याहु वहंदो,
जंहिं महिल हचारो मौतु अची, हिन सिर ते फेरा ड्रींदो,
छा तड्हीं साजनु ईंदो?

## (8)

तुंहिंजी मंज़िल दूरि ...पखीअड़ा! तुंहिंजी मंज़िल दूरि.

१) खोले खंभिड़ा, उड़ंदो हलु तूं, डिजु न कड़हिं आंधीअ वर्षा खूं,
बर, बन, बेला, बनियूं, जबल, जर, झागी, झंग अपार,
वञु सहंदो तूं कश्ट कशाला, डुख डाडा हरिवारि,
परवाह नाहे भलि थक खां थिए, अंगु अंगु चकिनाचूरि,... पखीअड़ा!
तुंहिंजी मंज़िल दूरि.

२) कारा बादल केई ईंदा, सूरज जो से तेजु ढकींदा,
डिसीं अंधारी मतां पुकारीं, 'ओड़ी आहे राति,
आफ़िताबु उलिही वियो शायद, 'हाय! करीं फ़िकराति,
अड़े सियाणा, वञिजि न अड़िजी, इन माया में मूर, ..... पखीअड़ा!
तुंहिंजी मंज़िल दूरि.

३) डिसी अर्श ते तोखे हलंदो, शौख़ शिकारी शायद जलंदो,
साड़ विचां तोड़ांहं तकींदो, तके तके हू नेठि,
क़ातिलु क़हिरु कान कशींदो, तोखे सटींदो नेठि,
घायलु थी तूं ब्राकारींदे : 'कहिड़ो कयुमु क़सूरु,.... पखीअड़ा
तुंहिंजी मंज़िल दूरि.

४) मतां पिटीं या परातो ड्रीं, मारीअ ते तूं मतां ड्रमिरिजीं,
मतां अखियुनि मां अड़े साहसी! वेही नीरु वहाईं,
मतां जवानी यादि करे ओ पंछी! तूं पछिताईं,
तूं त असुल खां उनहीअ राह ते, मरणु कयो मंज़ूरि, ... पखीअड़ा
तुंहिंजी मंज़िल दूरि.

## (9)

मन! को मधुरु गीतु गूंजाइ!

१) जीवन में आ सोज़ समायलु, हाय! जगत जो तनु मनु घायलु,
नीर, निराशा निति नेणनि में, दिलि में दर्दी दूद दुखायल,
तूं ई मधुरु साज़ु आशा जो, वर वर करे वज़ाइ!
मन! को मधुरु गीतु गूंजाइ!

२) राति रड़े, आकासु पुकारे, तारनि जा थो हंजूं हारे,
हीर थधेरी हलंदी, अंदर मां थी आह उथारे,
मिठिड़ा गीत ख़ुशीअ जा गाए, तूं तन खे मुरिकाए!
मन! को मधुरु गीतु गूंजाइ!

३) आहि बुखी ब़ालक जी ब़ोली, हाय दुखी माता जी लोली,
दर दर ते निति ब़ाड़ाए थी, नीरु भरे निर्धन जी झोली,
तिनि ते मिठिड़ा मींहं महिर जा, बादल थी बरिसाइ,
मन! को मधुर गीतु गूंजाइ!

४) तूं आंसुनि मां मोती जोड़े, छड़ि दुखु दर्द ख़ुशीअ में ब़ोड़े,
ख़ोफ़, निराशा जे ख़्यालनि खां, ओ आशावादी! मूंहं मोड़े,
जोश नएं सां, होश नएं सां, दुख मां सुखु उपिजाए,
मन! को मधुरु गीतु गूंजाइ!

## (10)

ना धिनि धिनि ना, ता तरक तिनि तां, धिनक, धिनक, तक, धुनु, धुनु!
साज़ वज़नि था, पेर खज़नि था, छननि छननि छक, छनि, छनि!

## (11)

फागु़णु आयो, गड़िजी ग़ायो, झूली झुमिरियूं पायो,
ग़ाड़हा पीला, नासी नीला, सावा रंग लग़ायो,
छांई घर घर में सरहाईअ, रंग रंगीली होली आई,
छननि छननि छक, छनि, छनि, धिनक, धिनक, तक, धुनु, धुनु!

## (12)

श्याम मुरारी, ब्रज बिहारी,
मुरिली मधुरु वज़ाए, घुंघरू पाए,
ग़ाए, ग़ाए, राधा रासि रचाए,
गोपियूं ग्वाला, गोल बणाइनि,
ताड़ी ड़ेई, ताल मिलाइनि,
छननि छननि छक, छनि, छनि,
धिनक, धिनक, तक, धुनु, धुनु.

## (13)

ऋतु अलबेली! आहु सहेली! भरे आऊ पिचिकारी,
हरि हिक घर में, नगर नगर में, रंग हणूं चौधारी.
केसर, लालु गुलाल उड़ायूं, सारो उभु रंगीनु बणायूं.
छननि छननि छक, छनि, छनि, धिनक, धिनक, तक, धुनु, धुनु!

## (14)

नर ऐं नारियूं, ब़ार, कुमारियूं,
ठाहे हिक ई टोली, पदु - अधिकारी ऐं बेखारी,

गड्रिजी आंधी हिकजहिड़ाई, राजा प्रजा भाई भाई.
छननि छननि छक, छनि, छनि, धिनक, धिनक, तक, धुनु, धनु!

## (15)

आरती उड्रेरेलाल जी,
गाए गाए जगु गाए गाए सुखु पाए
श्री अमर ड्रिनां ओ श्री लाल ज़िंदह तुंहिंजी आरती.

१) अमर उड्रेरा वीर वरुण जो तूं आहीं अवितारु,
कड्रहीं पले ते कड्रहीं नीरे घोड़े ते हस्वारु.
२) झिरिमिरि झिरिमिरि झलके तुंहिंजी जोती जलवेदारि,
बाबल तुंहिंजे बहिराणे सां छेज़नि जी छिमिकारि.
३) तारण वारा! तूं भगतनि खे भव सागर मां तारि,
तुंहिंजीअ ब्राझ कया केड्रनि जा बुड़ंदड़ बेड़ा पारि,
४) असीं रखूं था अखिनि फूलनि जी तुंहिंजे दरि अरदासि,
पूरी कजि तूं पल में साईं आसाउनि जी आस.
५) ऐब असांजा ऐं ऊणायूं कीअं न ढकींदे ढोल,
घोट भरीं थो घुरजाउनि जा खिन में ख़ाली झोल.
६) तूं रहिबरु तूं रखिवालो तूं हीणनि जो हमिराहु,
मां दासानि जो दासु ओ दूलह, तूं शाहनि जो शाहु.

## (16)

ब्रेड़ीअ वारा अदा ड़े मुहाणा, लाल ते थी वञां,
लाल ते थी वञां मां - आया ड्रींहं सभागा चङा,
१) जोति जगाईंदसि, पलव बि पाईंदसि,
भेरो भला कीअं भज़ां? ब्रेड़ीअ वारा ....
२) अर्ज़ु अघाईंदो, देरि न लाईंदो,
आस इहा थमि अञां. ब्रेड़ीअ वारा ....
३) झोलियूं बि भरींदो, ड्राणु बि ड्रींदो,
महिर इहा थी मङां. बेड़ीअ वारा ....
४) देगियूं दमाईंदसि, सेसा विराईंदसि,
छेज़ियूं लगाईंदसि छमा. ब्रेड़ीअ वारा ....
५) जे जे हू चाहे पारि पुज़ाए,
लहिरुनि ते मां लमां. ब्रेड़ीअ वारा ....

## (17)

हलो हलो दरियाह किनारे,
दरियाह किनारे मुंहिंजे दूलह जे द्वारे.

१) छलक छलक छोलियुनि ते लुड़नि कुड़नि जोतियूं,
लालण जी लाट असीं अंदर में ओतियूं,
जिंदल जी जोति सदा जल थल उजाड़े, हलो हलो ........

२) घननि घननि गर्जनि था जड़हिं ककर कारा,
डहनि वहनि कुननि में था कपिजी किनारा,
तड़हिं तिख तार मंझां तुरिहा थो तारे. हलो हलो ........

३) अखा फुला भेट धरे हिन दरि जो ईंदो,
अमरलालु उनखे झझा ड्राण ड्रींदो,
पाए पलउ प्यार मंझां जेको पुकारे. हलो हलो ........

## (18)

ॿेड़ो तूं पारि लग॒ाइ, ॿेड़ो तूं पारि लग॒ाइ,
झूले झूले लाल साईं सभ जा ॿेड़ा ॿने लग॒ाइ.

१) छोह छितो आ तूफ़ाननि में, क़हिरु समायो आहे कुननि में,
झूलण पारि पुज॒ाइ, ॿेड़ा पारि लग॒ाइ .......

२) चौधर कारी राति अंधारी, ऊंदहि ऊंदहि दुनिया सारी,
जिंदल जोति जग॒ाइ, ॿेड़ा पारि लग॒ाइ .......

३) पलउ पसारे अर्ज़ु करियां थी, अखा फुला भेट धरियां थी,
लालण तुंहिंजे लाइ, ॿेड़ो पारि लग॒ाइ .......

४) तूं संगति ते महिर करीं थो, सभिनी जा भंडार भरीं थो,
मूं सां भी भाल भलाइ, ॿेड़ा पारि लग॒ाइ .......

## (19)

तीरथ केरु करे - ओ भाई रे तीरथ केरु करे!

१) मन में मथुरा, मन में काशी ड॒िसु तूं ध्यानु धरे,
२) मन में मंदर, मन में मूरत मन में जोति जरे,
३) दिलि में आ दिलिबर जो देरो प्रीतम नाहे परे,
४) पाण पछाणे जो जनु सोई टे ई लोक तरे.

ओ भाई रे तीरथ केरु करे!

## (20)

हरीअ जे चरननि में चितु लाइ, प्रभूअ चे चरननि में चितु लाइ,
मुफ़्त न पंहिंजे मन खे मूरख, भरमनि में भिटिकाइ.

१) पापनि में करि उमिरि न पूरी, जग॒ जी झूठी रीति समूरी,
सच जो सौदो करि तूं सालिक मूरि न कूड़ु कमाइ.

२) तनु या धनु कहिड़े कमु आयो करि न अदा अभिमानु अजायो,
निउड़त सिखु थी ब॒ारु निमाणो, पांदु ग॒िचीअ में पाइ.

३) चित में हरिदम चोरु वसे थो, ऊंदहि वारी वाट ड॒से थो,
पर तूं रोशन राह तरफ़ ई, मन जी वाग॒ वराइ.

४) छो थो रिण में पाण रूलाईं, बूंदु बूंदु लइ थो वाझाईं?
राम नाम जे ऊजल जल सां पंहिंजी प्यास बु॒झाइ.

५) नामु सुमिरि नितु सुबुह सवेरे नाम बिना दुखु दिलि खे घेरे,
काम क्रोध ऐं लोभि मोह था जोड़ानि जीअ में जाइ.

हरीअ जे चरननि में .......

## (21)

मोरो वेठी ड॒ियाइं, ड़े ढोलण मोरो वेठी ड॒ियाइं.

१) गाड॒ीअ गाड॒ो हिकु, आऊ अखियुनि में लिकु.
२) गाड॒ीअ गाड॒ा ड॒ूं, मूं में आहीं तूं.
३) गाड॒ीअ गाड॒ा टे, थो तोखें साहु सड॒े.
४) गाड॒ीअ गाड॒ा चारि, घड़ी त मूंसां घारि.
५) गाड॒ीअ गाड॒ा पंज, गुरू ड॒ींदुमि गंज.
६) गाड॒ीअ गाड॒ा छह, छिज॒ी पिया थमि छह.
७) गाड॒ीअ गाड॒ा सत, रोज॒ु मुंजांइ थी ख़त.
८) गाड॒ीअ गाड॒ा अठ, बिरिह ब॒ारिया थमि बठ.
९) गाड॒ीअ गाड॒ा नव, लूंअ लूंअ में थमि लिंव.
१०) गाड॒ीअ गाड॒ा ड॒ह, पूर पचायमि पह.
११) गाड॒ीअ गाड॒ा ढेर, एड़ी करि न अवेर.
१२) गाड॒ीअ गाड॒ा खोड़, तूं त निबाहिजि तोड़.

## (22)

मां आहियां मस्तानी, मां आहियां दीवानी,

झूलेलाल जी, ज़िंदह पीर जी, अमरलाल जी, वरुण वीर जी.

१) लाल उडे़रो जल जो वासी, पर मां मछिलीअ वांगुरु प्यासी,
मां घुरिजाऊ, निति आसाऊं, हू दाता मां हिन जी दासी,
मां हुयसि बेग़ानी, बणियसि पर ब्रान्ही, झूलेलाल जी.

२) सुहिणे सांवल सां लिंव लातमि, हिन जे सिक जो सुरिमो पातुमि,
जोतियूं ब्रारे, पलव पसारे, उमिरि सज़ी हिन जा गुण ग़ातमि,
आ नींहं जी निशानी, ग़िचीअ मंझि ग़ानी, झूलेलाल जी.

३) जंहिं खिन पल में पापी मारिया, ब्राझ करे जंहिं ब्रेड़ा तारिया,
मिस्कीननि जा, मुहिताजनि जा, कारज साईंअ पाण संवारिया,
संदसि कोन सानी, मूंते आ महिरबानी, झूलेलाल जी.
मां आहियां मस्तानी.

## (३४ भग़वान भावनानी)

तुंहिंजो भरिवसो आहे मूंखे, तुंहिंजो भरिवसो आहे,
तोखां सवाइ ब्रियो केरु आ मुंहिंजो, केरु ब्रियो मुंहिंजो आहे.

१) जेके आया तुंहिंजे दर ते, तिनि जा ब्रेड़ा पारि,
ख़ाली झोली भरीं उनहनि जी, आहीं सख़ी सरदार,
महिर संदा मींहं सदा वसाईं, आस अंदर जी पुज़ाए, तुंहिंजो भरिवसो ....

२) रूप न तोखे रंग न कोई, रहीं थो हर हंधि हाज़ुरु,
के चवनि तोखे रामु रहीमु, किनि जो आहीं ठाकुरु,
दुखड़ा दूरि कंदें दुखियनि जा, विछिड़ियल मुहिब मिलाए, तुंहिंजो भरिवसो ....

३) मुश्किल में अची ड्रींदे साईं, पंहिंजो सदा सहारो,
यादि रहे शल हरि हालत में, तुंहिंजो नालो प्यारो,
भवसागर मां पारि उकारे, ब्रेड़ो ब्रने लग़ाए, तुंहिंजो भरिवसो ....

## (त)

## (३५ तनिवीर इबासी)

सुबुह न आहे दूरि साथी, सुबुह न आहे दूरि साथी
लंबी राति विहामी वेंदी, दुख जी आगि उझामी वेंदी.
आस न लाथी जे तूं साथी.

ऊंदहि मां थी बाखूं फटंदियूं, कारियूं रातियूं नेठि त खुटंदियूं
राति थी पंहिंजो दमु ब॒ूसाटे, ऊंदाहियुनि जो हियाउं थो फाटे,
कारनि पदर्नि मां प्रभातियूं ओभर खां थियूं पाइनि झातियूं,
सुबुह थिए थो नूरि वसे थो, ज॒ाणु लथा ही सूरि साथी.

सुबुह न आहे दूरि.

ड॒िसु त शफ़क़[1] मां सुबुह सभाग॒ो, करि मोड़े आ निंड मां जाग॒ियो,
सुबह जो पहिरियों पहिरियों किरणो, ऊंदाहीअ जा पर्दा चीरे,
वध़ंदो अचे थो धीरे धीरे, ज॒ाणु वसे थो नूरु साथी.

सुबुह न आहे दूरि.

अचु त रफ़ीक़नि[2] खे जाग॒ायूं, सुबह सां ग॒ड॒िजी जोति जलायूं,
मुंहिंजा संगिती मुंहिंजा साथी, आऊ त ग॒ायूं गीत सहर[3] जा,
अचु त करियूं दुनिया में उजाला, थींदा उहे दुख दूरि साथी.

सुबुह न आहे दूरि.

## (2)

तुंहिंजा पूर पचायां सुहिणा, तोखे पलि पलि सारियां.

१) साह खे मुंहिंजे सीउ लग॒े थो, तुंहिंजी जुदाई मारे,
ड॒ुख जे ड॒किणीअ खे रोकियां थी, मुहबत मचु ब॒ारे,
सियारे जूं हे लंबियूं रातियूं कीअं अकेली घारियां,
तोखे पलि पलि सारियां.

२) सिक जो नाज़ुकु नाज़ुकु सलिड़ो उभिरियो मुंहिंजे मन में,
मोटि मुसाफ़िर ज॒ाणु सड़ियो ही पूरनि जे पारनि में,
नज़ुरुनि खे वाटुनि में खुपाए तुंहिंजे लाइ निहारियां,
तोखे पलि पलि सारियां.

३) हिक पासे था वाऊ उतर जा जीअ में सीउ उथारिनि,
मुंहिंजियूं आहूं ब॒े पासे थियूं बाहि बिरिह जी ब॒ारिनि,
आग अंदरि जी ब॒ारे, ठारियां, ठारे हरि हरि ब॒ारियां,
तोखे पलि पलि सारियां.

४) जोति झकीअ सां सांति सितारा ईएं था मन खे भासिनि,

जुणु उभ जे दामन ते ग़ोड़िहा सीअ खां ज़मी पिया आहिनि,
तारा मूंड्रे निहारिनि था ऐं मां तारनि ड्रे निहारियां,
तोखे पलि पलि सारियां.

## (3)

प्यार जो समुंड अझाग ... प्यारा! प्यार जो समुंड अझाग!
१) लहिर किनारे सां टकिराए, मिठिड़ा मिठिड़ा साज़ वज़ाए
झूमे नाचु करे, लहिराए - तूं भी छेड़ु को रागु प्यारा,
प्यार जो समुंड अझाग!
२) लुड्रंदड़ लहिरूं छुलंदड़ु छोलियूं, आऊ त तिनि मां माणिक ग़ोलियूं,
अचु त भरियूं मोतियुनि सां झोलियूं, खटनि असां जा भाग ... प्यारा
प्यार जो समुंड अझाग!
३) जिनि जिनि लहिरुनि सां लंवु लाती, तिनि तिनि माणी आहे हयाती,
मोजुनि मां जिनि झाती पाती, से ई पहुता ... प्यारा
प्यार जो समुंड अझाग!

## (4)

आउ असां वटि वेहु, घड़ी पलु वेहु,
आऊ असां वटि वेहु- अला! ओ मुंहिंजा साईं.
१) नींहुं निबाहियूं, कीअं निबाहियूं, हीअ हयाती थोरी भांयूं,
सवें जन्म ग़ड्डु रहूं तड्रहिं भी प्यार जो नाहे छेहु भला,
ओ आउ असां वटि .....
२) तूं परिड्रेही मां परिड्रेही, जिते जिते ओ तो मूं वेही,
कयूं रिहाणियूं प्यार कहाणियूं, उहो असांजो ड्रेहु भला,
ओ आऊ असां वटि .....
३) तोड्रे मुंहिंजो तन था तांघे, आऊ समूरो जगु ओरांघे,
प्यार सहारे सभिकी विसारे, मुंहिंजे पखअ में पेहु भला,
ओ आऊ असां वटि .....

## (ड्रोहीड़ो)

१) सिक त सज़ुण यार जी मूंखे कपे ऐं कोरे,
जीअं सोनारो सोन खे तके ऐं तोरे,

आऊ पिरीं ओरे, त नओं करियूं नींहं खे.

२) उपटियूं त अंधियूं, पूरियूं पिरीं पर्सान,
आहे अखिड़ियुनि का, अजब पर पसण जी.

३) अचीं जे हेकार, मूं सारींदे सिपिरीं,
पेरें धरियां पिंबणियूं, हंध विछायां वार,
साजन सभु ज़ुमार, गोली थी त गुज़ारियां.

## (३६ तोलाराम)

ए दयालू सर्व कर्ता[1] सर्व समर्थ थी सहाइ,
अनुभवी अनादु[2] वारी जोति हृदे में जग़ाइ.

१) तो सवाइ ना भरोसो को ब्रियो ड्रिसां थो ड्रेह में,
अंदर में आसणु करे तूं लिंव पंहिंजीअ में लग़ाइ.

२) मामता ऐं मोह में फाथलु आहियां प्रभू पिता,
विषय रूपी वेरियुनि खां ए बाबा मूंखे बचाइ.

३) ड्रियो सची सुमति साईं के ज्ञान रूपी गुण ड्रियो,
दुखनि जी दुनिया जे सागर खां अची तुरितूं तराइ.

४) दास तोल जी अची हीअ विनय सुणु विरयाम तूं,
सड्रु सुणी सांवल सब्राझा वेन्ती विरिनहि[3] अघाइ.

## (३७ ताज)

मंज़िल मूंखां आहे दूरि, साइल[4] मूंखा आहे दूरि,
राति अंधारी कारी कारी, आऊ अकेलो दुनिया सारी,
साथी मूंखे सड्रिड़ो ड्रे.

१) बसि हिन दुनिया आहि सतायो, यारनि ग़ैरनि आहि तपायो,
जंहिं बि ड्रिनो तंहिं आहि वरायो, पंहिंजो पंहिंजो अज़ु परायो,
राति अंधारी कारी कारी.

२) हरि तरह आहि ख़ौफ़ु अंधेरो, केरु आ तुंहिंजो केरु आ मुंहिंजो?
केरु थो पकिड़े दामनु कंहिंजो? केरु भरींदो चोलो पंहिंजो?

राति अंधारी कारी कारी.

३) तूं मूंखां आहीं केड्रो दूरि, मां तोखां आहियां केड्रो दूरि,
याद बि तुंहिंजी आहे आई, राति अंधारी कारी कारी.

## (३८ ताजल 'बेवस')

**ड्रोहीड़ो :-**

सिंधु तुंहिंजो शानु, छा ग़ाए छा ग़ायां,
तुंहिंजे पाकु पिणीअ खे, सुर्मो करे पायां,
नची नींहुं निबाहियां, निर्मल वड़े नाज़ सां.

**कलाम :-**

सिंधु मुंहिंजी अमां, सूंहं तुंहिंजीअ मथां,
छा लिखी छा लिखां, छा लिखी छा लिखां,
हिकु क़लमु हिकिड़ो मां, कीअं पूरो पवां,
छा लिखी छा लिखां, छा लिखी छा लिखां.

१) तुंहिंजे माण्हुनि खे सीने में सांढियो वतां,
तुंहिंजी लालणनि लिवं खे बि चंदनु चवां,
शाल तुंहिंजे ई कुखि मां पियो हरि हरि ज़ुमां,
खीरु तुंहिंजो पीआं, वीरु तुंहिंजो थियां, सिंधु मुंहिंजी ...

२) हिन कंधीअ ते कुड्रियो जो अबहमु ब्रारु आ,
कंहिं त जीजल जो जानी अखियुनि ठारु आ,
ही जो ब्रालकु सुभाणे जो मैमारु आ,
उन जी ब्रोली ऐं लोलीअ तां सदिक़े वञां, सिंधु मुंहिंजी ...

३) हूअ जा 'बेवस' बुखुनि ते मढ़े मंडु थी,
अज़ु बि जोटे असुरु जो उथी जंडु थी,
जा गर्म खीर में पेई गड़े खंडु थी,
उन सुहाग़िण खे मां कीअं न सजिदो कयां, सिंधु मुंहिंजी ...

(ट)

## (३९ टेऊँ)

सुबुह जो सवेरे गहिरी निंड घेरे,

अचो आलिसियुनि खे कंधु भरि केरे.

१) इनिहीअ निंड निहोड़िया विझी जालु[1] झोरिया,
लखें लहर लोड़िहिया भउजलि[2] भेरे.

२) इहा निंड निदोरी कई तो प्यारी,
विहारे जो वेरे वेठें कीअं विसारी.

३) उमिरि हीअ सारी अजाई गुज़ारी,
पकिड़े जमु कुहारी नींदऊ स्वास सेरी.

४) टेऊँ काल टेई विञाइ न तूं वेही,
पसिजि पाण पेही ड्रिसुजि ड्रीप[3] ड्रेरी[4].

## (2)

जादू हणी विया जीअ में जोगी, मुंहिंजी लूंअ[5] लूंअ तिनि खे सारे अमा.

१) चिणंग चोरे चितु चरियो करे विया, विया बाहि बिरिह जी ब्रारे अमा.
जादू हणी विया जीअ में जोगी.

२) सिकी[6] सारे[7] पुछे पंधु पिरियुनि जा, विया प्रेम जो पाणी पियारे अमा.
जादू हणी विया जीअ में जोगी.

३) ब्राझ ब्राझारा करे विया ब्रान्हीअ ते, हणी मेख़ मुहिबत जी मारे अमा.
जादू हणी विया जीअ में जोगी.

४) चवे टेऊँ से जादूगर जोगी, ड्रसे[8] ड्रिसु त विया दिलि उथारे अमा.
जादू हणी विया जीअ में जोगी.

## (3)

तर्ज़ – पेरे पवंदीसां चवंदीसां ....

थलु – दुखु मिलिणो आ, सुखु मिलिणो आ, कर्मनि अनुसारि रे ...

१) ब्रिज जे मूजिबि खेत में, फलु फरिणो आ, गुलु खिड़िणो आ.

२) कर्मनि अगियां कंहिं संदो, ज़ोरु न हलिणो आ, चारो न चलिणो आ.

३) हिक जे बदले ब्रिए कंहीं, ढोलु न ढुलिणो आ, भोलि न भुलिणो आ.

४) जो कुझु लिखियलु कर्मनि में, टेऊँ न टलिणो आ, झोलीअ झलिणो आ.

कर्मनि अनुसारी रे .....

## (4)

ग़ाफ़िल सुजागु थीउ तूं श्री रामु नामु ब्रोलिजि,
गुज़िरी वञेई वक़्तु थो, निंड मां अखियूं त खोलिजि,
श्री रामु नामु ब्रोलिजि, श्री रामु नामु ब्रोलिजि.

१) जल्दी करे तैयारी, सौदो सच जो वठिजु तूं,
माया में मूड़ह लिपिटी, हीरो जन्मु न रोलिजि, श्री रामु नामु ब्रोलिजि ...

२) सारी उमिरि विञायइ, संसार जे रसनि में,
बाक़ी बचियल समय में, हरि खे हृदे में ग़ोलिजि, श्री रामु नामु ब्रोलिजि ...

३) आएं अकेलो हितिड़े, आख़िरि अकेलो वेंदें,
कोड़ी न साणु नींदें, हीअ ग़ाल्हि तन में तोरिजि, श्री रामु नामु ब्रोलिजि ...

४) कहे टेऊँ काल थई, मन में होशियार रहु तूं,
अज्ञान में अड़े ना, भव सिंधु माहि ड्रोलिजु, श्री रामु नामु ब्रोलिजि

## (स)

## (४० सनाई)

जिनि रुलायो अहि असांखे या ख़ुदा तिनि खे रुलाइ,
जिनि भुलायो अहि  असांखे या ख़ुदा तिनि खे भुलाइ.

१) साफ़ु सोज़नि में सज़ो मुंहिंजो वियो आह जीऊ सड़ी,
जिनि तपायो अहि असांखे या ख़ुदा तिनि खे तपाइ.

२) रोज़ में थी राति गुज़िरे नंड नेणनि खे न अहि,
जिनि फटायो ख़ुवाबु मुंहिंजो या ख़ुदा तिनि खे फिटाइ.

३) दिलि फुरे धाड़ो हणे छो था दग़ा बाज़ी करनि,
जिनि फेरी अहि दिलि अवांजी या ख़ुदा तिनि खे फिराइ.

४) जिति ड्रिटी हुअम शादमानी अज़ु उते ड्रुख थो ड्रिसां,
जिनि ड्रुखायो अहि असांखे या ख़ुदा तिनि खे ड्रुखाइ.

५) हाल भाई, सूरि साथी तो सवा कोन्हे धणी!

जिनि निवायो अहि असांखे या ख़ुदा तिंनि खे निवाइ.
६) मूं मुसाफ़िर बियोतनि थी दरिबदरि खाधा धिका,
जिनि पिनायो आहे असांखे या ख़ुदा तिनि खे पिनाइ.
७) थो करे ज़ारी सनाइ सेघ में साईं क़बूलि,
ग़मु सहण जी नाहे ताक़त दर्द खां साईं छडाइ.

(2)

इश्क़ मुंहिंजे ग़ैरहस्तीअ खे सफ़ा ब्रोड़े छडियो,
डिसु धणीअ जी महिरबानी जोश घरु जोड़े छडियो.
१) दिलि साफु धारे घिड़िया से दर्द जे दरियाह में,
लहिर लोड़ा ड्रई ब्रियाई खे वरी लोड़हे छडियो.
२) दाम दुनिया जे अंदर फाथो क़ज़ा सां आहि पखी,
1
यादि आयुसि आशियानो मूंहुं पखीअ मोड़े छडियो.
३) कुल्ब मुंहिंजे में स्याही ग़ैर जे हो घरु कयो,
इस्म ज़ातीअ जे कड़े कल रमज़ सां रोड़े छडियो.
४) मां तो मालिक भरोसे ब्रेड़ो डिसी तूं ब्राझ करि,
आहि सनाई सीर में तोड़े कढो तोड़े छडियो.

(3)

मिलां कीअं यार आऊं तोखे, किथे आहीं मुहिंजा जानी?
१) न मूंखे को मिले थो ड्रसु, न मुंहिंजो को हले थो वसु,
वठां मां हाणि कहिड़ो गसु? आहे मूं लाइ बरिबानी.
२) छडे आयुसि मां पंहिंजो देसु, लताड़े ब्रिया घणा परदेस,
अची डिसु यार मुंहिंजो वेसु, अंदर में आह परेशानी.
३) विऐं दिलिबर मूंखे मारे, जिगिरु तनु मनु सभई ड्रारे,
विछोड़ो थो तुंहिंजो मारे, हणी वऐं कुर्ब जी कानी.
४) सज्रण हाणे भलाई करि, मिलण जी यार वाई करि,
सनाई लाइ सणाई करि, लहे मन जी हीअ हैरानी.

(4)

इश्कु पंहिंजो घरु छडाए थो, रुलाए दरिबदरि,
बादिशाह खे भुलाए थो पिनाए दरिबदरि.
१) हीर ते हैरानु थी डिनो तख़्त खे रांझन तर्कु,

शाहज़ादो शोक़ मां मुर्ली वज़ाई दरिबदरि.
२) क़ैस जहिड़नि क़ाबिलनि ते नाम मजिनू तो धरे,
लाइ लैला जे वेचारो तू लीलाई दरिबदरि.
३) इश्क़ आबिदु थो सड़ाए, सुणु क़िसो सनआन जो,
हिन दुनिया में नामु नेकी ब़ुई विञाए दरिबदरि.
४) चवे सनाई नाज़ वारा ना ख़्वारी भव डिज़नि,
इश्क़ थो भोलो बनाइ ऐं नचाए दरिबदरि.

## (ज)
## (४१ जीवत)

तुंहिंजी ड़ी नज़र निहालु कयड़ो, थियड़सि मस्त मस्तानो.
१) शौक़ फ़िराक़ तुंहिंजे जो, ग़ल ब़धो मूं ग़ानो.
२) तलब दीदार तुंहिंजे जी, कयड़ो मूंखे दीवानो.
३) बिरिह बारिश तुंहिंजे जो, बेहद आहे बयानो.
४) दमि दमि आहे जीवत खे, तुंहिंजो दर्दु दास्तानो.

## (2)

तोड़ि पिरीं मूं पुज़ाईंदो, अथम उमेद इहा यार सज़ण में.
१) दुनिया जो समुंड नाम जी ब़ेड़ी, पाण मलाह थी लंघाईंदो.
२) नाहेमि पैसो नाहेमि परिचो, छिक खां पाण छड़ाईंदो.
३) कचो दिलो ऐं जोशु दरियाह में, कुनिनि खां कंत बचाईंदो.
४) जीवत जंहिंखे ओट अलाह जी, तंहिंखे केरु सताईंदो?

## (3)

ओरियूं ओरियां तुंहिंजे ओर, सज़ण मोर जानी,
सदा साह खे आहे तुंहिंजी वाई, रोज़ अज़ुल खां जा तू लाई,
कीअं मटियां सा टोर.
१) मन मोहन तो मुर्ली वज़ाई, सुमिहियल जिंदिड़ी तो जाग़ाई,
दिलि लुटियुइ शहिज़ोर.
२) सुहिणल मूं खे तो सुरिकी पियारी, समझ अलस्ती तो दिलि ते विहारो
वई बे तक तोर.
३) जीवत जानी आहि हरि जाइ जानी, अंदरि ब़ाहिरि आ सूरत साई,
तो बिना नाहे ठोर.

## (4)

उथी सती जागु जो, कृष्नु आयो थी जंगु में.

१) छड्डि ग़फिलत ग़ैर खे, वठु संतन मागु.

२) ओर अंदर में वर खे, त थिएई सदा सुहागु.

३) हरि जाइ ड्रिसु तूं परिखे, करि ख़ुदीअ जो त्यागु.

४) जंहिं पातो आहे पिर खे, तंहिंजो वड्डो भागु.

५) जीवतु मालिक मुर्शिद जो, ब्रुध तूं अनिहदि रागु.

## (5)

मूंखे यार ड्रिनी आहे निशानी, जंहिंजी सदा बक़ा जावदानी.

१) नींहु सज़ण सां मुंहिंजो लगिड़ो, भूल भरम मुंहिंजो सभोई भगिड़ो,
आहे ज़ाहिरु बातनि अयानी.

२) सदा साह अंदरि आहे सुहिणो, मिठो महिबूबि मन मोहिणो,
आहे जानि जानिबु मुंहिंजो जानी.

३) बिना जानिब ब्रियो को नाहे, जिति किथि सुहिणल सागु आहे,
आहे मिसलु लासानी.

४) जीवत जानिबु हिकु करे ज़ाणिजि, ग़ैरु ग़ैरत तंहिंमें तूं न आणिजि,
आहे मालिक हृदो जहानी.

## (6)

क़ासिद केच धणीअ खे, मुंहिंजा सारे ड्रिजि सलामु.

१) आऊ उनहीअ ते आहियां साईं, जेको कयड़ो यार ऐलामु.

२) हलंदे चलंदे ताति तुंहिंजी, ब्रियो कंहिं सां कयूं न कलामु.

३) आहियूं सिक तुंहिंजे में जानी, मुहबत तुंहिंजी आहे मुदामु.

४) मिलु जीवत खे सुहिणल साईं, कढु दुईअ सदा सभु दाम.

## (7)

तुझ बिनु कोई दूजा नाहीं, सत्गुरु ईअं सिखिया हे.

१) जिति किथि तोईं तेरी सूरत, तेरा रूप समाया हे,
सांगु तूं हे सांगी बि तूं हे, तूं हे खेलु रचाया हे.

२) नामु तूं हे नामी बि तूं हे, दिलि विचि भेद न पाया हे,
नाम बिना बेनाम भी तूं हे, आप में आप छिपाया हे.

३) जामु तूं ई साक़ी बि तूं ही, आप शराब पिलाया हे.
श्याम तूं हे गोपी बि तूं हे, इह खेलु तेरे कौन पाया हे?

४) गोर तूं हे भेद बि तूं हे, जीवत जोति जगाया हे,
तेरे क़ुदिरत तूं ही ज़ाणीं, दूसर अंतु न पाया हे.

## (8)

आऊ त तुंहिंजी आहियां, खोटी ऐं तोड़े खरी,
ड्रेई दरिसनु दोस्त जानी कयो मूंखे मस्तु चरी.

१) इश्कु तुंहिंजे सिरु असांजे, लाती आहे यार धरी,
बिना ख़्याल सुहिणा तुंहिंजे घारियां कान आऊ घड़ी.

२) ड्रे को दरसनु दोस्त मूंखे शौंक मूं सुहिणा वरी,
बिना मिलण मुहिब तुंहिंजे आऊं त वेंदसि यार मरी.

३) मिलु मुंहिंजा तू यार ढोलिया, खोलि का दरिसन दरी,
रमिज़ तुंहिंजी जे वज्रे थी जीअ अंदरि जानी चड़ी.

४) माम मालिक विलायत जी ब्रुधि दमि बि दमि जीवत वरी,
साफ़ु करि सीनो अंदरि तूं, त पंहिंजे यार मढ़ी.

## (9)

तूं मुंहिंजो साईं आऊ तुंहिंजी ब्रान्हीं , मूंखे क़समु आहे तुंहिंजो जानी.

१) पलि पलि थी आऊ तोखे सारियां, कड्रहिं कीन मां तोखे विसारियां,
आहीं ज़ाहिरु तोड़े निहानी.

२) जाते काथे आहे तुंहिंजो निज़ारो, आदि अंतु ही जगु सारो,
आहीं नूरु निर्मलु अयानी.

३) बिरिहु ड्राढो आहे तुंहिंजो बारी, दोई अंदर मूं जंहिं आ मेसारी,
आहीं लाहद सिरु सुबहानी.

४) जीवत नालो आहे तुंहिंजो सिफ़ाती, सदा आहीं तूं ज़ाहरु ज़ाती,
आहीं नूरु निरंजनु लासानी.

## (10)

जड्रहिं पुखे तुंहिंजी मां पेई, तड्रहिं परवाह रही मूंखे केही?

१) ड्रिसु न ऐबनि ड्रे मुंहिंजे जानी, तुंहिंजी आहियां जेही तेही.

२) जंहिंजो जादू लग्रो हो जीअ में, सज्रण मिलिया अथमि सभेई.

३) थियड़सि रिलिमिलि यार पंहिंजे सां, विचूं दोई सभ वेई.

४) पेचु पयड़ुइ जेको यार जीवत सां, सो कड्रहिं त कीअं छुटेई.

## (11)

मन मोहन का मुर्ली वज्राए थी, अनिहद जी आलाप सुणाए थी.

१) मुर्लीअ तुंहिंजीअ मनिड़ो मोहियो, शकु सभेई अंदर जो खोयो,
लइ मुहबत जी का दिलिड़ी रीझाए थी.

२) मुर्ली तुंहिंजी आहे रंगबिरंगी, उहा आहे सदा मूंसां सदा संगी,
सारे सरीर में साई सहाए थी.

३) मुर्ली तुंहिंजीअ जो आवाज़ु मिठो आहे, तुंहिंजे साधन जो संगिड़ो सुठो आहे,
जिनि साधनि लाइ इहा लातिड़ी लवाइ थी.

४) तूं कृष्नु आऊं गोपी हुयड़सि, कृष्न कृष्न करे मां कृष्नु थियड़सि,
कृष्न बिना ब्री वाई वञाए थी.

५) जीवत मुर्ली कृष्न टेई, रांदि रखायइ नाला सभेई,
पंहिंजे बिलास लाइ का खेल खेलाए थी.

## (12)

इश्कु लग़ो पोइ घूंघटु कहिड़ो, मथे करि मूंहुं तूं परिदो नक़ाबु.

१) रातियां ड्रींहां तलब त तुंहिंजी, नाहे नेणनि खे दिलिबर ख़्वाबु.

२) बिरिह तुंहिंजी जानी बाहियूं ब्रारियूं, ड्रे दरिसनु तूं दोस्त शताबु.

३) उणि तुणि आहे अंदर में तुंहिंजी, हरिदमु वज़े थो चंगु रबाबु.

४) जीवत जलिवो आहि हर जाइ तुंहिंजो, पोइ छो करीं तूं यार हिजाबु.

## (13)

जंहिंजो नालो आहे अल्लाह, आऊ त उनहनि जी आहियां.

१) सारे हिन संसार जो, जंहिं त ठाहियो आहे ठाहु.

२) बिरिह उनहनि जे बर कयिड़ो, सदा सारे तिनि खे साहु.

३) सिक उनहनि जी कंहिंखे सलियां, आहे त खेनि आगाहु.

४) बिना केच धणीअ जे सरितियूं, नाहे को मूं ब्रियो चाहु.

५) जीवत जानी हरि जाइ जेड्रीयूं, आहे शाहनि शाहु.

## (14)

मूंहुं न मिठल एड्रहों मोड़िजाइं मोड़िजाइं,
ब्रांहूं ब्रधी हथिड़ा जोड़िजांइ.

१) भला साईंअ जेकी सत्गुरु सुणायो, सो त सासों सासि,
ओरिजांइ ओरिजांइ.

२) भला साईं सुमिरणी सचे सत्गुरु जी दिलि अंदर में,
सुमिरिजांइ सुमिरिजांइ.

३) भला साईं गोबिंद जिनि जी मन में ब्रियो ड्रीहड़ो न,
ड्रोरजांइ ड्रोरजांइ.

४) भला साईं जीवत तुंहिंजीअ सिक में चरिख़ो अंदर में,
चोरिजाइं चोरिजाइं.

## (15)

कांगल पारि पिरियुनि जे, तूं त लंउ लंउ मिठिड़ी लाति.
१) छड्डि ड्डिसण तूं हेड्डे होड्डे, जपि मालिकु दिनि राति.
२) ओर अंदर में ओर उनिहीअ जी, जंहिंजो लाइक़ु सुफ़ति सफ़ाति.
३) ज़ाहिर बातुनि जंहिंजो नज़ारो, वाई करि तंहिंजे वाति.
४) सूरत सभु में जीवत ड्डिसु तूं, साहिब संदिड़ी ज़ाति.

## (16)

होरी खेलां मां राम तोसां, दिलड़ी ब्रुधी आहे दिलिदार तोसां,
मनिड़ों अड़ियो आहे मनिठार तोसां.
१) सिक तुंहिंजीअ जो सिंधुरि घुरायां, तिलकु ड्डेई मां सांग बणायां,
सांगु बि सूहेमि सार तोसां.
२) क़लिब तुंहिंजे खे कैसरि लायां मां, रंग तुंहिंजे में चोली रङाया मां,
लाए रहां लिव तार तोसां.
३) मइ मुहबत जो तोसां पियां मां, पी पी रिलिमिलि ~~तासां~~ थियां मां,
रहां मस्तु ख़ुमारु तोसां
४) ज्ञान गुलाल अंबीर उड्डायां, तोलाइ मां समु सेज विछायां,
को न करियां को ब्रियो आरु तोसां.
५) जीवत रिलिमिलि तोसां रहां मां, जाड्डे ड्डिसां ब्रियो को न लहां मां,
ईअं रखां वहिंवारु तोसां.

## (17)

सचु चउ तूं सचु यार केरु आहीं जानी केरु सड्डाईं?
१) पंजनि ततनि जो पुतिलो बणाए,
तंहिं में जानी रमिज़ रुलाए - नूर कयुइ निरवारि
२) पंहिंजो पाण में पाण छुपाए,
नाला ज़ातियूं नांव रखाए - पोश पहिरिया थी लख हज़ारि.
३) तरहें तरहें रंग रखीं थो,
रंग रंग में जानी लज़त चखीं थो - पोइ थिईं बे क़रारि.
४) जीवत छो रहीं यार उदासी?
गंगा जमुना अंदरि काशी - ड्डिसु तूं ओ ओंकारि.

## (४२ जानण)

उमर तूं मुंहिंजो भाऊ मां तुंहिंजी भेण आहियां,
शरिउ ऐं शरीइत में तोखां नु भुलायां.

१) उमर तूं आछीं माड़ियूं महल बंगला,
पखा तिनि सांगियुनि जा वेझो कयो अड्डायां!

२) उमर तूं चवीं थो पहिरि वेस वगि़ड़ा,
परे करि ही पंहिंजा, लोइ कीअं लजा़यां?

३) सुरहो तेलु तिरीअ ते लिङनि खे न लाईंदसि,
सराई सुरिमे जी कजल कीअं पायां?

४) ड्रिसी मूंहुं मिठल जो पवां पेशि दिलिबर,
चवे जानण उनहनि लाइ उदासी सड्डायां.

## (४३ जान महुमद)

थी पखी उड्डिरी वञां, हिकदमु हलियो पंहिंजे यार ड्डे.

१) दिलि थी चवे जेकर बाज़ु थियां, के पर ब्रुधी परिवाज़ कयां,
वञो होत सां हम राज़ु थियां, इनहीअ दम हलियो पंहिंजे यार ड्डे.
थी पखी उड्डिरी वञां .....

२) क़िस्मत कमीणीअ जाड़ कई, जंहिं दिलि विछोड़े धार कई,
नका होत मुईअ जी सार कई, पियो पंधु पिरींअ जे पार ड्डे.
थी पखी उड्डिरी वञां .....

३) जान महुमद रातियां ड्डींहां, जंहिं कया कईं ख़तरा नवां,
नाक़स नसीबनि खे चवां, कंहिंखे मुंजां मन्ठार ड्डे.
थी पखी उड्डरी वञां .....

## (४४ जमह)

अज़ु मां कंहिंसां सलियां सूर, दिलि चाकनि कई चूरि,
हाल मुंहिंजे जा महरम मिठिड़ा, ड्डींहं लातइ ड्डूरि.

१) उड्रिरु पखी वञी पारि पिरियुनि ड्रे, नाउ धणीअ हिकवारी,
आणे ड्रे का अजीबनि खूं, हिन धारे खे दिलिदारी,
मनु मांदो मुहिब मिलण लाइ, साहु संधनि में सूर,
अज़ु मां कंहिंसां सलियां सूर.

२) हिक जा मूंसां सज़ुण कई हुई, ड्राढी बेपरवाही,
हरिको पंहिंजनि ग़रज़ुनि वारो, कोन्हे हाल जो भाई,
वेठी पंहिंजा पाण सां ओरियां, दर्द घणे दस्तूर,
अज़ु मां कंहिंसां सलियां सूर.

३) मुहिब हणी विऐं मन में मेख़ूं, जीअ जे अंदरि जड़ियूं,
सवें तबीब हकीम जे मिड़िया, लखें प्यारनि पड़ियूं,
सिक त जमह खे यार मिलण जी, वरिहयनि खां वहिलूर,
अज़ु मां कंहिंसां सलियां सूर.

## (४५ दादा जशन वासवाणी 'अंजली')

मूंखे त खपीं तूं, मूंखे त खपीं तूं.

१) खपे कीन मिलिकियत, खपे कीन मालु,
अथमि घुरिज तुंहिंजी, मुंहिंजा ब्राल गोपाल! मूंखे त खपीं तूं!

२) खपे कीन उहिदो, खपे कीन इक़बालु,
हुजीं शाल मूं सां, अची अंतकाल! मूंखे त खपीं तूं!

३) नकी ऐश अशरत, नकी भोग़ चाहियां,
अथमु प्यास प्रीतम! तुंहिंजा पेर पायां, मूंखे त खपीं तूं!

४) नकी सुरुग़ि जा सुख, खपे कीन शक्ती,
खपनि कीन सिधियूं, सिर्फ़ु तुंहिंजी भग़िती, मूंखे त खपीं तूं!

५) मुक्ती प्रदान करि मिठा! तूं योगियुनि खे,
क़दमनि जी ख़ाक, दाता! ड्रे तूं मूंखे! मूंखे त खपीं तूं!

६) वर वर त अखिड़ियुनि आहे तो लाइ रुनो,
न सुझे वाट काई, आहियां छोरो छिनो! मूंखे त खपीं तूं!

७) बिना तो न ब्रियो को, मां जंहिंखे मञियां,

छड़े तोखे हज़िरत, कंहिं वटि वञां! मूंखे त खपीं तूं!

८) करे क़्यासु मूं ते ड्डे पीरनि पनाह,
वठी हलु हुन पारि, आहे सागरु अथाहु! मूंखे त खपीं तूं!

९) शरनि तुंहिंजी नूरी, मूं वरिती त आहि,
'अंजली' आहे बेवसि, तूं किनारे लग़ाइ! मूंखे त खपीं तूं!

## (च)

## (४६ चंदर)

१) निरालो सभिनि खां सज़ण तुंहिंजे खातो,
न रंग रूप तुंहिंजे जो कंहिं ज़ाणु ज़ातो,
न तुंहिंजे रचियल रांदि खे कंहिं सुञातो,
तूं बेअंतु आहीं पाण न कंहिं अंतु पातो.

२) किथे शिवु सड्डाईं किथे आहीं नानिकु,
किथे रामु बणिजी तूं बीहीं थो मालिकु,
किथे कानु कृष्नु सड्डाईं थो सालिक,
किथे ज्ञानु ड्डीं थो किथे थीं थो ब्रालकु.

३) अजबु तुंहिंजी लीला अजाइबु अजाइबु,
किथे ड्डीं थो दर्शनु किथे थीं थो ग़ाइबु,
किथे पाण नौकर किथे आहीं साहिबु,
किथे पाण हाक़िमु किथे आहीं नाइबु.

४) किथे आहीं नांगो किथे आहीं जोग़ी,
किथे भोग़ भोग़े सड्डाईं थो भोग़ी,
किथे ख़ुशि गुज़ारीं किथे आहीं रोग़ी,
किथे संतु साधू किथे आहीं ठोग़ी.

५) किथे कापिड़ी थी कुर्बु थो कमाईं,
किथे वेसु गेड़ू किथे ख़ाक लाईं,
किथे छेर पाए थो सूफ़ी सड्डाईं,
किथे साज़ ठाहे मिलाए थो ग़ाईं.

६) किथे कापिड़ी थीं किथे थीं थो दर्ज़ी,
किथे सेठु आहीं किथे थीं थो क़र्ज़ी,
किथे आजज़नि जियां लिखाईं थो अर्ज़ी,
किथे पाण पंहिंजी हलाईं थो मर्ज़ी.

७) अजबु खेल तुंहिंजा अजबु तुंहिंजी बाज़ी,
किथे आहीं पंडितु किथे आहीं क़ाज़ी,
किथे रंज में तूं किथे आहीं राज़ी,
किथे सुस्तु थीं थो किथे आहीं ग़ाज़ी.

८) किथे सिरु बचाईं किथे सिरु कटाईं,
किथे पीरसनु तूं किथे ब॒ारु आहीं,
किथे ज़ाल बणिजी थो ज़ेवर घड़ाईं,
किथे मर्दु बणिजी थो ख़ुनिकी लग॒ाईं.

९) बयाबान बर में ऐं घर में रहीं थो,
बनीं हर बशर जे अंदर में रहीं थो,
शिवाले मड़िही ऐं मंदर में रहीं थो,
चंदरू छो थो भिटिके चंदुर में रहीं थो.

## (2)

१) तूं ई संदमि सहारो, तो बिनु न कोई चारो,
तो बिनु जहां सारो, दिलि खे लग॒े न प्यारो.

२) दुनिया खे आज़मायुमि, दुख दर्द खे वधायुमि,
कंहिं मां मज़ो न आयुमि, सभ खां कयुमि किनारो.

३) दुनिया भरायो जानो, सुख जो चयुमि न गानो,
ज़ाहिरु मिठो ज़मानो, आहे अंदर कसारो.

४) दुनिया ड॒िठी पिनी मूं, तंहिं सां संगति छिनी मूं,
दिलि तोखे बसि ड॒िनी मूं, तो साणु दिलि जो आरो.

५) पंहिंजे हथनि सां ठाहीं, ठाहे वरी थो डाहीं,
चड़िहियल खे हेठि लाहीं, तुंहिंजो सज॒ो पसारो.

६) मारीं तोड़े जीआरीं, ब॒ोड़े छड॒ीं या तारीं,
खारीं तोड़े संवारीं, तूं ई आँ राज़ वारो.

७) तू ठहु न ठहु मां ठहंदुसि, सख़्तियूं ड्रिनइ त सहंदुसि,
लिकंदें त ग़ोले लहंदुसि, तोड़े हुजे अंधारो.

८) तूं इस्म में रहीं थो, तूं जिस्म में रहीं थो,
तूं चश्म में रहीं थो, तूं ई अखियुनि जो तारो.

९) तूं ई मंदर में आहीं, तूं ई अंदर में आहीं,
तूं ई चंदुर में आहीं, तुंहिंजो वज़े नग़ारो.

**(3)**

साईंअ जे सौदे जो आ को विरिलो वापारी.

१) घरु छड्रे के मंदर में के मस्जिद में बीठा,
पेट जे ख़ातिरि सवाब जा हट कढी वेठा,
माण्हुनि खे मुंझाइण ख़ातिर बणिया पूज़ारी,
साईंअ जे सौदे जो आ को विरिलो वापारी.

२) मोती, कोड़, सुतइड़ा, कोड्रियूं, संख समुंद्र जा,
हीरा, लाल, जवाहर के शीशे जा के पथर जा,
हीरा, लाल, जवाहर सचा परखे पो जौहिरी,
साईंअ जे सौदे जो आ को विरिलो वापारी.

३) सौदागर दुनिया जा सौदा रोज़ु वठनि विकिणनि,
सुरिति निरिति जे वखर सचे खे समझू के समुझनि,
विरले कंहिं समुझियो सौदे खे ब्रिया सभु अनाड़ी,
साईंअ जे सौदे जो आ को विरिलो वापारी.

४) कूड़ी शान जे ख़ातिरि केई कूड़ कमाइनि था,
बाज़ी जीतण लाइ बहाना हुनुरु हलाइनि था,
चंदरू तंहिं जीती बाज़ी जंहिं जीते ई हारी,
साईंअ जे सौदे जो आ को विरिलो वापारी.

**(4)**

जोग़ीअड़ा जड़ लाइ वया, स्वामी सबकु पड़िहाए विया,

१) सूरियह संभिरियां सैर सफ़र ते, सिरु पंहिंजो सहिसाए विया,
ब्रुरिक न ब्राहिरि ब्राफ कढियाऊं, मुरिक सां मूंहु मुशिकाए विया.

२) पाप सवाब जे हिन दुनिया मां, जोग़ी जिंद छड्राए विया,

वाग़ वराए पंहिंजे वतन ते, पूरब पंधु पुछाए विया.
३) दिलि जूं ग़ाल्हियूं दिलि में पाए, दांहं दर्द वधाए विया,
राति रहिया बसि हिकिड़ी जोग़ी, चंदुर खे बि चिताए विया.

(5)

इश्क़ बुधायुमि पटियूं पटियूं, थिया फट अहिड़ा जेके छुटण न जहिड़ा.
१) इश्कु सज़ो इस्बाबु लुटायो, दिलि जो ख़ज़ानो ख़ूबु खुटायो.
बिरिह भराइयूं चटियूं चटियूं, पिया भन अहिड़ा जेके भरण न जहिड़ा.
२) शर्मु हयाउ सभु इश्क़ विञायो, हर फ़न में मुहिताजु बनायो,
बिरह भरायूं मटियूं मटियूं, हुआ मटि अहिड़ा जेके खणण न जहिड़ा.
३) इश्क़ सज़ो घरु घाटु रुलायो, दर दर जो बेखारी बनायो,
बिरिह घुमायूं घिटियूं घिटियूं, ब्रिया घेड़ अहिड़ा जेके खणण न जहिड़ा.
४) इश्क़ अचण सां होशु भुलायो, ग़मनि संदो दरियाहु पसायो,
सोज़ाव फ़िराक़ जूं सटियूं सटियूं, हुआ सूर अहिड़ा जेके सहण न जहिड़ा.
५) समुझी समुझी इश्कु कमाईं, यार चंदुर मतां पोइ पछिताईं,
लाग़ापा सभु लटियूं लटियूं, रखु ख़्याल अहिड़ा जेके खसण न जहिड़ा.

(6)

ड्डियो प्रेम नगर जो ड्डसु ड़े अदियूं, ड्डियो ड्डसु त वठां सो गसु ड़े अदियूं.
१) जिति प्रेम मां भौंरो वासु वठे, जिति प्रेम मां बुलबुल गुल थी पसे,
जिते प्रेमु प्रेम मां दिलि थो खसे, उन प्रेम भुइं में रसु ड़े अदियूं.
२) जिति मीरां बि गिरिधर काण मरे, जिति बिजलीअ में थो पतंगु सड़े,
जिति चांद जे लाइ चकोरु ग़रे, वठी वेंदसि साग़ियो गसु ड़े अदियूं.
३) हीउ देसु दुखनि जो आहे ड़े, हिति प्रेम बिना मुंहिंजो छाहे ड़े,
वञां सरितियूं सिरड़ो साहे ड़े, जिति नाहि को ख़ासु हिरिउ हौसु ड़े अदियूं.
४) मुंहिंजी दिलि जो भेनरु आ रायो, मूंखे सरितियूं कीन के तरिसायो,
हली वेंदियसि तोड़े समिझायो, उति कसर मिले तोड़े कसु ड़े अदियूं.
५) हाणि मुंहिंजो रहणु हिति औखो आ, बिनि प्रेम जिस्मु ज़णु खोखो,
छड़ि जाइ उहा, जिति जोखो आ, हिति नाहे जीअण में जसु ड़े अदियूं.
६) हिति ग़म जा घर सभई साड़ियां, वञी प्रीति प्रेमियुनि सां पाड़ियां,
उते दमु न विंदुर जा के घारियां, हले जेकर मुंहिंजो वसु ड़े अदियूं.
७) आहे प्रेम नगर में प्रेम जो घरु, आहे प्रेम जे घर में मुंहिंजो वरु,

उहो मनु जो कन्इयो मुनवरु, जंहिं साणि चंदुर जो चसु ड़े अदियूं.

(7)

झंगलनि में जेके झिरिमिरि लाइनि, महलनि में कीअं मूंहुं मरिकाइनि.

१) उथनि असुरु जो धणीअ खे ध्याइनि, ब॒ ब॒ ज॒णियूं थी जंडु हलाइनि,
थरनि बरनि में हरिड़ा काहिनि, बरसातियुनि ते पोख पचाइनि,
मींहं जे ख़ातिरि सारंग ग॒ाइनि, सारंग ग॒ाए मींहुं वसाइनि.

२) मटिका मथनि ते, लाडा ग॒ाइनि, झंग जूं ज॒टियूं सुरु थियूं मिलाइनि.
मट के भरीनि के नार हलाइनि, दिला भरे हिक ब॒िए खे खणाइनि,
शरम हयाअ सां क़दमु वधाइनि, वाट ते कंहिं सां कीन ग॒ालाइनि.

३) खाज॒ु जंहीं जो संड्रियूं डोंइरा, ललर मरीड़ो ग॒त्तर मितेरा,
भूंगियुनि में वेही बाहि दुखाइनि, दांगियुनि ते से डिग॒ड़ु पचाइनि,
दिलि ब॒ाझर ऐं डुध सां लाइनि, ठिकिरनि में सभु गड्रिजी खाइनि.

४) मेरा कपड़ा टुकरु टुकरु थनि, डुकर सुकर में शुकरु शुकरु कनि,
चतियूं लग॒ाए कपड़ा पाइनि, मेरा कपड़ा मूरि न लाहिनि,
रेश्म ते कीअं लीड़ मटाइनि, लोई चंदर हरिगिज़ि न लज॒ाइनि.

(8)

रुसु न रुसण में छाहे राणा, रीति रुसण जी रमज़ न ज॒ाणा.

१) रीति पुराणी पेच पुराणा, इश्क़ अग॒ोणो समझु सियाणा,
मूमल साग॒ी बाग़ पुराणा, दर्द नएं सिर दाग़ पुराणा.

२) चाकु न आहियां चाकु करे वञु, महिलु मूमल जो पाकु करे वज॒ु,
काक करे वएं ख़ाक जा चाणा, वर त वसाणल वसनि वथाणा.

३) दर्दु चइ मुहिंजी दिलिड़ी हिति आ, दर्द नएं लाइ जाइ किथे आ,
दाग़नि जा आहिनि दिलि में दाणा, दर्द खे सांढियां किथे सियाणा.

४) सुखनि जी पालियल डुखनि में पेई, दाम में फासी दिलि कींअं वेई,
जंहिं घाया हा चंदुर घराणा, सा मूमल करे अज॒ु पुछाणा.

(9)

मतिलब जी आहे दुनिया, तंहिं में रही कबो छा?

१) जिनि सां ठही विहें थो, तिनि सां ठही न सघंदें,
जिनि सां ठही न सघूं, तिनि सां ठही कबो छा?

२) वहिजे न वेल तंहिं सां, जो वेल में विहे मन,

जो महिल में न मूंहुं ड्रिए, तंहिं सां वही कबो छा?

३) दिलि जो ड्रे हालु तंहिंखे, जो हाल जो आ महरमु,
जो हाल खां न वाक़ुफु, तंहिं सां पही कबो छा?

४) सख़्तीअ बि सहु उन्हीअ लाइ, जो सूर में संगी थिए,
संगितियुनि सुवार्थियुनि लइ, सख़्ती सही कबो छा?

५) छड्रि बेवफ़ा नगर खे, ज़रु माल ज़ाल ज़र खे,
ग़ोले लहीं त हिकु लहु, ब्रिए खे लही कबो छा?

६) पंहिंजे दुखनि सुखनि जूं, करि पाण सां कहाणियूं,
कोई ब्रियो न ब्रुधंदुइ, कंहिंखे कही कबो छा?

७) हिक जी कजाइं ग़ोला, हिक खे कजाइं सजिदो,
दरि दरि चंदुर दीवाना, मस्तकु गही कबो छा?

## (10)

इश्क़ु अचण लग़ो पिरू अग़ेई पेयूं, उते अक़ुल चयो हाणे कीअं करियूं.

१) आयो इश्क़ु त जीअ में झोरी लग़ी, लूंअ लूंअ में सज़ुण जी लोरी लग़ी,
सिक सुहिणल जी सौ वरि वधी, मूंखे नींहं सेखारियूं ग़ाल्हियूं नयूं.
इश्क़ु अचण लग़ो .....

२) आया लोक मिड़ी सुञ सोक करे, लग़ा समझाइण वड़ा ब्रोक करे,
वेठा इर्दि गिर्दि सभु झोक करे, ग़ाल्हियूं सहमनि वारियूं सुहिणियूं पेयूं.
इश्क़ु अचण लग़ो .....

३) अहिड़े इश्क़ जा कीअं न अहिसान मञियां, भला सरितियूं ब्रुधायो काड़े वञां,
छो थियूं समिझायो नाहियां नंढिड़ी अञा, ग़ाल्हियूं यादि अथमि जेके चंदुर चयूं.
इश्क़ु अचण लग़ो .....

### (ड्रोहीड़ो)

वञनि था वञनि था उदासी वञनि था, वतन खे छड्रींदा,
छड्रे साध सूफ़ी वञनि था लड्रींदा,
उमीदूं सभई वञनि था पलींदा, अल्लह ज़ाणे आख़िरि कड्रहिं मेला थींदा.

### (कलाम)

वतन खां जुदा थी लड्रींदा वञनि था,
पखी बाग़ु पंहिंजो छड्रींदा वञनि था ..
हाइ हाइ पखा पुराणा, हाइ हाइ मिठा अबाणा.

१) छड्डे क़तबु बेदल ऐं बेकस जा ड्डेरा, छड्डे शाह सामी दलिपत जा ब्रेरा,
दराज़नि खां अज़ु दूरि थींदा वञनि था - हाइ हाइ पखा पराणा...
२) छड्डे पंहिंजे सिंधू नदीअ जा किनारा, अबाणा अझा ऐं छना छना प्यारा प्यारा,
पुराणनि पखनि खे पटींदा वञनि था - हाइ हाइ पखा पुराणा...
३) छड्डे ज़िंदह पीर ऐं सख़रु साधुब्रेलो, वसणु घोटु रोहलु पारुशाह जो मेलो,
जुदाईअ संदो दागु ड्डींदा वञनि था - हाइ हाइ पखा पुराणा...
(फ़िल्म अबाणा मास्टरु चंदरु)

## (11)

ऐट! अञा त मां नंढिड़ीं आहियां, वड्डी बि नेठि त थींदसि,
माइट मुंहिंजो मङिणो कराईंदा, जवानि जड्डहिं मां थींदसि.
मङिणे खां पोइ छा थींदो.
घोटु चढ़ही घरि घोड़ीअ ईंदो, वठी नाल मूंखे नींदो,
छड्डे पेकनि जो घरु पुराणो, साहुरनि जे घरि वेंदसि.
शादीअ खां पोइ छा थींदो.
शादीअ खां पोइ पुटु बि ज़ुमंदो, पीरल नाऊं धरींदसि,
नंढिड़ो पीरलु खेड्डण वेंदो, मानीअ लाइ सड्डींदसि.
न थो अचां चंदुर पीरल चवंदो, रांदि में रीधुलु हूंदो.
पीरल पीरल हेड्डे अचु, वाका करे सड्डींदसि.
ऐट अञा त मां .....

## (12)

अल्लह आशिक़नि जा कम पाण करे, मौला मस्तनि जा कम पाण करे,
न त केरु निमाणनि ते नज़र धरे.
१) दुनिया रंग ज़माने मां छा ज़ुाणनि, हू मौज़ अलस्ती था माणिनि,
ग़मु कड्डहिं न कनि ख़ुशि दिलि था रहनि, दुनिया जे झंझट खां भज़ुनि परे.
मौला मस्तनि.....
२) आहि मौज़ दरियाह में बि साणि मलाहु, विच सीर में साणी अल्लाह,
कंदो तिनि खे छा तूफ़ानु भला, तिख तार मां जिनि जी कश्ती तरे.
मौला मस्तनि.....
३) बिनु पैसे बेपरवाह आहिनि, बिना फ़ौज ख़ज़ाने जे शाह आहिनि,
हिक तौंकल साणु अल्लाह आहिनि, जिनि जूं चंदुर चिठियूं रहिबरु थो भरे.
मौला मस्तनि......

## (13)

मालिक तूं दर्द कटींदे, कीन छड़ींदें,
हर हंधि हर हाल में रांवल रहिबरु थींदें.

१) सिंधु जो अगोणो शानु अजबु हो, राहत हुई ज़णु राज़ी रबु हो,
रहंदो हिंदू मोमनि गडु हो, हिक ब्रिए खे ड्रींदो सड़ में सडु हो.
मालिक तूं .......

२) अगु वारी अज़ु उल्फ़त नाहे, मुल्क में साग़ी मुहबत नाहे,
दर्द सहण जी ताक़त नाहे, रहिजे जुदा कीअं जुरियत नाहे.
मालिक तूं .......

३) पीउ कीअं सहंदो पुट जी जुदाई, धन वारा हिति कनि पिया गदाई,
या रब कहिड़ी आफ़ति आई, तुंहिंजे मदद सां थींदी सणाई.
मालिक तूं .......

४) नाज़ जा पालियल सिंधी निमाणा, देसु छडे परदेसु विकाणा,
साधुनि सूफ़ियुनि छडिया टिकाणा, घरड़ा छडे अज़ु घुमनि वेगाणा.
मालिक तूं .......

५) सिंधी निमाणा रूअंदा हूंदा, ग़ोड़िहनि सां मूंहुं धूअंदा हूंदा,
धारियनि में कीअं सूहंदा हूंदा, पूर हज़ारें पीईंदा हूंदा.
मालिक तूं .......

६) चंदुर उमिरि शल वतन में गुज़िरे, वतन खां शल दुश्मनु बि न विछिड़े,
जो दमु निबिरे वतन में निबिरे, दम निकरे त बि वतन में निकिरे.
मालिक तूं .......

## (14)

मां दुनिया खे सुज़ाणां थो, मां दुनिया जो डिठलु आहियां.
न दुनिया ई लिकलि आहे, न दुनिया खां लिकलु आहियां.
चवनि था वयो चंदुरु कुसिजी, बराबरि मां कुठलु आहियां,
मुअलु आहियां मुहबत में, अगे ई मां मुठलु आहियां.
मूए खे केरु मारींदो, मां जीअरनि खां छुटलु आहियां.
जीअणु वारा पिया मरंदा, मरण खां मां छुटलु आहियां.

## (15)

रुठाई रहनि पर हुजेनि हयाती, भले पिया विड़िहनि पर हुजेनि हयाती.

१) जुदा थी रहनि तोड़े गडिजी गुज़ारिनि,

रखनि राज़िपो या कावड़ि पिया कनि, अचनि न अचनि - पर हजनि....

२) छड़ियां छो न होतनि तां ज़िंदुड़ी घोरे,
घुरनि मासु मूंखां ड्रियां हूंद कोरी, कुही पिया कुहनि - पर हजेनि....

३) दुखी शल रहां मां, हू ख़ुशि थी गुज़ारिनि,
परे खां ड्रिसां मन, भले ना निहारिनि, धिकारे छड्रियिनि - पर हुजेनि....

४) मां बे चैनि आहियां, हू भलि चैनु पाइनि,
हुजनि शल सलामति चंदुर ना निभाइनि, ठहनि या डहनि - पर हुजेनि....

(16)

सिक ऐं संगति जो सज़णु सगो, कड्रहिं मां थो छिकियां कड्रहिं हू थो छिके,
करियूं लिक छिप गड्रिजी रांदि ब्रई, कड्रहिं मां थो लिकां कड्रहिं हू थो लिके,
ग़मु दर्दु जुदाईअ जो जे अचे, कड्रहिं मां थो सिकां कड्रहिं हू थो सिके.
इहा राति विसाल जी हिक ब्रे वटि, कड्रहिं मां थो टिकां कड्रहिं हू थो टिके.
सची मुहबत जो आहे गाड्रो चंदर, कड्रहिं मां थो धिकियां कड्रहिं हू थो धिके.

(17)

रुसीं त रुसु मगरि, रुसण बि रीति सां थो ठहे,
नाज़ु भी करि भले, मगरि नाज़ु भी नीति सां थो ठहे,
एड्री दिलि सख़्तु चंदुर आशि़क़नि सां कीन कजे,
रुसण में छाहे रखियो, हरिको प्रीति सां थो ठहे.

(छ)

(४७ छतन फ़क़ीर)

दिलिड़ी मुंहिंजी दोस्त रीअ घड़ी त ना घारी - वो यार.

१) साइति साइति में सज्रिणा सड्रिड़ा कयूं सारे - वो यार.

२) पलि पलि पांधियुनि खां पुछां ग़ोड़हा सौ ग़लि हारे - वो यार.

३) मौला मुहिबु शाल मिलाए तेसीताईं न मारे - वो यार.

४) ईंदमि शाल छता चवे सो तो अङण ओतारे - वो यार.

(2)

मूंखे इश्कु न थो ड्रे आरामु, सरितियूं नाहक़ु छो पयूं मारियो.

१) कारि कतण जी आऊं मूलु न ज़ाणा, सरितियूं चवां आऊं साफ़ु,

चरिख़ो चंदन जो धारियो के ब्रारियो, मूंखे इश्कु न थो ड्रे आरामु,

२) बिरिह अव्हांजे वाटिरनि जे कईअरियूं, तिनि खे वणे न थो तामु,

नाहियां नंढी मूंखे छा थियूं सेखारियो, मूंखे इश्कु न थो ड्रे आरामु,

३) बिरिहु अव्हांजो बेअख़्तियारी, जीउ त ड्रिठाऊं जामु,

नेह जे नशे मूं खे आणे धुतारियो, मूंखे इश्कु न थो ड्रे आरामु,

४) यार छतन सां लिंवड़ी जलाई, कइरो मस्तु मुदामु,

बेवस आहियां छो थियूं पुकारियो, मूंखे इश्कु न थो ड्रे आरामु,

## (ज्र) (४८ ज्रेठो)

वया जे वैराग्री वैराग्रिणि बणाए,

चवां कीअं रे जेड्रियूं मुंहिंजो अंदरु विया दुखाए.

१) मुहबत ड्रेई पंहिंजी, कयाऊं मूंखे पंहिंजो,

निगाहुनि सां निहारे, फुरियाऊं मनिड़ो मुंहिंजो,

रोयो पई रोआं मां, नातो विया छिनाइ,

विया जे वैराग्री वैराग्रिणि बणाए.

२) पीयारे प्यालो, करे दिलि दीवानी,

हणी जादू जीअ में, मारे विया त जानी,

छड्रे मूईअ खे वयड़ा रिण में रुलाए,

विया जे वैराग्री वैराग्रिणि बणाए.

३) ड्रींहं राति सरितियूं सांगियुनि खे संभारियां,

खणी नेण तिनि जे वेठी, वाट निहारियां,

ज्रेठो यादि तिनि जी, ड्राढी थी सताए,

विया जे वैराग्री वैराग्रिणि बणाए.

## (2)

ग़मनि कयो ग़ल्तानु मूं, पातिणी ब्रेड़ो अची करि पारि तूं.

१) साइलु मूंखे नज़रु न अचे थो, ध्यानु को दिलि में धारि तूं.

२) लहरुनि विचु हीउ ब्रेड़ो लुड्रे थो, क़हुरु कुननि मां तारि तूं.

३) सटे सटे सटियांइ थी सज्रणा, लउ सारह अची हिक वार तूं.

४) ज्रेठूअ खे आहे आसिरो तुंहिंजो, लाहे बदीअ जो बारु तूं.

## (3)

माफ़ी मदायुनि जी तूं ॾे साईं, किरी करियां क़दमनि करियां नीज़ारी.

१) ॾोह गुनाहनि में मूं पंहिंजी, उमिरि विञाई सारी - किरी क़दमनि ..
२) तो खां सवाइ केरु ब्रियो ॾींदो, दुखीअ खे दिलिदारी - किरी क़दमनि ..
३) ॾींदें सज़ा सहंदी रहंदियस, बेशक़ आहियां ॾोहारी - किरी क़दमनि..
४) वेही विचारिजि कीन धिकारिजि, दर तां हीअ दुखियारी - किरी क़दमनि ....
५) जेठो कचायूं कुल ई मुंहिंजियूं, वारे छड्डिजि हिक वारी - किरी क़दमनि ....

## (4)

हलु हलु ड़े घड़ा, ब़ुधु ब़ुधु ड़े घड़ा,
घड़ा प्यारा जीअ जीआरा, मुंहिंजो तूं आधारु.
मूंसां हलंदें, कीन छड्डींदें, कीन कंदे इंकारु,
क़हिरी कुननि मां तारि - हलु ड़े घड़ा जिते मुहिबु मेहार ....
हलु हलु ड़े ....

१) मेहर ॾे मूंखे वञिणो आहे, मुहिब पंहिंजो सां मिलिणो आहे,
हितिड़े हाणे रहिणो नाहे, पारि पुज़ाए प्रीतम पारि - हलु ड़े ...
२) साह पंहिंजे जो नाहे सांगो, तोड़े हुजे भलि रस्तो अणांगो,
तारि हुजे या पाणी तांगो, हुजे खणी दरियाह धधिकारि - हलु ड़े ...
३) मिठिड़ा घड़ा छड्डि बेपरिवाही, मुहब मिलण जी करि का वाई,
एड्डी न करि तूं देरि अजाई, जेठो मिलां शल मां मनिठार - हलु ड़े ...

## (5)

मूं त पंहिंजो बारु बाबिला तो ते विधो आहे,
बेफ़िक्रु मां आहियां , मूंखे परिवाह पाईअ जी नाहे.

१) सार सभिनि जी तूं ई लहीं थो, सार पियो लहंदो आहीं,
महिर कंदा शल मूंते सत्गुरु, वेहंदा कीन विसारे. मूं त ....
२) सिक सां तोखे जेको पुकारे, तंहिं वटि पाण अचे थो,
पति परमेश्वरु पाण रखे थो, ड्डिसे कोई आज़िमाए. मूं त ....
३) क़ाइमु दाइमु तुंहिंजी करामत, आहीं करामत वारो,
तुंहिंजी करामत जो ही निज़ारो, ड्डिसे कोई दिलि लाइ. मूं त ....
४) (दासी) जेठो चवे मुंहिंजा मिठिड़ा सत्गुर, कड्डहिं तूं मूंसां मिलंदें,
छोत मुंहिंजा मिठिड़ा सत्गुर, छड्डियो तू पंहिंजो बणाइ. मूं त ....

## (ह)

## (४९ हमल)

इझो आरियाणी ईंदो, अदियूं आरियाणी ईंदो, नाल निमाणी नींदो.

१) ईंदो ईंदो कोन छडींदो, गोलीअ खे गडु नींदो.

२) काहे ईंदो केच धणी, ड्रेहु मुबारक ड्रींदो.[1]

३) नंगु निमाणीअ जो आहे, छिनां कीन छडींदो.

४) हेकर हमल सां मोटी मिलंदो, विचऊं विछोड़ो वेंदो.

## (2)

पुठीअ पेरु पवां, मां लहां, वो ड्रिसी ड्रोरी ड्रिंगरिनि.

१) सुधि त मुहिंजी सूर जी, अदियूं नाहि अव्हां खे.

२) पासे पलक पुंन्हूं खूं, सरितियूं आउ न सहां.

३) अदियूं! आरीचनि जा, निति निति सूर नवां.

४) हमल चवे होतन रीअ, इते आऊं न रहां.

## (3)

मोटु मिठा मन्ठार यार! तो लइ साहु सिके थो,

१) मूं खऊं मुंहिंजा मूं पिरीं! दोस्त म थीउ दमदारु.

२) दिलिबर! दिलि खे कीन वणनि था, पूरीअ मेंघ मलारु.

३) साजन तो बिनु सिपरी, बिरिह आया सिरबारु.

४) हमल हरिदमु थो घुरे, तुंहिंजो दोस्तु दीदारु.

## (4)

जुल्फ़ ड्रिंगा[2] एबरूअ ड्रिंगा, गुफ़्तार ड्रिंगी, रफ़्तार ड्रिंगी,
जंहिं जाइ हूंदा इहे चारि ड्रिंगा, लाचारि हूंदी हरि कारि ड्रिंगी

१) कीअं अचे तंहिं जाइ ज़मियत,[3] शहरु सज़ो पर शोरु शररु,
जिति यारु ड्रिंगो, इग़्यार[4] ड्रिंगो, दहिदारु ड्रिंगो, बाज़ार ड्रिंगी.

२) केरु कंहिंजो फ़रियादु सुणाए, ऐं केरु कंहिंजो को दादु करे,
जिति सवारु ड्रिंगो, सालारु[5] ड्रिंगो, दस्तारु[6] ड्रिंगो, तलिवार ड्रिंगी.

३) कीअं अची कम रासि तंहिं जाइ, समझु सख़नि करि होशु हमल!

1

जिति कोठारु ड्रिंगो, कमिदार ड्रिंगो. मुख़ित्यारु ड्रिंगो, सरकारि ड्रिंगी.

## (5)

सानूं शौक़ मचाया शोरि, शोरि वे लोको, सानूं शौक़ मचाया शोर!

१) रांझे जिहा अवर न क़ोई, हीअ महिबूबां दा मोर, वे लोको!

2

२) चशमां चड़िहा आ अड़ियां, लड़िदियां ने ज़ारी ज़ोरु ज़ोरु, वे लोको!

3

३) रांझनि तख़्त हज़ारे दा साईं, टरिदा चाकां वाली टोरि, वे लोको!

4

४) लोकां लेखे चाकि मंझीं दा, हीअ दिलयां दा चोरु, चोरु, वे लोको!

5

५) नाल हमल दी भाल जो, कीतस था ग़रीबां दा ग़ोरु, ग़ोरु, वे लोको!

६) केही कही काजा लिंव तूं लाइ, वोइ वोइ वोइ वोइ थीए वात वाई!

## (6)

6

१) ओड़ा पाड़ा लोक बेगानी, रातियां ड्रींहं ड्रेवनि ताइने,
गुल ग़ैब तेड्रे चम मैभनि सिर ते पाई - वोइ वोइ ...

9

२) रिमि झिमि रातें नींद न आवे, तारे तकि तकि ना राति विहावे,
काई का न सुझे कारि घर दी काई - वोइ वोइ ...

३) जंहिं ड्रींहं तेकों ड्रिठमु दोस्त प्यारा, तंहिं ड्रींहं मारिया नींहं नक़ारा,

7

सुणि रहिया सभिको माऊ पोयो भेण भाई - वोइ वोइ ...

8

४) हालु हमल दा मैलूम तींनो, तो ब्रिन्न आखि ब्रिया आखां कंहिं नूं?

9

ड्रुखां सौलां मेड्रा कोई नहीं हालु भाई - वोइ वोइ ...

### (५० हुस्न बख़्श)

12

घड़ीअ मंझि इश्क़ जे दरियाह, हलणु हिन पारि मुश्किल आहि,

१) लाग़ापा लोक जा लाहे, छिनी सभु यार याराना,

नंगऊं निकिरी थियणु नांगो, निसंगु निरिवारु मुश्किलु आहि.

1 2

२) नाहे को ब॒ांडु, ना सेणी, नका कश्ती मलाहन जी,
बिना तौंकल संधी तुरहे, तरणु सो तारु मुश्किल आहि.

३) ड्रिसी से छोह छोलियुनि जा, पवण काहे इनही कुन में,
बहर मंझि मौज मस्तीअ जी, सटण सिरु यार मुश्किल आहि.

४) हुस्न बख़्श होश जूं ग़ाल्हियूं, फिटा करि फंद फ़िक्रनि जा,
सफ़ा सौदे, बिना सिर जे, ड्रिसणु इस्रारु मुश्किल आहि.

## (५१ हयात)

हुस्न बस जिनि खे पसायो तो सज॒ण सुहिणा सनम,
नाज़ सां तिनि खे निमायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

१) जे हुआ दानाअ दुनिया में अकाबर अक़ुल जा,
वहिमु हरि तिनि जो विञायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

२) शानु शौकत, ताबु ताक़त, सभु छड्रे पेनार थिया,
शोरु शाहन में मचायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

३) होशु अक़ुल व फ़हम फ़हर व सुरति सारी सा गई ,
हरि घड़ीअ हरि हरि सतायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

४) मेठि मुहबत क़ुर्ब क़ुर्बत सां करे सोघो सज॒ण,
जां जीउ तन जो जलायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

५) दिलि जा दिलिबर दोस्त अनवर ज़ुल्फ़ कीअं ज़ंजीर सी,
क़ुर्ब सां क़ाबू करायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

६) जानि जेरो क़ुर्ब घेरो चौतरफ़ु आयो फिरी,
हुसन हलु हर जा हलायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

७) चश्म चिमकनि घोरूं कनि से नाज़ सां मोहियो विझनि,
टहक क़हिक़हि मनु ड्रकायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

८) सरक़रोई हाणि हासिलु थी हयात आहे सची,
ख़ून जो उन जो वहायो तो सज॒ण सुहिणा सनम.

## (५२ हाफ़ज़)

पुन्हल पसण खां आहे ड्रूर, आइत सुहिणल रे न सरे!

१) साजन सरितियूं साणु टियाऊं, ड्रेर संदमु पर क़हरु कयाऊं,
पयमु पुनहूं जा पलि पलि पूर, ग़णितियुनि में जीऊ मुंहिंजे गरे.

२) बाहि भंभोर खे ड्रींदसि भेनरु, केच ड्रे काहे वेंदसि भेनरु,
वरंदसि वर रे कीन मां मूरि, थींदसि पब्र[1] खां पलु न परे.

३) रोज़ रोइण में हालु विञायुमि, इश्क़ सभेई आरामु फिटायुमि,
नींहुं अंदरि कया नासूर, बाह बिरिह जी दिलि में ब्रुरे.

४) रड़िहंदसि, रोईंदसि, हलंदसि आऊ, पंधु पुन्हल जो पुछंदसि आऊ,
हाणे[2] हलिणो आहे .जरुर, ड्रींहुं तपे या राति ठ़रे.

५) होत हयात हाफ़िज़ु तिनि जो, क़ुर्ब थियो कामिल यार सां तन जो,
वञु न विछोड़े में वहलोर, केची ईंदा क़ुर्बु करे.

## (५३ हामद अली)

मां कंहिंखे हालु ब्रुधायां? कोन्हे को महरमु[3] मन जो.

१) पिरीं आऊ न पुज्रिणी, क़ासिदु वञे न कोई,
पैग़ामु पेशु पिरीं, मां कंहिंजे हथां हलायां! कोन्हे...

२) दरबानु तुंहिंजे दर ते, सुलुतानु थियां सिकंदरु,
आऊ बि उनहनि जे अग्रियां चाकरु थी चवां. कोन्हे...

३) सिरु मालु साहु सदिक़ो, घरु तुड़ मथांसि घोरियां,
जे यारु मिलुयिमु जानी, लहिज़े अंदरु लुटायां. कोन्हे...

४) मेशाक़[4] खां अग्रे, हीअ असलु[5] आशिनाई,
हामेदु चवे नींहं जो नालो तोरीअ कंहिं सां निभायां? कोन्हे...

## (५४ हबीब)

हीऊ गदागरु सग दरि तुंहिंजी बीख पिनण लै आयो, दानु ड्रियारियो.

१) वरिहियनि खां आहियां विछिड़ियलु जानी, पातमु इश्क़ अवहांजे जे ग़ानी,
जोशन जीअरो जलायो, इश्क़ अड़ायो.

२) असुल खूं आहियां गोलर तुंहिंजी, रोशनु करियो रोशिनी पंहिंजी,
जेड्ड़ो जीऊ जाग़ायो, राह़ बतायो.

३) ड्रोह गुनाहनि जी ड्रियो माफ़ी, करियो साफ़ु हीऊ बुतु ख़ाकी,
मुर्शिद ना तरिसायो, मुहिबु मिलायो.

४) जलिवो जमाली ड्रियारियो पंहिंजो, होत हबीब खे करियो पंहिंजो,
हरिदम चाऊंठि चुमायो, कीन सिकायो.

## (ख़)

## (५५ ख़ानण)

वञनि था वैराग़ी वैराग़ी वतन ते,
कंहिं न कंहिं न झलिया कंहिं न पलिया हितूं वयमि हाणे.

१) हितूं विया अथमि हाणे हली, तिनि जे ग़ोलियां कहिड़ी ग़ले?
बिरनि थिरनि चुमां चली, तिनि सां रुह रिहाणी.

२) हितूं वया अथमि कहिड़ीअ जूइ, इहो संदनि हड्डु त होइ,
इहो संदनि रुख़ु रूअ, हितूं विया अथमि हाणे.

३) ख़ानण मिसल आहे ख़्वाबु, कुसी उति थी कबाबु,
आड्रो हलुंदइ कोन जवाबु, पिरीं पुछंदुइ पाणही.

(2)

जिते जाइ न ज़ोर ज़बरिदी वञे, अड़िया इश्क़ु उताहीं.

१) ख़ाक मिटी दा पुतिला बनाया, ओखे पेर क़बर दी. वञी अड़िया.

1

२) क़ाज़ी करड़ा मिलनि मरंदे, नाहे मरंदे न ड्ररदी. वञी अड़िया.

३) वेखण ब्राझूं ब्राझ पिरीं, साइत मूरि न सरिदी. वञी अड़िया.

४) ख़ानण आखे कीनूं सुणियां, ग़ाल्हि सची दिलिबर दी. वञी अड़िया.

## (3)

कंहिं खे सूर त कंहिं खे पूर - कंहिंखे घोड़ा इश्क़ जा
मुंहिंजो यारु त आहे हीअं त कंहिं महिल कीअं, त कंहिं महिल कीअं.

१) घड़ीअ घड़ीअ मां हसंदो ड्रिसांइ, रीअ बहाने रुसंदो ड्रिसाइ,
कातीअ हेठां कुसंदो ड्रिसांइ, रंजि न भाइंजि हीअं त कंहिं ....

२) ज़ुल्फ़नि जा ज़ंजीर विधइ, नींहुं निसंग जा तीर हंयइ,
शहर घुमीं साईं सैरु कयुइ, मुहबत वसनि मींहं त कंहिं महिल ..

३) ख़ानण खोलि नक़ाबु, ज़ाति सुफ़ातीअ, वारो किताबु,
दिलिबर अग़ियां थीउ कबाबु, मुहिबु त मिलंदुइ हीअं त कंहिं महिल.

## (५६ ख़ाकी)

मिठा महिबूब मस्तानी इझे आया इझे आया,
अजबु गुलिड़ा गुलस्तानी इझे आया इझे आया.

१) सदा ब्रहिकनि से ब्रहिकारी करे पोशाक ज़रिदारी,
1
करियां तिनि लाइ बेदारी इझे आया इझे आया.

२) अङण ओताक़ अज़ु ईंदा, मिठा मुश्ताक़ घरि थींदा,
निमाणियुनि नाल से नींदा इझे आया इझे आया.

३) करे कह कह अथनि केची सदा टह टह पंहूं पेची,
अचनि ब्रह ब्रह से ब्रार ब्रचे इझे आया इझे आया.

४) लसा लहिरा तिखा तोड़ा मया मोड़ा लखें लोड़ा,
रुअनि नां रंद ते रोड़ा इझे आया इझे आया.

५) मतारनि जूं क़तारूं से, पिरियुनि जूं कनि पचारूं से,
चुमां चांगनि मुहारूं से इझे आया इझे आया.

६) ड्रियां लीड़ाँ लखें लोयूं जतनि जूं अचनि बोयूं,
छड्डींदा कीन से जोयूं इझे आया इझे आया.

७) इझे आया जबल झाग़े मिठा ख़ाकी सज़े साग़ी,
हुवा ब्रांभण असुलु भाग़ी इझे आया इझे आया.

## (५७ ख़ैर मुहमद)

साहिड़ रीअ मुंहिंजी कान सरे, पेर पिरिति त रे केरु भरे?

१) सुरिक मेहर जी कई मस्तानी, दिलिड़ी दिलिबर कई दीवानी,
वस खां वई सा कीअं वरे, बेवस कई आहि ज़ोक़ ज़रे.

२) लग॒े उतर पवे सीयारो, ओछण इश्क़ु रे भाऐं बारो,
लड़ लहरू जाते कुन करे, घोर कयो इहे घेड़ घिड़े.

३) राति ऊंदाही मथां मींहं वसनि था, घेर घमिर जिते देव नसनि था,
क़दम दम दरियाह कूं धरे, सुहिणीअ खां तिख केरु तरे?

४) ख़ैर मुहमद ख़ुशि ख़्यालु मिलण जो, मइ मते महारण घिड़ण जो,
साह सरे जो छो सांग धरे, मर्द मेहर सां प्रीति परे.

## (2)

जीअ में जोगि॒युनि जा दूंहड़ा दुखनि था, दूंहड़ा दुखनि था मचड़ा मचनि था.

१) अखिड़ियूं अड़ायमि दिलि जे ठारण लाइ, सुरिमो सज॒ण पातो मुईअ जे मारण लाइ,
मुरिकीं थो मिठल, खिलीं थो खारण लाइ, कूड़ा करनि था पिड़ में, सचा पचनि था.

२) अखिड़ियूं वेचारियूं मूंह में मोचारियूं, छो कयुनि छिंभण लाइ बेवसि वेचारियूं,
हिकिड़ियूं अग॒ेई सुहिणियूं, ब॒ियूं सुरिमे सींगारियूं, एड॒ो ताब तारनि, ड॒ोरहूं ड॒ंगनि था.

३) फटियल फ़िराकियुनि जी दिलिड़ी करे दांहूं, चवे ख़ैर मुहमद सुणजाइं सदाऊं,
ईंदा अङण मुईअ जे, सुणी मुंहिंजूं आहूं, करे नींहुं निर्वारि, नांगा नचनि था.

## (3)

सुणी पूरब जा पैग़ाम, सामी सूरज दुखाइनि था
सामी सुरिख़ु दुखाइनि था, इहे आधीअ वेल उठाइनि था.

१) कमर कलांबा किस्ता कड़ियूं, जोगि॒युनि पंहिंजे जानि सां जड़ियूं,
तिनि साझुरि कया सिर जामु, कंहिं देस दूरि चिताइनि था.

२) संङियूं साज़ सवेल खंयाऊं, तंबुयुनि खे थे तेलु मखियाऊं,
ब॒ुधो आदेसनि अहिराम, नांगा नींहुं निभाइनि था.

३) आहे बैराग॒ियुनि बैठक जाते, सुणु सन्यासिनि सुहिबत ताते,
कनि कीन रड़ियूं क़तिलामु, वेही विरह वसाइनि था.

४) ख़ुशु ख़ैर मुहमद गुरु गुफ़्तारू, असुली चउ आघोरियुनि वारियूं,
आहे गारोड़ियुनि हिकु गाम, जंहिं दमि विख वधाइनि था.

## (4)

सभ कंहिं वेले मारू पंहिंजा सारियां, मूंखे तूं मलीर उमाणि.

१) अची त पियो आहे पूरु पुन्हवारनि, काल्ह मारूनि जे कारणि,
कमिड़ा छड्रियो वेठे कांग उड़ायां.

२) सावण जो कनि सैरु पटनि ते, जोड़नि भिटुनि ते भाण,
इहे पोइ वेड़हीचा विसूं न विसारियां.

३) ख़ैर मुहमद ख़ुशि वतनु वज़ुण जे अल्लह ओठी आणि,
रोज़ूं रोज़ि जिनि लाइ झझो जलु हारियां

## (5)

आतिशिबाज़ी इश्क़ उथारी, पुछो पतंगनि खां हीअ सुधि सारी.

१) अवलि अथेई आड़ाहु ख़लीली[1], पोइ आतिश में कयाईं बाग़ बहारी.

२) ख़ाम छा लहंदा ख़बर ख़ूरे जी, ड्रीलु ड्रसियूं कनि था जानि प्यारी.

३) थियनि शहीद शमउ ते आशिक़, असुली वेचारनि आहि सिरु अख़ितियारी.

४) ख़ैर मुहमद न थिए महिल मुड़ण जी, मतां मुहिब ड्रियनि पोइ मयारी.

## (6)

मुंहिंजे अचण जी मक़ाल, मारुनि में काल्ह कयाऊं,
सरितियुनि हुई संभाल, जेकस हालु वंडियाऊं!

१) मेरा मंहं मारुनि अड्रिया, पेहियूं पखा ऐं पाल - माल जूं जायूं....

२) वेढ़ीचा पंहिंजे वेड़ह में, ख़ुशि घुमनि ख़ुशि ख़्याल
- लोलियूं लाल रतायूं ....

३) थियसि वसि वेड़िहिचनि जे, ड्रिसी हीणीअ जो हालु,
- कंदा भाल भलायूं ....

४) ख़ैर मुहमद ख़ुशि वतन वज़ुण जूं, लाथऊं जीअ तां जंजाल,
- वरियूं वसाम वाधायूं ....

## (५८ ख़लील)

१) मतिलब जा सभु संगिती साथी, केरु कंहिंजो मीतु न आहे,
हिनि दुनिया में प्रीति न ग़ोल्हियो, हिन दुनिया में प्रीति न आहे.

२) मकरु ऐं रिया आहे दुनिया में, शैताननि जी मस्ती आहे,
ज़ोरदारनि जी ब्रेघी आहे, नादारनि जी पस्ती आहे.

३) हिरिस ऐं हवा में ख़ुदिग़र्ज़ीअ में, दौलत जी मतिवाली दुनिया,
ब्रोहे में विझी दुनिया[1] खे, महिर[2] ऐं वफा खां ख़ाली दुनिया.

४) ज़रदारनि जे ऐश कदनि में, सफ़ाकी ड्रिसु बदिकारी ड्रिसु,
नादारनि जे ग़मख़ाननि में, मज़िलूमी ड्रिसु बेज़ारी ड्रिसु.

५) दीनु वियो ईमानु न आहे, चोरनि जी सरदारि हीअ दुनिया,
हिन दुनिया खां पाण बचाइजि, आहे वड्डी मकारि हीअ दुनिया.

## (द)

## (५९ दल्पत)

जेड्डियूं जानिब आया, जिनि जे निहोड़यसि नींहुं.

१) जानिब ज़ोक़ मूं थियड़ा ज़ाहिरि, अखियुनि ड्रिठरुमि अंदरि ब्राहिरि,
छाखे साहु सुकायां, मूं वटि रातियां ड्रींहां, जेड्डियूं जानिब आया ..

२) इश्क़ आगमु जीअ जढ़ लाया, मन जा महरमु मेंघ मलाया,
वेही विरिह वसायां, मुहबत संदा मींहं, जेड्डियूं जानिब आया ...

३) जिनि जे कारणि हुयमि हैरानी, उहे आयमि जीअ जा जानी,
छातीअ मंझि छुपायां, ड्रेह ड्रेखारियां कीअं, जेड्डियूं जानिब आया ...

४) रमिज़ ज़ाती सही सुञाती, कीड़े अंदरि इश्क़ असिबाती,
वेठे रांवल राइयां, जोग़ीअ अंदरि जीअ, जेड्डियूं जानिब आया ...

५) दलिपत हीअ दिलि आहे दीवानी, दस्तूं दोस्तनि वञी विकाणी,
वकी कीअं वराइयां, होतनि खां हाणे हीअ, जेड्डियूं जानिब आया ...

## (2)

हरि शइ दे विचि तूंहीं वसिया, अपना आप छुपाइय क्यों?

१) अंदरि ब्राहिरि तूंहीं वसिया, भौंरा लोक भुलाइय क्यों?
हरि शइ दे ...

२) लूंअ लूंअ दे विचि रिमि झिमि रहिया, उल्टा बिरिह बछाइय क्यों?
हरि शइ दे ...

३) पाप पुञ तुम आप करींदा, दोज़ख़ बहिशत बणाइय क्यों?
हरि शइ दे ...

४) दलिपत दम नहीं जुदा तोखां, वसल विछोड़ा आखइय क्यों?
हरि शइ दे ...

## (3)

कंहिंखे सलींदसि आह अंदर जी, नींहं नहोड़े मूंखे निसंग नियो.

१) इश्क़ अचानक राह वेंदीअ जो, सांग न कयड़ो ड्डुखनि ड्डुधीअ जो,
जीउ जानिब लाइ जोग्गो थियो.

२) काण केचनि जे ड्डेह ड्डोरींदसि, सूर साथी करे विंदुर वोरींदसि,
हू जो, हणी हाज़ो हिंयो वठी वियो.

३) झले पले जेड्डियूं, कंहिंजी न रहंदसि, ताना महिणा सभु सिर ते सहंदसि,
मूंखे जूअ जानिब जो, को ड्डसु ड्डियो.

४) इश्कु अणांगो जे पिणि ज़ातुमु, पेचु पिरत जो हूंदि न पातुमि,
हूंदि पूर पिरीं जे न हज़णु पियो.

५) बाहि बिरह जी ब्बारे ब्बारोचल, अची अंदरि में लाई ड्डाढी जल,
राति ड्डींहं तंहिं में पचणु पियो.

६) विरिह वेड़ीचल कयसु वैराग्गिनि, अखिड़ियूं उथारियूं अची ओजाग्गनि,
सुम्हणु विहणु मूंखे वहु थियो.

७) साणु सिपरीं इश्क़ अड़ायुसि, सूरनि कारण छा खे ज़ायुसि,
हाणे सिक सज़ण जी सड़णु थियो.

८) दलिपत दर्सनु कयुसि दीवानी, लाहे हलियसि लज़ लोकाणी,
ब्बाझूं अजीबनि ब्बुझे न ब्बियो.

## (4)

हींअर अङण ईंदा रांवल रुह रचंदा.

१) वेड़ीचल वतन ड्डांहं शाल वाग्गं वारींदा,
वाइदा वसल जा पिरीं शल पंहिंजा पाड़ींदा.

२) पुखे पेही प्रीति सां पिरीं पाब्बोहियूं पुछंदा,
रखी हिंएं हथिड़ा मुंहिंजी सूर सुधि लहंदा.

३) अजीब अची उकीर सां मूंसां ओरू ओरीनि,
कसूं कट फ़िराक़ जा मुंहिंजी क़लबूं कोरीनि.

४) आरियूं आश्क़नि जूं से सब्बाझा सहंदा,
वेही मकितब इश्क़ जे मंझां सबकु सिक सुणंदा.

५) ड्डुख विछोड़ा सूर सभेई इहो लशिकरु लड़ींदा,
जानिब मुंहिंजे जीअ में अची ओताक़ अड़ींदा.

६) ग्गुझियूं ग्गाल्हियूं अंदर संदियूं सही से सलींदा,
दलिपत अची दिलियूं जानियूं महिब मूंखे मिलंदा.

## (5)

१) मन ही मुल्कु मलीरु काड़े वञां सभु वतन थियोसीं
२) मनु ही पुन्हारु, मारु भी मनु ही, मनु ही उमरु हमीरु.
३) मनु ही अरुशु व क़रुशु भी मनु ही, मनु ही रांझनि हीरु.
४) जुदा जानिब रे जाइ न काई जंहिंजो आलमु सभु सरीरु.
५) दलिपत दिलि मूं आइ हलियोसीं सजॖण सां उकीरु,

## (6)

भोरी भञु भंभोर खूं तूं तां वञु न हड़ वणिकार.

१) दूंहां दुखाइ दर्द जा सोज़ सजॖण न विसार,
वेहु न हित थी वेसली होड़ाहूं काहूं न करि कोहियार.
२) पह पचाइ न पारि वञण जा देह न ओरे अरवार,
शक शब ईहे साड़ सभेई फूके बाहि बिरिह जी ब्रार.
३) दाहूं करीं छो दर्द जूं तोखूं दोस्त न आहि दमु धार.
देह जुदा थी जीअ जुसे खूं ड्रिसु दिलबर दरिकिनार.
४) आहे हथीको होतु हीएं में तोतां ग़ोलि न ब्री कंहिं पार,
हिति हुति जानी एक ही किया दलिपत दीदार.

## (7)

मन में वसे थो सजॖण दिलि जानी छाखे ड्रोरीं थी, ड्रूरि दीवानी?

१) वेझो वनियुनि खूं, अखियुनि ओराहूं,
साह खूं सवलो, तंहिंखे पसु म पराहों.
२) जंहिं कारण ड्रेह ड्रूंगरु ड्रोले सोई ब्रोले, अंदिरि चोले.
३) अंदिरि ब्राहिरि एको ओही दलिपत, वेखे विरिला कोई.

## (8)

सहीह सिनीहड़ा के सुणीइ सुपेरियनि.

१) ड्रोथी हलिया ड्रथु खणी उथी साझुरि सवेरा,
इश्क़ असलु इनजा हुआ जलाया जेरा.
२) कशे कमर पंधि पिया जहां कोन लाए झांगीइड़ा,
वासी वेठा न वात ते हो साहो सांगीइड़ा.
३) पेरो खणी पिरींअ जो हलिया परे पांधीइड़ा,
जूड़ जिनिजी आ लख के लहनि लोधीइड़ा.

४) सिक साड़े जिंदड़ो हलिया जानी जोग़ीअड़ा,
गु़झी माम मैं जी के बु़झनि मांझीइड़ा.
५) लंघे पिया लक खूं परे आशिक़ उकीर आ,
यार वञी पिया पब़ जे हू सिक मूं सामीइड़ा.
६) लधो छेड़ु छपर जे करे फ़कल फ़क़ीरा,
दलिपत मिलिया मुहिब खे जे नींहं निबेरिया.

## (६० दासु)

मूं में आहीं सदाईं, ज़ेरो तोखां जुदा न आहियां.

१) जे तूं ब्रह्म त आऊं माया, जे तूं जीऊ त आऊं काया,
जे तूं पुरुषु त आऊं छाया, पुठीअ तुंहिंजे पेई काहियां.
२) जे तूं हकु त मां हादी, आहीं नरु त आऊं मा,
तूं शेहनशाहु आऊं शहिज़ादी, इहे ठाह पेई ठाहियां.
३) आहीं जे अरिश ते तूं सिजु, त आऊं धरितीअ ते तुंहिंजो ब्रिजु,
पर तूं रुपु आहीं निजु, मटे आऊं वेसु पायां लाहियां.
४) तूं गुलशनु आऊं गुलिकारी, तूं राजा आऊं रइयत सारी,
तूं नाज़िरु आऊं नज़र वारी, इहो सड्ु वेठी साहियां.
५) तूं अल्लहु आऊं आदमु ज़ाति, तूं आहीं ड्रींहुं आऊ आहियां राति,
तूं सालिकु मूंखे तुंहिंजी ताति, दास चित में ईंएं चाहियां.

## (2)

से पिरीं पल में पसनि, इश्कु जिनिजो अमामु आह.

१) घाया हिकड़ी घूर में, रहनि सदाईं सूर में,
पलि पलि पिरियुनि जे पूर में, मन में संदनि मतामु आहि.
२) प्रीति जा पेरा भरनि, मुहिब में मांझी मरनि,
वसुल बिना कीन वरनि, अहिड़ो संदनि अंजामु आहि.
३) सबक़ सूरनि जा पढ़िया, क़लब में पंहिंजे कड़िहिया,
चड़नि तबक़नि ~~तां~~ चड़िहिया, जिते मस्तनि जो मक़ामु आहि.
४) दास इश्क़ आगहि कयुनि, विरह विछोड़ो सभु वयुनि,
हिक में गड्डिजी हिकु थियनि, पिरीं मको पैग़ामु आहि.

## (3)

अदा इश्कु न आहे आसानु, मतां सभिको सध करे.

१) सूरिहय वञीं को सामहूं मलहाए मैदान, को मांझी मड़िसु मरे.

२) ड्रुख ड्रोलावा ड्रोझरा सूरनि जो सामानु, वठी विह सां वातु भरे.

३) मारे या खारे छड़े इहो नींहं संदो निशानु, को पुरिझी पेर धरे.

४) पाणु विञाए पंहिंजो सिरु करे क़ुर्बानु, मोहियो सो ज़ोक़ ज़रे.

५) पछी वञीं त पतंग जां खामी वञी सो ख़ानु, बिरह जी बाहि ब्रुरे.

६) अक़ुलु होशु हलियो वञे ना दमु थिए नादानु, ड्रुखनि खां कीन ड्रुरे.

७) दास चड़िहियो वञे दार[1] ते सेज भाइनि सुलतानु, वियो सो कीन वरे.

## (4)

आहे चौतरफ़ु चौधार, जोति जिन्सारु तुंहिंजो.

१) सिज चंड खां आहीं सफरो, बेहदु बेशुमारु, अजबु इस्रारु तुंहिंजो.

२) जिनि मलाइक़ पिरियूं, सदिक़े थियनि सौ बारि, सुहिणो सींगारु तुंहिंजो.

३) गुलनि में गुलु पधिरो, आहीं गुलु गुलिज़ारु, गुलनि में बहारु तहिंजो.

४) दासु चवे तोखां जुदा, दमु न थींदुसु धार, करियां दीदारु तुंहिंजो.

## (5)

१) तूं शाहनि जो शाहु शहर यारु ब्रियो कहिड़ो?
तूं नेणनि जो नूरु महंदारु ब्रियो कहिड़ो?

२) तूं रामु तूं रहीमु क़ादुरु करीमु तूं,
तूं बदियूं बख़शणहारु गुनहगारु ब्रियो कहिड़ो?

३) जाते काथे आहे जलिवो जमाल तुंहिंजो,
तूं ख़ूबनि में ख़ूबु दिलदारु ब्रियो कहिड़ो?

४) ख़ुशिबूइ मां ख़ूरसंदु थिया मुल्क मिड़ेई,
तूं गुलनि जो गुलु अग्रिरो गुलिज़ारु ब्रियो कहिड़ो?

५) तूं हकीमु तूं तबीबु मिठा दर्द जी दवा,
तूं साहिबु आहीं शफ़ा जो आज़ारु ब्रियो कहिड़ो?

६) तूं अवलि आख़िरि आहीं मौजूदि मड़नि वटि,
तूं सभनी जो साहु दास धारु ब्रियो कहिड़ो?

## (6)

सैरु कंदे सुल्तान, वाट विञाए रहीं वेही.

१) आहीं शाहु उहो तूं सागियो, नूर मां नूरु आहीं तूं जागियो,
थीउ ग़ैरत में ग़ल्तानु, डसु पुछीं थो थी परडेही.

२) बे ग़मु पुर जो आहीं बासी, माया मोह में वएं हिति फासी,
शाही विञाए शानु, दर दर जो थिईं पेनू पेही.

३) दुनिया सां रखियो नींहं जो नातो, कुटुंबु क़बोलो पंहिंजो ज़ातो,
थी माया में मस्तानु, माल ख़ज़ाना डिसी दौलत देही.

४) दास कहिड़ो तूं दमु हणीं थो? पंहिंजी पछाड़ी कान गुणीं थो!
हर हर थीं हैरानु, गाल्हि करियां ब़ी तोसां केही.

## (7)

मूंखे साजन मिलया सेई, मुंहिंजे जीअ थे घुरिया जेई.

१) मुंहिंजो थियड़ो सणु सजायो, अज़ु दोस्तु पेही दरि आयो,
मुंहिंजो मक़िसदु पीर पुज़ायो, विया विरह विछोड़ो ब़ेई.

२) कई मुहिब मूंते महरबानी, मूंखे जीअरे मिलियो जानी,
अची होत लाथी हैरानी, वञी ब़नि ब़ियाई पेई.

३) लधो दिलि मां दोस्त जो देरो, थियो पधिरो पिरियुनि जो पेरो,
करि होत हली उत फेरो, मूंसां कर्म कयाऊं केई.

४) दासु आयो पिरीं घरि पेही, करियां गाल्हि तुंहिंजी केही?
पियो गुझो गालिहाए वेही, ढकियो पांदु पनाह जो डेई.

## (8)

लहु गोठु अंदर में गोले, जिते यारु थो ब़ोलियूं ब़ोले.

१) ब़ारी आगि इश्क़ जी, देहीअ में डिसु डोले.

२) मुहबत जो मचु मचाइजि, चिणिंग विझी मंझि चोले.

३) पढ़ी डिसु पैग़ाम पिरियुनि जा, ख़त अंदरि में खोले.

४) दासु दाइम पुर जो, लधो गसु अंदरि मां गोले.

## (9)

जेके आशिक़ आपु सड़ाइनि था, से पहिरीं पाणु पचाइनि था.

१) मुहबत मच में पवनि काहे, फथिकी पाण चाड़िहियाऊं फाहे,
सिसी सज़ण वटि रखनि लाहे, सड़ियो साहु सिझाइनि था.

२) सबक़ु सूरनि जो यादि कयाऊं, रोज़ा नमाज़ूं छोड़े छडियाऊं,
मको मस्जिदि कान डिठाऊं, जीअरे जानि जलाइनि था.

३) सोरिहिय सिकनि था सजु़ण खे सारे, माशूक़ माति क्यो थनि मारे,
गा़हे गु़णितियुनि छड्डियुनि गा़रे, रोई राति वहाइनि था.

४) दास चवे भलियूं बिरह जूं बातियूं, क़तलु कनि था विझियो कातियूं.
लूंअ लूंअ मंझि लतीफ़ी लातियूं, परिखे पाणु पसाइनि था.

## (10)

ए गुल तुंहिंजे गुलज़ार में गुलनि सां गडु ख़ार हुआ.
अजबु इश्क़ जा रंगु डि॒ठमि, कड्हिं मार हुआ कड्हिं प्यार हुआ.

१) कड्हिं बुलिबुलि बाग़ में, कड्हिं क़फ़स में क़ाबू थियनि,
कड्हिं पवनि गु॒ट गि॒चीअ में, कड्हिं हीरनि जा गु॒ल हार हुआ.

२) कड्हिं शौक़ सां शरिबत पीअनि, कड्हिं पड़ में पाणीअ लाइ सिकनि,
कड्हिं शेर शहीदु थियनि, कड्हिं दादिला दिलिदार हुआ,

३) कड्हिं नींहं जा नारा हणनि, कड्हिं मुहिब सां मुरकनि पिया,
कड्हिं रमज़ में रीझी वञनि, कड्हिं सूरीअ ते सरिदार हुआ,

४) कड्हिं शमइ ते सूंहनि पिया, कड्हिं पतंग जीअं पची वञनि,
कड्हिं पेशवा त पिरीं थियनि, कड्हिं करिट मंझि कापार हुआ.

५) कड्हिं वटा विह जा पियनि, कड्हिं सजु़ण खे सन्मुखु डि॒सनि,
कड्हिं थियनि वसल खे वेझिड़ा, कड्हिं दूरि दीवान यार हुआ.

६) कड्हिं दुखी दर्द फ़िराक़ में, कड्हिं मिलनि था माशूक़ खे,
कड्हिं होतनि साणु हज़ूर में, कड्हिं दिलि ते दाग़ हज़ार हुआ.

७) कड्हिं मस्तीअ में मजनूं थियनि, कड्हिं हाल भाई होत सां,
कड्हिं हबीबाणी हंज में, कड्हिं बिरह में बीमारु हुआ.

८) कड्हिं मूज़ी मारियाऊं घणा, कड्हिं सूरमा सकिरात में,
कड्हिं शेर शहादात खे रसिया, कड्हिं दलिदलि जा हसिवार हुआ.

९) कड्हिं दास विछुड़ी था वञनि, कड्हिं पिरियुनि सां परिची पवनि,
कड्हिं होत सां हिकु थी वञनि, कड्हिं धड़ सिसीअ खूं धार हुआ.

## (11)

पुछीं कोकि थी पर घुमी डि॒सजि घरु, जतनु करि जानीअ लैइ मुंझी कीन मरु.

१) खोलु ताकियूं तन जूं दिलि जो दरु लाहे, सजु़ण साहु पसाह में तो साणु आहे,
लाहे कुल्फु कुलिब जो वड्डी लहिजि वरु.

२) हरिदमु हाज़ुरु निगहबां नूरी, अथई अंदरि में करे आस पूरी,
भुलिजी बरनि में गु़णितियूं करे न गु़रु.

३) समझु साजन खे अंदर में जो आहे, छुलीं छो छपर में रखियो तंहिं जो छा आहे?
पसीं नथी पाण थकींअ ड्डोरे थरु.
४) दास धणियुनि जो दिलि में देरो, पसु अंदर में पिरींअ जो पेरो,
सोचे ड्डिसु सरीर वठी वेहिजु दरु.

## (12)

आऊं तूं ब॒ुई हिकिड़ा आहियूं, मुसवरु हिक तसिवीरूं ब॒.
१) तुंहिंजी मुलिक में ख़ासि ख़ुदाई, आऊ दरनि ते करियां गुदाई,
जिस्मु हिकु तक़िदीरूं ब॒.
२) कावड़ि मां मुंहिंजो कंधु कटाईं, आऊ चवां मतां मुंहु मटाईं,
ज़िबान हिक तक़िरीरूं ब॒.
३) तुंहिंजी लिखियल आहे साफ़ु सचाई, मुंहिंजे हक़ में कूड़ कचाई,
दफ़्तिरु हिकु तहरीरूं ब॒.
४) नथो मिठा मूंखे तूं भाईं, आऊं चवां मन लियड़ो पाईं,
हियों हिकु तदबीरूं ब॒.
५) दास खे नथो दिल तां लाहीं, सुपिने में मूंसां ग॒ड़ु आहीं,
ख़ुवाबु हिकु तइबीरूं ब॒.

## (13)

हिति हंभोछी हणु भले, लेखो त ड्डींदें लोइ.
१) मुए पुज॒ाणां माइटनि मां, कमु न ईंदुइ कोइ,
ड्डींदे हिसाबु हलण सां, पधिरो थींदें पोइ.
२) भवु करे भज॒ंदी परे, जेका तुंहिंजी जोइ,
गीहले कडंदइ घर मूं, करे वाका वोइ.
३) जपे वठु जगदीस खे, संगी थींदइ सोइ,
दास दुनिया जे दौर मां, को ग़ाज़ो खण गोइ.

## (14)

तूं त अचु अङण असांजे यार वरी, वियुसि मुहबत में मंठार मरी.
१) ड्डिसी रोशन रुख़ महिताबु मियां, थिया सूरजु चंडु सेमाबु मियां,
थिया माण्हूं मुल्क बेताबु मियां, छा का मटि थींदी तुंहिंजे हूर परी.
२) तुंहिंजे चमन में चांडाण मियां, थी ख़जल खथोरी खाणि मियां,
तुंहिंजे गुलनि में सुरिहाणि मयां, तुंहिंजी नूरी निगाह नाज़ भरी.
३) तुंहिंजो रूपु ड्डिसी रुख़िसार मियां, लज॒ी लाल थिया हीरा हार मियां,
बीठा जोति छड्डे जिन्सार मियां, वेइ रंगि मटाए कीम ख़्वाब ज़री.

४) तूं खिली खणी जाड़े पेरु मियां, से त भूंइ चुमे साॻिया सेर मियां,
तुंहिंजी चर्ख़ फिरे चौफेर मियां, ॾिसी दुश्मन जो पियो ड्रीलु ड्रोरी.
५) दासु हरिदमु हैरानु मियां, तुंहिंजे क़दमनि तां क़ुर्बान मियां,
साहु सदिक़े करियां जानि मियां, घट घुमंदी वतां चटु थियसि चरी.

(15)

१) मूंखे कान खपे ॿी नीशानी तव्हांजी,
फ़क्तु नेण खणी निहारि महिरिबानी तव्हांजी.
२) सिज चंड खां वधीक तिखो ताबु तव्हांजो,
जग में ॿी शिकिल का न ॾिसां सानी तव्हांजी.
३) जेरा जिगर बुकियूं क़ीमो करे कबाबु,
करियां सज़ुण सिक मां महिमानी तव्हांजी.
४) थियां ख़ुदि मां बेख़ुदि पेई दिलि करे दाहूं,
जड़हिं जोभनु पवे यादि या जवानी तव्हांजी.
५) धिके न कंदसि धार कड़हिं दास आऊं तोखे,
असुलु खां अनिजामु हो ज़िबानी तव्हांजी.

(16)

१) कल्ह हो ग़ाढ़ो घोटु मड़िहु मक़ामु अज़ु वियो,
वियुसु वाऊ निकिरी थो ॾिसे कीन पियो.
२) हइ हइ विया हेकिलो छड़े कुटुंब क़बीला,
दाख़िल थियो वञी धूड़ि में क़ूतु कीअनि जो थियो.
३) माइट मिट खटा थिया थो वेझो कोन वञे,
खोटे खड़ु हणी विया थो पाइ कोन लीयो.
४) माड़ियूं मंडल महल छड्रिया रंग भरिया रोशन,
हिन अंधेरे ओड़ाह में थो ॿुरे कोन ड्रियो.
५) दास न वेहिजु वेसरो उथी जागु जतनु करि,
धणीअ बिनां दुख में थो पुछे केरु ॿियो?

(17)

दिलि सां थी दरिवेशु, छो थो वेस मटाईं?
१) अंग भभूति लाईं, कफ़िनी गले में पाईं,
ख़ुदीअ खे नथो खाईं, वड़ा वार थो वटाईं.
२) माल्हा ग़िचीअ में पाए, मथे ते तिलिकु लाए,
तेसी में तन खे ताइ, कूड़ा कन थो कटाईं.
३) साधु थो सड्राईं, पंहिंजो पाण थो पड्राईं,
माल मुफ़्त जा छड्राईं, पाजी पीड़ह थो पटाईं.

४) की समझु हया हाणे, पियो मौज़ मज़ो माणे,
नथो हकु हलालु ज़ाणे, नका हब्रछ थो हटाईं.
५) थिएं जोगु बिना जोगी, करे ठगियूं थिएं ठोगी,
तोखां भलो आहे भोगी निजस नांउ थो घटाईं.
६) सिखु नांगनि जी नीति, छड्डि रोगी इहा रीति,
मारे मन पंहिंजे खे जीति, फिटल पाणु थो फिटाईं.
७) दास न ड्रे दोखो, अथई जीअ संदो जोखो,
न आहे जोगु वठणु सौखो, छो निठरु थो निटाईं.

## (६१ दरियाह ख़ान)

आउ कांगा करि ग़ाल्हि, मूं सां तिनि मारुइड़नि जी.
१) ब्रनि उमुर तुंहिंजूं काड़ियूं बंगला, खुहि दरियूं कठ माल.
२) पट पहरींदसि कीन की उमुर, वर लोई सां लाल.
३) दरियाह ख़ान मारूड़नि रे हितड़े, हइ हइ कहिड़ो हालु.

(2)

उथी जागु जाई, पवे कल काई,
जागुण रे जालींदें, सूरनि में सदाई.
१) मची थीऊ मर्दु तूं, प्यालो दर्द पीऊ तूं,
छड्डे साउ सुमहण जो करि विहण सां वफ़ाई.
२) सिकनि सारियूं रातियूं, जोदऊं पाइनि झातियूं,
हमशेह संतनि खे, आहे ही वड्डाई.
३) जागुणु जोशु जिनि खे, मिलियो रामु तिनिखे,
हमेशह हेकांदी जिनि निंडढ़ी फिटाई.
४) दरियाह ख़ान देरि छड्डि, सिघो पाणु गूंदर गड्डि,
वञई थी वेसरि में, उमिरि हीअ अजाई.

(3)

छड्डि विसार यादि रखु तूं, ज़ाति पंहिंजी दमि बिदमि,
सचु आहीं सुल्तान तूं, कुलु शइ ते आहे तुंहिंजो क़दमु.
१) केरु आहीं कंहिंखे थो गोल्हीं, छो थो पंहिंजो पाण खे रोलीं?
ख़बर लहु ख़ासि ख़्याल जी, हरि हाज आह तो में हज़मु.
२) कुरान में कीअं थे चयो, मूंखां सवाइ नाहे को ब्रियो,
धणी ब्रान्हो कीअं थियो, विधइ मूतूं वारो मातमु.

३) जड्हिं ख़ल्क में ख़ालिकु आयो, शेतान न सजिदो कयो,
उते पाण हो त बि हक़ु हो, अमर खे कयाईं अदमु.

४) नाऊं दरियाह ख़ान कीअं धरियइ, अल्लह मां आदमु थी आएं,
अहिड़ा लक़ब छो थो लाएं, करि ख़ौफ़ु ख़्यालनि जा ख़त्मु.

## (4)

हमेशह यार हुजि मां वटि, वञण जी कान करि वाई.

१) कड्हिं मुंहड़ो ड्रेखारीं थो, माणनि सां यार मारीं थो,
उनहनि ग़ाल्हियुनि सां ग़ारीं थो, ड्रिजाइं का दिलि खे दिलिदारी.

२) कड्हिं आशिक़ु सदा सुहिणो, कड्हिं माशूक़ु मन मुहिणो,
कड्हिं क़ातिलु क़तल कुहिणो, मतां को भोल ब्रियो भाईं.

३) करियां सिरु घोर हे घोरे, पुज़ां तुंहिंजे न हिक थोरे,
करियां तोखे साह अंदर सोरे, थिए हिति होत हिकड़ा ई.

४) दरियाह ख़ान दर्द जूं दारूं, हथें पेरें करियां ज़ारूं,
फ़िराक़नि दिलि कई फारूं, जाकूं लिंव तो ढोलण लाई.

## (5)

घड़ीअ घड़ीअ तऊं वेंदसि घोर, नाते लाहिण तऊं नींहुं निभाइण तऊं.

१) अखिड़ियूं अड़ाए वइं दिलिड़ी फासाए वइं,
झुमिकण जी लातो झोर, चिमनि चाइण तऊं वरी वाझाइण तऊं

२) मनड़ो असांजो मस्तु करे विएं, ओर अचे का मूंसां ओर,
वेझो थी वेहण तऊं खिलणु ग़ाल्हाइणु तऊं

३) इश्क़ जा आड़ह मच त मचाए विएं, नुरींदी भाईं तीएं टोर,
पेरनि पाइण तूं थोरनि लाइण तूं.

४) दोस्त दरियाह ख़ान जी दिलिड़ी खस विएं, मुरिकण सां मांझी मोर,
हुकुम हलाइणु तऊं मारे मज़ाइण तऊं.

## (6)

तुंहिंजे दीद कयो ख़रीद, ड्रिसण सां यार असांखे.

१) तोड़े ज़ाणनि या न ज़ाणनि, तोखे सिक वारा सुञाणनि,
तुंहिंजे इश्क़ कयो शहीदु, ड्रिसण सां यार असांखे.

२) लाहे बिरह कयो बेहालु, मुहबत मस्तु कयो ख़्यालु,
ड्रे का राज़ जी रसीद, ड्रिसण सां यार असांखे.

३) हुजु होत हिति हमेशह, तूं मिलियलु यार मूं सां,
कराइ इश्क़ संदी ईद, ड्रिसण सां यार असांखे.
४) तुंहिंजे सुहिबत में सदाई, मूंखे फ़िक्र कयो फ़नाई,
दरियाह ख़ान दिलि दीद, ड्रिसण सां यार असांखे.

## (7)

से कुठल कीअं माठि कनि, जिनि खे इश्क़ जो आज़ारु आहि,
हिकु रूअनि रातियां ड्रींहां, ब्रियो बे क़रारी बारु आहि.
१) मांदा मिलण लइ था मरनि, ड्राडी तलब तिखी तार आहि,

जिनि लगी ज़ाणनि उहे, ना किन्हीं इख़्तियारु आहि.
२) आशिक़नि खे हर हमेशह, दर्द जो धधिकारु आहि,
विए वसुल दिलिदार जे, मंझि राति ड्रींहं आज़ारु आहि.
३) जे घरि आयो घोरियां, तिनि खे जो लाचारु आहि,
छड्रि ज़ुल्मु ज़ोरावरी, हाणे मिलणु मोचारु आहि.
४) गड्रु हुजणु दिलिबर तोसां, दरियाह ख़ान खे दरिकारु आहि,
जोड़े ड्रियां जायूं अखियुनि में, ही सिरु बि सदिक़े यार आहि.

## (8)

आयो इश्क़ अङ्ण लायूं दर्द धज़ूं, तड्रहिं अकुल चयो हितूं भज़ु त भज़ूं.
१) इश्क़ अचण जा हुल हंगामा, नींहं जूं नउबतूं दुहिल दमामा,
इते आशिक़ अचनि सिरु सटियूं.
२) आशिक़ ब्राण अखियुनि जा लाया, शर्म हयाउ भज़ी अकुल वटि आया,
पोइ चयाईं हाणे केड्रांहु वञूं?
३) सवें साज़ आवाज़ अचनि था, आशिक़ रमज़ इनहीअ में रचनि था,
इते अनहद वाज़ट कन त वज़ियूं.
४) दरियाह ख़ान इश्कु जिनिजे आहे अंदरि, से कीअं मड़ंदा पवंदा पधरु,
से त लाहे वेठा सभु लो कज़ूं.

## (६२ दुखायल)

१) पब्रनि खड़ी पेहे ते बीही, पल पल करियां पुकार,
काँव तड़े तो तरफ़ मंजां, मन को पहुंचे पार, पब्रनि खड़ी...
२) रोंबा निकिता, ओब्रर निकिता, निकितो पे ज़णु साहु,
सावन मां पीला थिया, लाब थिया, थियो गाहु,

तड़हिं बि तूं आएं न मुसाफ़िर, कहिड़ी ड्रियां मयार, पबुनि खड़ी...

३) वाइर में छज़ु वीह वीह भेरा, ज़ुण थे हथ मां थिड़िकयो,
प्यारो पोरिहियो बार लगो पिए, तो रे हड्डु हड्डु टिरिकयो,
तन मेरो थियो धूड़ु वसाए, चेड़ह विञायुमि वार, पबुनि खड़ी...

४) देरा मेरा लगनि, मुसाफ़िर! तो न कयो जे देरो
ओताक़नि में ऊंदह भायां, पियो न जे तुंहिंजो पेरो,
मन मुंहिंजे खे कीन वणनि था तोरीअ अन अंबार, पबुनि खड़ी...

५) उखरीअ में मूंहुं पाइ वेठी, महरी थे खड़िकायां,
आहट पाए छिरिकु भरे, अखि वर वर दर में पायां,
मायूसीअ खां अन कणनि खे ड्रियां थी केड्री मार, पबुनि खड़ी...

६) आस विज़ाइण वारी नाहियां, छो त गुहेली आहियां,
तड़हिं त दमि दमि दगु वाझाए पई थी दिलि परभायां,
नेठि त हिक ड्रींहुं ईंदे दुखायल पाड़ींदें इक़रार, पबुनि खड़ी...

(2)

ओ साईं, साईं महर वसाईं,

१) सारीइ विसु खे पालण वारा, महर मया जा करि वसिकारा,
रिमि झिमि रंग रचाईं - ओ साईं ......

२) चरनि सरनि तुंहिंजी संगति सारी, फूले फले शल हीअ फुलवारी,
गुल फुल बाग़ बणाईं - ओ साईं ......

३) देश जी भगुती, देश जी शेवा, सुर्गु जे बाग़ जा मिठिड़ा मेवा,
ड्रेई भाल भलाईं - ओ साईं ......

४) पाक ख़्याल ऐं दिलि पवित्र ड्रे, हमदर्दी तंहिं सां शामिल ड्रे,
सीरत सरस सदाईं -ओ साईं ......

५) ऊच नीच जो भेदु भुलायूं, पाण खां कंहिंखे घटि न भायूं,
प्रेम जी जोति जगायूं - ओ साईं ......

६) ब्रालक आहियूं नंढिड़ा नंढिड़ा, पेर असांजा कचड़ा कचड़ा,
शाल सएं दगु लाईं - ओ साईं ......

(3)

मोटी खणु न मयार, मुसाफ़िर हलु अगिते, हिमथ मूर न हार, मुसाफ़िर हलु अगिते.

१) आए केड्री मंज़िल झागे! राकियुइ कहिड़े वहम निभागे?

पुठिते कीन निहार, मुसाफ़िर हलु अग़िते.

२) साथु सज़ो थो अग़िते काहे, तोखे आख़िरि थियो छा आहे?
मक़सद कीन विसार, मुसाफ़िर हलु अग़िते.

३) विझु मक़सद ड़े क़दमु करारो, मोटणु ज़ाणु न मसल्हत वारो,
नाहक़ थींदें ख़ुवार, मुसाफ़िर हलु अग़िते.

४) हलंदे हलंदे जे दम ड़ींदें, हिक सरतनि में सरिहो थींदें,
साख कंदइ संसार, मुसाफ़िर हलु अग़िते.

५) रसंदें पर जे माग़ मुसाफ़िर! माणींदें सुखु सरिसु सरासर,
लहंदइ थक हज़ार, मुसाफ़िर हलु अग़िते.

६) मर्दनि आड़ो अटक न काई, झंगल जबल जे नाहि ड़ुखयाई,
गुल थल ज़ाणे ख़ार, मुसाफ़िर हलु अग़िते.

७) कर तूं दुखायल हिमत हादी, मक़सद तुंहिंजो हिकु, आज़ादी,
पंधु करे पुज़ु यारि, मुसाफ़िर हलु अग़िते.

## (4)

पलि पलि पूर पवनि था पन्हवारनि जा,
पंहिंजे थाणीचनि थर वारनि जा. पलि पलि पूर ....

१) काई राति हुजे त वज़ी निबरी, कोई ड़ींहुं हुजे त वज़े गुज़री,
हिति आह अज़ां पर बे ख़बरी,
फेरा रोज़ ग़ुणियां चंड तारनि जा. पलि पलि पूर ....

२) आई मुंद ते मुंद वरी मोटी, मोटिया कीन मगर मंध जा ग़ोठी,
भांयां ज़हरु पीअणु खाइणु रोटी,
वेठी पूर पचायां थी प्यारनि जा. पलि पलि पूर ....

३) अखि सांगियुनि धारां सुके ई नथी,
हीअ महल निदोरी मुके ई नथी,
चुकु भाग़ बुरे जे चुके ई नथी,
सारे सुहिज रोआं थी संघारनि जा. पलि पलि पूर ....

४) हिन मुंद बहार खे बाहि ड्रियां, घारियां सरउ वज्ञीं झंग वारनि सां,
गोला गोंच दुखायल शाल पसां,

पंहिंजे गाह पठनि गुलज़ारनि जा. पलि पलि पूर ....

(5)

तूं राम रंग सां मन रंगि जोगी, छाहे वेसु रङाइण में?

१) गुल मालहाऊं जोग जटाऊं, छाहे तिलक लगाइण में?
तीर्थ भेटे उमिरि गंवायइ, अंग भभूत लगाइण में.

२) जुगत बिनां थिएं नाले जोगी, मन में भोगी तन में रोगी,
कीन पुगइ पर को पुर्षार्थ, मन जी मैल मिटाइण में.

३) मांश देह अमोलकु पाए, गणप में तो छड़ी गंवाए,
राम अमर रसु छड्डे दुखायल, उमिरि वेइ विख खाइण में.

(6)

मिठड़ा! जूठो गुमानु न करि.
जोभन जे खुहिंबे चटके ते, हठु अभिमानु न करि.

१) चारि ड्डिहाड़ा हुसुन जवानी, आख़िरि थींदी हिकु ड्डींहुं फ़ानी,
कूड़नि ड्डेखनि पोयां मूर्ख, मनु मस्तानु न करि.

२) पर्माथ जो जीवनु घारे, छड्डि सवार्थ जी रीति विसारे,
ख़ूदि ग़र्ज़ी ख़ुवाहिश जी गोली, दिलि हैरानि न करि.

३) मानुशु चोलो बंदा पाए, ग़ल्तानीअ में छड्डि न गंवाए,
अमुल्ह दुखायल ही जीवनु धनु, हथ सांज़ियानु न करि.

(7)

शल मारूं मुठीअ सां रंजि न थयनि, पंहिंजे पेट ज़ुणीअ खे ड्डुहागु ड्डियनि.

१) वियो क़ैदि थिए अरिसो गुज़िरी, जो जागियो वारसु कोन विलिहीअ जो वरी,
एड्डी कीअं सगनि सांगियुनि खां सरे, कन लाशकि तन जा भरिया बछिड़नि.
शल मारूं ....

२) चड़िही कोट जे चोट ते थियां विसी, पवे हेबत खां मुंहिंजो हियां फसी,
रोआं रोज़ मलीर जो मुल्कु ड्डिसी, करे याद अबाणा था नेण टिमनि,
शल मारूं ....

३) रोज़ सौ सौ कांग उड्डायां थी, वेठी पीर फ़क़ीर मनायां थी,
रुगो आस ते दिलि परिचायां थी, मन मारूं दुखायल मीर मिलनि,
शल मारूं ....

(8)

करि ख़बर वसण जा वेस करे, छो बादल आएं नेण भरे?

१) मूंखे ग़रंदो ड्डिसी थो ग़च ग़ारीं, यार सूर पंहिंजा ओसारीं?
ड्डींहं राति हंजूं हर हर हारीं,

छा तूं बि वतन खां आहीं परे? करि ख़बर ....

२) वञीं वेझो वेड़हीचनि जे वसिजाएं, पकी पोख पन्हारनि जी पसिजाइं,

डुखियो हालु दुखायल जो डिसिजाइं,

जा मारूं रीड़ थी मुफ़्तु मरे? करि ख़बर ....

## (9)

हिकिड़ी राति रही वञु राणा!

ऐब न डिसु तूं करि न उघाड़ो, सोढल यार सियाणा.

१) तकींदे राति गुज़ारियां थी, पर न प्रीतम आए प्यारा,

ड्रोहु डिठुइ को मज़ाणा, हिकिड़ी राति ....

२) दिलि में दर्द दुखाया दूंहां, सूर दुखायल थींदमि सून्हां,

सोज़ कयां लिङ साणा! हिकिड़ी राति ....

## (10)

जड़हिं पवनि यादि अबाणा, मुंहिंजा रोअनि था नेण निमाणा.

१) ज़ोर उमर तुंहिंजी आंदी आहियां, मारुनि धारां मांदी आहियां?

महल मां छा ज़ाणा? मुंहिंजा .....

२) क़्यासि मयां! को मईअ त आणिजि, लाशु मलीर डे मुंहिंजो उमाणिजि,

मुंहिंजे मरण पुज़ाणा - मुंहिंजा ......

३) जिनि सां मुंहिंजे तन जूं तारूं, नेठि दुखायल नींदमि मारूं,

डेह वठी डाड़ाणा - मुंहिंजा ....

## (11)

थका रोई नेण निमाणा, अचु सोढल यार सियाणा.

१) हालु अंदर जो कंहिसां ओरियां,

डींहं डुखनि जा वेठी डोरियां, पूरा पिया न पुछाणा.

२) बिरह बदन में बाहि लगाई, विरह विछोड़े निंड विञाई,

सोज़ कया लिङ साणा, अचु सोढल ....

३) रुसणु छडे अचु परिचऊं राणा, केरु दुखायल सहंदुइ माणा,

मुंहिंजे मरण पुज़ाणा? अचु सोढल ...

## (12)

को झांगीअड़नि जो डसु डींदो,

डसु डींदो - अला डसु डींदो - को डसु डींदो

१) कांगल तुंहिंजे कारि उझ्रमण, अजु त निमाणीअ जो नियापो खणु,
साहिबु तोखे जसु ड्रींदो - को झांगीअड़नि ....
२) सांगीअड़नि खे चइजि ज़िबानी, नाह लिखणु हित ख़तु आसानी,
केरु क़लमु ऐं मसु ड्रींदो? को झांगीअड़नि ....
३) वञु! मोटण में देरि न लाइजि, हालु दुखायल तुरत सुणाइजि,
वाउ गील्हे तोखे गसु ड्रींदो - को झांगीअड़नि ....

## (13)

तूं दिलि जो मन्दरु खोले, ड्रिसु केरु अंदरि थो ब्रोले.
१) पिञिरे पैद में घारे, तूं वेठें पाणु विसारे,
कहिड़े भरम विधुइ मनु भोले, ड्रिसु केरु ......
२) ख़ुदि ज़ाति भुलाए ज़ाती, विझी वेठें फ़रकु सिफ़ाती,
ब्रियो केरु गुझांदड़ ग़ोले, ड्रिसु केरु ......
३) सज्री दुनिया गोरखु धंधो, थीउ कीन दुखायल अंधो,
इहो राज़ु विझंदुइ रोले, ड्रिसु केरु ......

## (14)

सुहिणी - मुंहिंजो पारि वसे थो मेहरु
मूंखे कान झले - हरिका पाण पले
मां त वेंदसि पारि ड़ी जेड्रियूं, मुंहिंजो पारि ....
मेहरु - मुंहिंजी सुहिणी!
मुंहिंजी सुहिणी जग खां सुहिणी
अचु लोकूं लिकी - वञु राति टिकी
मूंसां करि न मिठी हड़ हड्रियूं, मुंहिंजो पारि ....
सुहिणी - मूंखे मेहर!
मूंखे पारि सड़ थो मीहरु
छड्रियो छड्रियो त वञां - कीअं भेरो भञां?
थियो कीन निठुरु अदियूं एड्रियूं, मुंहिंजो पारि ....
वेई सुहिणी! वेई सुहिणी दुखायल काहे!

वेई सुहिणी सीर में काहे
कचे घड़े जे क़ज़ा - कया जानी जुदा
हिन बिरिह भलायूं केड्डयूं, मुंहिंजो पारि ....

## (15)

अञां त मंज़िल दूरि ब॒धांथी! अञां त मंज़िल दूरि.

१) हिकु अण तारू ब॒ी तर हल्की, हथिड़ा हणी वेठी धिकियां धिकियां,
वंझु वसीलो नाहे मुईअ जो, पग॒ह बिना कीअं छिकियां छिकियां?
जड्डो जीउ थो वञे वहिलूर, ब॒धांथी! अञां त मंज़िल दूरि.

ड्डोहीड़ो : सुहिणा कंग दरियाह जा, अछिड़ो संदनि वेसु,
पब॒नि खड़ी मां निहारियां, सांवल संदो देसु.

२) नेण निहारिनि हंजूं हारिनि, सारे साजन सिकां सिकां,
वाउ खणी जे निएं थो भर ड्डे, अग॒ियां ड्डे थो किनारो भिकां भिकां,
कयो वीर छड्डे मजिबूरु, ब॒धांथी! अञां त मंज़िल दूरि.

ड्डोहीड़ो : कारो उभु ककरनि कयो, लाथो वायूं कंदो वाऊ,
हेठि मथे पाणी वसे, करे दांहूं उथियो दरियाहु.

३) तो बिनु मुईअ जो केरु दुखायल? कंहिंजी पनारे लग॒ां लग॒ां?
केई जन्म मुंहिंजा लड़हंदे गुज़िरिया, रुग॒ो आस रखी थी तग॒ां तग॒ां,
कड्डी पारि रसे मन पुरु, ब॒धांथी! अञां त मंज़िल दूरि.

## (16)

जड्डहिं यादि पवनि था पन्हवार उमर, दुखी दिलि जा उथनि था बुख़ार उमर.

१) कीअं घोट बिना हिति घारींदसि, मियां वेड़हीचनि खे विसारींदसि?
तंहिं खां पाणु मुठी आऊं मारींदसि, मतां मारू ड्डियनि का मयार उमर?

२) नकी खाज॒ु सलोणा खाईंदसि, तुंहिंजो रेशम राउ हंडाईंदसि,
मटि मूर न पेरुनि भाईंदसि, तुंहिंजा हीरा लाल हज़ार उमर!

३) पलि पलि था दुखायल पूर पवनि, शाल मारू मीर मलीर मिलनि,
करे याद संघार था नेण टिमनि, मिठी आहि मिठनि जी संभार उमर!

## (17)

कहिड़ो, तुंहिंजो देसु पखीअड़ा!
बंदा अखिनि मां पेही आएं, पहरे सुहिणो वेसु, पखीअड़ा?

१) दिलि जो गुंचो फूले फले, जीवन झूलो झूले झोले,
मन जा साज़ वज॒नि निति न्यारा, सुर निकिरनि अती प्यारा प्यारा!

२) प्यार ख़ुशीअ जूं बूंदूं बरसनि, गीत बहार जा ग॒ाए जोभनु,
गोरी क़ुदिरत नाचु रंग सां, निअड़ी करे आदेसु.

## (18)

मुंहिंजी ॿेड़ी तारि पातणी, ॿेड़ी आणिजि सुतड़ि किनारि, पातणी.

१) ॿेड़ीअ जा सभु संज पुराणा, वेतरि वीर कया लिङ साणा,
वेझो साहिल वारि! पातणी .....

२) वंझ हलाए आऊं न ज़ाणां, वाउ सणाओ कीन सुज़ाणा,
कंहिं थोरे करि पारि! पातणी .....

३) अर्ज़ दुखायल ज़ाणि अघाणा, आया इझे मुंहिंजा मीर मुहाणा!
हासुलु हिमथ न हारि! पातणी .....

## (19)

ऐब मूं मंझि अणग़ुणिया, कहिड़ा ग़ुणे कहिड़ा ग़ुणिया?
पंहिंजी ऐमालनि करे, अज़ु हाल बदि मुंहिंजा बणिया.

१) राह हक़ वारी छडे, गुमराह थी दरि दरि रुलियसि,
तुंहिंजा सडु मुंहिंजे कननि खे, पर न हरिगिज़ थे वणिया.

२) शाह बाज़ीगर छडे, बाज़ीअ पुठियां हैरानु थियुसि,
झोल कच कोड़ियूं, खयमि सच जा छडे मोती मणिया.

३) महरबानी जंहिं कड़हिं, तुंहिंजूं सुञातियूं कीनकी ,
तंहिं दुखायल ते सदा, एहसान तुंहिंजा अणग़ुणिया.

## (20)

वठी सूरत आयमि सूर जी.
सूर जी सूरत दर्द जी मूरत, वठी आयमि सूरत सूर जी.

१) साञह हूंदे कीन सुञातुमि, जोति निर्मल नूर जी,
ग़ाल्हि ग़ुणेती ॿुधंदियूं जेड़ियूं! वठी सूरत ....

२) हजर जी कुहिनी ज़ख़मु ड़ुखोयसि, दांहं कयम नासूर जी,
मरहम बदिले ख़ूब कयाईं, ॿर ॿर कुंडुनि ॿूर जी.
वठी सूरत ....

३) ताब इनहीअ खां ॿाफे वेठसि, ॿाफ इनहीअ ॿाॿूर जी,
सचु त दुखायल सुधि न हुयमि का, दिलिबर जे दस्तूर जी.
वठी सूरत ....

## (21)

कड़हिं मिलंदें श्याम मुरारी, मुंहिंजा गोवर्धन गिरधारी.

१) सिक तुंहिंजीअ में राधा रोई रोई राति गुज़ारी,
प्रीति जो हिकु हिकु पेरु भरे थी व्याकुल थिए वेचारी
कडहिं मिलंदे ...

२) अजु त उथनि जमुना में लहरूं, लामनि लोड विसारी,
गोकुल वारा रतु था रोअनि, गायुनि खे न क़रारी,
कडहिं मिलंदे ...

३) मखण वञनि मोटाए गोपियूं, कीन डिसी गिरधारी,
तोरीअ केरु दुखायल डींदो, तिनि खे अजु दिलिदारी.
कडहिं मिलंदे ...

## (22)

जेकी हुजेई करे छडि, हिक होत जे हवाले,
तुंहिंजूं मिड़ेई ख़ुशियूं ग़म, भलि पाण पियो संभाले.

१) जंहिं लाइ ख़ासि पंहिंजो, धारियो न दुनिया में,
सभिनी खे हिक सरीको, जेको प्यार सां थो पाले. जेकी हुजेई ....

२) धरती न बारु लगंदइ, नकी आस्मानु ग़ौरो,
हिनजो बणी हमेशह, जग में डिसीं जे जाले. जेकी हुजेई ....

३) तुंहिंजीअ कसीअ पकीअ जो, हरिको हिसाबु जंहिं वटि,
बेज़ारु थीउ न तंहिंखां, तोड़े खणी धमाली. जेकी हुजेई ....

४) वहम गुमान दिलि जा, जंहिं दमि वया दुखायल,
हीणो कयो न हरिगिज़, कंहिं कष्ट या कशाले. जेकी हुजेई ...

## (23)

अखिड़ियुनि में छलकी छलकी, ढुलकी पवे थो पाणी.
चुपु चापि लुड़क लाड़े, बसि रातिड़ी विहाणी. अखिड़ियुनि ...

१) मुहबत मिठी मूं भांई, कौड़ी कसारी थी पई,
हिन हाल में न रूआं, ब्रियो छा करियां निमाणी. अखिड़ियुनि में ...

२) वेहां विहणु थो खाए, बीहां त पेर पजिरनि,
हिन आंधि मांधि मुईअ जे, सुख जी कई पुजाणी. अखिड़ियुनि ..

३) सुड़का भरे सड़ियांथी, सड़ जो न सड़ु बुधां थी,
सिक पई सुम्ही अलाजी, थी प्रीति वेई पुराणी. अखिड़ियुनि में ...

४) जेसीं मां जीअरी अहियां, तेसीं न आस लाहियां,

घर में घिड़ी अची मन, साजन कुड़हिं सुज़ाणी. अखिड़ियुनि में ...
५) आहियां असुलु दुखायल सुख कीन की सुञाणा,
ज़मंदे ज़टी हुयसि, पर, सूरनि कयसि सुज़ाणी. अखिड़ियुनि में ...

## (24)

दिलि झोरी नेणनि जी झटके - ओ झटके,
शल नींहु न कंहिंसां अटिके - ओ अटिके.
१) इश्क़ अकाबर अक़ुलु विञायो, बिरह खणी बदिनामु बणायो,
सुरति खसी, हिक सटिके, ओ सटिके. शल नींहु ....
२) बिरह निसोरी तिरकणबाज़ी, पाण झले को जीते बाज़ी,
ओ हारे, जेको हटिके, ओ हटिके. शल नींहु ....
३) इश्क़ु शमह ते फेरियूं पाइणु, आहे दुखायल पाण पचाइणु,
सिरु सूरीअ पियो लटिके, ओ लटिके. शल नींहु ....

## (25)

पहुतमि नियापा ढेर .....
आऊ अचां कीअं थियूं बंदि राहूं.
ब्रिया सोड़हा घट घेर! पहुतमि नियापा ढेर.
१) होलीअ अध गोलीअ जूं रातियूं तड़फाइनि थियूं जीउ,
हिकु ड्रकिणीअ जो मिलण मुसाफ़िर! ब्रियो ड्राटनि जो सीउ,
माटियल चारनि जे चिक में थी, पवंदमि पधिरा पेर, पहुतमि नियापा ढेर! .....
२) हिक घर जे लोड़हे जो घेरो, हियांव में पयो ब्रियो ही घेरो,
मांदो मनु थियो मुईअ जो ड्राढो, ड्रंगण आयुमि ड्रेरो,
लूंअ लूंअ चुगिली मारण वेठी, अखिड़ियुनि पाड़्यमि वेर - पहुतमि नियापा ढेर! .....
३) एड्रा ग़म खाधा अथमि जो अज़ु मिलणु महंगा थी पिया,
सूरनि दारां जीअंदुसि कीअं जे दर्दु छड्रे पासे वया,
दुखु आहिनि मूं वटि तूं आहीं, न त दुखायल केरु? पहुतमि नियापा ढेर! .....

## (26)

ताणि न तार तंबूर जी, सुधि जे हुजई न सूर जी.
१) सवलो ही न सिरूद वज़ाइणु, हथ लाए आ ज़िंदु अड़ाइनि.
हाजत हिति न हज़ूर जी, ताणि न तार ....
२) ज़ाणि मुहबत सुस्ती नाहे, मुल्हु महांगी मस्ती आहे,

पचर न करि हिन पूर जी, ताणि न तार ....

३) नींहु करीं न निकरु थी नांगो, लाहि दुखायल सिर जो सांगो,

नौबत हिति नासूर जी, ताणि न तार ....

## (27)

ही मुंहिंजो वतनु, मुंहिंजो वतनु, मुंहिंजो वतनु,
मिस्रीअ खां मिठेरो, माखीअ खां मिठेरो,
क़ुर्बानु तंहिं वतन तां करियां, पंहिंजो तनु बदनु, ही मुंहिंजो ....

१) पंहिंजे वतन जी आउं जे हालत करियां बयान,
सुड्किी पवे जमीन, हंजूं हारे आस्मान,
दुखड़ा वतन जा सारींदे, मुंहिंजो छुले थो मनु, ही मुंहिंजो ....

२) मिठिड़े वतन खां आउं, रखी की बि न वारियां,
जेकी हुजेमि ड्ई वरी कीन पचारियां,
दिलि में हमेशह शाल रहे, देश जी लगनि, ही मुंहिंजो ....

३) जे चाह अथमि का त वतनु शाद ड्रिसां मां,
आज़ाद ड्रिसां मां, वरी आबादि ड्रिसां मां,
मस्तीअ उनहीअ में दुखायल जी दिलि मगनु. ही मुंहिंजो ....

## (28)

सत्नाम, सत्नाम, सत्नाम जी, सिरी वाहेगुरु वाहेगुरु वाहेगुरु जी.

१) तूं जपि नामु प्यारा, ब्रियनि खे जपाए, नितो प्रति श्रद्धा सां गुर गीत ग़ाए,
रखी प्रेम सतिनाम सां, लिंव लग़ाए, अची अंति वेले थींदइं सहाए. सत्नाम ...

२) संदसि नाम स्मरनि जो पलि पलि करे, ततलु हृदो तुंहिंजो थो सीतलु करे,
कढी मैलु बुधि खे उजल करे. सत्नाम ...

३) भग़तु भावना सां पुकारे अची, करे दुखु दर्दु दूरि टारे अची,
कढी लहर लोड्नि मां तारे अची, दुखायल किनारे लग़ाए अची. सत्नाम ...

## (29)

तुंहिंजी ऐट जो आवाज़ु, मूं त झूपिड़ियुनि में बुधो
हरि को काहींदो थे वतियो, हरि को काहींदो थे वतियो.
ढेरा ठाहींदो थे वतियो.

१) तुंहिंजी ऐट जो आवाज़ु, मूं त आश्रम में बुधो,
चरिख़ो चाह सां थे कतियो, हरिको चारींदे थे वतियो.

२) तुंहिंजे खादीअ जो आवाज़ु, मूं त ग़ोठिड़नि में ब़ुधो,
हरिको पाईंदो थे वतियो, पाईंदो थे वतियो, ग़ुण ग़ाईंदो थे वतियो.

३) तुंहिंजे अहिंसा जो राज़ु, दुनिया दूरि दूरि ब़ुधो,
हैरात खाईंदो थे वतियो, हैरात खाईंदो थे वतियो, सारहाईंदो थे वतियो.

४) तुंहिंजी एकता जो राज़ु हिन्दु मुस्लमान ब़ुधो,
सारे हिन्दुस्तान ब़ुधो, हरिको चाहींदो थे वतियो,
भाउरु भाईंदो थे वतियो.

५) तुंहिंजो हरिजन जो आवाज़ु, मूं त मंदिरनि में ब़ुधो,
तीर्थ यात्रियुनि में ब़ुधो, हरिको ग़ाईंदो थे वतियो,
ग़ले लाईंदो थे वतियो.

६) तुंहिंजो रोहानियत जो राज़ु, मां त तपस्या में ब़ुधो,
आत्म कथा मां मूं ब़ुधो, हरिको हंडाईंदो वतियो,
ग़ुण ग़ाईंदो वतियो.

७) मूं त गांधी तुंहिंजो नांऊ, मूं त मलंग तुंहिंजो नांऊ,
चोट मनारनि तां ब़ुधो, तारनि सितारनि खां ब़ुधो,
हरिको उचारींदो वतियो, तोखे संभारींदो वतियो,
तुंहिंजी ऐट जो आवाज़ु ....

## (30)

पर उपकरी आयो गोबिंदु, पर उपकरी आयो.
पुरुखु अवतारी आयो गोबिंदु, पर उपकारी आयो.

१) कलंगीअ वारो बाजनि वारो, तेग़ु गुरुअ जो लालु प्यारो,
पटनागर में ज़ायो, पर उपकारी आयो.

२) पोह सतींअ ते प्रभु पधारियो, ऊंदहि वेई थी उजियारो,
कुदिरत चंडु चमिकायो, पर उपकारी आयो.

३) भाग़नि वारी गूजरी माता, गोदि में जंहिंजे खेलियो दाता,
लायो थियुसि सजायो, पर उपकारी आयो.

४) होसु नंढपिणि खां नींहुं धर्म सां, चाहु चङेरो होसु कर्म सां,
कड़हिं न हिनि कीब़ायो, पर उपकारी आयो.

५) कश्मीरी पंडतनि ब़ाड़ायो, पंहिंजे दुखनि जो हालु सुणायो,
तिनि जो सड़ु वरिनायो, पर उपकारी आयो.

६) तेग़ पिता खे अर्ज़ु कयाईं, तिनि जे वाहर लाइ चयाईं,
धर्म जी लाज बचायो, पर उपकारी आयो.

७) देश धर्म लाइ छा न सठाईं, साहिबज़ादा चारि ड्रिनाईं,
मिठिड़ो पीऊ कुहायो, पर उपकारी आयो.

८) ज़ुल्म सां हरिदमु लड़ंदो आयो, कंहिंजे अग़ियां सिरु न झुकायो,
देश जो झंडो झुलायो, पर उपकारी आयो.

९) झिर्कीअ खे जड़हिं बाज़ु बणायां, गोबिंद तड़हिं नांऊ चवायां,
अहिड़ो वचनु निबाहियो, पर उपकारी आयो.

१०) अज़ु दशमेश जो जन्मु मलिहायूं, गीत दुखालय तंहिंजा ग़ायूं,
जंहिं नरनामु जपायो, पर उपकारी आयो.

## (६३ दिलगीर)

वञी ड्रींहं केड्रा विधा थी सज़ुण, हलियो आउ 'पीरूं' पका थी सज़ुण.

१) लिकी ऐं छुपी चंड तारनि हथां, सिनेहा सवें मूं मुका थी सज़ुण.

२) उते चंडु ड्रिसबो ई न आहे छा? हिते चंड टे मूं ड्रिठा थी सज़ुण.

३) ब़नीअ में लिकी पोइ मिलबो कथां? अचे लाब वेझ़ा पिया थी सज़ुण.

४) ड्रेई प्यारु, पंहिंजो करे, थीएं परे, मूंखां आह कहिड़ी ख़ता थी सज़ुण?

५) पुछां पीर, फारूं विझ़ायां पेई, विझ़ां वाझ़ तोलइ वड्रा थी सज़ुण.

६) अची कीअं थो सपिननि में मूंसां मिलीं, थी जाग़ां,
वञीं कीअं जुदा थी सज़ुण?

७) अची ड्रिसु त आगमु अखियुनि में अथमु, वसिया तो बिना वड्रफड़ा थी सज़ुण.

८) न मूंड्रे अचीं तूं, त ज़ेड्रनि ड्रे अचु, संभारिनि पिया तोखे साथी सज़ुण.

९) न लज़ खां लुछीया कुछी थी सघां, ड्रिनी सख़्तु केड्री सज़ा थी सज़ुण.

१०) हिते हीअ मुठी तो बिना ते मरे, इते चउ त कहिड़ा मज़ा थी सज़ुण?

११) अग़े तूं त अहिड़ो न हरिगिज़ि हुईं, हींअर तोखे वियो आह छा थी सज़ुण?

१२) रुठो ई रहीं, पर ज़ुग़ां ज़ुग़ जिएं! इहा मुंहिंजे दिलि जी दुआ थी सज़ुण.

१३) दिलासनि ते दिलगीर तग़ंदसि पई, न उमेद मूं आहे लाथी सज़ुण.

## (2)

आकास मां आयसि हिते सैर करण लइ, संसार जे सागर में कंवल मिसलि तरण लइ,

सिक, सूंहं ऐं सुख साण सृष्टीअ खे भरण लइ, आयसि जितां,
ओड़ांहं ख़ुशीअ साणि वरण लइ,
अफ़सोसि! मगर हाणि मां मातम में आहियां, दिलगीर दुखी हाइ,
दुनिया दाम में आहियां!

(3)

क़ैदनि में न क़रारु, पखीअड़ा! क़ैदनि में न क़रारु.

१) बंद अंदरि ए बांदी! ब्रोलीं बांदियुनि जा तूं ब्रोल,
मेवो मिठिड़ो पाणी पटड़ो, समुझी तूं अनमोलु,
निकरी ड्रिसु तूं झंगि - आज़ादीअ जो रंगु,
उड्ररी थीउ फ़रारु, क़ैदनि में न क़रारु.

२) जिस्मु जड्रो बेकारु बदनु थियो, ताक़त कयो परवाज़ु,
खंभ खुसिरीजी तुंहिंजा विया सभु, छा ते तुंहिंजो नाज़ु?
आज़ादीअ जी हीर - खाई थीउ सुधीर,
साझुरु पाण संभारि, क़ैदनि में न क़रारु.

३) झंगल में ड्रिसु मंगलु केड्रो, मस्ती मौज़ मुदामु,
गीत पखीअड़ा ग़ाइनि गड्रिजी, नाचु नचे हरि लामु,
सांवण वारी राति - बरिसे थी बरिसाति,
चहि चहि आ चौधारि, क़ैदनि में न क़रारु.

४) लाबारे जी वेल वञी, हरि संग मथां तूं खेलि,
पेही तां जिति उछिलाए थो, हारे गुल - गुलील,
निकिरी सुबुह सवेर - मोटिजि शाम अवेलि,
करि तूं शैलु शिकारु - क़ैदनि में न क़रारु.

५) खंभ पखेड़े, पिञिड़े सां गडु उड्रिरी वञु आकासु,
या त बदनु करि ढेरु भभूतीअ जो निकिरे भलु सासु,
जीवित जिति आज़ारु - कान घड़ी उति घारि,
अर्शु उड़ी ड्रेखारि, क़ैदनि में न क़रारु.

(4)

मुंहिंजो साईं ज़ाणु त आयो!

१) नीले उभ ते नंढड़ा तारा, अज़ु छो ख़ासि वणनि था प्यारा?
अज़ु केड्रो मन खे मोहिनि था! अज़ु कनि था के ख़ासि इशारा,

बीठा आहिनि झिरिमिरि लायो, मुंहिंजो साईं ज़ाणु त आयो!
२) अज़ु दुनिया छाकाणि वणे थी? अज़ु केड़ी चांडाणि वणे थी!
अज़ु पन पन मां मौज़ हले थी, गुल गुल जी सरहाणि वणे थी,
दिलि ते कहिड़ो जादू छायो? मुंहिंजो साईं ज़ाणु त आयो!
३) ए बुलबुलु! तूं ग़ाईं छो थी? हीर तूं साज़ु वज़ाईं छो थी?
नाचु नची ऐं ग़ाए झूमी, सिंधू! मौज़ मचाईं छो थी?
छा कंहिंखे कंहिं आह ब़ुधायो? मुंहिंजो साईं ज़ाणु त आयो!
४) जाग़ां थी पर जाग़ न आहे, ही अज़ु मूंखे थी वयो छाहे!
वेठे वेठे, बीठे बीठे, आऊं छड़ियां सौ सपुना ठाहे!
हरिहिक में हिन पाण पसायो, मुंहिंजो साईं ज़ाणु त आयो!
५) साहिड़ियुनि में हियांउ हज़े थो, दुनिया खां मनु दूरि भज़े थो,
दर ते खड़िको, दिलि में धड़िको, तकिड़ो तकिड़ो साहु खज रे थो,
लालु बणी मुखिड़ो शर्मायो, मुंहिंजो साईं ज़ाणु त आयो!

## (5)

ज़िंदगी! ब़िया बि ब़ु टे ड़ींहं जीयणु चाहियां थो,
हिकु नओं रंगु ज़माने खे ड़ियणु चाहियां थो.
१) एतिरो पीतो अथमि, कोन हिसाबु आह, त भी,
जाम राहत जा ब़ु टे ब़िया बि पीअणु चाहियां थो.
२) तुंहिंजे मैख़ाने में मख़िमोर कीअं मस्तु मुदाम,
मां बि मस्तनि मंझां हिकु मस्तु थियणु चाहियां थो.
३) आऊ हिति रंगु पसी, वासु वठी गदि गदि थियां,
बाग़ दुनिया मां ब़ियो कुझु न नेणु चाहियां थो.
४) ख़ूनि दिलि, आबु अखियुनि में, हिते ड़ेई, माल्ही!
तुंहिंजे गुल गुल खे नओं रंगु ड़ियणु चाहियां थो.

## (6)

ओ सांवणी घटाऊं!
१) ओ बादलनि जूं टोलियूं! ओ मध भरियूं हवाऊं!
ओ मस्तु मस्तु बूंदू! बरसाति जूं फ़िज़ाऊं!
ईंदा कड़हिं पिरीं हिति, पैग़ामु को मुकाऊं?
या मुग़ोई दिलि तां लाहे छड़ियो अथाऊं?
ओ सांवणी घटाऊं!
२) बादल न बरसु हीअं तूं, मूंखे न छड़ि रूआरे,

ए हीर! हीअं न घुलु तूं, ॿारणु छड्डियो थी ॿारे,
ए पींघ इंडलठि जी! जुज़िबा छड्डियइ उभारे,
गुल गुल ते भंवरु छो आहे, कंहिंखां करियां पुछाऊं?
ओ सांवणी घटाऊं!

३) आहियो अव्हां व्याकुलु, मां बेक़रारु आहियां,
नेणनि में जलु अव्हांखे, मां अशिकबारु आहियां,
विछिड़ियल अव्हां बि आयो, मां भी त धार आहियां,
तरफ़णि मिलियो अव्हांखे, मूंखे लुछणु ॾिनाऊं,
ओ सांवणी घटाऊं!

४) बादल ॾे कीअं निहारियां? साजन जां सांवरो आ,
हू रागु रुह लइ, हू बीनुनि सां बांवरो आ,
जीवन जो छांविरो हू, हीउ भी त छांविरो आ,
आंदियूं किथां हे आगम, साजन जूं कुझु अदाऊं?
ओ सांवणी घटाऊं!

५) चइजो वञी सज़ण खे : सोढल, थीउ कुझु सियाणो,
'जोभनु झरी रहियो आ, खामी इझो सोखाणो,
'मूमल मरी रही आ, छड्डि मेंधरा, तूं माणो,
'ही मुंद आ मिलण जी, लहंदसि कड़हिं मां लाऊं?
ओ सांवणी घटाऊं!

६) हीरूं थधियूं थधियूं ही, तिनि ते चड़ही पवां मां,
ख़ुशबू बणी गुलनि जी, उड्डरी मथे वञां मां,
प्रीतमु वञीं पसां मां, दामनि संदसि वठां मां,
हेकर हलो उड्डाए, दमि दमि कंदयसि दुआऊं,
ओ सांवणी घटाऊं!

## (7)

१) कोइलि जी कू कू में छिपंदो, फूलनि जी ख़ूशबू में छिपंदो
झोलीअ में हू तारा विझंदो, किरणनि जी ॾाकणि ता लहंदो,
दिलि ॿोले : 'अज़ु साजनु ईंदो', मुंहिंजो सपनो साभिया थींदो!

२) जगि मगि आशा दीपक ॿारियां, हिन जे पथ में पाणु पथारियां
मुंहिंजे हथ सां मुंहिंजो राजा, पाईंदो पुष्पनि जी माला
मुश्की कुझु कन में ॿोलींदो, मुंहिंजो सपनो साभिया थींदो!

३) उजिड़ियल शीश महलु नेणनि जो, घरु थींदो सुंदरु साजन जो

हू मूं में, मां हुन में वसंदयसि, साजनु, साजनु जग॒ में पसींदसि
बे सुरतीअ जे जग॒ में नींदो, मुंहिंजो सपनो साभिया थींदो!
४) कीअं समुझां मां, साजनु ईंदो? दुखियारीअ खे दर्शनु ड॒ींदो,
मनु पाग॒लु आ, जो कुझु चवंदो, छा, सचु पचु सो सचु, थी पवंदा
लहरुनि वांगुरु लहराईंदो, मुंहिंजो सपनो साभिया थींदो!

## (8)

खोलि अखियूं, ड॒िसु लाट, मुसाफ़िर नाह अंधारी वाट.

१) नाचु नचनि था तुंहिंजे आड॒ो, भूत भयानक भूत,
वणनि टिणनि जा से पाछोला, वहमी दिलि जा दूत,
भइता कूड़ी - विपता कूड़ी,
कूड़ खे सच सां काटि - मुसाफ़िर ....

२) अग॒ु बि अकेलो कोन हुएं तूं, नाह अकेलो हाणि,
सूंहों तोसां साणि सदाईं, पर तूं आहिं अज॒ाणि,
थाब॒ड़िबेन कीअं - बाहड़बेन कनि?
लग॒ंदइ चोट न चाटि - मुसाफ़िर ....

३) पंधु रहियो दिलगीर न बाक़ी, कयो थी पंधु अझागु,
पंहिंजे माग॒ ड॒े हलंदो हलु तूं, तोड॒े ईंदी माग॒ु,
हलंदो हलु तूं - चाह सां चलु तूं,
दूरि न तुंहिंजो घाटु - मुसाफ़िर ....

## (६४ दयाल आशा)

झूलेलाल साईं लालऊं लाल साईं, उड॒ेरोलाल साईं ब॒ेड़ा ब॒नी लाईं.

१) कढनि के बहिराणा, जोतियूं जग॒ाइनि, पलव प्रेमी पाइनि, पंजड़ा बि ग॒ाइनि,
रखनि सिदिकु जेके मुरादूं पुज॒ाइनि.

२) सिंधियुनि जो तूं आहीं, अवतारु साईं, आसूं सभिनि जूं तूं ई पुज॒ाईं,
तुंहिंजो दरु दया जो खुलियलु आ सदाईं.

३) पलवु पाए आशा दूलह तुंहिंजे दर ते, आसीस करि का, सदा तूं सिंधियुनि ते,
खीर में खंडु थी रहनि हू सदाईं.

## (ध)

### (६५ धर्मू)

१) आऊ मिलि मैनूं यार प्यारे, मैनूं सिक सदाई,
कोई अनु मंगे कोई धनु मंगे, कोई मंगदा मानु वड्डाई.

२) कोई तख़्तु मंगे, कोई बख़्तु मंगे, कोई मंगदा है पातशाही,
कोई माल मंगे कोई ज़ाल मंगे, कोई मंगे पैसा पाई.

३) कोई धनु मंगे, कोई पुटु मंगे, कोई मंगदा सुखु सदाई,
कोई रिधि मंगे कोई सिधि मंगे, कोई मंगदा सरसरो पाइ.

४) कोई लोकु मंगे, परलोकु मंगे, कोई मंगदा सुर्गु सदाई,
धर्मदास है सवाली दर ते, इक मंगदा इश्क़ अलाही.

### (2)

मिठल यार मिलंदे - महिरमु मदद थींदे
ड्डिसी हालु हीणो, दवा दरसु ड्डींदे.

१) वर बिना बेकार, सौ करे सींगार,
भूरी हाणि भतारु - ढोलिया ढकणु थींदे.

२) तुंहिंजे काणि ताना, झलियमि यार जाना,
खाई गड्डु खाना - खिलियो खीरु पीअंदे.

३) पुछियुमि पंध पेरा, तलब साणि तेरा,
कंदे माफु मेरा - अङण टोर टिलंदे.

४) धर्मू दिलिवारी, करियां ग्गाल्हि सारी,
तग्गां तोहि तारी - ड्डुखीअ ड्डाणि ड्डींदे.

### (3)

ड्डिसो आशिक़नि जा इन्साफ़, ड्डियनि सिरु घोरे घोरे.

१) अंदरि बाहि बिरह जी भड़िके - ब्बाहिरि न निकिरे ब्बाफ,
चयाऊं न चपु चोरे चोरे.

२) इश्क़ जी मंझिल औखी अणांगी, लुच हणनि था लाफ़,
अञां पंधु ओरे ओरे.

३) धर्मदास चवे मरि मुरकनि से - सीना जिनि जा साफु,

ड्रिनाऊं कंधु कोरे कोरे.

## (4)

ड्रे टुब्री लहु टोलु, असुली ऐंन अंदर जा खोले.

१) मास मिटीअ जो बंगलो बनाए, तंहिं में वेठें पाणु लिकाए
करीं थो दरियुनि खां दीदारु, केरु ब्रुधे वरी केरु थो ब्रोले?

२) पिञिरो ड्रेही पखी परड्रेही, मारे कालु त कुंबनि सभेई,
मरणु मंडोई नाहे, तुंहिंजी रमिज़ थी तोखे रोले.

३) पंहिंजो पाण खे कोन सुञाणे, हरिको ताणि अग्रे थो ताणे,
समिझे को सुलतान, हीअ ग्रुझारत ग्रुझ जो ग्रोले.

४) धर्मदास धार जुदा नाहे जानी, ज़ाहिर बातुनि नूरु नूरानी,
इहा सचनि जी साख, पाण ड्रिठीसीं तरीअ में तोरे.

## (5)

भज्रनु करि मूरख मस्तान

सपने जहिड़ी सृष्टीअ में, तूं छो थीएं हैरानु?

१) तनु धनु दारा कुटुंबु क़बीलो, इहो छड्रि अभिमानु,
सुख में तोसां सभिको साथी, दुख में हिकु भग्रवानु.

२) कूड़ी काया, कूड़ी माया, कूड़ो हीउ संसारु,
चारि ड्रिहंड़ा खहिंबो चटिको, आख़िरि मौतु निशानु.

३) दौलत कारणु दरि दरि भिटकी सोघा थिया सुल्तानु,
कएं वज्राइ वीर हलिया विया नग़ारा निशानु.

४) हिन दुनिया जो कहिड़ो भरोसो, करे ड्रिसु अनुमानु,
रातियां सुम्हीं वञी सेज पलंग ते, फ़िक्र मंझि गल्तानु.

५) घड़ीअ घड़ीअ तोखे छा चवां मां, वठु संतनि जी शाम,
पारि पहुचण जो को पंधु करे थीउ लाहूती लामकानु.

६) जाग्री जपे करि मतलब मन जा, ओख थिए सभु आसानु,
धर्मदास दमि दमि सालाए, वञई थो ओसान.

## (6)

अची लहु सार सिकंदनि जी, तुंहिंजे दीदार लाइ मांदी.

१) मिलण जी महल मोचारी, खुलिया हनि बाग़ गुलजारी,
कंदियसि न केच ड्रे त्यारी, पुन्हल तोखां पोड़ ना पवंदी.
२) अची मिलु यार तूं जानी, लहे हीअड़े तूं हैरानी,
कोन्हे मटि शाह तो सानी, कंहीं हीअ हाल हिति चवंदी?
३) ग॒ायां थी गु॒ण आऊ गो॒ल्हे, झली अथमि इश्क़ जी झोली,
बणां गोलिनि संदी गोली, पोरिहियत ही पासि शल पवंदी.
४) धम् दरियाह आ दस्ती, ड्रेई करि शोक़ जी कश्ती,
छड्डे ड्रे होड्ड जी हस्ती, ड्रेई सुम्हुं ब्रान्ह सेरांदी.

(7)

थी इश्क़ मंझां इन्साननि अल्लाह आप छिपाया हे.
१) ऐन ग़ैन विचि फ़र्कु न कोई, नेह छड्डियो आहे निकितो धोई,
नूरु थियो निर्वारु, हर जाइ हुकुम हलाया हे.
२) काथे शाह करे थो शाही, काथे दरि दरि करे गदाई,
हरि जाइ हुस्न हज़ार, बेशक बिरह वधाया हे.
३) हीअ ओगाई तिनि जी आहे, सांगो छड्डियो जिनि सिर जो लाहे,
चड़ही सूरीअ ते सरदार, अना अलहक़ अलायाई.
४) धर्मू छो थो लिकु लिकाए, आशिक़ वया आहिनि हुलु हुलाए,
मिड़ई कयो मंज़ूर, ब्रोलण वारो ब्रियो को नाहे.

## (६६ रूहल)

तन मन दामन चिमिके, बिरहें बादल लाया हे,
समझु सजन कोन सही सुञातो, आशिक़ लालु लखिया हे.
१) चोले अंदरि बोठा ब्रोले, काया को रूपु लखिया हे,
गुझड़ी ग॒ाल्हि मैंने आखण दे, रांवल रमज़ रीझाया हे.
२) पछम देस सूं बादल आयो, मेंघल मींहं बरसाया हे,
अगम देस सूं परतां बूंदां, मौला मुल्क वसाया हे.
३) बिनि नेणनि नरको साधू, बिनि ज़िभिया गुनु ग॒ाया हे,
लूंअ लूंअ दे विच सुहिणा साई, साजन उहां समाया हे.
४) आशिक़ रूहल रंगण चाड़हे, शाही रंग रचाया हे,
नहीं मैला नहीं पुराणा थीवे, रोज़ू रोज़ु सवाया हे.

## (2)

काहे फिरो बनवास.

१) शब्द की करि सिमरना, वचन की करि पालना,
जपि सासूं सास, काहे फिरो बनवास.

२) के फिरनि मके के माहीं, के कूं गंगा के प्यास,
शिंघु भूखा जे फिरे, फिर मुल न खावे घास.

३) तेरा साहिब तुझी माहीं, तुमु तजो अवर आस,
सिरु डिने, साहिब मिले, अचरज नाहीं आस.

४) गुर तो रूहल हम कूं मिलिया, काटे जम की फास,
दिन रैन मझि कूं पी हे, तेरी चरनों की प्यास.

## (3)

आज मोरे संत पधारिया, संत पधारिया हरि जन प्यारा,
ब़ल ब़ल जाऊं ब़लिहारा.

१) आज मेरे अङणा में भई वधाई, वरितिया मंगल चारा.
२) भाउ भक्त की करूं रसोई, आनंद करूं आहारा.
३) सील संतोख की सेज विछाऊं, पाऊं मोख द्वारा.
४) कहता रूहल भली पधारिया, पाऊं दर्सन दीदारा.

## (4)

१) नव निशानियूं नूर जूं, आशक़नि आहिनि,
हिकड़ो वहनु वाटुनि ते, ब़ियो खाइणु न खाइनि.

२) टियों सिरु सभु कंहिं अग़ियों, था निमियो निवाइनि,
चोथों ब़ुधी कननि सां, वरी न वरिजाइनि.

३) पंजों पहु पिरियुनि सां, था पको पचाइनि,
छहों छिननि कीनके, नातो निबाइनि.

४) सतों सिक सज़ुण जी, था लूंअ लूंअ लखाइनि,
अठों ग़ाल्हि अजीब जी, था वेंदे वराइनि.

५) नाओं निंड नेणनि खे, था जोदूं जाग़ाइनि,
तड़हिं सेबेईनि, रूहल दोसाणी दरिब़ारि में.

## (5)

पोइ परोड़ियुमि पंधु, जीजां जोगीअहड़नि जो,
जीजां जोगीअहड़नि जो, आयल आदेसियनि जो.

१) नकी जोड़ायम जायूं, नको जोड़ियमु हंध - पोइ ....
२) नका वजायमु बीन का, नको चोरियमु चंगु - पोइ ....
३) सरितियूं कीअं विसारियां, साभीअड़नि जो संगु - पोइ ....
४) अज़लऊं आ मूंते चड़िहियलु, रूहल तिनि जो रंगु - पोइ ....

## (६७ रोचल)

सिक में आहनि फ़ाइदा, पर कसु अवलु खाइणु खपे,
नींहं मां थींदा नफ़ा, नुक़्सानु सहसाइणु खपे.

१) सिक खे फेरींदें त कसु ठहंदी, ऐं कसु मां सिक ठहे,
सिक जे सौदागर खे, कसु खां कीन घबिराइणु खपे.
२) रीति छड़ि पेकनि जी, वठु तूं साहुराणी रीति खे,
हलु पतीअ जे हाल मौजुबु, राऊ रीझाइणु खपे.
३) पंध पेरनि जा विसारे, हलु हिएं सां होत ड्रे,
जेका नाहे हेर, उन ते पाण हेराइण खपे.
४) सत्गुरुनि खे पाणु सौंपे छड़ि, त चिन्ता खां छुटीं,
पोइ चड़िहंदें, कंधु अवलि क़दिमनि में केराइणु खपे.
५) सूर खे संगी कजे ऐं दर्द खे दिलिबरु कजे,
वठु लछण जो लुतुफु रोचल, मन खे विंदिराइणु खपे.

## (2)

जे फ़कीरी चाहीं थो, करि चारि ग़ाल्हियूं सही,
तिनि परोड़ियो राज़ु, जे अहिड़ी वया रहिणी रही.

१) फ़े कड़ी फ़ाक़ा फ़क़ीरनि फ़रिहतूं हासिलु कयूं,
ला मकानी ला तमउ थी, ला में वया लालण लही.
२) क़ में आहे क़िनाइत, पढ़ु क़िनाइत जो सबक़ु,
कुल्ब में रखु क़र्बु क़ाइमु, पाण में ड्रिसु पोइ पही.
३) ये यक़ीनो यादु रखु, वेसाहु निति वधंदो रहे,

न त फ़क़ीरीअ जी इमारत पल अंदरि पवंदी ठही.

४) रे रियाज़त, रोज़ु ऐं राज़ी रज़ा ते रहु सदा,
राग़ सां रीझाइ राणो, मनु पवे तोसां ठही.

५) जेको हिन माना खे समुझे, सो अचे मैदान में,
आह पंधु सूरनि जो रोचल, मर्द के वेंदा कही.

## (3)

ब़ांहं ड़ेई मूंखे तारींदा, विच सीर मां पारि उकारींदा.

१) हीअ भरि हूअ भरि ज़ाणो सुञाणो, वांझी वांझ हाकारींदा, ब़ांहं ड़ई

२) मौज़ तिखी महराण जी आहे ब़ेड़ो ब़ने सां लाईंदा, ब़ांहं ड़ेई ...

३) पतणु नाहे मुंहिंजे पांद में, पाणेही पारि पुज़ाईंदा, ब़ांहं ड़ेई ...

४) रोचल राह अणांगी आहे, रहिबर राह रसाईंदा, ब़ांहं ड़ेई ...

## (4)

ओ शल पंहिंजो पिरीं मूंखे कनि, आऊ निमाणी ऐबनि हाणी,
ओ शल ड़ोह कीन ड़िसनि, ओ शल पंहिंजो ....

१) नज़र कंद्रा कंहिं ड़ींहुं निधर ते, वेठड़ी आहियां मां तिनि जे दर ते,
ब़िया दर ड़ेई ब़नि, ओ शल पंहिंजो ....

२) ज़ाति ब़ुधायां पंहिंजी मां कहिड़ी, आऊ त उनहनि जी जहिड़ी तहिड़ी,
तरसु को पवंदो तिनि, ओ शल पंहिंजो ....

३) रोचल कहिड़ी कमी सख़ीअ वटि, कीन घुरनि था कंहिंखे हू घटि,
ओ - ओ ड़ींदा ड़ाण ड़ड़नि, ओ शल पंहिंजो ....

## (६८ रोशन)

जेको सभेई सियाका सटे सटे, उहो मर्दु अचे मैदान में.

१) चवण करण में फ़र्कु आ ड़ाढो, करे उहो जंहिंखे क़ुर्ब जो काढो.
क़ौल कलालनि कटे कटे, उहो मथो रखे मैख़ाने में.

२) लोक मलामत सिर ते साहे, जाड़ूं जुठियूं सभ पलव में पाए,
हड़ि न पुठिते हटे हटे, भरे गाम उनही गुज़रान में.

३) इश्क़ जो बारु उमालक आयो, मर्दनि मुरकी सिर ते चापो,
लाग़ापा सभु लटे लटे, रहिया नफ़े नकी नुक्सान में.

४) रोशन रमज़ जहीं लाए, बिरह बहादुर पाणु भलाए,

पूरियल दर थो पटे पटे, अची इश्कु उनहीअ इन्सान में.

(2)

कहिड़ो सीनो मां साहियां, ब्रान्ही आहियां ब्रारूचल जी.

१) असुलु आरीचनि जे, ब्रोलनि ब्रुधिड़ी आहियां.

२) पुन्हल जी पोरिहियत थी, पोइ साइणि कीअं सड़ायां?

३) शब व रोज़ रुञनि में, कांध कारण शल काहियां.

४) रोशन रूइ ब्रान्हप जो, पाण ड्रिनऊं सो पायां.

(3)

कड्रहिं ईंदें अङण मुंहिंजा जानी? तुंहिंजी हिजर कई हैरानी.

१) तोखे साहु सदा थो सारे, हिकु पलु पिणि कीन विसारे,
करि का मिलण जी महिरबानी.

२) वेठी तो लाइ फ़ालूं पायां, उथियो हर हर कांग उड्रायां,
निज महब का नींहं निशानी.

३) हिति मूंखे माण्हूं ड्रियनि था महिणा, से सिर उते सठमि उते सुहिणा,
तो लइ मुहबत मिठा लासानी.

४) हीअ गालिह गुझी आहे अहंजी, को सालिकु सघंदो समुझी,
हीअ रोशन रमज़ निहानी.

(4)

मुंहिंजो साहिड़ शल न रुसे रुसे, सारो लोकु रुसे त वञी रुसे.

१) वेंदयसि यार मेहार ड्रे अला, वञां पारि न पांद पसे.

२) मुहबत मोलिहियो बुधी घिड़ां अला, सटे सांगो जीउ जसे.

३) वेंदसि पारि पिरींअ जे अला, शल हलींदे न गाम घुसे.

४) रोशन रहु हिन राह ते अला, मरु हरिदमु लोक हसे.

(5)

आशिक़ थिएं त सिर उछलि, हिन बिरह वारी बाहि में,
थी पतंगु परवाज़ु करि, पउ इश्क़ जी आड़ाह में.

१) ग़ोतो हणी ड्रिसु ग़ार में, बांहांनि बिना पउ ब्रार में,
तरहे बिना तरु तार में, दर ड्रिसीं दरियाह में.

२) जड्रहिं नफ़्स खे नए विझीं, हिन मेल में छो पियो मुंझी?
पर इश्क़ में जेकर उझीं, रहिबरु मिलई तड्रहिं राह में.

३) रोशन रखिजि रुख़ ख़्याल में, पेर मग़ां जे काल जो,
हरिदमि जे साहिब हाल जो, मूरत जो नक़्शु निगाह में.

## (6)

तूं त पाणु विञाए पसु मयां, उहो वहदत वारो गसु मयां.

१) जिनि ओर अंदर में आहे, तिनि तुरत लधो आहे काहे,
तिनि ख़्याल ख़ुदीअ जो ख़सु मयां.

२) वठु सुरति सां दम खे सारे, मतां वेल छड्डीं का विसारे,
वठु ड्राहे वारो ड्रसु मयां.

३) एही रोशन गुझिड़ियूं ग़ाल्हियूं, जेकी प्रित अंदर में पालियूं,
सो लोकां लिकाइजि लस मियां.

## (7)

मारू मिलंदमि शाल, ड्रिनी अथम फ़ाल वधाई,
ड्रिसी हीणीअ जो हालु, कंदा मूंते भाल भलाई.

१) सांगी मुंहिंजा सदाईं सरहा, नाम्यारा से नगपाल,
रखनि था ख़्यालु ख़ुदाई.

२) उठा मींहं मलीर ते मियां, मारूं क़ाहे माल,
वहनि जिति साल सफ़ाई.

३) सांगी मुंहिंजा हीणनि हामी, मारुनि जा हे मिसाल,
चलनि था चाल चङाई.

४) रोशन राह जा रहिबर मारू, नंगी नेईं नाल,
प्यारनि जाल से जाई.

## (8)

जेकी इश्क़ कया इन्सान, सही सुल्तान थिया.

१) मुहबत जे मैदान में, घिड़ी कया घमसान,
निसंग निशान थिया.

२) लोक मलामत सिर ते सहाइ, मची मंझि मैख़ान,
मोखे मस्तान थिया.

३) रंगी राज़ ड्रिसी मड़दनि जा, हज़ारें हैरान,
कोड़ियें क़ुर्बान थिया.

४) रोशन प्रित वारे हिन पिड़ में, कुड़ाए कैकान,
मुहकम मर्दान थिया.

## (9)

सामी खणी सिक जो समरु हिंगलाज ॾे हमवारि थिया,
सांगो सटे सिर साह जो, हलकु हणण हरि बारि थिया.

१) सैनूं हणी सुञ में लथा, पहिर किनां बेज़ारि थिया,
ऊ बुख विझी बगिड़नि अंदरि, सुञ जा सिपह सालारि थिया.

२) सुखु विञाए संग मंझां, सूरनि मथे हस्वारि थिया,
ऊ निंड सफ़ा नेणनि छॾे, हरि हाल में होशियारि थिया.

३) दुईअ खे धिकारे दाइमा, वहदत संदा वणिजारि थिया,
ऊ मासवा खे तर्कु ॾेई से क़ुर्ब जा कमदारि थिया.

४) रोशन रसिया हिन रमज़ खे, हैदर जा जे हुबदारि थिया,
पेर मग़ां जे पासि सां, पांह वञी पग॒ह पारि थिया.

## (10)

इश्क़ जे ऐलान जी, रिंदनि परूड़ी रमज़ रीति.
माम जे मैख़ान जी, रंदनि परोड़े रमज़ रीति.

१) सइरु सरे जो ब्यानु, आरफ़नि खे थियो अयानु
इश्क़ जे उनवानि जे.

२) ख़्यालु ख़फ़े सां रखनि, ज़ाति में सनमु थी था वञनि
आलिम इमिकान जी.

३) ग़ार में ग़ोता था हणनि, ख़फीअ जूं ख़बरूं था खणनि
बहर जे पियान जी.

४) राज़ में रोशन था रहनि, पिरिति सां प्यालो था पीअनि
ज़ुज़ुबे ऐं जोलान जे.

## (11)

मूं सां मुहबु अची ग़लि लग॒े लग॒े, मौला तलब तड़हिं हीअ तग॒े तग॒े.

१) सूरनि सरसु कया सांधीयड़ा, जग॒ जहान जा जुठियूं झेड़हा,
वेरी अंदरि टियों वग॒े वग॒े.

२) रोज़ु रोअनि था नेण निमाणा, मुहब न करि मिस्कीन सां माणा,
जोशु जिगिर में थो झग॒े झग॒े.

३) सिकंदे गुज़ारियमि सारियूं रातियूं, पलि पलि पातमि जानबि झातियूं,
सूर सोरींदे सग॒े सग॒े.

४) रोशन समझु तूं रमज़ जो रायो, पाण ड्राढनि सां पेचु तो पायो,
दंहो ईहो भले धग्रे धग्रे.

## (12)

मुंहिंजो मुहबु अडण में अचे अचे, तड़हिं प्रीति पुराणी पचे पचे
१) पिरीं पेर भरे शल ईंदा, वाऊ विछोड़े जो विचां ईंदो
मचु मुहबत जो मचे मचे.
२) क़ासिदु ख़तु त ख़ुशीअ जो आणे, कांगल ख़ासि ख़बर ड्रे आणे,
बिल्कुलु बुत तड़हिं बचे बचे.
३) वाऊ वसल जूं वणनि थियूं वायूं, मुहब मिलण जूं मिलयमि वाधायूं,
सबबु कयो हाणे सचे सचे.
४) रोशन रहु तूं सिक में सदाईं, साणी तो साणु तुंहिंजो साईं,
रंगु सदाईं पियो रचे रचे.

## (13)

दिलिड़ी थीवे ख़ुशहाल वे माही, आवलि वेड़हे रांझनि साईं.
१) सरितियां संगियां सौटनि सानूं वे, ब्राब्रल दांहीं भाल वे माही.
२) तो बिनु रांझन कुछु नहीं भावे, रही है न सुरिति संभाल वे माही.
३) चाक बिना दिल चाक न रहंदी, खोहि खेड़ियां दी ग़ाल्हि वे माही.
४) रोशन रखु तूं हुब हैदर दी, जंहिं दाही क़ुर्ब कमाल वे माही.

## (६९ रज़ा)

तुंहिंजे इश्क़ मिठा जड़हिं खोड़ियो अलमु[1], तड़हिं दीन दुनिया सां कहिड़ो कमु.
१) जड़हिं नींहं अंदरि निर्विरि केई, बछे बिरह मिठा बीमार कयुइ
वरी धारी करे छो धार केई, कीअं घारियां गोंदर में हिकिड़ो दमु.
२) तुंहिंजे दर्द खां दिलि में दूंहां दुखनि, चित चरि थियो, ऐं था चाक चकनि
इहो हालु थियो आहे दर्द वंदनि, वियो मासु ग्ररी रहियो हड्डु चमु.
३) लहु निपट निधर जी सार मिठा, का वाग्र वतन ते वारि मिठा
आहे सुबह वमसा[2] तुंहिंजी तार मिठा, झोरियो हिजर संदो ही रंजु व अलमु.
४) मई इश्क़ खे पी मख़मूरि रहे, सूर सांढे सज्रण मशिकूरु रहे
रज़ा फट फ़िराक़ खां चूरि रहे, अची वसल जो रखु को मिठा मरिहम.

## (2)

चोरे चाक, सज़ण दिलि चूरि कयइ, ड्रेई दर्दु, धिके छो दूरि कयुइ!

१) हिक सिक ब्रियो रोइणु, टियो नेण टिमनि, इहो सूर संदो दस्तूरि कयमु,
सदा यादि रहनि, हिंऐं मंझि हुरनि, ड्राढी माम ड्रेई, कज़कोरु कयइ.

२) हली वाट विंदुरु जी मां वोड़ींदसि, इहो सूरु सफ़र जो मंज़ूरि कयमु,
सिरु साहु सज़ण तां ही घोरींदसि, ड्रेई विरहु मिठा वहलूरि कयइ.

४) जीअरे शाल मिलां, आहे आस अञा, अची पेशु पवां, जे क़सरु कयमु,
मिली मुहबनि सां रज़ा ख़ुशि थी खिलां, रखी रमिज़ सज़ण घाए घोरि कयइ.

## (3)

लगयसि लालनि,[1] मां लिड़ह पंहिंजे,[2] पिरीं प्यारा न छोरी छडि
[3] निधर तां कयमु भञु भेरो, अड़िया ओरे अची तूं अड़ि.

१) ब्रियो को नहीं निधर जो को वसीलो वाहरू, तो रीअ
करे लाइक़ु, तड़हिं लालनि, न हिन हीणीअ वटां तूं ,लड़ि.

२) मुंहिंजी दिलि आदोपारा, दर्द कई, ए दिलिरुबा साईं
जुड़ियो जानी हुजीं! हिन रीति ही गोली न गोंदरि गड़ि.

३) पिनारे जा पयसि तुंहिंजे, विसारे कीअं विल्ही विहंदें,
पुकारे जा पेई पल पल, वठी वेंदें सुणी शल सडि.

४) मदायूं ऐं मयारूं सभु विसारिज ए पिरीं मुंहिंजूं,
रज़ा तुंहिंजे में आहे आसरो, आहियां मां हीणी हड़ि.

## (4)

ड्रिठे थियड़मु ड्रींहं - वे, पल पल सांगीअड़नि खे सारियां.

१) दिलड़ी उदासी आ उनहनि ड्रे, जिनि ड्रे उठा अज़ु मींहं - वे

२) प्रित परे शल मुंहिंजी पिरियुनि सां, नेबह रहिजे नींहं - वे

३) कड्रु बंदियाणी बंद मंझाऊं, ज़ुल्मु जुगाए न हीअं - वे

४) रुह रज़ा जो रमिज़ सां रलियो, नातो छिनां सो कीअं - वे

## (७० रशीद)

मुंहिंजी मौला आस पुज़ाए, मूंखे विछिड़ियलु दोस्तु मिलाए.

१) इश्क़ पुन्हल जे लाथमु ओला, रोलनि पोयां आयमु रोला,

खाधमि रोज़ छप्पर में छोला, अगिड़ियूं थी विया पोतियूं चोला,
छोन कयां मां होत जी ग़ोला, मन मूंसां बख़्त भिराए.

२) हिमत हारे दर्दनि मारी, ख़ूनु अखियुनि मां हरिदमु जारी,
गुमु थिया चारा नाहि को चारी, यार न छिनि तूं मूंसां यारी,
मां तुंहिंजी गोली हित हज़ारी, दिलि कूंज वांगे कुरि लाई.

३) ऐश विञायिमु राज़ न ज़ातमु, गियड़ु गिचीअ में ग़मु जो पातुमु,
तोसां दिलिबर नींहुं जो लातुमु, पंहिंजी पछाड़ी कीन सञातमु,
छो न कयां मां दिलि में मातमु, तुंहिंजो नींहं नवाबु नचाए.

४) आड़ा डूंगर डूंगड़ा डाका, विख विख ते लख वर ऐं वराका,
कोन बुधे थो वायूं वाका, साह कड्डनि था झोला झका,
इश्क़ जो वाज़टु बिरह जा धाका, मन कामिलु केच रसाए.

५) बंदि थियूं सभु वाटूं वाहूं, आख़िरि पहुतियूं अरश ते आहूं,
खोलि रशीद जूं रहबर राहूं, पेरु न पाए हरिगिज़ि पाहूं,
बुधु तूं दिलिबर दर्द जूं दाहूं, अचु वापसि वाग़ वराए.

## (७१ राज़)

हिकु डुख जो डुधलु, मिस्कीनु मुअलु, आरामु पिराइणु छा ज़ाणे?
कंडनि में गुज़ारण वारो भला, दामन खे बचाए छा ज़ाणे?

१) जो उमिरि समूरी आह रहियो, आग़ोश बहर आफ़त में,
तूफ़ान मां पंहिंजी ब्रेड़ीअ खे, सो पार लग़ाइण छा ज़ाणे?

२) तक़दीर जो दमि हणंदे हणंदे, मौत जे मूंहं में वेदड़ु को,
तदबीर सां मुश्किल खे, आसानु बनाइण छा ज़ाणे?

३) बस जोश तकलम[1] लब ते, ऐं सैलाबु[2] तमना अखियुनि में,
सरिशारु[3] मुहबत दीवानो, अहिवालु बुधाइणु छा ज़ाणे?

४) हू ऐं तसलीअ जूं ग़ाल्हियूं, ए राज़ु को ईंदो कंहिंखे यक़ीनु,
खिलदड़ खे रोआरण वारो भला, रूअंदड़नि खे खिलाइणि छा ज़ाणे?

(2)

दिलिड़ी लुटे वए दिलिबर, नेणनि सां नाज़ वारा,
शबु रोज़ यार तो लइ, नेणें वहायां नार.

१) क़ासिद अदा का आंदी, ख़ासी ख़बर तो पांधी,
मुश्ताक़ दिलि थी मांदी, ईंदा कड़हिं प्यारा.

२) सुहिणियूं अखियूं हे सुञु तूं, मुंहिंजो अर्ज़ु हे मञु तूं,
भेरो भला न भञु तूं, करि भाल के भलारा.

३) तुंहिंजे फ़िराक मारे, छड़ियो जानि तिनि ग़ारे,
वेठें तूं छो विसारे, जीअ जान जा प्यारा.

४) नाज़नि सां भलि पिया मारियो, पर क़्यास कुझु को धारियो.
निर्मल पिरीं निहारियो, परची मिलो प्यारा.

५) मञु राज़ जी तूं आज़ी, परची पिरीं थी राज़ी,
कहिड़ा पुछों थो क़ाज़ी, क़ुर्बनि में क़ुर्ब वारा?

## (७२ राही)

छड़ि मधुरु को राग़ु, सखी री! छेड़ि मधुरु को राग़ु.

१) छाती फूली कीन समाए, जज़बनि धूम मचाई,
बाग़नि में सुरहाण खणी, आ हवा पखेड़नि आई,
तन मन में झंकार लग़ी आ, जाग़े भाग़ु सुहाग़ु.
सखी री! छेड़ि मधुरु को राग़ु.

२) तूं मां मुश्कूं, जग़ु पिणि मुश्के, मुश्के दुनिया सारी,
आशा मुश्के, जीवनु मुश्के, मुश्के मन फुलवाड़ी,
भुलिजूं सारे जग़ जी चिंता, भुलिजूं मंज़िल माग़ु.
सखी री! छेड़ि मधुरु को राग़ु.

३) इझो हलण जी वेल आई, मुखिड़ी पिणि मुरझाई,
इझो वज़े थो कालु नग़ारो, जीवन में सुञ छांई,
तड़फे थो अज़ु गीतनि लाइ ई, मन जो समुंड उझाग़ु.
सखी री! छेड़ि मधुरु को राग़ु.

४) केरु चवे हिन वेला खां पो, छाहे आख़िरि थियणो,
प्राणनि ते आ कीन भरोसो, कंहिंखे जीअणो मरिणो,
गीतनि जे सिट सिट में राही, भरि जीवनु जो रागु.
सखी री! छेड़ि मधुरु को रागु.

(2)

दिलि में न दिलि जो दर्दु न समाए त छा करियां?
ऐं जे ज़िबान भी न बुधाए त छा करियां?
१) डेई पलउ डीए खे हवा खां बचायां मां,
पर जे डीयो पलउ खे जलाए त छा करियां?
२) ग़ोड़िहनि सां दिलि जी बाहि विसाए छड्यिां मगर,
हीअ बाहि जे ग़ोड़हा ई सुकाए त छा करियां?
३) हुन खे बुधाए हलिको करियां मां त पंहिंजो ग़मु,
हूअ पंहिंजो ग़मु अची जे बुधाए त छा करियां?

(3)

दिलि जे ग़म जो इलाजु थी न सघियो!
हाल बुधंदे बि हू बुधी न सघियो!
१) सुधि हुई इश्क़ जे नतीजे जी,
दिलि ते पर ज़ोर को हली न सघियो!
२) दिलि जे आतिश में दिलि जली वेई,
दिलि जो अरमानु पर जली न सघियो,
३) क़ैद ब्रिया सभ त मां भञी आयुसि,
क़ैदु ग़म जो मगर भञी न सघियो!
४) ग़मु सही जीउ त को ईएं न चवे,
ग़मु सही वियो मगर बची न सघियो!
५) वक़्त जे राह में मिलिया राही,
तो जियां को मगर मिली न सघियो!

(4)

## सिंधु ऐं सिंधी

१) वतन जे लाइ जान घोरी तां बि थोरी,
सिंधिनि जान न घोरी, वतन घोरे आया.

२) वतनु घोरे आया हाणे रतु रोअनि,
पंहिंजा वरी पसण लाइ तिनि जा नेण सिकनि,
ॿेरियूं, ख़बर, खजियूं हिति ॻोलींदे न मिलनि,
माणहुं हिति बि थियनि, पर असांजा के ॿिया हुआ.

३) असांजा के ॿिया हुआ, जिनि सां हुआ नींहं,
ओसीड़ा ई उनहनि जा, था रहनि रातियां ॾींहां,
अखियुनि संदा मींहं, मुंद न ॾिसनि महल का.

४) मुंद न ॾिसनि महल का, अंदर जूं आहूं,
मुल्क मोटी वञण जूं, बंदि थियूं राहूं,
से दिलियूं कनि दांहूं, वतन वियो जिनि हथां.

५) वतन वियो जिनि हथां, नाहे तिनि आरामु,
कड़हिं विसरे कीन की कंहिंखां पंहिंजो गामु,
नदियूं हिति बि जामु, पर सिंधूअ मो को साहु थनि.

६) पर सिंधूअ में को साहु थनि, सिंधू भांइनि माउ,
पंहिंजा नेठि बि पंहिंजा, धारियनि कहिड़ो साउ,
अहिड़ो लॻो वाउ, जो हिकिड़ा हिति थिया ॿिया हुति थिया.

७) हिकिड़ा हिति थिया ॿिया हुति थिया, सिंधी थिया ॿेई,
पर हिकिड़ा सिंधी ॾेही, ॿिया थिया परॾेही,
माण्हूं हिकिड़ाई, पर रहनि राज़नि ॿिनि में.

८) रहनि राज़नि ॿिनि में, के सिंधु त के हिंदु,
मिटी हिक मुल्क जी, जुड़ियल तिनि जी जिंदु,
से छा ज़ाणनि सिंध, जेके हिते ज़मिया.

९) जेके हिते ज़मिया से बि सिंधी सॾिबा,
सिंधी थी भी सिंधु खे ॾिसण लाइ सिकंदा,
धारियनि वांगुरु जड़हिं सिंध वञी ॾिसंदा,
माणहू छा चवंदा, सिंधी आया सिंधु ॾिसण.

## (5)

ज़मीं हूंदी इहाई, इहोई आस्मानु हूंदो,
न तूं हूंदें न मां हूंदुसि, मगर पोइ भी जहानु हूंदो.

१) फिटाए था वञू जंहिं शाख़ तां आशियां पंहिंजो,
असां खां पोइ उन ते कंहिं ॿिए जो आशियां हूंदो.

२) जड़हिं के इश्क़ वारा पाण में गड़िजी वरी ग़ड़िबा,
असांजे इश्क़ जू दुहराइबो पियो दास्तानु हूंदो.
३) हयातीअ जो सफ़रु कंहिं हिकिड़ी मंज़िल ते न तइ थींदो,
हमेशह जुस्तजू में ज़िंदगीअ जो कारवां हूंदो.
४) तूं अज़ु जंहिं राह तां, गुज़िरी रहियो आहीं ए 'राही' ड्रिसु,
किथे उन राह ते, मुंहिंजे बि पेरनि जो निशानु हूंदो.

## (७३ ढोलण राही)

ब्रान्हनि जी आऊं ब्रान्ही आहियां, हू शाहनि जो शाहु जेड्रियूं.
१) नेठि त नींदो कीन छड्डींदो, हीणनि जो हमराहु जेड्रियूं,
ब्रान्हनि जी आऊ ...
२) आऊ सिकां थी रोज़ु लुछां थी, बालमु बे परवाहु जेड्रियूं,
ब्रान्हनि जी आऊ ...
३) आऊ चकोरी चंडु पिरीं आ, चित जो जंहिं ड्र चाहु जड्रियूं,
ब्रान्हनि जी आऊ ...
४) मन में ब्रारे वयो थमि राही, इश्क़ संदो आड़हु जेड्रियूं,
ब्रान्हनि जी आऊ ...

## (७४ राम)

सालिक सुहिणी बणिजी तूं पउ सीर मां काहे काहे
साहड़ु तुंहिंजो पारि वसे थो हिन भर छाहे छाहे?
१) ख़ौफ़ ऐं ख़तरा ख़्याल छड्डे ड्रे तोकल जो ब्रुधु तुरहो
साईंअ जी सिक जंहिंखे आहे तंहिंखे जोखो नाहे.
२) ड्रम जा मिलंदइ ताना तुनिका साहिड़ियुनि जा सुहिमा
लोक जा लियाका लाहे हलु तूं राह अणांगी आहे.
३) ताति आ जंहिंजी तोखे तालिब तंहिंखे तात आ तहिंजी
चाह मां जंहिंखे तूं थो चाहीं चाह मां तोखे चाहे.
४) राम चवे पक ज़ाणु प्यारा मेहरु तंहिं सां मिलंदो
सीर में जेका साहिड़ कातर ईंदी सीनो साहे.

## (2)

राणल तुंहिंजी राह निहारियां मां, निहारियां मां ओ निहारियां मां - राणल .....

१) पंध पुछायां कांग उड़ायां साजन तो लाइ फ़ालूं पायां,
घोट बिना कीअं घारियां मां? - राणल .....

२) जहिड़ी तहिड़ी मां तुंहिंजी आहियां, तोसां कहिड़ो सीनो साहियां?
गोली थी त गुज़ारियां मां - राणल .....

३) आउ निमाणीअ जे घरि पेही सूर सलियां के तोसां वेही,
तो बिनु कंहिंखे पुकारियां मां? - राणल .....

४) राम चवे हिक वारि जे मूं वटि, प्रीति जा प्रीतम पेरो पाईं,
जानि बि तोतां वारियां मां - राणल .....

## (3)

अहिड़ो ग़फ़िलत जे नशे में मस्तु ऐं मधहोशु होसि,
1
जो ड्रिठुमि थे ड्रूरि उन खे जंहिंसां हमु आग़ोशु होसि.

१) उमिरि भी एड्री हुजे हा जेड्री मै मौजूद हुई,
2
जामु भी एड्रो हुजा हा जेड्रो मां मैनूशु होसि.

२) आरज़ू हुई सूर मां सहसें सलींदुसि रूबरू,
पर जड्रहिं पहुतो पिरी मां होश खां बेहोशु होसि.

३) लोक जे टोकुनि ते ड्रींदे टहक थी बेग़मु रहियुसि,
छो त मां तुंहिंजी नज़र में सज़ण निर्दोषु होसि.

४) राम हिन जे राह में कोन्हे लिबासनि जो लिहाज़ु,
दिलि ड्रिसी दिलिबर नवाज़ियो तोड़े कफ़नी पोशु होसि.

## (4)

तो दीद सां दिलि घाए छड्रियो, मुहबत में मस्तु बणाए छड्रियो.

१) ड्रींहं राति रहीं तूं यादि सज़ण, ब्रुधि नाले अलख फ़रियाद सज़ण
करि दांहुनि जो को दादु सज़ण, तुंहिंजी रमिज़ ई रिण में रुलाइ छड्रियो.

२) था मींहं हमेशह मुंद ते वसनि, पर नेण था मुंहिंजा रोज़ु टिमनि
छड्री आह सिड्राई दिलि दर्दनि, जिंदु जानि ऐं जेरो जलाए छड्रियो.

३) तिखा तीर बिरह जा राम लग़ा, जिनि घाव अंदरि में क़हिरी कया
जंहिं दर्दु ड्रिनो सो ड्रींदो दवा, बियनि वेज़नि दर्दु वधाए छड्रियो.

## (5)

१) घुमी कैबो ड्रिठुमि घुमी काशी ड्रिठमि, सभ जाइ सजु़ण सरदार ड्रिठुमि.
जेको मस्जिदि में सोई मंदर में, सागि़यो देवल में दिलिदार ड्रिठुमि.

२) चुपु चापु कयमि पूजा पाठ कयमि, वञी गंगा ते इस्नानु कयुमि,
सोचे समझी वेद पुरान पढ़ियमि, साम्हूं क़ुदिरत जो करतारु ड्रिठुमि.

३) बणी मोमनि पाक क़ुरान पढ़ियमि, सभु रोज़ा रखियमि ऐं निमाज़ूं पढ़ियम,
कुलु शर्त शरीअत जा पढ़ियमि, ओड्रो मुहबु मिठो मन्ठारु ड्रिठुमि.

४) वञी देवल में दिन राति रहियुसि, वञी ईसामसी जे पांदि पयुसि,
पहुची मालिक जे दरब़ारि वयुसि, पंहिंजे नेणें अजीबु इस्रारु ड्रिठुमि.

५) ढूंढे ढूंढे राम शहर ऐं बर, करे ग़ोल्हा लधी मूं ख़ासि ख़बर,
आहे ज़ाति उहा हिक साग़ी पर, उन ज़ाति जा रूप हज़ार ड्रिठमि.

## (6)

दुनिया हैरानी - दुनिया हैरानी.

१) कोई चवे आहि दुनिया माक जो क़तिरो
जंहिं में रहे जानि खे निति मौत जो ख़तिरो - दुनिया हैरानी...

२) कोई चवे प्रेमु नगर मौज मतल घर
जंहिं में रहे ऐशु ऐं अशिरत बरियो गुज़रु - दुनिया हैरानी...

३) कोई चवे आहि दुनिया जंगि जो मैदानु
सूरिहियु सो खटे सोभ जेको जुंगु पहिलवानु - दुनिया हैरानी...

४) कोई चवे आहि हीअ मातम जी नगरी
हिकड़ीअ बि घड़ीअ लाइ न आराम जी नगिरी - दुनिया हैरानी...

५) कोई न सले राम सघे राज़ु दुनिया जो
हर सुर मां निरालो थो वज़े साज़ु दुनिया जो - दुनिया हैरानी...

६) हर शख़्स जी दुनिया संदसि ख़्याल जे बराबर
उन शख़्स जे रहिणीअ जे चालुनि जे बराबर - दुनिया हैरानी...

## (7)

बेअंतु तूं इन्सान,
शाही तुंहिंजो शानु मानु, सोचि रे इन्सान.

१) शाही तुंहिंजो शानु, तुंहिंजे न को समानु,
जंहिं चोट ते रसीं, बिही न शल रहीं,
मंज़िल अञां बि तुंहिंजी मथे ऐं मथे मकानु - बेअंतु.

२) जेकी बि थी चुकें, तंहिंखां थी वधि सघे,
तो में इहो इमकानु, तो में इहो इमकानु,
जंहिंजो ज़िक्रु थी न सघे ऐं न थे ब्यानु - बेअंतु.
३) परखीं जे पाण खे, जगु तो अग़ियां झुके,
तूं साहिब जे शान, तूं साहिब जे शान,
मुल्कनि मलाइकनि रखियो तो अग़ियां तौमानु- बेअंतु.

## (8)

मां गोपी हुजां तुंहिंजी जेकर श्याम मुरारी,
सौ सौ दफा हिक ड्रींहं में तोतां वञां वारी.
१) मथुरा में बिंदराबन में ऐं गोकुल में गुज़ारियां,
सिक चाह मां दिनि राति तुंहिंजी राह निहारियां,
हिक वारि पुछीं केरु आहीं केरु कुमारी?
मां चुपु रहां ऐं कुझु न कुछां शर्म जी मारी,
मां गोपी हुजां तुंहिंजी जेकर श्याम मुरारी.
२) गोपनि ऐं ग्वालनि सां जड्रहिं मौज मचाईं,
गोपियुनि खे करे साणु तूं पियो रासि रचाईं,
क़दमनि में किरी मां चवां रखु लाज बिहारी,
तूं मूंखे उथारे चईं उथु मुंहिंजी प्यारी,
मां गोपी हुजां तुंहिंजी जेकर श्याम मुरारी.

## (9)

सिक में ओ सिक में सिकीअ खे कीन सिकाइ सोंहारा,
ड्रुखीअ खे कीन ड्रुखाइ भलारा, सुणु सुवालु मुंहिंजो हीणो हालु मुंहिंजो.
१) पंहिंजे अखियुनि में तोखे विहारियां, तोखां सवाइ कीन कंहिं ड्रे निहारियां,
जीअ में जोड़ीयइ जाइ ज्यारा - सुणु स्वालु मुंहिंजो ....
२) दिलि जी आ दिलि में कंहिं खे ब्रुधायां? सिक तुंहिंजी साईं लोकां लिकायां,
लीअड़ो लिकी पाइ प्यारा - सुणु स्वालु मुंहिंजो ....
३) दुनिया रुसे भलि हिकु तूं न रुसिजांइ, महबूब मुंहिंजा मुंहड़ो न मटिजां,
नातो अची निभाइ न्यारा - सुणु स्वालु मुंहिंजो ....

## (10)

झूले झूले झूले झूले लाल, लाल साईं उड्रेरोलाल.
१) सत्गुरु साईं शल आस पुज़ाईंदें, बाबल साईं शल पारि रसाईंदें,
नंगी आहीं नंगपाल, दीननि जो तूं दयालु, झूले झूले झूले झूले लाल.

२) असीं निमाणा ऐबनि हाणा, दूलह तुंहिंजे दर ते विकाणा,
नाहे तोखां लिकुलु हालु - भला कजांइ को भालु, झूले झूले झूले झूले लाल.

## (11)

मुंहिंजा लाल साईं - ओ मुंहिंजा सत्गुरु साईं,
सभनि जी आस पुज़ाईं - बे॒ड़ा ब॒नें लाईं.
दर तुंहिंजे तां स्वाली मोटे कीन कड़हिं भी ख़ाली लाल.

१) दुख उन्हनि जा दूरि थियनि जे तोसां लंव लग॒ाइनि,
ध्यान सां जेके तोखे ध्याइनि मन जूं मुरादूं पाइनि,
मुंहिंजा लाल साईं.

२) शरनि में आया जेके तंहिं जे तन जा ढक ढकीं थो,
पिया पनारे जेके तुंहिंजे तिनि जी पति रखीं थो,
मुंहिंजा लाल साईं.

३) प्रेम वारनि जे अखे फुले ते रांवल राज़ी थीं थो,
जोति जग॒ाइनि तिनि जी रोशनि राह करीं थो,
मुंहिंजा लाल साईं.

## (12)

सिंधड़ीअ जा ओ संत सूंहारा, कंवरराम प्यारा,
हरहंधि तुंहिंजा मेला लग॒नि था, पीली पग॒ड़ीअ वारा.

१) प्रेम पूज़ारी प्रेम सां, तोई परमेश्वर खे पातो,
ख़ल्क़ जी ख़िज़िमति में तो सालिक, ख़ालिकु सही सुञातो,
दर्द ब॒ियनि जा सांढियइ दिलि में, दीन दुखियुनि जा दुलारा.
सिंधड़ीअ जा ओ ....

२) मिठिड़ा मिठिड़ा राग॒ तो ग॒ाए, रांवल खे रीझायो,
यार कंवर तुंहिंजा ब॒ोल ब॒ुधण लाइ, हरिको भज़ंदो आयो,
इश्क़ संदो आवाज़ु इलाही, बिरह संदा वसिकारा,
सिंधड़ीअ जा ओ ....

२) जन्ता जे कल्याण जे ख़ातिरि पाणु कयुइ क़ुर्बानु,
पर लाइ जेके मरी था ज़ाणनि, तिंजो ऊचो शानु,
महिर मया जा दान दया जा, खोलियइ दिलिबर द्वार.
सिंधड़ीअ जा ओ ....

४) आहे सभ में साग॒ियो साजनु, सिक सां तो समिझायो,

ऊच नीच जो भेदु भुलाए, सभ खे गले लग॒ायो,
तुंहिंजो नींहुं नियारो जग॒ में, तुंहिंजा रंग नियारा.
सिंधड़ीअ जा ओ ....

५) दर्वेशनि जो दर्जो पातुइ, लालण सां लिंव लाए,
खिलंदे खिलंदे होतु हलियो, विएं जीवनु जोति जग॒ाए,
मरण कनां तूं अग॒े मरी वएं, सूफ़ी साफ़ु सचारा.
सिंधड़ीअ जा ओ ....

## (13)

कहिड़ो थियो गुनाहु पिरीं थिऐं परे परे,
अखिड़ियुनि खे इंतज़ारु सताए ज़रे ज़रे.

१) ककरनि जे कारोंभार में ग़ाइबु थी रोशनी,
कीअं चंड बिनि चकोर जो पल भी सरे सरे.

२) सदिक़े वञां सज॒ण सौ वारि तुंहिंजे नांव तां,
हिकु वार मूं ड॒े जे अचीं पेरा भरे भरे.

३) दिलि जो लुटे क़रारु करे बेक़रारु विएं,
दिलि में दुखे थो दर्द जो दूंहों हरे हरे.

४) नविही अचेमु नींहं जो नातो धणी करे,
अज॒ु ओचितो ई ओचितो अखि थी फरे फरे.

## (14)

आहे सज॒ण मुंहिंजो आहे, आहे, आहे
भला कीअं मां चवां मुंहिंजो नाहे - आहे सज॒णु ...

१) घुरु त मिलेई, ग॒ोलु लभेई, खड़काइण सां दर भी खुलेई,
ओ वेहु आस उमेद न लाहे - आहे सज॒ण ....

२) ओझ॒े अखियुनि खां, वेझ॒ो विनियुनि खां, दूरि न दर्द आहे वंदिनि खां,
ओ वज॒ु कीन तूं काशीअ काहे - आहे सज॒ण ....

३) हिर्फ़त सां हथि कीन केईंदुइ, प्रेम में प्रीतमु पंहिंजो थोंदुइ,
ड॒िनो ड॒सु मूंखे इहो ड॒ाहे - आहे सज॒ण ....

४) पाण ई चाड़हे, पाण ई लाहे, पाण ई ठाहे, पाण ई डाहे,
ओ मुंहिंजो साईं करे जीअं चाहे - आहे सज॒ण ....

(15)

कलंगीअ वार लाल, घिड़ी अचु घर में,

घिड़ी अचु घर में, अखियूं मुंहिंजियूं दर में.

१) मिस्कीननि ते महर करीं थो, घुरजाउनि जी झोल भरीं थो,

बेहदि तुंहिंजा भाल - घिड़ी अचु घर में.

२) तोह पंहिंजे मां तार में तारीं, भव सागर मां पारि उकारीं,

नंगु तोते नंगपाल - घिड़ी अचु घर में.

३) हलंदीअ पंहिंजीअ शाल हलाईं, मोहताजी कंहिंजी कीन कढाईं,

रखी वठिजि रखपाल - घिड़ी अचु घर में.

४) फलनि फुलनि जी भेट धरियां थी, पंजिड़ा ग़ायां जोतियूं जग़ायां,

घोरियां मोतीनि थाल - घिड़ी अचु घर में....

कलंगीअ वार लाल, घिड़ी अचु घर में.

(७५ रमज़ान)

जेड्रियूं मूंखे जबल जालण आयो, दमु न मालिक खां कजाइ धार.

१) उठ थी सुञाणा ड्राघा ड्रेरनि जा, कोड्रूं सुञातमु करहा केचियुनि जा,

मारियो वञनि था विछोड़ियो वञनि था, कान ब्रुधी सूनि का नोड्रे जी तंवार.

२) निंड निभाग़ी आहे निदोरी, मारियुसि तुंहिंजे लकनि लोरी,

पोइ पिरीं लइ झिज़ुण झोरी, जत ड्रेई वया झंग झोंगार.

३) जिनि सां मूं घारियोसे गड्रु गुज़ारे विया, चोरीअ चड़्ही विया कीन चिताए विया,

जत ज़ोरावर मुईअ खे मारे विया, निधर खे तो बिनु करे वया धार.

४) जिनि सां मां आहियां नेंहं निवाज़ी, रमज़ान चवे मुंहिंजो रुहु वेराग़ी,

कड्री अची मिलंदा महरम सांगी, मिलिजि तूं मुईअ जा मुहरम यार.

(2)

मन काढो ड्रंहं मारुनि, मुईअ खे मान मिलनि

माड़ीचनि जी मुहबत, आहे काढो ड्रंहं मारुनि.

१) सरितियूं सारियां सिकां, सांगीअड़नि खे सदा

वहम विछोड़ा विया, ब्रनि पई वाई वदा

उमिर, वड्रो आसरो अथमि उमेदूं अदा

वरंदसि वारे विखूं, वेंदसि पंहिंजे वतन.

२) जीउ खे झोरी झिज़ुण, झांगीअड़नि लाइ जीअरे
तिनि माड़ियनि मंझि मारुई, माइट सारियूं मरे
आह ब्रुधी हंद आया, जेकस वाइड़ा परे
कल सुणायां कंहिंखे, ड्रई ड्रोरापो ड्रुखनि.

३) दिलि खे दिलिदारियूं ड्रई, दमि दमि दोड़या
दिलि परचायां, ना परचे, तोड़े परिचायां
निकणा नीर नदियूं, नेण भरियो थी नायां
नंगु निबाहे अदा, शल मुईअ खे नाल नियनि.

४) हे! जे हादिसा, करियां हथिड़ा हणी
घुरु जा ख़ावंद जी ख़ासी, वाहद खे जा वणे
बाब बंदीअ हिन बेकसि, जेका सिर ते बणे
से लोड़ीदियूं लाशक लिखिया कीन लहनि.

५) वउं क़ासिद कर वाई, वट वेड़ीचनि वेई
ख़त जी ख़ासी ख़बर, ख़तु पहुचाइजि पेही
चवे रमज़ान चिटा, लफ़्ज़ पड़हनि था ड्रेही
दर्द मुईअ जे दिलि जो, मन पुराणो पड़हनि.

## (७६ रमज़ान वाढो)

आऊं का बर में भुली, पहुचां शल पिरियुनि
क़ासिद चइजांइ सज़णनि ....

१) हिकिड़ो भउ त भिटुनि जो ड़े मुंहिंजा साईं,
ब्रियो थमु ख़ौफ़ु मिरुनि - आऊं का बर ...

२) छली जा पियसि छपिरें ड़े मुंहिंजा साईं,
ककर छांव न कनि - आऊं का बर ...

३) रमज़ान वाढा चवे वाट ते ड़े मुंहिंजा साईं,
विछिड़ियल मुहब मिलनि - आऊं का बर ...

## (७७ रतन)

मिठा मुल्कनि में मश्हूरु तूं, ब़ाझ भरियो आहीं ब़ली,
दाता तुंहिंजे दरब़ारि में मूं खाली आ झोली झली.

१) नंगीअ खे ढकिजाइ, ऐब न ड्रिसिजाइ, मालिक मूं मिस्कीन जा,
मनहड़ो न मटिजांइ, कष्ट तूं कटिजांइ, गूंदर ग़म ग़मगीन जा,
हाक ब़ुधी आहियां हली, ज़ाए खां आहियां ज़ली, दाता तुंहिंजे ....

२) हाल मुंहिंजे जा महुरम तोखे, ख़ावंद सभ जी ख़बर आ,
वारु रतन कीअं थींदो विंगो तंहिंजो, जंहिंते तुंहिंजी नज़र आ,
क़िस्मत जी खोलिजि कली, वारिसु वड्रो आहीं वली, दाता तुंहिंजे ...

## (2)

१) जिनि लग़ाई जान जी हीअ बाज़ी आ, तिनि आशिक़नि खे यार ग़णिती छाजी आ?
जिनि खई सच जी सज़ण ताराज़ी आ, तिनि आशिक़नि जी यादि हरदमु ताज़ी आ.

२) संसारु ज़ाणे कूड़ी बस्ती, जिनि अलखु ध्यायो अलस्ती,
सीना साफु कयाऊं, ड्रिसु मस्तनि जी मस्ती,
लोक एलाज़ी आ, तिनि आशिक़नि ....

३) करे तरकु अमीरी शाही, काणि कडनि न कंहिंजी काई,
वरी ख़ावंद खेनि ड्रिनी आ, सदा बेशक बेपरवाही,
छाजी मुहताजी आ, तिनि आशिक़नि ....

४) जेके कुसिजण खां न कुर्कनि, से त मर्द रतन भलि मुर्कनि,
से त आशिक़ अर्श ते, भलि चांडोकियुनि जियां चिमिकनि,
रबु ख़ुदि राज़ी आ, तिनि आशिक़नि ....

## (3)

दिलि ड्रिजे दिलिवारनि खे, कहिड़ो क़द्रुर पवंदो बे क़द्रुरनि यारनि खे.

१) कयो साहु सुहिणी सदिक़े हाइ,
महर जे मुहबत में डिनी कान दरियाह धधकी, दिलि ड्रिजे दिलि ...

२) लैला मजिनूअ निबाहियो हाइ,
मुए खां पोइ भी क़बर में आवाज़ु इहो आयो, दिलि ड्रिजे दिलि ..

३) हंई ससुई सिर जी सटी हाइ,
पुन्हल पुन्हल कंद्री वेई जवानी झंगलनि झटी, दिलि ड्रिजे दिलि ..

४) आहियूं रतन सभु रब जा हाइ,
दुनिया मूं ड्डिठी जाचे सभु माण्हू मतलब जा, दिलि ड्डिजे दिलि ..

(4)

ड्डींदो अमीरी या फ़क़ीरी, आख़िर कुझु त ड्डींदो,
असांखे करिणो आ गुज़ारो, असांखे करिणो आ गुज़ारो, आख़िरि कुझु ...

१) वग्गा या वेस ड्डींदो, कंबलु या खेसु ड्डींदो,
ड्डींदो लंगोटी या ब्बुंगोटी, आख़िरि कुझु ...

२) थाल्हियूं या थाल्ह ड्डींदो, ठिकर या थांव ड्डींदो,
ड्डींदो कटोरो या कटोरी, आख़िरि कुझु ...

३) देस परदेस ड्डींदो, छपर या छांव ड्डींदो,
ड्डींदो सुम्हण जे लाइ धरती, आख़िरि कुझु ...

४) ड्डुधु या खीरु ड्डींदो, मिठायूं माल ड्डींदो,
झोलनि में जाम ड्डींदो, ढोढो या दालि ड्डींदो.
असांखे करिणो आ गुज़ारो, असांखे करिणो आ गुज़ारो, आख़िरि कुझु ...

(5)

सिज उभिरि न तूं भलि राति हुजे,
मुंहिंजी मुहबनि सां मुलाक़ात हुजे.

१) जे तूं उभरंदें थींदो दूरि सज्जणु,
ईंदी मायूसी वेंदो मुशिकणु,
जिनि खां जानी जुदा तिनि खे हैफु जीअणु,
इहा बिरह संदी शल बात हुजे, सिज उभिरि न ...

२) जिनि लाइ पंध कया हुयमि पीरनि ते,
बासूं बासियूं हुयमि फ़क़ीरनि ते,
तिनि कई आ दया दिलिगीरनि ते,
इहा क़ुर्ब जी क़ाइमु ज़ाति हुजे, सिज उभिरि न ...

३) मस आया अङण कुझु दमु त पटिनि,
चुमां पेर तिन्हीं जा मन परिचनि,
हीअ निधर निमाणी शाल नियनि,
इहा साणु रतन सौग़ात हुजेनि, सिज उभिरि न ...

## (6)

वञी पउ क़दिमें किरी ओ ग़ाफ़िल बंदा!

दाता जे दर, सस्तो थी सौदो न थी मंतिज़ुरु.

१) अलाजे कहिड़ो तुंहिंजो भाग़ु खुलियो थी, जानिब! जानिब! चोलो मिलियो थी,

विषियुनि में विञाए वेठें कयुइ न क़दुरु, वञी पउ ...

२) उमिरि विञायइ कचनि कमनि में, चोरियुनि ठग़ियुनि दलिबनि जे धंधनि में,

सफ़र जो बि कोई खंयुइ न समरु, वञी पउ ...

३) रतन रामु चवंदें पतण पारि थींदें, तिखीअ तार मां भी तरी तुरुतु वेंदें,

धार होसिलो तूं न थीउ दरिबदरु, वञी पउ ...

## (७८ रखियल)

करि वाहगुरु हरिनाम, बाज़ी यार बनाई हे.

१) मड़ही महेतां में एही वेसां, सिदक़ सेती सिरु न धरेसां,

सुबह पड़िही सुबहां, सुरकी राम पिलाई हे.

२) साईं लाक सड्डावे सोई, जेताई मरजाई जावे,

सिर करणु क़ुर्बान, मुश्किल बात अणाई हे.

३) हसि हसि मेरा सत्गुरु आया, शाह रखियल नूं मुखड़ा विखाया,

लथा दिलियां दा दाग़, रांझन रमज़ रलाया हे.

## (७९ रंद)

वधायो विरह खे वेज्ञिनि, नको था फैज़ कनि फेणा!

१) बिरह जी बाज़ ब्रोलाए, चंबनि में वयो चाए,

फटियो फाड़ियो कपियो खाए, तड़हिं थियासीं झिज़ी झीणा.

२) मिठी मुहबत जा मुर्के, ड्रिनी आ सोज़ जे सुरिकी,

तबीबनि जे ब्रुर्के, ब्रुकीअ तंहिं सां थिया ब्रीणा!

३) सुणी मुंहिंजो अर्ज़ु आज़ी, खिली तियो रिंद ते राज़ी,

भग़ी दुश्मन संदी बाज़े, हणे से खर कयईं हीणा.

## (८० रुक्मणी चइनानी)

नतूं रहंदे न मां रहंदसि न, रहंदो को विड़िहूं छा लाइ!

फ़क्त हिक यार जो नालो वञी रहंदो, विड़िहूं छा लाइ!

१) मुहबत ड़े, मुहबत वठु, मुहबत में मज़ो आहे,
इहोई आहे दुनिया में सचो सौदो, विड़िहूं छा लाइ!
२) न करि अभिमानु तूं एड़ो, हयातीअ जो बक़ाउ कहिड़ो,
मिटीअ जो हीउ मकानु आहे, डही पवंदो, विड़िहूं छा लाइ!
३) भरे पीउ प्रेम जा प्याला, दुनिया जो ग़म वरी छाजो!
चकी चाड़िहिज, थिए जंहिंमां नशो ख़ासो, विड़िहूं छा लाइ!
—
न तूं रहंदे.....

## (८१ राधा)

इश्कु असांखे आहे खोड़, ब्रिए कंहिंजी नाहे लोड़.
१) दर्द जो हिकु दफ़्तरु जे पढ़िहियोसीं,
काड़े कंदासीं किताब करोड़ - इश्क़ असांखे....
२) मुहबती हिकु महिबूब जे मिलियो,
ब्रियनि सां कईसीं आ हथ जोड़ - इश्क़ असांखे....
३) सिक जी खाधमि साग़ सां मानी,
ब्रुनि पिया ब्रिया ताम ऐं ब्रोड़ - इश्क़ असांखे....
४) कुर्ब जे कचे धाग़े ब्रधासीं,
नाहकु विधा थव ब्रिया हीनोड़ - इश्क़ असांखे....
५) राधा नाउ साईंअ जो मिठिड़ो,
दमि दमि आहे दिलि में दौर - इश्क़ असांखे....

## (८२ रांझन)

आई आहियां तुंहिंजे दरि, झोली मुंहिंजी भरि,
कयमि ड्रोह जेके, उहे माफ़ खणी करि.
१) वरिहियनि खां मां आहियां वेग़णी, दाता दुखनि जी कंदें तूं पुज़ाणी,
ब्रान्हीं आहियां तुंहिंजी, निमाणीअ ते नज़र करि - आई आहियां ..
२) क़िस्मत मुंहिंजी केरु बणाए, अज्ञा त अग़िते छाहे अलाए,
ओट अथमि तुंहिंजी, त मुंहिंजी पाणही सरि-आई आहियां ..
३) सुवालिणि आहियां, आस पुज़ाईंदे, पंहिंजे गंज मां कुझु त ड्रियारींदें,
रांझन चवे राज़ी थीउ, त खिलंदे कुड़ंदे वञां घरि - आई आहियां ..

## (2)

मुंहिंजी ब्रेड़ी अथई विच सीर में, पलउ पायां थी मां ज़िंदह पीर ते,
गुल चाड़िहियां थी ज़िंदह पीर ते - बासूं बासियां ...

१) जोतिनि वारा लाल उडेरा, कनि था तो दर भेरा,
तुंहिंजी महर अमीर फ़क़ीर ते - पलउ पायां .....

२) आऊ तुंहिंजी ब्रान्ही, तू मुंहिंजो साईं, बे वाहनि जो वसीलो तूं आहीं,
मां त जीआं थी तुंहिंजी उकीर ते - पलउ पायां .....

३) रांझन चवे हीअ आस आ मुंहिंजी, हिमथ डे कयां शेवा तुंहिंजी,
छो जो नाहे भरोसो सरीर ते, पलउ पायां थी, मुंहिंजो ब्रेड़ो ...

## (3)

सिक सचो आहे त पिरीं पाणेही ईंदा,
कंदा महर मूं ते, अची सार लहंदा.

१) ब्रान्ही असुल खां आहियां उनहनि जी, ग़रज़ नाहे मूंखे काई ब्रियनि जी,
रब राज़ी आहे त ग़म लही वेंदो, सिक सची ....

२) कयो अथम सभु साईंअ जे हवाले, सभिनी खे जेको पियो सो पाण संभारे,
जपि तूं बि तंहिंखे, कम पाणेही थींदा - सिक सची ....

३) दनिया मां कड्हिं ढउ न थींदो, कबो त्यागु जड्हिं, मज़ो तड्हिं इदो,
राज़ी रहु रज़ा ते, रांझन कुझु त डींदा - सिक सची ....

## (4)

असांजा कारिजि करण झूले लालु आयो आ, अमरलालु आयो, उडेरोलालु आयो.

१) लक्ष्मी नारायण नारदमुनि आया, साधनि संतनि पेरा घुमाया,
दुखिड़ा लाहिण दातारु आयो आ, असांजा कारिजि ...

२) राणियूं बि आयूं, ब्रान्हियूं बि आयूं, हथिड़ा जोड़े झोलियूं फैलायूं,
महर जा मींहड़ा वसाइण आयो आ, असांजा कारिजि ...

३) पीर फ़क़ीर ऐं फ़रिश्ता भी आया, रांझन लाल अची भाल भलाया,
आसूं सभ जूं पुज़ाइण आयो आ - अमरलालु आयो, झूलेलालु आयो,
असांजा कारिजि ...

## (5)

अचु त ओरियां तोसां हालु मुंहिंजा सुहिणा साईं,

सुबह तोड़े शाम, मूंखे यादि हिकु तूं ई आहीं,

१) जंहिं ते सजुण तुंहिंजी रहिमत थींदी,
तंहिंजी भला कीअं न क़िस्मत ठहंदी,
मूं ते बि महर जा मींहड़ा वसाईंदे सदाईं - सुबुह तोड़े शाम...

२) दर्दु ड्रिनो थी दवा भी ड्रींदे,
रुठलु जे आहीं राज़ी बि थींदे,
वसि आहियां तुंहिंजे साईं, जीअं तूं हलाईंदे - सुबुह तोड़े शाम...

३) दीदारु ड्रे ते के घड़ियूं तोसां घारियां,
रांझन चवे तोखे अखियुनि में विहारियां,
हिक भेरो अङण मुंहिंजो आउ एड्रो छो सताईं - सुबुह तोड़े ...

## (6)

लाल जा झाटी पलउ पायो झूलेलालु आयो,
झूलेलालु आयो, उड्रेरोलालु आयो.

१) राखो थींदो जोतियुनि वारो, सारे जगु खे जंहिंजो सहारो,
वठी त तुंहिंजो पनारो, पंहिंजो भागु बणायो - लाल जा झाटी...

२) अहिड़ो असांजो दुल्हु आहे, हिक लहिज़े में थो दुखिड़ा लाहे,
सभ जूं आसूं थो पुजाए, मतां वेल विञायो - लाल जा झाटी...

३) जेके आया सुवाली बणिजी, साईंअ जे दरि से वया अघजी,
ख़ाली बि वया भरिजी, रांझन भले आज़मायो - लाल जा झाटी...

## (7)

वसु न हले बाबा बेवसु आहियां, तुंहिंजी महर खपे,
तुंहिंजी ब्राझ खपे, ब्रियो कुझु न थी चाहियां - वसु न हले ...

१) जीएं रखीं बाबा मर्ज़ी तुंहिंजी, हुजत न तोसां हलंदी मुंहिंजी,
जाणीं थो सभकी, जाणीं थो सभकी,
जाणीं थो सभकी चई छा बुधायां - वसु न हले ....

२) ख़ाली भरीं, भरिया ख़ाली करीं थो, ख़बर नाहे कंहिंसां राज़ी रहीं थो,
बेअंतु आहीं बाबा बेअंतु आहीं,
बेअंतु आहीं, तुंहिंजो अंतु न पायां - वसु न हले ....

३) जेके पिया साईं तुंहिंजे पनारे, बिगिड़ियल कार्ज छड्डियइ तिनि जा संवारे,
तोड़ निभायां, तोसां तोड़ निभायां,
तोड़ निभायां, तड्रहिं रांझन सड्रायां - वसु न हले ...

## (8)

दयावानु आहीं, दयावानु थींदें, महिरबानु आहीं, साईं महिरबानु थींदें

१) आहियां अणज़ाणु तोखे कीअं मां रीझायां,
महरि जी नज़रि करि वाटूं थी वझायां,
मुंझियल खे तूं मालिक, सईं राह ड्रींदें - दयावानु आहीं ...

२) तुंहिंजो शानु इलाही तूं शहनशाहु आहीं,
बाज़ीगर बणिजी वेठो सभ खे नचाईं,
कंदे क़्यासु कोई या अञां भी सताईंदें - दयावानु आहीं ...

३) दुनिया जे धंधनि में पियो आहियां फासी,
प्रभू तुंहिंजे प्यार जो आहे रांझन प्यासी,
बिगड़ी तक़दीर मुंहिंजी तूं ई संवारींदें - दयावानु आहीं ...

## (9)

आहीं महिरबानु साईं मिलियो ड्रसु आहे, तुंहिंजी थोरी रहमत वड़ो वसु आहे.

१) साधू संत केई तोखे ध्याइनि, के राम नाम शिव जी धुनी लग़ाइनि,
जिनि जपियो तिनि मिलियो राम रसु आहे - आहीं महिरबानु...

२) राजा महाराजा सभ ओट तुंहिंजी वठनि, राणियूं राजु कनि से भी तुंहिंजे दर ते झुकनि,
जेकी झुकिया तिनि खे, कहिड़ी कसु आहे - आहीं महिरबानु...

३) असीं आहियूं भुलियल, मतां तूं भुलाईं, तुंहिंजो दरु सख़ा जो खुलियलु आ सदाईं,
क़ुर्ब करि रांझन ते, तुंहिंजो जसु आहे - आहीं महिरबानु ...

## (10)

अलाजी छा में राज़ी आ, अलाजी कंहिंसां राज़ी आ,
कोई राजा कोई फ़क़ीरु, बाज़ीगर जी बाज़ी आ.

१) कंहिंखे लख ड्रई थो लालु करे, कंहिंखे कख ड्रई कंगालु करे,
ड्रोह असांजा कीन ड्रिसे, शल पंहिंजी महरि करे - अलाजी...

२) पीर पैग़म्बर केई विया, वेंदो हरिको सफ़रु करे,
हाकिम हुकुम हलाइ विया, विया ज़ालिम ज़ुल्मु करे-अलाजी..

३) तोबह करि ऐं तकबरु छड्रि, करि निविरति ज़रे ज़रे,
कंहिंजे लइ थो कूड़ करें, वेंदें ख़ाली हथिड़ा करे - अलाजी...

३) ड्रकंदो रहु हरिदमि उनखां, जो कंहिंखां कीन ड्ररे,
रांझन रखु यारी उन सां, जो दमि दमि क़दुरु करे - अलाजी...

## (ज़)

## (८३ ज़ेरक)

रूअंदे ड॒िसां वाटां, इझे थे वञनि मुंहिंजा जोगी॒ जानी!

१) मुरिलियूं वज॒ाए, मस्तु बनाए, नांगा नचाए, दूद दुखाए,
ग़म जूं ब॒ारे लाटां - इझे था वञनि ....

२) जीअरे करे विया मां सां जुदाई, वण वण सां आहे मुंहिंजी वाई,
रूअंदे रूअंदे पई फाटां - इझे था वञनि ....

३) ना कोई ओही, न कोई वाही, फ़िक्र फ़राक़ जी ग॒ल में फाही,
ड॒ींहं कूड़ा काथे काटां? - इझे था वञनि ....

४) ज़ेरक ज़ोर उन ज़ोर ज़ोर वर, दिलिड़ी खसे वया दोस्त दिलिदार,
नेण वसाइनि छाटां - इझे था वञनि ....

## (८४ ज़मान शाह)

अबाणा अला जे वेठा छो विसारे, पन्हवारनि खे पलि पलि, संदमि साहु सारे!

१) भिटुनि साणु बराबर बंगला न भायां, थियमि लोई लीड़ूं, लिङनि तां लाहियाँ,
वरी वाग॒ वाली, वतन मुंहिंजे वारी!

२) उमर! ड॒े इजाज़त, आहियां मां उदासी, वञां मुल्क मोटी पलर जी प्यासी,
विछोड़ो वेड़िहीचनि, मियां मूंखे मारे!

३) वग॒र खां विछोड़े, छिनी कयुमि छोरी, खणी आएं खूह तां, करें ज़ालिम ज़ोरी,
संघारनि सिवा हिति घड़ी दिलि न घारे!

४) धणी बख़्श मूंखे, तूंमन जूंमुरादूं, ज़मान शाह करियां मां अबाणनि सांऐदूं,
वरी ड॒ेहु ड॒ातर, ड॒ुखिअ खे ड॒ेखारे!

## (2)

अगू॒णो मज़ो नाहे गुलशन गुलनि में,
न ब॒ोली ब॒ुधां थो चीहनि जी चमन में.

१) भज॒ी भंवर विया ऐं क़मरी कुछे थी,
रखे सोज़ सागि॒यो न बुलिबुलि सुखनि में.

२) अजीबनि जी अज॒ु काल्ह आदत अढंगी,

किरोड़े त कूड़ा सचो को सवनि में.

३) क़रीबनि में कुल्फत घणो जंगि झेड़ो,
वधी वेई आहे दग़ा दोस्तनि में.

४) फिरियो कोन आहे ज़मानो ज़मान शाह,
थिया क़ल्ब कारा मुहबत न मन में.

## (स)

## (८५ सचल (सरमस्त))

असुलु असांजिड़ो आहे, नंग ब॒ारोचल तोते.

१) छड॒णु मुनासिब नाहे, नंग ब॒ारोचल तोते.

२) ज़रिड़ो जंहिंखे ज़ौक़ तुंहिंजे जो, छपर तंहिंखे छाहे?

३) जाड॒े घुमाइनि ताड॒े घुमूं था, ड॒ोरी वधी तो ड॒ाहे.

४) जेही तेही यार अव्हांजी, छड॒ण लाइक़ु नाहे.

५) थरनि बरनि में यार थकीअ खे, रसु कोहयारल काहे.

६) साहु सचल जो दर तुंहिंजे ड॒ांहं, हड॒ि न आसरो लाहे.

## (2)

निमाणी दा नंगड़ा, जीवें तीवें पालणा.

१) मेरी आहियां मंदी आहियां, बेशकि बंदी आहियां,
ढकीं मुंहिंजा ढोलणा, मुंहिंजा ऐब न फोलणा.

२) पई हां पनारे, लग॒ी आहियां लारे,
जोग॒ी नाल जालिणा, वल नहीं आवणा.

३) यार सचल तूं, लथड़े कशाले,
घूंघट खोलणा, ब॒ह ब॒ह ब॒ोलणा.

## (3)

तोसां मुंहिंजी सुहणा साईं, रहिजी अचे शल.

१) आऊं छा ज॒ाणां इश्क़ मंझारूं, बिरह वालिड़ा बार.

२) तरफ़ न ब॒िए कंहिं ख़्याल रुंभायां, तुंहिंजी सदाईं तार.

३) हूंदें सदाईं गड॒ु असां सां, नेणें वहायम नार.

४) ब॒ांहं सचल जी सुहिणा साईं, परती अथव सरदार.

## (4)

आऊ ब्रान्ही तूं साईं, पातुम पांद गिचीअ में कपिड़ो.

१) तरफ़ां तुंहिंजे यार प्यारा, कांग अची मन काईं.

२) नाऊं मौला जे महर पवई का, थोरा मूंते लाईं.

३) रोज़ अज़ल खां तुंहिंजी आहियां, ग़ैर न मूंखे भाईं.

४) हिकिड़ी साइत अङण सचल जे, पेर मुबारक पाईं.

## (5)

हिन ग़रीब जो हालु, तोखे मइलूम आहे.

१) सदिक़े कंदसि सिरु साईंअ तां, ब्रियो सभ मिल्क ऐं मालु.

२) दोस्त अव्हां रीअ देस में, जीअण आह जंजाल.

३) चई बुधायां केतिरो, अरियाणीअ अहिवाल?

४) मञु सचल जो सपिरीं, साईंअ लगु सुवाल?

## (6)

अव्हीं पंहिजो पाण आहियो, नंगु निबाहिण वारा.

१) हीअ निमाणी ऐबनि हाणी हथु मथिऊं मूं न लाहियो, नेण वहाइनि नारा.

२) आशिक़ संदुइ आहिनि उदासी, चाह मंझऊं से चाहियो, विरह कया वेचारा.

३) मेलाईअ जो मशताक़नि सां, ठाह को सघिड़ो ठाहियो, मरतां करनि निज़ारा.

४) असुल लाकूं आहिनि अव्हां ते, पाण पिरीं परिचायो, कम सचल जा सारा.

## (7)

मूं में ऐब अपार, सज़ण तुंहिंजी ब्रान्हड़ी आहियां.

१) ब्रान्हनि जी आउ ब्रान्ही आहियां, सारी सभ ज़मार[1].

२) हुआं हमेशह होत सां, शाल न थियां मां धार.

३) ओछणु[1] कंदसि अखियूं, पत्थर[2] कंदसि वार.

४) पाण तोइ तूं सदिक़े, सिसी साण[2] कपार.

५) साहु सचल जो सोघो कयड़ो, रखी यारानो यार.

## (8)

तूं आहीं साहिबु सूरत जो, हीउ आहे ग़ुलामु तुंहिंजो,

आहे ज़ोक़ शोक़ सुहिणा, मूंखे मुदाम तुंहिंजो.

१) जे आहिनि असुल अव्हांजा, से ना विसारिजो मयां,

मूंते आहे मुक़ररु, साईं सलामु तुंहिंजो.

२) रातो ड्रींहां रुइण में, हींअड़ो उदासु हुयड़ो,
रहबर आणे रसाणियो, प्रीतम पयामु तुंहिंजो.

३) दिलिगीर तूं मतां थीएं, करि दूर दर्द खे मयां,
अवलि आख़र असां वटि, हूंदो मुक़ामु तुंहिंजो.

४) रदि करि फ़ना फ़िक्र खे, उमीदवारु थी रहु,
हिति हुति यक़ीन ज़ाणिजि, आहियां इमामु तुंहिंजो.

५) तूं आहीं असुल असांजो, आहियूं असीं से तुंहिंजा,
आहे क़बूल कुली, सचल कलाम तुंहिंजो.

## (9)

कलंगी वारा यार जीवें लख थीवें,
जीवें लख थीवें, सदा जुग जीवें.

१) तेड़े कारण मैं जो करेसां, सूरत दा सींगार.

२) मुल्कु सीराए मिल्क तुसा ड्रे, कियाजे तख़्त हज़ार.

३) सभ सियालियां थियनि तो सदिक़े, जा केती हीर शिकार.

४) मीं तां कोझी, कम भी कोझे, तूं सूरत दा सरदार.

५) सचल निमाणा दर तेड़े ते, रोअंदा ज़ार व ज़ार.

## (10)

वाह सज़ण साईं ऐद करायव, नेणें ख़ूबु निज़ारे जे.

१) ख़ुशा कयव दिलि यार अचण सां, सार लधइ सिकवारी जे - वाह सज़ण ...

२) अखियुनि में इस्रारु ड्रिठोसीं, विच कजल दे धारी जे - वाह सज़ण ...

३) यार सचल खे पंहिंजो कयड़व, लथी गुलामी विचारे गे - वाह सज़ण ...

## (11)

काल्ह असां सां तो कयूं कयूं, यार सज़ण गुझियूं ग़ाल्हियूं.

१) थियनि पुराणियूं कीन की, निति से आहिनि नयूं नयूं. काल्ह असां ....

२) रहियूं आहिनि रूह में, चड़ियूं अव्हां जे चयूं चयूं काल्ह असां ....

३) कीन विसिरनि साह खूं, उहे ता पाड़ण पयूं पयूं काल्ह असां ....

४) मिठियूं ग़ाल्हियूं तव्हांजियूं हिन सचूअ साह सयूं सयूं काल्ह असां ....

## (12)

भेनरु ही भंभोर असीं छडे वेंदासूं.

१) वसु न आहियां पंहिंजे, पूरनि कयड़ा पूर,
हिति रती न रहंदासूं.

२) जाइ अकुल जी नाहे का, इश्क़ डेखारियो ज़ोर,
उहो वठी वेंदासूं.

३) पोरिहियो कंदसि पर जो, छडे ब़ी तक तोर,
असीं जाकीं जीअंदासूं.

४) काकियूं वञी केच में, लाहे हींअ जो होर,[1]
डुख डोरापा डींदासूं.

५) सचल डिठे सजु़णें, शोक़ मचायो शोरु,
तिनि जे पखे[2] पहुंचंदासूं.

## (13)

अवल खाउ ग़ोतो थीउ गुमु - पिछे मारि शाही दा दमु.

१) अचणु इनहीअ में पिड़ में, कचनि कोन्हे कमु.

२) शादी ग़मी आम खे, ग़ाज़िनि नाहे ग़मु.

३) पो तसौर इनमें, शाग़िल सां दा दमु.

४) सचल चवे इतहीं, तूं क़ाबू रखु क़दमु.

## (14)

पांधी मुंहिंजे यार खे, सारे चइजि सलाम.

१) चई मुका हव केतिरा, प्रित बारा पैग़ाम.

२) अव्हांजे अचण जा, पवनि हुल हंगाम.

३) मुहबत मुंहिंजी रोज़ अजलि कंनूं, तोसां मुहबत मुदाम.

४) सचल जेहा केतिरा, तुंहिंजे दरि ग़ुलाम.

## (15)

पांधी मुंहिंजे यार खे, सारे चइजि सलाम.

१) कड़हिं कंदे यार असां डे, अचण जा इंजाम?

२) इश्क़ अव्हांजे शोरु मचायो, हुल पवनि हंगाम.

३) ब्रान्हीं गोली यार सज़ण जी, मुल्ह ख़रीद मुदाम.
४) रोज़ अजल कंनूं सचल, साईं सदैव साम.

## (16)

जंहिं मीहर मलायो, तंहिं घड़ी तां घोरी आहियां.
१) तंहिं कुंभर तां क़ुर्बान थियां, जंहिं कचो पचायो.
२) अव्हीं जेकस जेड्रियूं, इहो भेलो[1] थियूं भांयो.
३) तंहिं मूंखे यार कुननि मूं, मंझूं लहरुनि लंघायो.
४) उनहीअ दाब्र दिले जे, सारो दरियाउ दब्रायो.
५) पाणु पंहिंजो सरितियूं, अव्हीं घोरे घुमायो.
६) असुल आणताररूअ जो, आहे साहड़ ते सायो.
७) सेणाहनि जे सरितियूं, मूंखे लारे न लायो.
८) साहिड़सरी में तो वटि, सचल उकिरिऊं आयो.

## (17)

ग्रली ग्रली मूं थे ग्रोली यार, ग्रली ग्रली मूं थे ग्रोली.
यार सज़ण तुंहिंजे कारण - ग्रली ग्रली ....
१) छड्रे लाग्रापा लोक जा, असां ता ब्रान्हप ब्रोली.
२) थिंयसि दीवानी दोस्त अव्हां लइ, करे चेहाड़ियूं चोली.
३) अचे अचानक अंदरि असांजे, हुब मचाई होली.
४) असुल लाकूं आहे अव्हांजी, सचल ग़रीब हीअ गोली.

## (18)

राति मुकम रोई, सारे सलाम संघारनि ड्रे.
लिखी काग़ज़ु मूं विधो, पखीअ खे पोए.
१) अखियूं अबाणे पार ड्रे, बीठियूं झड़[2] झोई.
२) अबाणनि जे आसरे, लीड़ूं थियमु लोई.
३) वंडनि विर्छनि पाण से, ड्रौंअरनि जे ड्रोई.
४) के ड्रींहं ढोयमि खेत सें, आब भरे ओई.
५) अव्हां ब्राझूं कोन को, कल लहे कोई.
६) मारूं मिलंदो मारई, सचल खे सोई.

## (19)

कंहिंखे ग़ाल्हि सुणायां, मेहर संदी मौज़ जी,

१) सिक सांवण कया साह खे, छोली ता न छुपायां.

२) दुआ करीजो जेड्रियूं, संदनि नींहुं निभायां.

३) ग़ाल्हि पिरियुनि जे गुझ जी, ब्रियनि खे कीअं बुधायां.

४) वहे सीर सरीर में, लहरूं ता न लिकायां.

५) सचल साहड़ साह खे, ओड्रो ई थे भांयां.

## (20)

ब्रोलि पखी परदेसीअड़ा, तूं कहिड़े देसऊं आवंदएं.

१) हथ विचि मुर्ली पेरनि घुंगरूं, गली गली तूं बजावदएं.

२) उथूं आयाहीं पेरें लंगड़ा, इथां त पांवर पावदएं.

३) जड्रहां तूं आयूं ढूंढ महल विच, तड्रहां तूं क्या कुझु खावंदएं.

४) जड्रहिं तूं आयूं ब्रालापिणि विच, हर किसी नूं भावंदएं.

५) जड्रहिं तूं आयूं मद घर दे विच, आदि अंत भुल जावंदएं.

६) लाल मोहन लज्ज नहीं आवंदी, ज़रा नहीं शर्मावंदएं.

७) सचल ज़ाति सिफ़ाति दे विच, सहजऊं आइ समावंदएं.

## (21)

मूंखे त मीहर यार जा था पलि पलि पूर पवनि,
पलि पलि पूर पवनि, मूंखे सारियो सूर वञनि.

१) यार लख हज़ार, माण्हूं महिणा था ड्रियनि,
झोलीअ पाइ झलिया, मन ब्रिया ब्र टे भी ड्रियनि.

२) तन में ताकियूं मन में मेख़ूं, हयूं हबीबनि,
उखेलणु अहंजूं, जेके विधियूं वींझारनि.

३) सचल सोज़ रोइनि रोज़ु, इहा आदत आशिक़नि,
जिनि खे इश्क़ अल्लह जो, से कीअं सुख सुम्हनि.

## (22)

भोल न ब्रिए कंहिं भुल, तूं त आदमु नाहीं.

१) लिको थो लातियूं करीं, जीअं बाग़ अंदरि बुलिबुलि.

1 2

२) मलकनि थे सजदा कया, वाह मिटी तुंहिंजो मुलि.

३) केरु टिपाए केरु कुड्राए, दोस्त बिना दलिदलि.

1 2

४) अहद मंझारूं अबदु सड़ाएं, हुएं त पाण असुलि.

3

५) सचल चवे सचु थी आएं, कोने तुंहिंजे तुलि.

## (23)

जंहिंखे इश्क़ मौला जो नाहे, सो ज़णु झंगु जनावर आहे.

१) वहम इरादा ख़्याल ब्रिया विचि, ग़ाह बिरह जी ग़ाहे.

२) हू जो कोट हुअण जो, डोड़ पहिरींअ सां डाहे.

३) आशिक़ु तड़हिं कोठिजे, जड़हिं सभु लाग़ापा लाहे.

४) दोस्ती ब्राझूं दोस्त जे हड़, ठाह न ब्रियो को ठाहे.

५) मुहबत जे मैदान में, से कामिल पवनि काहे.

६) सचल साहिब सिक वारनि खे, चाह मंझां पियो चाहे.

## (24)

जे हुईं आशिक़ु त बरसर, मींहुं मुहबत जो वसाइ,
साह जो सांगो करीं, ता पेर हिन पिड़ में न पाइ.

१) पाण करि क़ुर्बानु करि, हीअ दम हणण जी नाहि जाइ,
आउ अदा ऐतबारु करि, आहे होशु नींदड़ हीअ हवाइ.

२) रतु रोअण रातो ड्रींहां, आहे लछणु महबूब लाइ,
हीउ मिलेई सौदो सहांगो, कीन की सिर खूं सवाइ.

३) कीनकी मूंखूं थियो, हीअ उमिरि तां वेई अजाइ,
हीअ विसारे नी विहणु, जानी न हीअं तोखे जग़ाइ.

४) हीअ महल मोचारी आहे, पोइ किरंदें हाइ हाइ,
हाइ हाइ मां हथि न ईंदइ, वेल गुज़िरी वाइ वाइ.

५) हीअ हक़ीक़त हाल जी, सारी वञीं साईंअ सुणाइ,
सो ग्रचो मुर्शिदु सचल जो, पीर इबदालहक़ आहि.

## (25)

सचु था मर्द चवनि कंहिंखे वणे न वणे,
कूड़ीअ दोस्तीअ जो दमु बणे न बणे.

१) सचु त पाण धणीअ पाण पैदा कयो आहे,
अंगु त आदम जो ब्रिए कंहिं जोड़ियो नाहे,

सचु चयो मंसूर निई चड़िहियो फाहे,
अहिड़ा बार बिरह जा ब्रियो खणे न खणे.

२) न का ऐब सवाब जी जाइ आहे,
न का नींहं नवाब जी राइ आहे,
इहो ता इश्क़ हुसुन हरजाइ आहे,
ज्रणे यारु वयो ब्रियो ज्रणे न ज्रणे.

३) सचु त सचल साईंअ जी ग्रालिह सची,
मुए त मुहबत वारा कंदा कीन कची,
रंग रमज़ इनहीअ में वियो रूह वरची,
सड्रिड़ा मालिक सुणे ब्रियो सुणे न सुणे.

## (26)

मुलां मारम मूं, सज्रण ड्रिसां कीन सबक़ु पड़िहां.

१) आदम कंनूं अग्रे हुयासि, आदम ज़ाति न हूं.
२) अल्फ़ असां नूं यार पढ़िहायां, बे ए बांस न बूं.
३) शाह दराज़ीं सचल वसे, मन जो महरम तूं.

## (27)

महबूबु ग्रोले ड्रिसु मन में, माशूक़ु ग्रोल्रे ड्रिसु मन में.
1

१) वाह कारीगर साज़ बणायइ, कुन फ़ीकूं जे कुन में.
२) बे फ़ाइदो बाज़ार घुमीं थो, गुल फुल बाग़ बदन में.
३) चोरीअ चोरीअ सैर करीं थो, तुंहिंजो चांदु चमन में.
४) सरसु करे सींगारु सज्रण अज्रु, दोस्त आयो दरसन में.
2
५) दिलिबर देरो दाइमु दिलि में, छो देखीं ब्रिए दर्पन में.
६) सचल साईं सहीह करे ज्रातुमि, यारु गड्रियो कख पन में.

## (28)

अज्रु जो जोग्री आयो, नांऊ तंहिंजो नथी ज्राणां.

१) सिर जटाऊं जोग्रियुनि वारियूं, लिङें बस्मी लायो.
२) कड़हिं न ड्रिठुमु ड्रेह इनहीअ में, मौला आणि मिलायो.
३) ड्रिसण सां इनहीअ जोग्रीअ जे मूं, ड्राढो पूर पिरायो.
४) सैर बाज़ारियुनि घण घण घघरूं, छमि छमि तंहिं छिमिकायो.

५) ज़ाति इनहीअ जी नथी सुञाणा, छंदें[1] पाणु छुपायो.

## (29)

अथमि इहो अरमानु छा मंझां, हिति छा थी आयासि.

१) चाकर थियसि न ज़ाणां छा खां, सही हुयसि सुल्तानु.

२) दानहि हुयड़सि देस उनहीअ में, हिति थियसि नादानु.

३) कोई ज़ाणे कोई सुज़ाणे, इहो मर्दनि जो मैदानु.

४) असूलं साणु वठी हिति आयसि, सूरनि जो सामानु.

५) हिक घरि निकिरी ब़े घरि आयसि, महज़ रहियसि महिमानु.

६) बहर उतूं जा लहर उभे थी, मोटी थियो महिरानु.

७) सचल खे कयो साइत साइत, हैरत हिनि हैरानु.

## (30)

नाहे ब़ारूचो ब़ियो, आहे उहो जो रोज़ु ड्रिसां थी.

१) वेठी हुयड़सि वाट ते, अची वसीलो थियो.

२) माड़ीअ में महबूबु ड्रिठोसीं, लालनु पाए वियो लीयो.

३) जतन कजि जतन जो, सड्ड सबब सां थियो.

४) सैरु सारो ई सूरतुनि, पाण क़रीबनि कयो.

५) कयो सचल खे सरितियूं, इनहनि ख़ुमार खयो[2].

## (31)

मुहबत इश्क़ मौला जे, घणा से घोट घाया हा,
हज़ारें साह साजन तां, घोरियूं घोरे घुमाया हा.

१) विरह जे वाट ते वीरनि, कुल्हनि खां कंध कपाया हा,
कएं सिर साह साजन लइ, मथे सूरीअ संभाया हा.

२) थियो तिनि मेहणों मोटण, तिखी कंहिं ताइ ताया हा,
मथा मेइख़ान[3] ते मस्तनि, वटीअ जे वटि वढाया हा.

३) इनहीअ पिड़ में पलिवाननि, जोशऊं जेरा जलाया हा,
खयां जे मौज मुहबत जे, इहे हिन आर आया हा.

४) निसंग हिन नींहं जे नाते, घणनि जा सिर गंवाया हा,
सचल अज़ु थी सदक़ु तिनि तां, जिनी रंगड़ा रचाया हा.

## (32)

केही करियां महिमानी, यारु मुंहिंजे अङण आयो.

१) दोस्तु गड्रियो दिलिजाइ थी, हींअड़े लथी हैरानी.

२) हिन वड़ लायक़ होसि न आऊं, मुहब कई महिरबानी.
३) मुश्किलि जा हुई ग़ाल्हि असांखे, उहो कयऊं आसानी.
४) फ़ज़ल कर्म सां पाण बख़्शाऊं, सचल खे सुल्तानी.

## (33)

कयड़ो मस्तु पिरियुनि जे, खणी नाज़ु मूंखे,
विसिरियो रोज़ो, नाहे यादि निमाज़ु मूंखे.
1
१) शौंक़ शराबु पीआं, पिर वटि रातियां ड्डीहां,
कोन्हे वरी क़ाज़ी मुलां, जो को लिहाज़ु मूंखे.
2
२) नेणनि निंड हरामु, आहे वति रोज़ु अज़ल,
सुरंदो सोज़ु सज़ण जो, आहे साज़ु मूंखे.
३) वाई वात कहाई, मुईअ खे जेका पिरियुनि,
वरी अचे हू हू पिरियुनि, जो थो आवाज़ु मूंखे.
४) सचल मक़्सदु सारो, तोंहीं वति तूहीं जीवें,
ड्डसि वरी नाज़ पंहिंजे जो, को राज़ु मूंखे.

## (34)

जोग़ी आया, जोग़ी आया, जोग़ी जुंगि जवानु.
१) नकी मुलां नकी ब्बांभण, नकी वर्क़ क़ुरानु.
२) नकी पोथी नकी पौड़ी, नकी गीता ज्ञानु.
३) नकी ओलह नकी ओभर, न मां ज़मीन आहियां.
४) कारीहर क़तल कयां थो, मुरलीअ ते मस्तानु.
५) देस सचल जो दुरसु दराज़ी, मके ना मुल्तानु.

## (35)

इश्क़ अक़ुल क्या लग़े लग़े, सुनु ड़े क़ाज़ीयां.
१) दौड़ अक़ुल दे कतली तोणे, इश्क़ दी मंज़िल अग़े.
२) नाल अक़ुल दे केई पसारे, ड्डेख बिरह किना भग़े भग़े.
३) मैं रांझूं दी रांझन मेड़ा, खेड़ा कयूं वित वग़े वग़े.
४) बूड़ बिरह दी जिन्हां नूं होई, यार उन्हां नूं ठग़े ठग़े.
५) दोस्त मंगे दा सचल जहां नूं, प्रित तिन्हां दे तग़े तग़े.

## (36)

जोई आहियां सोई आहियां, हिन्दू मोमनि नाहियां.
१) ना मैं मुलां ना मैं क़ाज़ी, ना मैं सबक़ु पढ़िहायां.

२) ना मैं मस्जिद ना मैं हजरा, अंदरु पेरु न पायां.
३) न मैं क़ाबा न मैं क़बल, मके मूल ना जावां.
४) ना मैं सनी ना मैं शीआ, सैद कीअं सड़ायां?
५) ना मैं नानक ना मैं लछमण, गंगा मूल न जावां.
६) यार त मेड़ा दुरस दराज़ें, सचल नांव सड़ायां.

(37)

कोई कीअं चवे कोई कीअं, चवे आऊ जोई आहियां सोई आहियां.

१) को मोमिन चवे को काफ़रु चवे, को जाहिल नालो ज़ाहिर चवे,
को साहिरु चवे, को शाइरु चवे - आऊ जोई ....
२) को पंथु चवे को संतु चवे, को बागु बहारु बसंतु चवे,
कोई मेरासी कुलवंतु चवे - आऊ जोई ....
३) को मुलां चवे को क़ाज़ी चवे, को मुफ़्ती चवे को ग़ाज़ी चवे,
को रोज़ह दार निमाज़ी चवे - आऊ जोई ....
४) को सूरत में इन्सानु चवे, को शिर भरियो शैतानु चवे,
को बुज़ुर्ग को मस्तानु चवे - आऊ जोई ....
५) को रंगु को बे रंगी चवे, को मस्तु व मस्तु मलंगु चवे,
को नंगी कोई बे नंगु चवे - आऊ जोई ....
६) को हाली चवे को क़ाली चवे, को ख़ासि इल्ख़ासु चवे,
को अज़ाली मस्तु मवाली चवे - आऊ जोई ....
७) को ख़ासि चवे को आमु चवे, को पुख़्तो चवे को ख़ामु चवे,
को सचल सचो नामु चवे - आऊ जोई ....

(38)

आऊ पुन्हूं पाण आहियां, काकियूं मुंजा क़ासिदु काड़े.

१) इहा सूरत समुझी ड़िठियमि, साथी ब्रिया कीअं संभायां.
२) ग़ाल्हि परे हुई थी पई ओरे, केड़ी से कांग उड़ायां?
३) मदु आ मतलबु हो मिड़योई, पोथियूं से केहूं पटायां.
४) सुधि पए मूं सुर उनहीअ जी, केचु भंभोर खे भायां.
५) सचल मंझऊं सचु थियो पैदा, कीहूं कूड़ियूं ग़ाल्हियूं ग़ायां.

(39)

न मैं ताबु ना मैं बे ताबु, न मैं अबर, आफ़्ताबु.

१) न मैं गोया, ना मैं जोया, न सुवालु, न जवाबु.
२) न मैं ख़ाकी, ना मैं बादी, न मैं आग, ना आबु.
३) न मैं जीनी, ना मैं अंसी, न माई, न बाबु.
४) न मैं सुनी, ना मैं शीआ, न मैं ड्रोहु, ना सवाबु.
५) ज़ाति सचल दी केही पुछंदे, नाले तां नायाबु.

## (40)

ब्रारोचा वो यार कोहियारा वो यार,

ब्रारोचा पवंदइ ब्राझ, छपर मुईअ खे हींअ न छड्डिजाइं, यार ब्रारोचा.

१) पोरिहियो कंदसि केच जो, ओ मुंहिंजा यार, हथें कंदसि हाज.
२) पुठीअ लग़सि पिर् जे, ओ मुंहिंजा यार, मंझूं सारी राज.
३) आहे हिनि आजज़ जी तोते लालनि, तोते लालनि लाज.
४) घोरियां घोट अव्हां तां, सभु मड्डियूं ऐं साज.
५) पसण कारणि पिर जे ओ मुंहिंजा यार, सचल विझे वेठो वाझ.

## (41)

घोरी घोरी घोरी वे जिंदुरी, सज़ण तो तां घोरी.

१) रातो ड्डींहां आहे अव्हां जी, साईं झोरी झोरी.
२) ग़िचीअ़ विधियव अजबु जेही, सुहिणा ड्डोरी ड्डोरी.
३) तंदु न ज़ाणां वो कंहीं, हीअ साहिब चोरी चोरी.
४) दिलि खसियाई वो लुट नेतियाई, हाकिम ज़ोरी ज़ोरी.
५) अवलि आसानी ग़ाल्हि पोइ क्यड़्ड़, सभ खां ग़ौरी ग़ौरी.
६) सचल लायो सच मंझांरऊं, लालन लोरी लोरी.

## (42)

हालु त मुंहिंजो कोन हो जेड्डियूं,

पंहिंजो कर्मु कयाऊं, मुंहिंजे ड्डोहनि ड्डे न ड्डिठाऊं.

१) जेको हालु अहिवालु हो साईं, पाणऊं पाण पुछियाऊं, मुंहिंजे ड्डोहनि ..
२) पाण पंहिंजो पाणेही, साणि ग़रीबि गड्डयाऊं, मुंहिंजे ड्डोहनि ..
३) सचल खे के ई सरितियूं, पिए त दिलिसा ड्डिनाऊं, मुंहिंजे ड्डोहनि ..

## (43)

मूंखे न विसारि, वो ढोलिया, आंऊ त तुंहिंजिड़ी आहियां.

१) नांव साईंअ जे असां निमाणनि ड्रे, खणी तूं नेण निहारि - आंऊ त ...

२) पिरीं वड़ऊं पांहिंजे, गड्डु ग़रीब गुज़ारि - आंऊ त ...

३) कयव असां सां सजुण प्यारल पंहिंजा वाइदा पाड़ि - आंऊ ...

४) अङण असांजे सिघो की ईंदें, वाली सो कहिड़ी वारि - आंऊ त ...

1

५) दर पंहिंजे जो दिलिबरु साईं, सच् सो सगु संभारि - आंऊ ...

## (44)

पाए ड्रोह पंहिंजे पांद में, आंऊ दोस्त तो दरि आई आ.

१) रातो ड्रींहां पंहिंजे रूह में, तुंहिंजा सवें गुण गायां, पाए ड्रोह ....

२) ड्रोठ ड्रोरापा बुधी, आंऊ पलव तोखे पाइयां, पाए ड्रोह ....

३) ज़ारियूं ज़ईफ़ीअ मूं करे, पिरीं तोखे परिचायां, पाए ड्रोह ....

2 3 4

४) जा तो पणीअ पेज़ार जे, सा खिह लिङनि खे लाइयां, पाए ड्रोह ...

५) सभु गाल्हि पंहिंजे सिर ते, तोखे सचू समिझायां, पाए ड्रोह ...

## (45)

तर्ज़ : रमज़नि साणु ग़ुलामु कयो अथव सजुण असांखे.

थलु : बिरह जी बाज़ार, जेका ड्रिसणु ईंदी.

१) जेका जो ड्रिसंदी तिजलो तुंहिंजो, रहंदी मंझ ख़ुमार, जेका ड्रिसणु ईंदी...

२) सौदो जा कंदी सिर जो, विहंदी सा कीन क़रार, जेका ड्रिसणु ...

5

३) चौसोल अंदरि सुरख़ी माइल, तेज़ घुमे तलवार, जेका ड्रिसणु ..

४) जे कंहिं चिमिको ड्रिठो तुंहिंजो, सासिरु ड्रींदी सरदार, जेका ड्रिसणु ईंदी...

५) सचू इनहीअ सीर में, आहे कुसण जी कार, जेका ड्रिसणु ईंदी...
बिरह जी बाज़ार, जेका ड्रिसणु ईंदी.

## (46)

ड्रिनो पांधीअ हीउ पैग़ामु, तुंहिंजे अङण अजु सजुणु अचे थो.

१) आशिक़ु अजीबनि जो, तोखे सव लख आहे सलामु - ड्रिनो .....

२) सभु क़बूलियो सिपरींअ, जेकी कयुइ कलामु - ड्रिनो पांधीअ ..

३) पको आहे पिरींअ जो तोसां अजु इंजामु - ड्रिनो पांधीअ ..

४) रोअ न रतु अखियुनि मूं, आशिक़ करि आरामु - ड्रिनो पांधीअ .

५) सचू गड्डिजनि पोइ भी, आ न तलब तमामु - ड्रिनो पांधीअ ..
ड्रिनो पांधीअ हीउ पैग़ामु....

ड्रोहीड़ो : 'माड़ियुनि मारियुसि कीन की, हुयसि मारुनि लाइ,
कर लहंदा कड्डहिं, मुंहिंजी हाड्,
सांगीअड़नि सदाइ, वेठो वाझ विझेहियों.'

३) इहा आस अथमि, मिलां शाल मारुनि,
नियापा मूं ड्रे कया कीअं न हूंदा - मुंहिंजे लाइ अबाणा.

## (47)

पाणेही पएव सुधि सूरनि जी, इश्कु लगेव जे अदियूं.

१) सारी ख़बर वञी तिनि खूं पुछिजो, जे विरह सज़ण जे वढियूं, पाणेही ...
२) कीन लिकनि से लोकनि अगियूं, जे आहिनि डुखनि जूं ड्रधियूं ड्रधियूं, पाणेही

३) मुहब मुसाफ़िर थिया जिनीं जा, कूकां उहे लख कंदियूं कंदियूं, पाणेही ...
४) विरह व लोट्टिया जे वहंदियूं तिनि जे, नेणऊं नीर जूं नंदियूं नंदियूं, पाणेही ...
५) पारूं पिरींअ जी सुणो सभेई, लोक भले ड्रिए बदियूं बदियूं, पाणेही ...
६) अगियूं पोयूं सभु माफ़ु कयूं, तिंहिं मुहब सचल जूं मदियूं मदियूं, पाणेही ...
पाणेही पएव सुधि सूरनि जी....

## (48)

मुंहिंजी अगिहीं लगी ना त हाणे लगी, दिलि लगी अलू अलू तंहिं ...

१) रोज़ु अज़ुल खां अखिड़ियूं लायोसीं, दोस्त मिठे दिलिदार सां, मुंहिंजे अगिहीं ..
२) केई दानव दीवाना कयाऊं, चश्मनि जे चिमकार सां, मुंहिंजे अगिहीं ..
३) दोस्तनि जे दरि अची जो पियड़ुसि, असुलु सचे ऐतबार सां, मुंहिंजे अगिहीं ..
४) पिरीं असां वटि पेही जो आयो, सूरत जे सींगार सां, मुंहिंजे अगिहीं ..
५) जेकी थिए सो जोश वारनि सां, सो न थिए हुशियार सां, मुंहिंजे अगिहीं ..
६) सिरु सचूअ कयो सदिक़े साईं, अक़ुलु छड्डे इख़्तियार सां, मुंहिंजे अगिहीं ..

## (८६ सामी)

अखियुनि मंझि आंहीनि अखियूं अजीबनि जूं.

१) जिते ड्रिसां नेण भरे तिते वाझाइनि, अखियुनि मंझि आंहीनि ..
२) मथां पांदु महर जो लहंज़ो न लाहिनि, अखियुनि मंझि आंहीनि ..
३) दरसनु दर्द वंदनि खे, लूंअ लूंअ लखाइनि, अखियुनि मंझि आंहीनि ..

## (2)

अण हूंदी बाज़ी बाज़ीगर बरहाल की.

१) किथे राजा प्रजा चौधरी किथे महतो मियां जी,
किथे पीर फ़क़ीर अमीरु थियो, किथे शेख़ु मुलां क़ाज़ी.

२) किथे चोर चुगल ठगु मस्ख़िरो किथे पिंड भरे पाज़ी,
किथे ग़ुणिती ऐं लेखे दुख में, किथे रज़ा ते राज़ी.

३) किथे हाकिमु बणिजी हुकुम करे किथे अबदु[1] बणे आज़ी[2],
साखी पदु सो पारि थीए सामी जंहिं साजी.

## (८७ सांगी)

आहे दुनिया में जे रहणु वाजिबु, सूर तंहिंजा आहिनि सहणु वाजिबु.

१) अहल[3] ज़ाहिर खे जा अचे मरग़ूब[4], चालि अहिड़ी आहे चलणु जी वाजिबु.

२) तोड़े दरियाह या समुंडु हुजे, तलब यार में तरणु वाजिबु.

३) टिंड मां कनि जे टूट टेलारा, उनहीअ टोले खां थियो टरणु वाजिबु.

४) नेकु व बदु जेकी को चवे सो चवे, तंहिंते हरिगिज़ न कन करणु वाजिबु.

५) राति खे ड्रींहुं, ड्रींहं खे चुअ राति, राज़ु में जे अथई रहणु वाजिबु.

६) न घुरनि तुंहिंजो जे जीअणु जानिबु, तिनि जी मर्ज़ी रखी मरणु वाजिबु.

७) आशनाईअ[5] जा वण बि वया वढिजी, प्रित खे पाण खे पलणु वाजिबु.

८) पहिलवानीअ जो वक़्तु वयो गुज़िरी, आहे ड्रिगनि खां थियो ड्ररणु वाजिबु.

९) सांगी आहे सलाह तां कंहिंखे, सूर नाहिनि कड्रहिं सलणु वाजिबु.

## (2)

१) अखियूं जड्रहिं अखियुनि सां उमालक अड़नि थियूं,
लड़नि थियूं, लड़नि थियूं, लड़नि थियूं, लड़नि थियूं.

२) भिरुनि जे कमान में भरियो तीरु मड़िगां[6],
हणनि थियूं, हणनि थियूं, हणनि थियूं, हणनि थियूं.

३) ड्रिसी मुंह मिठे में लका जूं ही अखिड़ियूं,

ठरनि थियूं, ठरनि थियूं, ठरनि थियूं, ठरनि थियूं.

४) मुहबत में महिराणु, सच सील वारियूं,
तरनि थियूं, तरनि थियूं, तरनि थियूं, तरनि थियूं.

५) कजल रइ जूं कारियूं, अजीबनि जूं अखिड़ियूं,
वणनि थियूं, वणनि थियूं, वणनि थियूं, वणनि थियूं.

६) रक़ीबनि[1] जूं अखिड़ियूं, ड्रिसी सोज़ु सांगी,
सड़नि थियूं, सड़नि थियूं, सड़नि थियूं, सड़नि थियूं.

## (3)

जे वया गुज़िरी जमाना यादि पिया, जे वया विसरी तराना[2] यादि पिया.

१) दिलि ते आया वामक़ व फरिहाद व क़ेसु, ड्रिसंदेई दांह दीवाना यादि पिया.

२) फ़सुल जी ख़्वाहिश में विसरी असुलु वयो, संग चूंडींदे ई न काना यादि पिया.

३) वादीअ[3] मजनूं ड्रिसंदे संग[4] व ख़ार, अकुल वारनि जा ख़जाना यादि पिया.

४) थी चरियो चौतरफ़ जड्रहिं कयमि तलाश, मूंखे तड्रहिं दोस्त दाना यादि पिया.

५) ड्रिसंदे ई नव दौलतुनि जूं दौलतूं, असुल जे ख़ाननि जा ख़ाना यादि पिया.

६) वसुल जो वइदो जे कंहिं खां को बुधुमि, तड्रहिं दिलिबर जा बहाना यादि पिया.

७) तड्रहिं यकीनु सांगी त आहे सभु गुज़रु, शानु शाहन जा शहाना यादि पिया.

## (4)

१) उमिर मारुनि ऐं मालनि ते लग़ी कीअं करि लज़ाईंदसि?
वेड़हीचनि खे विसारे हिति वेही छा वरु विज़ाईंदसि?

२) हिते जे खाज़ु खां तुंहिंजा त मरुखामी मरां तंहिंखां,
वञी थर थाक थोरनि जी खटा ऐं खीर खाईंदसि.

३) जड्रहिं आऊं वेड़ह ड्रे वेंदसि त वेड़हीचनि में विच वेही,
उमर खीरनि ऐं खौरनि हेठि ग़ुण ग़ाल्हियूं बि ग़ाईंदसि.

४) मथो मूड़हल संवारे पंहिंजा वासी वार वेड़हे हिति,
नकी आऊं पाण तां खाइर ऐं पाइर जा खिलाईंदसि.

५) वञी आऊं वेड़ह में विहंजां हिते पाणी न सिर पायां,
लोई लाखी मथे तां लाहे तुंहिंजा पट न पाईंदसि.

६) सब्रु तूं सूमरा आहीं ज़माने में मगर आऊ,

निमाणी नारि आहियां पर वड्डनि जा वण वजाईंदसि.

७) इहे आहूं ऐं दांहू मुंहिंजूं बिल्कुलु बे असरु नाहिनि,
उमर तुंहिंजा कड़ा ऐं कोट आऊं उफ़ सां उड्डाईंदसि.

८) पन्हवारनि जे पखे पेही पहे पाखे पहनि जे पी,
ए 'सांगी' सोज़ दिलि जो आऊं सरितियुनि खे सलाईंदसि.

९) असीं सांगी त सचु समझूं, कपट मां कीन की ज़ाणूं,
कड़नि कोटनि में मारुनि जो मिठो नींहड़ो निभाईंदसि.

## (5)

जे सुहिणो पाण सड़ाए विया, अलबेलियूं अखियूं अटिकाए विया.

१) अज्ञां हाणि हिते हुआ यार पिरीं, दिलिबंद सजुण दिलिदार पिरीं,
ग़मख़्वार हुआ मंठार पिरीं, जे पेचु प्यारल पाए वया.

२) हिते दर्दनि जा त दुकान हुआ, हिते सूरनि जा त सामान हुआ,
वड्डा शोख़नि जा हिति शान हुआ, से हाणे माग मटाए वया.

३) हुआ मैशुक़नि जा माग हिते, हुआ रंग ऐं रूप ऐं राग हिते,
हुआ बिरह वारनि जा भाग हिते, से फेरी ड्डेई फिटाए वया.

४) हिति इश्क़ जा हुआ तूफ़ान वड्डा, हुआ सूरनि जा सामान वड्डा,
हयां नींहं हिते त निशान वड्डा, से वारो वीर वजाए वया.

५) उस्ताद इहे जिनि पाढ़ियो थे, जिनि दरसु मुहबत कारियो थे,
जिनि सूरनि साणि सेखारियो थे, सटूं सूरनि जूं समुझाए वया.

६) तिनि शाहन जा वया शान किथे? वया नौबत ऐं निशान किथे?
से दहिलियूं ऐं दरबार किथे? जे माड़ियूं महल उड्डाए वया.

७) थो नींहं मंझां निर्वारु चवां, से आशिक़ आऊ सरदारु चवां,
से प्यारा पंहिंजा या चवां, से सांगी पाण सड्डाए वया.

## (८८ साक़ी)

१) जंहिं सां दिलि लगी तंहिं खां धार थियणु,
इहो जाड़ जीअणु, तंहिंखां ज़हरु पीअणु, इहो नाह मरणु, ब्रियो छाहे ड़े?

२) दिलि ते दूद दुखनि, लखें पूर पवनि,
सवें सूर सुझनि, दिलि तां कीन लहनि, इहो नाह रूअणु ब्रियो छाहे ड़े?

३) जंहिंखे नीहं नियो, तंहिंखां सभ वयो,
मूंखे ॾसु ॾियो, ॾुखियो पेचु पियो, इहो नाहि फसणु ॿियो छाहे ड़े?

४) मिले माह लक़ा, जंहिं तां आहियां फ़िदा,
कयो क़हरु क़ज़ा, थियो यार जुदा, इहो नाहि जलणु ॿियो छाहे ड़े?

५) मांदी यार मरां, पखी रोज़ पुछां,
साक़ी मां न मिलां, इहा आस रखां, इहो नाहि सिकणु ॿियो छाहे ड़े?

## (८९ सरशार)

मुंहिंजे मुहब जे नाह को मटि ड़े अदियूं, तोड़े आऊं चरी चरबट, ड़े अदियूं.

१) धोॿी जीआं मूंखे, फड़हे पुछाड़, सूर था कनि सटि सटि, ड़े अदियूं.

२) बिरह दुखाइ थी, जरड़ी पुरज़े, जीअं खामी ॾिए जी वटि, ड़े अदियूं.

३) दिलिड़ी ॾेई, सौ सूर पिरायमि, अहिड़ी का ॿी मटि सटि, ड़े अदियूं.

४) होत जा पाइनि, पेर में पंहिंजे, आऊ तंहिं जुतीअ खां घटि ड़े अदियूं.

५) नीहं वाचूड़े, वणु वणु उखोड़ियो, पाड़ूं पटी पऊं सटि ड़े अदियूं.

६) ॾाघा रड़नि, से थिया माठि मूं भेरी, झड़ पिया जतनि झटि पटि ड़े अदियूं.

७) ॼाणीं तूं ॼाणणहार सभोई, आऊं ॼाम निसोरी ॼटि ड़े अदियूं.

८) नीहं नशे सरशार नचायमु, पेर न आहेमि पटि ड़े अदियूं.

## (९० साइल)

दिलि बि वई दिलिबर बि वयो, अहिड़ो ज़ुल्म मूंसां कीअं थियो
है है कयो रतु थी रोआं, कर्मनि मुंहिंजे कीअं कयो.

१) मुंहिंजे रोअण झोरीअ झॼण जो, तरसु तोखे ना पयो,
हाल दर्दनि जो ॾिसी वरंदो, रांझन ख़ुशि थियो.

२) संग - दिलि महबूब मुंहिंजा, ओचितो तोसां पेच पियो,
अहिड़ी लॻई तां क़दुरु पवई, जहिड़ो ज़ुल्मु मूंसां तो कयो.

३) प्यार ॾेई दिलि करे क़ाबू, था पोइ दड़िका ॾियो,
कान हुई अहिड़ी ख़बर, अहिड़ा असुल ज़ालिम हुयो.

४) हिक बिरह ऐं ॿी जुदाई, टियों सख़्तु - दिलि सुहणे कुठो,
सुखु वयो ॾुखिड़ो मिलियो, ही बाबु साइल जे लिखियो.

## (९१ संता)

मिले यारु त मेंदी लायां, न त ईद अजल करे भांयां.

१) ईद इनहनि काण आहे सरितियूं, ख़ुश वसनि जे वर घर परतियूं.
मां छा ते पाण पड्यां? मां त जेड्रियूनि जहिड़ी न आहियां.

२) सेज सुते मूं वरु त विञायो, ग़ाफ़िल थी मूं सिर ते वहायो,
कहिड़ो ड्रोहु ड्रेरनि खे मां लायां? मां त अमर लखे ड्रे भांयां.

३) आतिश इश्क़ अलाह सिर थीअड़ो, साह सुकी सूरनि में वयड़ो,
मां कंहिंखे हाल ब्रुधायां? मां त पाण ड्रे वठी भांयां.

1

५) संता सोज़ फ़राक़ की हानी, दर गोलीअ जे मन अचे जानी,
मां करियां कान ज़बानी, मां त कयल ख़ताऊं बख़्शायां.

## (९२ सग्रन आहूजा)

१) ऐशु नज़ुरुनि खे किराइण वारा, ख़ुश रहनि दिलि खे सताइण वारा!
२) यानि मां तोखे ड्रिसां दिलि खोले? कंध खे हेठि झुकाइण वारा!
३) कंहिंजो अग्रमें ई फटियलु आहीं छा? वार नज़रुनि जा गुसाइण वारा!
४) दाव पहिरिएं में ई दिलि हारायमि, बे दिलिया दाव लग्राइण वारा!
५) मुंहिंजी हालत बि साग्री आहे, हालु दिलि जो न ब्रुधाइण वारा!
६) दिलि खे हरि लुत्फ़ ड्रियण था चाहिनि, वसल में वक़्त विझाइण वारा!
७) सबुर ज़ी लज़ न अदाउनि जे रखियइ, पाण खे पाण मनाइण वारा!
८) ग़म जानां या ग़म रही दैरनि, पाण रहंदासीं निभाइण वारा!
९) मुंहिंजी साराह कंदड़ दिलि में न कजि! सभ सां दिलि नाहियूं लग्राइण वारा!
१०) भुलजंदा डंग जीअण जा था वञनि, छा भुलायूं था भुलाइण वारा!

### (2)

मुंहिंजे तकण ते हुन खे ईंदो हिजाबु आहे,
प्यारे स्वाल जो ही प्यारो जवाबु आहे.

१) खणंदे नज़र नशीली वेंदुसि थी सपना सपना,
मूं लइ ख़ुमार जो पिणु पयो नाऊ ख़्वाबु आहे.

२) नज़रूं मिली न पुछंदियूं आहिनि स्वालु पो पिणि,
ईंदो जवाबु आहे वेंदो जवाबु आहे.

३) हूअ शरमु शरमु थींदी, थींदुसि मां मस्ती मस्ती,
मुंहिंजी नज़र नज़र आ, हिनजी शराब आहे.

४) केॾो न आह मुश्किल सांढण जवानि दिलि खे,
जेसीं न ब्रिए जी थिए थी तेसीं अज़ाबु आहे.

## (९३ सुग़ुन)

तुंहिंजा थोरा थोरा लाल लखनि खां बि घणा,
बे अंत तुंहिंजा नाला कहिड़ा कहिड़ा खणां? ओ कहिड़ा खणां?

१) तू त मूंते घणो आ सज़ण अहसान कयो,
ॾेई समझ मूंखे तो साईं इन्सान कयो,
हाणे महर मया कर त मां गुणवान बणां. बे अन्त ...

२) मूं त सुख में कड़हिं कीन तोखे याद कयो,
हाणे दुख में तुंहिंजे दर ते मूं फ़रियाद कयो,
आहीं मतलबी, मतलब जी वेठो हाम हणां. बे अन्त ...

३) जेके ॾोह कया थमि से कजइं माफु मिठा,
पंहिंजी दिलि ते कजइं कीन कुर्बदार कठा,
ॾे का समझ अहिड़ी, सुग़ुनो चवे तोखे बि वणां. बे अन्त ...

## (2)

अज़ु भेनर भली फार पई आ, ईंदो जानबु जोग़िनि ग़ाल्हि कई आ.

१) थींदो त जशनु मुंहिंजो ईंदो साजनु,
खुलियो गुलशन मुंहिंजे दिलि जो चमनु.
कांगल चङनि खे तूं चई आ, न्यापो ॾेई आ - ईंदो जानबु ...

२) मुंखे मारियो मुहुणनि, मुंखे ग़ारियो ग़णितियुनि,
तिखा हणी तीर मुंखे पीड़ियो पंहिंजनि,
हीअ दुनिया केॾी निर्दई, पर सहीह आ - ईंदो जानब ...

३) मस खुलियो मुक़दरु, मूंसां मिलियो रहिबरु,

जेड़ियूं करियो जल्दी मुंहिंजो सींगारि घरि,
सदिक़े सगुन जानि कई आ, ओ कई आ - ईंदो जानब ...

(3)

अल्लाह लगि आऊ, साईंअ लगि आऊ, धणीअ लगि आऊ, करियूं परचाऊ.
१) दरु खोले दरी खोलियां, लहु को सजुण सुधु समाऊ -अल्लाह लगि ....
२) इश्क़ तुंहिंजे आ आज़ारियो, गुणितियुनि तुंहिंजियुनि आ गारायो,
बारण दिलि अंदरि बारियो, कर को सजुण अची कहुकाऊ -अल्लाह लगि ....
३) हली आ मुंहिंजा सजुण दिलिबर, गले लगायां मां सगुन रहिबर,
अचण में हाणि देरि न करि, नींहं वारनि सां करिको नियाऊ -अल्लाह लगि

## (९४ सलेमान)

कीअं रीझायां तोखे कीअं परिचायां, डसि को डाहु.
१) यां थियां हिंदू पूजां बुतख़ाना, गंगा जमुना काशी इशनाना
तिलकु लगायां कीन जणियां पायां?
२) या थियां मोमिनु नेकि निमाज़ी, जंहिं में रांझन तूं थिएं राज़ी
जाइ जोड़ायां कीन सिरिड़ो निवायां?
३) यां थियां नाचू पायां पेशिवाज़ी, धुकड़ धमचर साज़ आवाज़ी
फेरड़ी पायां, कीन छेर छमिकायां?
४) आऊ त प्यारल करियूं परचाओ, साणु सलेमान जे सरिचाओ,
लाइक़ु नाहियां त बि तुंहिंजी आहियां.

## (९५ सरदार अली)

इश्क़ वारनि खां पुछो के बिरह वारियूं बातिड़ियूं,
साह में सांढियूं जंहीं सूरनि संदियूं सौग़ातिड़ियूं.
१) हेजु मां होडीअ क़बूलियूं क़ुर्ब वारियूं कातिड़ियूं,
कंध कोरण लाइ जेकी यार लए सां लातिड़ियूं.
२) कीअं भला विसिरनि गुणनि वारियूं इहे गिराटिड़ियूं,
वेझ़हड़ो वेही पिरीं जे पाणही तो पातिड़ियूं.
३) मूं न विसिरनि थियूं इहे रस रमज़ वारियूं रातिड़ियूं,

प्यार में गुज़िरी वञे जेकी थियूं प्रभातिड़ियूं.

४) सूर सख़्तियूं सालिकनि चशमनि ते चाहे चातिड़ियूं,
विरह जूं वेही वसायूं बूंदिड़ियूं बरसातिड़ियूं.

५) दोस्त जे दीदार लइ अखिड़ियूं रहनि थियूं आतिड़ियूं,
सिक मंझां सरदार अली चए जामु पाइनि झातिड़ियूं.

## (९६ शाह)

वाग़ि धणी तुंहिंजे वसि, आऊ का पाण वहेणी.

१) हलायो तां भी हली वञां, बिहारियो तां बसि, वाग़ धणी ....
२) वेंदसि रहंदसि कीनकी, मुंहिंजी भंभोर खां बसि, वाग़ धणी ....
३) वुठरा मींहं मलीर ते, गाहन लाया गस, वाग़ धणी ....
४) सर्तियूं शाह लतीफ़ चवे, दिलि जो दुश्मनु दसि, वाग़ धणी ....

## (2)

दिलि करि दरख़त जी दस्तूर.

१) छाड़प लग़े छुग़ा छणनि, मेवा ऐं ब़ियो ब़ूरु.
२) कुहाड़ो लग़े कू न करे, दर्द न रखी सूरु.
३) वढींदड़ सां वेर न रखे, तोड़े भञी करे चोरु.
४) पाण जलाए छांवं करे, निति इनहीअ ते नूरु.
५) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, हासुलु तिनि हज़ूरु.

## (3)

केची क़ौल करे वया, हीअ न वेल वज़ुण जी.

१) उथी आधीअ राति जो, लाहूती लड़े वया.
२) पखा पखनि साम्हां, आड़ाणा न अड़े वया.
३) सड़ु थियो सरकार जो, माड़ियूं महल छड़े वया.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, गोंदर मंझि गड़े वया.

## (4)

मां सारियां सांजीअड़नि खे, मुंहिंजा मारू वसनि मलीर.

१) पट पहीरंदसि कीनके, लाई अबाणी लीर.

२) कड़ बंदियाणी बंद मां, जीअरे लाइ ज़ंजीर.
३) वसिया मींहं मलीर में, आई डुखण हीर.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, पेका मेलिजि पीर.

(5)

दिलि दस्त चढ़ही वेई दिलिबर जे, आणण आह अणांगी.
१) हिन सतीअ पंहिंजो सीलु विञायो, नींहं कई आहे नांगी.
२) सभिको भाएं इश्कु सहांगो, मुहबत चीज़ महांगी.
३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, झरि घुमनि था झांगी.

(6)

आउ ब्रारूचल अचु, पुन्हल ज़ामु परिचु, मोटि विछोड़ो थो मारे.
१) आऊ त परिचूं पाणमें, ग़ाल्हियूं ग़रिहियूं ग़चु,
सूर अंदर जा सारे, आउ ब्रारूचल अचु ....
२) क़ौलनि कूड़ी आहियां, साईं कंदो सचु,
पयसि जंहिंजे पनारे, आउ ब्रारूचल अचु ....
३) पहण पथिरिड़ियूं डुखियूं, खंयम कोन ख़र्चु,
समर खणंदसि सारे, आउ ब्रारूचल अचु ....
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मन मुंहिंजे में मचु,
वयो ब्रारोचल ब्रारे, आउ ब्रारोचल अचु ....

(7)

लाए त वया मुईअ खे लोरी, हीअ घोरे मुंहिंजी जिंदड़ी जतनि तां.
१) उथी आधीअ राति जो, मुंहिंजो पुन्हलु वठी वया जत ज़ोरी.
२) माण्हू शहर भंभोर जा, आऊ तिन्ही में हुयसि भोरी.
३) कोन्हे डोहु डेरनि जो, मूंखे निंडड़ी अची वेई निदोरी.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मूंखे सिकड़ी लग़ी आहि सदोरी.

(8)

निंड ना करि तूं निमाणी, मथां वेलड़ी विहाणी.
१) ओखा पंध पहाड़ जा तूं, समरु खणजाइ साणी.
२) ब्रिनि दरियाहुनि जे विचमें, ब्रेड़ी वहे पुराणी.
३) हितां हलंदीअ हेकली, तोखे अनु न मिलंदो पाणी.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, साईं थींदमु साणी.

(9)

ड्रिनी का माऊ सूरनि जे पींघे में लोली जीवें.

१) पथर भायां पालकी, ड॒ंगर भायां ड॒ोली जीवें.
२) रोई भरींदसि रतु में, चाकिनि भरी चोली जीवें.
३) अहिड़ी कान कई हुई, ब॒ारोचल ब॒ोली जीवें.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, साहिबु कंदो सवली जीवें.

(10)

पेरें पवंदीसां, चवींदीसां, रही वञु राति भंभोर में.
१) उठ न आरी ज॒ाम जा, वाग॒ं वठंदीसां.
२) चड़ही त जबल चोट ते, सड्ड॒िड़ा कंदीसां.
३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, लोचे लहंदीसां.

(11)

आऊ जे ज॒ाणां साणि न नींदा, छो थी सेज विछियां?
१) निकरी शहर भंभोर मां, वणु वणु थी वाझायां?
२) मूंसां हलो सभु मेड़ करे, पुन्हल खे परिचायां.
३) पाए पांदु ग॒िचीअ ग॒लि कपिड़ो, बदियूं सभु बख़िशायां.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, आस उमेद न लाहियां.

(12)

आरियाणियूं अव्हां छा ड॒िठो हो? जेकी ड॒िठो हो मूं ड॒िठो हो!
१) मखण माखी मिस्री, तंहिं खां मुहब मिठो हो. आरायाणियूं अव्हां ....
२) सिज चंड तारा, कतियूं, तंहिं खां ताबु तिखो हो. आरायाणियूं अव्हां..
३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मन में मुहब उठो हो. आरायाणियूं अव्हां ..

(13)

मां कीअं जीअंदसि जग॒ में पंहिंजे पुन्हल पुज॒ाणा?
हाइ पलि पलि रोअनि था मुंहिंजा नेण निमाणा.
१) उठ त आरी ज॒ाम जा मां सभेई सुञाणा,
कारा, कका, कमिरा ब॒िया नीला निमाणा - मां कीअं ...
२) भाउर होत पुन्हल जा सूरिह सामाणा,
वरु वठी से वाट थिया साझुरि सेधाणा - मां कीअं ...
३) पेकनि पींघे में ड॒िना आयल ओराणा,
मादर मस्तीअ में ड॒िना मूंखे ब॒ंधण ब॒ाराणा - मां कीअं ...
४) करिड़ा ड॒ूंगरा केच जा वकड़ वराणा,
सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, थिया फ़िक्र फ़ुराणा - मां कीअं ...

(14)

दर्दनि जी मारी वेचारी, पुन्हल लाइ रड़ंदी वते.

१) ओखा पंध पहाड़ जा, बर सुझन बारी.
२) कोसा लग़नि ककड़ा, वाटुनि ते वारी.
३) हेड्रे शहर भंभोर में, चोर बीठा चारी.
४) ड्रेरनि मुईअ सां ड्राढु कयो, धार कयाऊं धारी.
५) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, घोट न विझु घारी.

## (15)

राणल तो बिनु राति, मूंखे वेठे वरिह लंघे वया.
१) आऊं त अव्हांजी आहियां कहिड़ी पुछो था ज़ाति?
मूंखे वेठे वरिह लंघे वया.
२) कौअर चूंडींदसि काक जा पिरह फुटी प्रभात.
मूंखे वेठे वरिह लंघे वया.
३) सुती हुयड़स सेज ते तारनि भरी हुई राति,
मूंखे वेठे वरिह लंघे वया.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे ड्रातरु ड्रींदो ड्राति,
मूंखे वेठे वरिह लंघे वया.

## (16)

पेच पुन्हलु वयो पाए, हलु काहे, हिति छाहे?
१) ड्रींदसि बाहि भंभोर खे, लाग़ापा सभ लाहे.
२) थरनि ऐं बरनि में, मुंहिंजो अझो आरियाणी आहे.
३) कहंदसि केच पुन्हल ड्रे, लिंव ब्रारोचो वियो लाहे.
४) ब्रान्ही ब्रारूचनि जी, संङिरो कहिड़ो साहे?
५) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, हुजत होत सां नाहे.

## (17)

हिनखे ख़्याल जो ब्रिया घणा, मां लेखे में नाहियां,
लेखे में नाहियां त, मां भी सूरनि में आहियां.
१) वेठी आहियां वाट ते, आऊ कांग थी उड्रायां,
हिनखे ख़्यालु जो ब्रिया घणा.
२) आऊ अची मिलि, तोखे सपिरीं, सूर के सुणायां,
हिनखे ख़्यालु जो ब्रिया घणा.
३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मुहब त करि माणा,
हिनखे ख़्यालु जो ब्रिया घणा.

## (18)

सज़ण हुजन शाल संवां सचु थी चवां,

छा ड़े कंदियूं ड्रेह जूं ड्रिंगायूं?

१) पेरूं चूंडियसि पांद में, लाम वठियो पेई थी लुड़ां.

२) पट पहिरींदसि कीन के, पलंगनि ते मां कीन सुम्हां.

३) अबाणनि जे उकीर खां, रातियां ड्रींहां रोआं.

४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, पेशु साहिब जे पवा.

(19)

मड़हियूं माग़ु वसाए, जोग़ी वया जड़ लाए.

१) चमड़ा ब्रुधाई चेल्हि सां, पूरबु पंधु पुछाए.

२) तरी न ज़ाणां तार मां, सचो सीर लंघाए.

३) वेठी आहियां वाट ते, विछिड़िया मुहब मिलाए.

४) अदियूं शाह लतीफ़ चवे, हादी होत मिलाए.

(20)

उथी तूं चरखे खे चोरि, सुते मूं सूर पिराया.

१) तंदु बि कढिजि तकिड़ी, ड्राढी ड्रेई ड्रोरि.

२) सन्हो कतणु ना सिखींअ, उथी रंढा रोड़ि.

३) जेसीं रतो रासि थीं, तेसीं भग़े सां भेरि.

४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, आधी उथी तूं ओरि.

(21)

तुंहिंजे आऊ पलइ लग़ी आहियां, मूंखे पलइ लाहिण ड्रियो, आऊ पलइ लग़ी आहियां.

१) छोरी छिनी आहियां, हिन छोरीअ ना छड्रिजो - आऊ ...

२) मूं त वरु विजायो, को मूंसां वड्डु कजो - आऊ ...

३) अदियूं शाह लतीफ़ चवे, हिन ब्रान्हीअ सां गड्रिजो - आऊ ...

(22)

बूंद बिरह जी बहारि लग़ी, दर्दवंदीअ जो देसु वसे पियो.

१) तिखिड़ी सीर समुंड जी, लहरुनि जी ललकार लग़ी, दर्द वंदीअ जो देसु ....

२) उतर ड्रे ककर ककोरिया, ड्रीलनि जी ड्रहकार लग़ी, दर्द वंदीअ जो देसु ....

३) वुठिड़ा मींहं मलीर ते, गाहनि जी गुलज़ारी लग़ी, दर्द वंदीअ जो देसु ....

४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, सज़ण मुईअ जी सार लधी, दर्द वंदीअ जो देसु...

(23)

उमर मयार थी मूंखे मारे, ग़णिती अबाणनि जी,

अला ग़ुणिती अबाणनि जी थी ग़ारे.

१) ब्रकिरी ब्राब्रणनि जी, वलर करे थी वारे,

अला ग़ुणिती अबाणनि जी थी ग़ारे.

२) अला, टकर मथे बाहिड़ी, वियो ब्रारोचल ब्रारे,

अला ग़ुणिती अबाणनि जी थी ग़ारे.

३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, वाग़ वतन ते शल वारे,

अला ग़ुणिती अबाणनि जी थी ग़ारे.

## (24)

कीअं विसारियां वरु अदियूं, मुंहिंजो हाल महरमु यार हो.

हाल महरमु यार हो, दिलि जो महरमु यार हो, कीअं विसारियां वर अदियूं?

१) होत मूंहुं मोड़े वियो, मूं में ड्रिठाईं के मदियूं?

शल सरदार राज़ी थींदो, अल्लाह बख़्शींदो बदियूं.

२) जेके काणियारियूं कांध जूं, से मुहब अग़ियां कीअं मुरकंदियूं?

होत जिंनीं जे हंज में, सुरमा सींगार से कंदियूं.

३) भेनरु शाह लतीफ़ चवे, होत ड्रे कीअं हलंदियूं.

सूर सांढणु कम जिनिजो, से ई मुहब अग़ियां मुरकंदियूं.

## (25)

केचनि सां पवंदो कमु ड़े अदियूं, हाणे हलिबो, हाणे हलिबो. छपरु छड्रिबो.

१) संगु भरींदी सभ का पंहिंजो, लेखो पुछंदइ जम ड़े अदियूं - हाणे हलिबो.

२) हेड्रे शहर भंभोर में, मुंहिंजो सरितियुनि सां ही संगु ड़े अदियूं. हाणे हलिबो.

३) अदियूं शाह लतीफ़ चवे, मुर्शिद लाहींदो ग़मु ड़े अदियूं - हाणे हलिबो.

## (26)

घड़ी पलु हिते रहंदासीं, आख़िर देस वतन ते वेंदासीं.

१) ड्राढो सड्रु सरकारि जो, ड्रोहु सवाबु हली ड्रींदासीं, आख़िरि देस ...

२) चाऊंठ पंहिंजे पिर जी, चश्मनि सां चुमंदासीं, आख़िरि देस ...

३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मिठे मुहब सां हली मिलंदासीं, आख़िरि देस ...

## (27)

पसी ग़ाड़हा गुल, मतां को गुल चांगे खे चारीं.
१) वलियूं विह त विलहाटियूं, फिका संदनि फल.
२) निएं न धरींदइ धूड़ि में, मथऊं पड़हंदइ कल.
३) आख़िर ड्रींहं क़याम जे, थींदो हशरु ऐं हुल.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चइ, लहंदे भिकर ऐं भुल.

(28)

नचु नाचूअड़ा वेल नचण जी, पोइ न मिलंदइ वार यार.
१) भाउर भाइटिया कुटुंब कबीलो, वरी थींदइ वार यार.
२) ईंदइ मुल्क अलाह जा, कंदइ धड़ु त सिसीअ खां धार यार.
३) सरितियूं शाह लतीफ़ चए, साईं लहंदो सार यार.

(29)

मूंखे कान झले, हरिका पाण पले, आऊं वधिड़ी नींहं उछिले.
आऊं त वेंदसि पारि पिरींअ ड्रे, मूंखे कान झले.
१) तिनि त वधाईं तार में, आधीअ में उछिले.
मूंखे कान झले.
२) दूर दूंहीं मेहर जी पसंदे, मुंहिंजो जीउ जो जले.
मूंखे कान झले.
३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मन ते वसु कंहिंजो कीन हले.
मूंखे कान झले.

(30)

जोग़ी ब्रिया बि घणा - आयल रे, मुंहिंजो लिखियो लाहुतिनि सां.
१) सैन हयाऊं सुञ में, छड्रे घरिड़ा घणा.
२) कीन खयाऊं पाण सां, तुंबे मंझि कणा.
३) पूरब थींदा पधिरा, जिनि जे मुंह में मणिया.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मुर्शिद शाल वणा.

(31)

अखिया वञी रांझन नाल लग़ियां.
१) इन अखिया दा डभ न कोई, पटियां ब्रुधि ब्रुधि थकियां.
२) इन अखिया दा मुल्ह महांगा, तोल विकामनि वञी रतियां.
३) पारि दरियाह झोक रांझोदा, ब्रांहूं हण हण थकियां.
४) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, लोक ड्रींदो मांखे बदियां.

(32)

छो थी ड्रोरी तूं ड्रेह, ग्रोलिजि यारु अंदर में.

१) मके मतलक़ ना वञे, हाज़े हिजरे में वेहु.

२) पूरब पंधु परे थियो, स्वामिनि संदरो ड्रेह.

३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मुहब अची पखे पेह.

## (33)

मूं चाढ़ींदो वञु, ब्रेड़याता ब्रेड़ीअ वारा.

१) ब्रेड़ी चंदन आज जी, रूपो संदसि ग्रन.

२) पतणु ड्रींदसि पंहिंजो, पारि लंघाईंदो वञु.

३) बंदर जे त बाज़ार में, कोन्हे मुंहिंजो कमु.

४) लहरूं लोड्रा सही न सघां थी, आहे रुग्री रुञ.

५) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, इहो अर्ज़ु तूं मञु.

## (34)

सारी राति विञायमि, सुते सुते, हैफ़ मुंहिंजे हाल खे.

१) कर्मनि मुंहिंजे कीन कमायो, कहिड़ो ड्रोहु ड्रियां मां तिनि खे.

२) हरिका हलंदी होता ड्रे, कहिड़ो जवाबु ड्रींदी उते उते.

३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, मूं ते महिर कई मुर्शिद सचे सचे.

## (35)

जेकस हुयसि धारी अला, अला जेकस हुयसि.

ओ - ओ - मारुनि तड्रहिं विसारी उमर अदा, जेकस ....

१) वेंदसि रहंदसि कीन की,
तोड़े राति अंधारी, उमर अदा - मारुनि तड्रहिं विसारी ..

२) वसिया मींहं मलीर ते,
गाहनि कई गुलज़ारी, उमर अदा - मारुनि तड्रहिं विसारी ..

३) हीरनि मोतियुनि खां मथे,
वतन जी वारी उमर अदा - मारुनि तड्रहिं विसारे ..

४) झहांगीड़नि जी झोपिड़ी,
महिलें मोचारी उमर अदा - मारुनि तड्रहिं विसारी ..

५) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे,
पंहिंजे वसि न वेचारी उमर अदा - मारुनि तड्रहिं विसारी ..

## (36)

दोस्त पेही दरि आयो, थियो मिलण जो सायो.

१) डीहें पुज़ाण आणे असांखे, मौला मुहिबु मिलायो.

२) वयो विछोड़ो थियो मेलापो, वाहिदु वाउ वरायो.

३) हू जिन्हीं जो ड़सु ड़ोरांहों, ओड़ो अज़ु सो आयो.

४) सुहिणो शाह लतीफ़ चवे, अची अजीबनि पाण फ़ज़ल फ़रिमायो.

## ड़ोहीड़ो

मुहबत जे मैदान में, सिर जो सांगु म करि,

लाहे सिरु लतीफ़ चवे, दोस्तिन अग़ियां धरि,

इश्क़ नांग अपरु, ख़बर खाधनि खे पवे.

## कलाम

यार सज़ण जे फ़िराक़ऊं मारी.

१) दर दोस्तनि ज के जे हूंदा, मूं जेहा मुशताक़ मियां - यार सज़ण ..

२) जाते काथे महबूबनि जी, आहे हुस्न जी हाक - यार सज़ण ...

३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे पिरीं असांजो -

हमेशह हुसिनाक - यार सज़ण जे फ़िराक़ऊं मारी.

## ड़ोहीड़ो

जाजक झूनागड़ह में, को अताई आयो,

तंहिं कामिल कढी कीनरो वेही विज़ायो,

शहर सज़ोई सुर सींन तंदुनि तपायो,

दायूं दर मांदियूं थियूं, ब़ायुनि ब़ाड़ायो,

ब़ीजल ब़ोलायो, त आहियां सुवाली सिर जो.

## कलाम (38)

ड़िनो राइ ड़ियाच मियां, हीउ सिरु साहिब तां सदिक़े.

१) छड़े हलियो हितहीं, राणियूं पंहिंजा राज़ वो मियां - ड़िनो राइ ड़ियाच ....

२) मंङी वरितो मङिणे, कुही साणु कुमाच वो मियां - ड़िनो राइ ड़ियाच ....

३) अदियूं शाह लतीफ़ चवे, थियसि कम सुकाच मियां - ड़िनो राइ ड़ियाच ....

## (38) (ए)

परिदेसिनि जी कहिड़ी यारी? राति रही कनि सुबुह तयारी.

१) उठ त आरीअ ज़ाम जा, बार खणंदा बारी - राति रही ...
२) ड्रेरनि मुईअ सां ड्राढु कयो, धार कयाऊं धारी - राति रही ...
३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, घोट न विझु घारी - राति रही ...

## (39)

गिला का म करे, लिखियो तां न टरे
बुड़ी! जेड्रियूं! मुंहिंजे वो शहर भंभोर में.
१) जो सींगारु सरितियुनि, सो मूं नाह ग़ुरे - लिखियो तां ....
२) जहिड़े तहिड़े हाल सीं, वञां पेर भरे - लिखियो तां ....
३) क़ज़ा जा करीम जी, कंहिंतां कीन टरे - लिखियो तां ....
४) जेकी लिखियो लोह में, पाड़ियां सो पड़े - लिखियो तां ....
५) अदियूं शाह लतीफ़ चवे, शल क़ादुरु कर्म करे - गिला काम करे ...

## (40)

डूरि वञियो ड्रींहं लाइ, का सोढल खे समुझाए,
जेड्रियूं! मुंहिंजे राणल खे, का ब्राझ पए!
१) छना, मनह माड़ियूं[1], ओड्रांहं अड्राए.
२) मेंड़[2] मुंजां थी, मेंधड़ा! तो दरि तेलाह[3].
३) मिन्थ मुंहिंजी मेंधड़ो, मान[4] म मोटाए.
४) फटियल मींहं फ़िराक़ जा, वेठी वसाए.
५) सोढा! सिरु पिणि घोरियां, आऊ करहो काक वराए.
६) लडूणियां, लतीफ़ चइ, शल पेरु मुईअ ड्रे पाए.
डूरि वञियो ड्रींहं लाए ...

## (41)

जोड़ि जूतीअ जे नाहियां, आशिक़ कीअं सड्रायां
आशिक़ु कीअं सड्रायां - दासु बि दर जो नाहियां.
१) मुरिलियूं सुरिलयूं नाज़ नफ़ीअ ला
मां त दरि दरि बीन वज़ायां ड़े यार - जोड़ ....
२) ग़ोले त लहंदियसि वर पंहिंजे खे,
मां त केच जबल ड्रे काहियां - आशिक़ु कीअं..
३) सुहिणो शाह लतीफ़ चवे थो,
सीनो कीअं मां साहियां - आशिक़ु कीअं ...

## (42)

हर्फु होतनि जो आहे ड़े, कीअं मां चवां मूंखे नाहे ड़े.

१) ओ ड्रींदसि माहु मिरुनि खे, लइम लिङनि तां लाहे ड़े कीअं मां ....
२) ओ ड्रींदसि बाहि भंभोर खे, चौ तरफ़ खां ठाहे रे ड़े कीअं मां ....
३) ओ सुहिणो शाह लतीफ़ चवे ओ - ओ छिनणु ग॒ढणु तिनि खे छाहे रे. कीअं मां

## (43)

ड्रेई वयमि ड्रेर - ड्राढा मुंहिंजा ड्रेर.
ओजाग॒ा त अखियुनि खे ओजाग॒ा ...
१) उथी आधी राति जो, सुबुह वयमि सवेर.
२) हैड्री महल वणनि में, ही कमीणी केर?
३) कंगूअ रतिड़ा कपिड़ा, मेंदी रतिड़ा पेर.
४) नाऊ सड्रायां ससुई, ज़ाति न ज़ाणा केर.
५) सुहिणो शाह लतीफ़ चवे, सुहिणा संदनि थिए सेर.

## (44)

मूं त पिरीं कया पंहिंजा, मुंहिंजा थियनि न थियनि वो.
१) ऐबनि भरी आहियां, ड्रोह कीन ड्रिसनि.
२) आऊं त उनहनि जी आहियां, तोड़े मूं न मञीनि वो.
३) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, चाह मंझां चाहीनि वो.

## (45)

लिखए पंधड़ो करायो मुंहिंजो पेरनि खे,
कहिड़ो ड्रोहु ड्रियां मां ड्रेरनि खे.
१) कोन्हे ड्रोहु ड्रेरनि जो - निंडड़ी खणी वई नेणनि खे, कहिड़ो ....
२) वेंदसि रहंदसि कीन की, सूर सलींदसि सेरनि खे - कहिड़ो ....
३) ड्रींदसि बाहि भंभोर खे, जोशु वठी वियो जेरनि खे -कहिड़ो ...
४) छोह छंडीदसि कीन की, वसि कंदसि पंहिंजे वेरियुनि खे-कहिड़ो ....
५) सरितियूं शाह लतीफ़ चवे, माफ़ कंदो मुंहिंजे मेरनि खे - कहिड़ो ....

## (46)

तुंहिंजी तुंद तंवार यार, मूं मन मोहियो.
१) मिल्ही आएं मङणा! गजी में गिरनार.
२) सिर जी सदा छड्रि तूं, ड्रियाइं ड्रेज अपार.
३) दान ड्रिजाइं दुहिरा, हज़ारें हज़ार.
४) अला! अब्दुल लतीफ़ चवे, पसां पिरियुनि पार.

(47)

जिनि लखियो ड़ी मुंहिंजो अंगु अदियूं,
क़लम खां काड़े वञां.

१) लिखण वारनि हो लखियो - हिनि त निधरि जो अंगु अला.
२) पातऊं पेच प्रीति जो, वासींग वारो वंगु अला.
३) हेड़े शहर भंभोर में, कोन्हे को मुईअ जो मटि अला.
४) सुहिणो अब्दुला लतीफ़ चवे, साईंअ सां मुंहिंजो सङु अला.

## (९७ शाह हुस्न)

आप सड़ाईंदा फ़क़ीर तैनूं लज़ नहीं आवंदी.
१) माण्हुनि लेखे अन नहीं खावंदा, लिकि लिकि पीअंदा खीर, तैनूं लज़ ...
२) अपना आप उठा[1] नहीं सघंदा, ओरां ड़ींदे धीर, तैनूं लज़ ...
३) रातिया सोवे ग़फ़लत दे विचि, ड़ींहां पड़ावे पीर, तैनूं लज़ ...
४) शाह हुस्न फ़क़ीर साईं दा, नेणनि वहंदा नीर, तैनूं लज़ ...

## (९८ शाह नसीर)

रमज़नि साणु ग़ुलाम कयो थो सज़ण असांखे,
सज़ण असांखे - साईं असांखे.
१) कंहिं खंयो दीनु, कंहिं खईं दुनिया,
इश्क़ असुल खां, इनाम ड़िनो थव - सज़ण असांखे.
२) नस नस में हंयव मेख़ मुहबत जी,
लूंअ लूंअ में त लग़ाम विधो थव - सज़ण असांखे.
३) शाह नसीर खे तलब अव्हांजी,
खाइणु पीअणु त हरामु कयो थव - सज़ण असांखे.
रमज़नि साणि ग़ुलाम .....

## (९९ शाह विलायत)

आहे पिरीं अंदर में, बाक़ी हिजाब कहिड़ो!
पर्दो पियो पधर में, बाक़ी नक़ाब कहिड़ो!

१) पैदा थियो आ आदम, सूरत मुंहिंज इलाही,
समायो आ सभ में, बाक़ी ख़राबु कहिड़ो! आहे पिरीं ...
२) दिलिबर जा दाबु दड़िका, जेतरि आहे जुदाई,
वसे थो नूरु नज़र में, बाक़ी सवाबु कहिड़ो! आहे पिरीं ...
३) शाही वो शाह विलायत वारी वज़ाए, वहिदत,
बाला पिरीं बशर में बाक़ी नवाबु कहिड़ो! आहे पिरीं ...

## (१०० शौक़)

कशियो जो तो बिरह जो तीरु, किथि सो पारि लंघणो आ!
चुभायो यार अहिड़ो थी, उमिर भरि जो न चुरणो आ!
१) दुखी थी दर्द मूं जड़हिं तबीबनि ड्रे वञां थो मां,
ड्रिसी छिड़की चवनि था से, असां खां ही न छुटणो आ!
२) तूं ई जराह मुंहिंजो आँ, दवा मुंहिंजी तो वटि आहे,
मलम जे वसलु जी लाईं, त झटिपटि सूरु वञिणो आ!
३) मसीहा शौक़ सां अचु तूं, मरीज़े इश्क़ वटि हाणे,
अचीं न त नींहं जो, नासूरु प्यारा थी ई पोणो आ!

## (१०१ शेरल)

अदा रे उमिर मुंहिंजा भाऊ, ग़ाल्हियूं ग़ुण ग़ोठ ग़ाईंदसि.
१) हितूं वेंदसि वञी ड्रुंदसि, सुखा[1] सारे मां पीरनि खे,
भरे मां पांदु पीरनि जो वलियुनि[2] ते विरहाईंदसि.
२) असीं मारू वलर चारियूं, बाहियूं ब़ारे वलर वारियूं,
छेला छेलियूं अदा उमर तुंहिंजा, आऊ नंढिड़ा करे निपाईंदसि.
३) जेतर हूंदियसि उमिर तो वटि, मथो मां मूर न धोईंदसि,
जे चवंदे वरु ड्रे वारनि खे, वेतर वारी वसाईंदसि.
४) चवे शेरल अदलु थींदो, ज़ुल्मु ऐं ज़ोरु कमु न ईंदो,
इहे इन्साफ उमिर तुंहिंजा, वञी वेड़िहीचनि खे सुणाईंदसि.

## (2)

मुनवर मुंहुं पिरीं पंहिंजो, ड॒खारींदें त छा थींदो?
मुए खां पोइ मरक़द ते, हली ईंदें त छा थींदो?
१) जनाज़े ते सड़े आशिक़, दुआउनि ऐं दर्धूदनि सां,
रखी ही लाशु तख़्ते, उजारींदे त छा थींदो?
२) सिकायल खे सड़े सुहिणा, विहारिजि साणु गडु गोड़े,
निमाणनि यार नेणनि सां, निहारींदें त छा थींदो?
३) जड़हिं ड॒ह ड॒ह भेरा जानी, अङण मुंहिंजे में आयवु थे,
वठी हीअ ब॒ांहं ब॒न्हीअ जी, विहारींदें त छा थींदो?
४) भरे पैमान पट पूरा, ना तिरिसाइजि तूं तिर तंहिंखे,
चको हिनि आब हयाती जो, पियारींदें त छा थींदो?
५) कयव जे क़ौल कालहोका, से विसिरी विया अथई छा?
सज॒ण सभु शर्त शेरल जा, पाड़ींदें त छा थींदो?

## (3)

ख़ोबरो हिकु ख़ूबि ख़ासो मुहब मुंहिंजो मुल्क में,
नाह को इन सां बराबर सूंहं वारे मुल्क में.
१) हुसन वारा ख़ूबि ख़ासा सूंहं लइ जिंसार कनि,
कोन लहंदा फ़ाइदो जिंसार जो को मुल्क में.
२) मुहबु मुंहिंजो ख़ोबिरनि में सूंहं जो सरिदार आहि,
कांगा, मूंसां करि ख़बर को ज़ोरु आ ब॒ियो मुल्क में?
३) जल्द मोकिलि, मुहब मुंहिंजा, सुबह साझुरि ख़बर,
मूं सवा साम्हूं सबा सां कोन मिंलदो मुल्क में.
४) सूंहं वारनि साणि शेरल रहिजि दिलि सां बावफ़ा,
बावफ़ा जो नांउ आ नामूस वारो मुल्क में.

## (4)

दिलि दर्द में आर्ज़ू आहि, ड॒े दर्द लइ दारूं दवा.
अज॒ु आस बि आरसि आहि, ड॒े ज़ौक़ लइ ज़रिड़ी दवा.
१) वह आस आ इन अखि में, ऐं दर्द में आज़ार आहि,
अखि आस ड॒े रखु ए अदा, रीअ आस न दारूं दवा.
२) रे ज़ोर आहि दिलि दूरि आहि, अज॒ु रोज में दिलि ज़ोर आहि,
दिलि दर्द में दाग़दार आहि, इन दाग़ लइ दारूं दवा.

३) रोज़ि राति आ रोज़ राड़ आहि, ऐं विरह में आरामु न आह,
इन दर्द में आज़ारु आहि, आ ज़ार लइ आज़ी दवा.
४) दिलि दर्द लइ दारूं दवा, वह वाह आहे विरह में,
वठु वाट शेरल अज़ु रवा, ड्रिसु विरह में आहे दवा.

(5)

न मूं चोरियो चरिख़ो न मूं कई आहे कतण जी,
कमीणी मूं जहिड़ी जग़ में नाहे आतण जी.
१) हितां पारि पिरीं आऊ जड्हिं वेंदसि,
हथें ख़ाली आहियां हुते छा आऊं ड्रींदसि,
सिवाइ तो धणीअ जे, पाई नाहे पतण जी.
२) मण सेर वटियूं तोरारा जे तुरंदा,
अग़ियां सराफ़नि पधर से थी पवंदा,
खणंदा हथनि में ताराज़ी तोरण जी.
३) न मूं कई आहे कमाई न मूं मिली मज़ूरी,
उमिरि गुज़िरी मुंहिंजी वेई समूरी,
वियो वक़्तु गुज़िरी सिज बि कई आहे लहण जी.
४) जिनि खे भाग़ मरायो, भिरायो तिनि जो वारो,
तिनि जे अंदरि जो मिटियो सभु त मुंझारो,
शेरल साणु हाणि करि मुहब मिलण जी.

## (१०२ श्याम)

सरिदारु करे वापारु, सुहिणे थांव ठिकर जा विकिणे.
१) अखियूं कुंभारण जूं अचिरज में हुसनु ड्रिसी हाकिम जो,
लहे चड़िहे छो छाती तकिड़ी? दिलि में छा जो दहको?
सरिदारु पुछे अघु पारु - सुहिणे थांव ठिकर जा विकिणे.
२) उथी खड़ी थी सुहिणी झटि पटि चग़ूं हटाए मुंहं तां,
पर संहिड़ी चेल्हि सईं कीअं थिए, वापसि वेठी लज़ में,
एड्रो छातीअ बारु! सुहिणी थांव ठिकर जा विकिणे.
३) अखियूं छिंभे तकिड़ो तकिड़ो? छा खूं लिकी निहारे?
'हिर्ख जा हारे, हंजूं हारे', छो न थी ईअ वीचारे?
वीचारण खां लाचारु - सुहिणी थांव ठिकर जा विकिणे.

४) गज ते ही कावा मटिजी छो न बणिया आईनो?
रोशनु अकिसु ग्राहक जे खां चमके हा पियो सीनो!
इस्रारु अजबु इस्रारु - सुहिणी थांव ठिकर जा विकिणे.

५) सरिदारु घुरे सौदो दिलि जो, दिलि वठंदो दिलि ड्रींदो,
सुहिणी वेचारी वेचारी, 'पोइ हाणे छा थींदो!'
इन्कारु नको इक़रारु - सुहिणी थांव ठिकर जा विकिणे.

(2)

१) जोभनु ऋतु आई जीवन में, सरिहाई छाई तन मन में,
ग़ायां, गुल फुल फेरियूं पायां, चिन्ता धारा बन अपबन में!
मां ब्रह्मा जी सूख्यम रचिना - मुंहिंजो जीवनु सपना सपना!

२) जल जे परियुनि जीअं जल में, हँस मुखु थी घारियां हंसनि में,
मेही कमलनि जे ब्रेड़ीअ में, ख़ुशि थियां लहरुनि जे लोड्रनि में,
मां ब्रह्मा जी सूख्यम रचिना - मुंहिंजो जीवनु सपना सपना!

३) सपननि जा पर खोले उड्रिरां, ड्रिसंदे इंदर पुरीअ में पुहचां,
वीना छेड़े जीअं ई ग़ायां, गंधरव हथ जोड़नि शरिधामां!
मां ब्रह्मा जी सूख्यम रचिना - मुंहिंजो जीवनु सपना सपना!

(3)

अला! ईअं न थिए जो किताबनि में पढ़िजे,
त हुई सिंध ऐं सिंध वारनि जी ब्रोली!

१) नईं आहि नितु नाज़ वारनि जी ब्रोली,
निगाहुनि, अदाउनि, इशारनि जी ब्रोली!

२) मिठी आहि कोइल जी कू कू मिठी आहि,
मिठी आहे सच बेक़रारनि जी ब्रोली!

३) मिटीअ जे ज़रनि जो त कुझु राज़ सलि तूं,
ड्रुखी नाहे समझणु सितारनि जी ब्रोली!

४) ख़िजां हाल ओरे त कंहिं सां ओरे,
सभेई जे सिख्या बहारुनि जी ब्रोली!

अला! ईअं न थिए जो किताबनि ...

## (4)

जिंदगीअ जे राह में, डोड़ी जड्हिं थकिजी पवां,
यादि तोखे थो करियां!

१) ही बि माणियां, हू बि माणियां, दिलि घुरे छा छा न थी,
चंडु तारा लाहे आणियां, दिलि घुरे छा छा न थी,
पर चड़िही पुहुचण बजाइ, जड्हिं किरी फटिजी पवां,
यादि तोखे थो करियां!

२) हिनजी चाहत, हुनजी चाहत, दिलि जी हीअ हालति बणी,
नाह राहत में बि राहत, दिलि जी हीअ हालति बणी,
मुरकंदे भी कीन जे मुरकी सघां, रोई पवां,
यादि तोखे थो करियां!

३) ही बणी मां हू बणां, थी दिलि जी ख़्वाइश नितु नईं,
ही खणी मां हू खणां, थी दिलि जी ख़्वाइश नितु नईं,
पाए पिणि कुझु भी न पायां, पाण मां विरची पवां,
यादि तोखे थो करियां!

## (5)

अञा रोशनी ड्रे, अञा रोशनी ड्रे,
अञा ताईं दुनिया असांजी अंधारी!
सुझे कोन चारो, अञा रूह भिटिके,
अञा रोशनी ड्रे, अञा रोशनी ड्रे!
इनहीअ सिज, इनहनि चंड तारनि जे हूंदे,
अञा ब्राट कारी, अञा ब्राट कारी,
अञा रोशनी ड्रे, अञा रोशनी ड्रे!

## (6)

तुंहिंजो नातो राणा - मूमल लइ समिझाणी!

१) खीर भरिया जे हथिड़ा - अजु से हंजुनि हाणा,
मूमल लइ समिझाणी!

२) भौवंर भंभोलिया जिनि ते - से त कंवर कूमाणा,
मूमल लइ समिझाणी!

३) सांग ड्रिसी सूमल जो - ग़ुरिया नेण नमाणा,
मूमल लइ समिझाणी!

४) माणनि जे मागनि ते - विरह वसाया भाणा,
मूमल लइ समिझाणी!
५) काल्ह पुछायो जिनि थे - अजु तिनि लाइ पुछाणा,
मूमल लइ समिझाणी!...

## (१०३ शेरख़ान)

नवां नवां दाम दाम, सजण मिठल जा सलाम,
दोस्त विधा दिलि मुंहिंजीअ खे, नवां नवां दाम दाम.
१) लिंव ब्रारूचल वियो लाहे, ब्राण हणी वियो कीन बुधाए,
आऊ त गिचीअ पांदु पाए, सुबुह सजण शाम शाम.
२) पलक पलक थे न परे, साइत मुंहिंजी कीन सरे,
हीअ मिस्कीन हिति मरे, सजण तुंहिंजे माम.
३) आऊ त असुलु उनहनि जी आहियां, सीनो यार कहिड़ो साहियां,
ब्री त हुजत कान भायां, कहिड़ी हणा हाम हाम?
४) शेरख़ान चवे जेतर जीआं, सौ भेरे सदिक़े थियां,
महिर पवेई मन का मियां, हिन निधर ते ज़ाम ज़ाम.

(2)

सजण सांगि वियड़ा, अलाह तिनि खे आणे!
नाहे निंड नेणनि खे, धणी पाकु ज़ाणे!
१) बाज़ू बंद पिञिरे, असुलु खूं मां आहियां,
कयमि क़ैद क़िस्मत, वसि पंहिंजे नाहियां,
दुखनि दर्दन दूंहां, उझामनि न हाणे!
२) पखी थी पिरींअ ड्रे, वञां शल उड्रामी!
उड्रामणु न ज़ाणां, अंदरि बेआरामी,
सरे साइत न सांगियुनि, गाराणो थो गारे!
४) शेरख़ान सांगियुनि खे, सदा रोज़ु सारे,
गोली थी गूंदर में, ड्रुखिया ड्रींहं गुज़ारे,
वयमि सूर सरितियूं, सैद जे सामाणे!

(3)

उमर देरि लाई अलाए छो अबाणनि,
कयुमि ड॒ोहु कहिड़ो ड॒मरु कयो ड॒ाड॒ाणनि?
१) ड॒ुहागि॒णि ड॒ुखीअ जो जले जोशु जेरो,
मारू माइट मुईअ जा कयाऊं कोन भेरो,
कोड़ें कांग उड॒ाया मन के सुञाणनि.
२) लूणक ललड़ मरीरो कहिड़ो न मिठो हो,
मखणु माखी मिस्री खाई जिनि ड॒िठो हो,
मुंहिंजो सडु ड़े तिनि सां सचु करे सुञाणनि.
३) अलहु पाक पखिरु उमेदूं पुज॒ाईंदो,
मेलो शेरख़ान जो सांगियुनि साणु थींदो,
अमानत सलामत ओड॒हीं शाल उमाणंनि.

(4)

क़समु आहे ख़ुदाई जुदाई थी मारे,
सिकंदे साल थीअड़ा, घड़ी वञु गुज़ारे.
१) तोसां पेचु पिअड़ो, अथमि इश्कु थीअड़ो,
सज॒ण तुंहिंजी सिक में, हलियो होशु वोअड़ो,
नंगी नंगु सुञाणिजि, अचिजि वाग॒ वारे.
२) तोसां पेचु पातुमि, पाए कीन ज॒ातुमि,
अग॒े इश्कु अहिड़ो, कंहिंसां कीन लातुमि,
कजि कुर्ब पंहिंजा, वेहिजि न विसारे.
३) सोढल थी सियाणो, न करि मुहब माणो,
शेरख़ान इश्क़ तुंहिंजे, कयो आहि निमाणो,
हलां हाणे हुब ड॒े, हंजूं रोज़ु हारे.

## (१०४ शाद)

जेड॒ियूं अजु॒ ख़ुशि थियो - सरितियूं अजु॒ ख़ुशि थियो, मारू ईंदमि माग॒!!
१) मुहबु अचे थो, मेंदी लग॒ायां, सुहिणी सेज सजायां,
चंड खे लाहे घर में आणियां, ब॒ह ब॒ह गसु ब॒हिकायां, रोशनु थींदुमि भाग॒.
२) फुलवाड़ीअ जा फूल छिनी सभु, राह में तुंहिंजे विछायां,
कोइलि ऐं बुलिबुलि जूं लातियूं, रुह में पंहिंजे समायां, ग॒ायां रसीला राग॒.
३) शाद ख़ुशीअ में नची नची, मां सुधि बु॒धि सुरति भुलायां,

फिरां फिरां अहिड़ो जो, गडु धरितीअ खे भी फेरायां,
चमि चमि मुंहिंजा चाग॒, मुंहिंजो मारूं ईंदुमि माग॒!

(2)

आऊ ढोलिया त करियूं प्यारु - हलिया वेंदासूं!
केसीं हीअं रहिबो भला धार - हलिया वेंदासूं!

१) कुझु ख़ता मुंहिंजी, कुझु त तुंहिंजी बि हूंदी ढोलिया,
थींदा पूरा न ही तकिरार - हलिया वेंदासूं!

२) जा घड़ी गुज़िरी करे, कीन लज॒ी शल मूंखे,
ज़िंदगी आहि घड़ियूं चार - हलिया वेंदासूं!

३) बसि जीअणु पंहिंजो फ़क़्त आहि, या बि॒ए जो बि ख़्यालु?
करि बि॒यनि जो बि त वीचारु - हलिया वेंदासूं!

४) हू हसीन चहिरा ऐं हीअ दिलि ऐं हू उल्फ़त जो असरु,
छा! छड़े सुहिणो ही संसारु - हलिया वेंदासूं!

५) मौत आहे त जीअण थिए थो ज़्यादह ज़ाहिर,
शाद जीवन जे करियूं - हलिया वेंदासूं!

(3)

खिलंदो आयो मस्तु बहार!

१) भांति भांति जा फूल टिड़िया, जिनि लाती झग॒ मग॒ जाई,
हर हर ख़ुश थी आनंद जी, ड॒िसु वण था ड॒ियनि वधाई,
सावक सुहिणी, मन खे मुहिणी, नाचु नचे हरि टार,
खिलंदो आयो मस्तु बहार!

२) शाख़ शाख़ ते पंछी प्यारा, नचनि टपनि चौधारी,
मिठिड़ियूं मिठिड़ियूं बो॒लियूं, पखियुनि जूं गुलशन में थियूं जारी,
राग॒ु अलस्ती, मौज़ ऐं मस्ती, लातियुनि जी ललकार,
खिलंदो आयो मस्तु बहार!

३) नेण नशे में, मनु मस्तीअ में, दिलिड़ी थी मधहोशु,
भरे बसंतु ड॒े मध जी प्याली, हरिकोई मेनोशु,
हीर ख़ुमारी, जादूअ वारी, रग॒ रग॒ में थिए ठारु,
खिलंदो आयो मस्तु बहार!

(4)

हिरिदे जी आस लिकाईंदसि, मां केसीं प्यारु छुपाईंदसि?

१) मूंखे विरह कयो व्याकुलु, वयो चैनु खसे साजनु दिलि जो,
हीअं होत खे हर हर यादि करे, केसीं लुड़क वहाईंदसि?
२) मूंखे साजन जो स्पर्शु सारे, अंग अंग में उमंग उभारे,
केसीताईं पंहिंजा जुज़ुबा, मां दिलि में हाइ दबाईंदसि?
३) न थी पाण में का हिमत समझां, जो दिलि जो करियां मां राज़ु अयानु,
चुपु चापि में हीअं केसीताईं, मां जीवति पंहिंजी हलाईंदसि?

(5)

औखी विरह जी राति पखीअड़ा - औखी विरह जी राति!
१) कारा कारा बादल गर्जनि, दर्दवंदनि जूं दिलिड़ियूं तड़िफनि,
गोड़िहिनि जी बरसाति पखीअड़ा - औखी ....
२) सिक जे सड़िरा साजनु सुणंदो नेठि कंदो हो तोखे पंहिंजो,
वेंदी हटी फ़िकराति पखीअड़ा - औखी ....
३) पिञिरे जा ही पैद भञी तूं, साजन सां मिलु शाद वञी तूं,
ब्री सभु झूठी बाति पखीअड़ा - औखी ....

(6)

जे ज़िंदगीअ मां निकरी वञे चाहु छा कजे?
ऐं दिलि खे बि जे प्यारो लगे साहु छा कजे?
१) नेणनि जे नीर सां हीअ विसाया त दिलि जी आगि,
ब्रारे जे आह को ब्रियो आड़ाह छा कजे?
२) जे कुझु मिले थो यार खां हिकु दर्दु थो मिले,
विसरे तड़हिं बि कीन थो दिलि ख़्वाह छा कजे?
३) मिंथुनि खे मां छड़े थो वठां बेरुख़ीअ जी वाट,
पर पोइ बि जे न यारु करे ठाहु छा कजे?
४) महनत जो फलु जे हिन न त ब्रे जन्म में मिले,
जन्मनि में पर ज़मे न जे वेसाहु छा कजे?

(7)

प्रेमु - पूजारी मां तुंहिंजो, तुंहिंजो ई पूजनु कंदुसि,
मूरती तुंहिंजी मां$_1$ मन - मंदर में स्थापनु कंदुसि!
१) ओट तूं, मुंहिंजो अझो, वाहिर वसीलो आंहिं तूं,
हर घड़ीअ सिक साणि साईं, तुंहिंजो मां स्मरनु कंदुसि!

२) दिलि जो घरु आहे वकोड़ियलु, चौतरफ़ अंधकार सां,
पर जगाए जोति तुंहिंजी, दिलि जो घरु रोशनु कंदुसि!
३) प्रेम तुंहिंजे खां सवाइ, ब्रियो को पवित्र प्रेमु नाहे,
तोखे ई सिक साणि तनु मनु धनु वचनु अर्पनु कंदुसि!
४) पंहिंजे ग़ोढ़नि सां उघी हृदो ऊजलु पूजनु कंदुसि,
तुंहिंजी हिक झाती झटण लाइ, दिलि खे दर्पनु कंदुसि!
५) तूं मिले, आशा जूं मुखिड़ियूं गुल बणी मुरकण लग़ियूं,
पंहिंजे आशा जे गुलनि सां जग़ु सज़ो गुलशनु कंदुसि!
६) प्रेम जी भेटा धरण लाइ छा खणी तो वटि अचां,
छा अथमि? हा नज़रि बसि लुड़कनि भरियल दामनि कंदुसि!

## (8)

वई ड़े वई - दिलि काड़े वई
दिलि दिलि ड़े वई, दिलि ईंदी वरी या न वरी,
कान वई चई - हाइ वई ड़े ....

१) घणो मन खे चयुमि - मनु कीन मञियुमि,
ओ ड़ोहु ड़ियां कंहिंखे - मूं त पाण सां कई. वई ड़े ....
२) ड़िसी अखियुनि में प्यारु - चड़ही वियो जो ख़ुमारु,
दिलि वेई खसिजी - कल कान का पेई. वई ड़े ....
३) वेठी हीला हलायां - वेठी कांग उड़ायां,
पिरीं वियो परदेसु - पर कीन वियो चई. वई ड़े ....
४) पंहिंजो प्यारु लिकाए - वियो सिक में सिकाए,
हिक ब्रिए जे जुदाईअ में - तड़पनि था ब्रुई. हाइ वई ड़े ....

## (१०५ शेवासिंघ)

तुंहिंजो तो मंझि आहे रामु, छो पियो ड़ेह जा ड़ूंगर ड़ोरीं?
१) अंदरि कैब क़बीलो अंदरि, अंदरि मस्जिद मंदरु अंदरि.
अंदरि सभ कुझ आहे तामु, केड़ांहूं वणनि में वेठो वोरीं.
२) अंदरि ब्रह्मा, विश्नु अंदरि, अंदरि शंकर, शशकर अंदरि,
अंदरि सभ कुझ आहे ताम, छोन न थो मन जे मुंहं खे मोड़ीं?
३) अंदरि सूरज, चंदर अंदरि, अंदरि जमुना, गंगा अंदरि,
अंदरि तीरथ अठसठ धाम, केड़े वञण जा जोड़ पियो जोड़ीं?

४) अंदरि जोगी, जोगु पचाइनि, अंदरि दिलि में दूंहां दुखाइनि,
अलख जगाए सुबह ऐं शाम, शेवा स्मरनी छो न थो सोरीं?

(2)

तुंहिंजे दर्शन जे दीदार मथां ब्रलिहार धणी,
ड्रिज करूणा जी का भंडार मंझां करितार कणी.

१) ऋषी मुनी सभ, पीर पैग़म्बर, तुंहिंजे दर ते पेनार पिननि बीखार बणी.
२) लाख करोड़ें सूरज चंद्र, तुंहिंजी जोति अपार, चड़हनि होइ हज़ार खणी.
३) चल चर बन चर पखी पखीअड़ा, मोहित ते हरवार नचनि ललकार हणी.
४) गुल फुल बन में संत समाधी, शेवा से दातार जी कनि सदबार खणी.

## (१०६ शेवाराम)

सचन राम सुञातो, नाहे कम कूड़नि रे जीजल.
१) भिटिकनि भलकनि भव में, रातियूं ड्रींहं रुलनि रे जीजल.
२) संगु न कयाऊं साध जो, मोगुनि साणि मिलनि रे जीजल.
३) रसु न चखियाऊं मिठे राम जो, भोगु मंझि भुलनि रे जीजल.
४) **शेवाराम** रखनि जे श्रधा, सूर न कंहिंखे सलनि रे जीजल.

## (१०७ श्रीकांत 'सिदक़')

कहिड़ा लेखा असांजे सपननि जा,
हित फ़क़्त हिसाब हा ज़ख्मनि जा.
१) जशन जे मंज़िलनि ते कीअं पहुचनि?
जेके शाइर उदासी रस्तनि जा.
२) केतिरा ख़त अव्हांखे कोन मिलिया,
जिनि में अहिवाल हा अज़ाबन जा.
३) माठि तुंहिंजीअ करे छड्रिया ख़ामोश,
दिलि में तूफ़ान हा स्वालनि जा.
३) सुधि न पेई ग़शी हुई या मौत,
पेर महटे ड्रिना मूं ज़ुबनि जा.

## (स)

## (१०८ साहिबड्रिनो)

सूर सख़्तियूं सालिकनि खे, मुहब महिमानियूं मुका,

## (स)

## (१०८ साहिबड़िनो)

सूर सख़्तियूं सालिकनि खे, मुहब महिमानियूं मुका,
अहंज औखियूं आश्क़नि खे, दोस्त दिलिदारियूं मुका.

१) कम नाहे कोदकनि[1], बिरह में कंहिंखे बात नाहि,
सिर ड्रिइण सूरीअ चड़िहणु, ड्राढा इश्क़ जा धूणा थिका.

२) उञ न ओड़े आश्क़नि, बुख बेरागीन नाहि क्रा[2],
वहदती वासल थिया, वतनि लोकों पिया लिका.

३) मन्सूर जहिड़ा मर्द के, जिनि थे हंया नारा निका,
से सड़ी वञी ख़ाक थिया, ब्रोली अनालहक़ जी हिका.

४) साहिबड़िनो सिक सोज़ मां, रहिजि हमेश्ह तूं सदा,
नांऊ हिक अल्लाह जे, ब्रोली ब्रोलिजि तूं ब्री न का.

## (2)

यार सांवल, तुंहिंजूं ग्रुणे ग्रुणे ग्राल्हियूं,[3]
पाण पंहिंजो मंझि पूर में विधोसी!

१) बेख़बरीअ जे मुल्क में, महकमु मस्ती जे मख़िमोर विधोसी ...
२) अठ ई पहर मंझि औरात[4]ी, इनही ग़मज़न मंझि घोरि विधोसी ...
३) यार साहिबड़िना खे यक रंगी में, साह सूरीअ मन्सूर विधोसी..

## (3)

हिकिड़ो मनु मोहन मूंखे मिले, तोड़े ख़ल्क़ सारी पेई खिले.

१) सुहिणल साईं पंहिंजा सभई सिपाही, शाहनि जी तोसां हले न शाही,
टोड़ अजाइबु टिले.

२) ऐश ख़ुशियूं आराम सभई, से छड़ियासी ड्रेह खे ड्रेई,
बिरह कयो से बली.

३) साहिबड़िना अकीसर असां वटि[5], इश्क़ वारनि जो अमीरु असां वटि[6],
सोज़ु न ब्रिड़ कंहिं सां सले.

## (4)

अखिड़ियूं अजीबनि सें अड़ियूं - बेशक, लाशक लड़्ियूं!

१) अखिड़ियूं अजीबनि ड्रिसण लाइ आहीनि उदासी, अलो ...

सोज़ इनहीअ में सड़ियूं.

२) वेंदसि, रे मियां, विंदुर सामहें, अलो ...
मूं में झलियो आहीं अदियूं, ब॒ड़ियूं!

३) सारियो सुपिरीं खे, मुंहिंजी दिलि करे दांहूं, अलो ...
रोज़ अचनि थियूं, रूह मां जे रड़ियूं!

४) साहिबड़िन सूर पिरींअ जा सिर मूं सांढिया - अलो ...
जिनि सां हुयमि जीअ जूं जड़ियूं!

## (5)

भले आएं तूं कांगा, निचु आएं तूं कांगा,
अचे वेहु तूं अखियुनि में, ब॒ोलि तूं मिठिड़ी ब॒ोली!

१) ड॒े का ख़बर खोजे असांखे भली बिरह जा बांगा,
हींअड़े में हरिदम विरह जी होली, भली आएं ....

२) हिति हमेशह आहियूं उदासी, नींहं सज॒ण जे में नांगा,
तुंहिंजे ब॒ान्हनि जी मां ब॒ान्हीं ब॒ोली, भली आएं ....

३) असां ड॒े अचण जा कड॒हिं वरी थींदा, संदा सुपिरीं सांगा?
दर्द जे छुलनि मारी आहे छोली, भली आएं ....

४) सहियूं साहिब गड॒िया से सुञाणे, लकियूं लंघे सभ लांघा,
थियूं ख़ुशियूं ड॒िसी तिनि जी ड॒ोली, भली आएं ....

## (6)

तुंहिंजे हुस्न कयसि हैरान, चश्मनि आऊं चोरे विधियसि!

१) अखियुनि जा ड॒ेई यार इशारा, मनु कयइ मस्तानु,
घोरनि तिनि तां घोरी विधियुस.

२) पतंग वांगुर मच मुहबत में, कथ कई मूं कान,
सिक सज॒ण तुंहिंजी सोरे विधियुस.

३) नाज़ भरिया तोसां लाए नातो, इश्कु ज॒ातुमि आसानु,
इन अक़ुल खणी आऊ ओरे विधियुस.

४) सुहिणा तुंहिंजे सिक जो मूं वटि, बेहदि आहे ब्यानु,
झोरी इनहीअ खणी झोरे विधियुस.

५) साहिबड॒नि से कंहिंखे सुणायां, अंदर जा अरमान,
क़ुर्ब कपे आऊ कोरे विधियुस.

१) हिति कीअं रीधींअ रांदि में, विसरी वयुइ मौतु मरणु,
अग्रियों हलणु होत ड़े, कीअं थींदुइ कंधु खणणु?
२) फोटो पाणीअ में तरणु, तीअं थिए जानि जीअणु,
ख़ूबी वेंदइ ख़ाक में, ज़ाईं हुईंअ न ज़णु.
३) वांदी वेहु न वेसड़ी, करि को कारि कुतणु,
पांधी लाइजि प्रीति मूं, जिते थिए इश्कु आतणु.
४) साहिबड़िना चवे सिखु तूं परवाने जियां पचणु,
सड़नि सघनि कीन की अहिड़े रंग रचणु.

## (१०९ सूरत बहार)

१) वाह वाह इश्क़ा तेरा ईमान, हीर जिस्म होई रांझो जानि.[1]

२) आशिकु मजनू लैला होइया, ससुई पुन्हूं होई पहिचानि.[2]

३) सुहिणी ड्रोप मेहार के होई, घर में थी दो दिन महिमानि.

४) हुए फ़रिहाद शीरीं से वासुल, ज़लेख़ां यूसफ़ु पर क़ुर्बानि.

५) सूरत बदिको बहार किया, वाह वाह इश्क़ा तेरा अहिसानि.

## (2)

हरि नामु सुमिरि हरिदमि दम सें, तेरा काम नहीं चिंता ग़म सीं.

१) जो हरिदमि हृदे ध्यावे, उसका तो कामु नहीं जम सीं.[3]

२) तूं हरि का हरि तेरा, तेरा काम नहीं आलम सीं.

३) हरि का प्यारा तू कलि का प्यारा, जपु कर्म क्या है रहम सीं.[4]

४) सूरत भज़ु ले बिहारी को हरिदमि, हरि सास सास दमि दमि सीं.

## (3)

गुज़र करो गुज़रानी है, यहाँ दो दम की महिमानी है,
कैसी अजब रस्म इन्सानी है, हर देख फ़ना में फ़ानी है.

१) कहाँ आता है कहाँ जाता है, कुछु भेद आपन का न पाता है,
लामकानी है बेनिशानी है, यह बात बड़ी हैरानी है.

२) कहाँ आशिक़ है, कहाँ जानी है, कहाँ जान फ़िदा क़ुर्बानी है,

लामकानी है बेनिशानी है, यह बात बड़ी हैरानी है.

२) कहाँ आशिक़ है, कहाँ जानी है, कहाँ जान फ़िदा क़ुर्बानी है,
कहाँ पीर मरद की बानी[1] है, कहाँ हिरसि होसि में तानी[2] है.

३) कुछु करिलो अभी जो करना है, जो निहायत[3] इक दिन मरना है,
ख़ुदि ख़्वाब के यहाँ रहना है, यह बेद के बाट निहानी[4] है.

४) कहाँ बुलिबुलि गुल मस्तानी है, कहाँ मुर्गो की ख़ुशि ख़्वानी[5] है,
कैसा बाग़ बहार हक़ानी है, सुनु सूरत हक़ लासानी है.

## (4)

१) मूं मौला मिलाईंदो शाल, मुहब मिठा मुंहिंजा पिरीं.
२) घोरियो विछोड़ो विच जो, ड्रींहं ड्रिसां थी साल.
३) बदियूं ड्रिसी बदिकार जूं, आयुन रहम ख़्याल.
४) सिरु वढे सदिक़ो करे, घोरियां मिल्क ऐं माल.
५) अदा दोस्त अचण गी काइ बुधाइम ग़ाल.
६) सूरत ड्रेह पिरीं जे, क़ासिदु आयमु काल.

## (5)

सावण की ऋतु आई रे आई.

१) पीया बिनि मोकूं नींद न आवे - सांवण.
२) शाम घटाघन बिजली चमके, कोई शाम मुझे आनि मिलावे.
३) सांवरी सूरत बिनि चैन न आवे, अब कोई कानु मुझे आन दिखावे.

## (6)

१) जिति किथि तूं रखवारो हमारो, प्रान नाथ जगदीश गोसाईं.
२) मेरो आधारो तूं रखिवारो, तुमरी आसा तुमरा भरोसा.
३) तूं हीं प्यारो तूं रखवारो, जल थल महीअल भरपूर लेणा,
तूं हीं सारो वारो.
४) अंधकूप संसार सागर में, हीउ उजियारो तूं रखिवारो.
५) हर सूरत में बहारी की लीला, तेरो निज़ारो तूं रखवारो.

## (११० सादक़)

ब॒ी न कयो मूं चटि अला - ब॒ोली ब॒ारूचनि रे.

१) वञे जा वाका कंदी, ससुई सूरनि वटि अलाह.

२) ड॒ेर चड़िहिया थमि ड॒ोंगरियुनि, आऊ पेरनि लग॒ुड़सि पटि अलाह.

३) ड॒िसी ड॒ेर छड॒े विया, का जा मूं में घटि अलाह.

४) सादक़ इनहनि सूरनि खे, सुखनि सां न मटि अलाह.

## (2)

अलहु मुंहिंजे ड॒ाढो आहे, मतां का भुली सीनो साहे.

१) करे वेठो कारि कुंभार की, हिकिड़ा भञी ब॒िया पियो ठाहे.

२) ड॒ोर ड॒ाहे जे हथ में, काम विझी पियो थो काहे.

३) जिनि खे इश्कु अलह जो, तिनि लाग॒ापा छड॒िया लाहे.

४) सहिसें सादक़ जहिड़ा, लख त विधइ लाहे.

## (3)

पोरिहियत थी पाणी भरियां, जे मां पोरिहियत कनि.

१) सिरु बि करियां सीनुही, ब॒ांहूं ड॒ेई ब॒नि.

२) साहु बि करिया सदिक़ो, मथां सिपरींयुनि.

३) थोरे पिड़ां न उनजे, जीउ जीयारो जिनि.

४) अहिड़ा हाल हलनि, सादक़ से सड॒िजनि.

## (4)

असीं खिन पल जा महिमान - झेड़ो करि न फ़क़ीरनि सां.

१) ड॒ंडो कूंडो पंहिंजो आहे,
अड़े! भंग ज़रिड़ीअ काणि - झेड़ो करि न ...

२) हुक़ो टोपी पंहिंजो आहे,
अड़े! तमाक ज़रिड़ीअ काणि - झेड़ो करि न ...

३) हंधु बिस्तरो पंहिंजो आहे,
अड़े! जाइ टुकिरीअ काणि - झेड़ो करि न ...

४) खीरु खंडु पंहिंजो आहे,
अड़े! चांह पतीअ जे काणि - झेड़ो करि न ...

५) सादक़ सुतो हकिले कुतो,
अड़े! सन्हड़ीअ सौंटीअ साणि - झेड़ो करि न ...

## (१११ साबर)

१) तुंहिंजे ताननि मारी आहियां, वार विछाहमु तोलइ साजन,
पाड़े में ज़णु धारी आहियां, पीर पुछायमु तोलइ साजन,
प्यारी प्यारी नारी हूंदी, पांधु ग़िचीअ में पाए पाए,
ऐबनि हाणी कारी आहियां, फ़ाल विझायमु तो लई साजन,
मोटि मुसाफ़िर सिपरीं! मोटि मुसाफ़िर सिपरीं!

२) सांवणु आयो पाणी बरिसियो, तड़ ड्रे ताणण तुंहिंजे कारण,
बर जो ब्रूटो वरिसियो,निंड फिटाए वइदा पाड़णु,
हंजूं हारियां ग़ोड़िहा ग़ाड़ियां, पुछंदे पुछंदे लुछंदे लछुंदे,
साजन तो लइ तरिसियो, जानी तोरीअ आहे घारण,
मोटि मुसाफ़िर सिपरीं! मोटि मुसाफ़िर सिपरीं!

३) मौसम बदली कूंजूं आयूं, कांगलु थकजी मोटी आयो,
सारियूं ड्रिसजनि सायूं सायूं, तुंहिंजो पतो कंहिं कीन,
लाबारनि ते वेंदियूं आहनि, वेस वग़ा तो पाए कहिड़ा,
ड्रूंगा ड्रींदियूं पंहिंजूं पुरायूं, जग़ में आहे पाण लिकायो,
मोटि मुसाफ़िर सिपरीं! मोटि मुसाफ़िर सिपरीं!

४) राहूं ड्रिसंदे रातियूं घारियमु, साह सिसीअ में जेसीं आहे,
वाटनि ते ई बाहियूं ब्रारियमु, कंहिं पर छोरी आस न लाहे,
पांधीअड़नि खां पार पुछाए, आख़िर वरंदो वाऊ सुणायो,
तारनि खे भी पारि उकारियुमि, तेसीं वेठी नींहं निबाहे,
मोटि मुसाफ़िर सिपरीं! मोटि मुसाफ़िर सिपरीं!

### (2)

जा ड्रिठए मुंहिंजी ड्रिंगाई, सा मिठा तूं माफ़ु करि,
चाल बदि बेहदि बुराई, सा मिठा तूं माफ़ु करि.

१) ब्रोल जे तोसां ब्रुधमु, से बी उज़िर मूं सभु भग़ा,
पति न पाड़ी मूं पुज़ाई, सा मिठा तूं माफ़ु करि.

२) महलि जा तुंहिंजे मिलण जी, सा घड़ी ग़फ़ल्त कयमु,

वेल मूं निंड में विञाई, सा मिठा तूं माफु करि.

३) गडु गुज़ारियमु ग़ैर सां, हाणि पेई हथिड़ा हणां,
कई मूं बेशकि बे हयाई, सा मिठा तूं माफु करि.

४) सभु उमिर साबर चवे, कई ख़ता मूं ख़ौफ़नाकि,
जा कयमि तोखां जुदाई, सा मिठा तूं माफु करि.

## (११२ सूफ़ी)

लोइ लड़े हलिबो मिटीअ सां पाण वञी रलिबो,
ग़फ़लत में गुमुराह जो थिअड़ी, कूड़ी दुनिया दिलिबर.

१) हंध पथिरिणियूं तूल विहाणा, बंदा गंदा तुंहिंजे साह सेबाणा,
टे हथ तुहिंजो मागु मकान, गारो गंब गडिबो - लोइ लड़े ...

२) रईसु अमीरु थो ख़ानु सड़ाईं, माड़ियूं बंगला हितड़े अड़ाईं,
रातियां ड्रींहां पाण पड़ाईं, हुकुमु करे हलिबो - लोइ लड़े ...

३) सूफ़ी फ़क़ीर चवे पाणि सुधारिजि, दिलि जे आतण लाल उजारिजि,
रातियां ड्रींहां होइ कमाइजि, तुरंदो तो रारो - लोइ लड़े ...

## (ज़)

## (११३ ज़िया)

तूं सख़ीं आहीं सबाझो, दरु अथमि तुंहिंजो झलियो,
हाक तुंहिंजीअ खे बुधी मां, दूर खां आहियां हलियो.

१) मुहित ड्रे मालिक मूंखे, मुंहिंजे मदायुनि खे न ड्रिसु,
ऐब मूंमे अण मया, सचु पचु अथमि साईं सलियो.

२) तूं भरियो भंडारु आहीं, ख़ाली झोली भरि खणी,
आस हिक तो में रखी मूं, आसिरो जग जो पलियो.

३) तूं हिएं जो ठारु आहीं, ठारु विझु मनठार तूं,
बे सबबि दुनिया जे हिरसनि, में जिगरु आहे जलियो.

४) तुंहिंजे दम सां दिलि जे उजिड़ियल, बाग़ में ईंदी बहार,
तो नज़र जंहिं ते कई, सो दाइमा फूलियो फलियो.

५) तुंहिंजे चांउंठि ते पियो आहियां, पवई मन तरसु को,
मां जियां मजिबूर आहियां, रुहु जो तोसां रलियो.

## (2)

ख़ुशी ड्रींदें त ख़ुशि रहिबो, जे ग़मु ड्रींदें त पियो सहिबो,
मूंखे जीअं तूं हलाईंदें, तुंहिंजी मर्ज़ीअ ते पियो हलिबो.

१) तूं आहीं शाहु बेपरिवाहु, गदा तोखां पियो घुरंदो,
जे ड्रींदें तूं त पियो वठिबो, न ड्रींदें त माठि में रहिबो.

२) भला कमज़ोर जो छा ज़ोरु, तुंहिंजे ज़ोर ते हलंदो,
तुंहिंजी ताक़त अग़िया झुकिबो, नकी कुछिबो नकी पुछिबो.

३) मां तुंहिंजो, तूं आहीं मुंहिंजो, दुखी हंदुसि, गिला तहिंजी,
ज़मानो तोखे पियो चवंदो, छा कंहिंजे वात खे झलिबो?

४) ब्रियनि खे भी नवाज़ीं थो, ज़िया ते भी नवाज़श करि,
कंदें कृपा त दुनिया में, हमेशह कंधु खणी हलिबो.

## (3)

मुंहिंजी शल रहिजी अचे दिलिदार सां, आहि दुनिया में ग़र्ज़ हिक यार सां.

१) जहिड़ो तहिड़ो कीन जहिड़ो मां थियुसि, शल सज़णु पंहिंजो बणाए प्यार सां.

२) दिलि ड्रेई कहिड़ी भला दावा रखां, कहिड़ो कमु इक़रार सां.

३) ड्राति नाहे ज़ाति ते, कंहिंखे बि ड्रे, छा हुजत हलंदे भला ड्रातार सां?

४) साज़ दिलि जूं सभु अथमि तारूं टुटल, राऊ रीझे बे सुरीले तार सां.

५) झोल ख़ाली आह, पर भरबी ज़िया, वड्रु वड्रो वाली कंदो प्यार सां.

## (4)

तूं सैलानी, मां सैलानी, तूं सैलानी, मां सैलानी,
अगम देस खां आया आहियूं, सैरु करण सुबुहानी.

१) आहे असांजो ड्रिसण पसण खां, कीन जुग़ाए हिन हुन जो कमु,
सैलानियुनि जो सैर सां मतलबु, वसंइं हुजे या वीरानी.

२) पंहिंजो ऐं न पराओ कोई, चड़ो लड़ो या लाओ कोई,
असीं मुसाफ़िर फ़रक़ु रखूं छो, करियूं छो नाहक़ु नादानी?

३) क़दम क़दम ते काकु महलु आ, मूमल माया जो छलि वलि आ,
राणे वांगुरु रमिज़ सां हलंदो, जग़ु में विरलो को ज्ञानी.
४) माया नगरी मनु भरमाए, कीअं न मुसाफ़िर खे भिटकाए,
देस भुलाए परदेसियुनि खां, दिलकश दुनिया हीअ फ़ानी.
५) दुनिया जे गुलज़ार खे ड़िसु, गुल खे ड़िसु तूं ख़ार खे ड़िसु तूं,
प्यार ऐं नफ़रत सां छा तुंहिंजो? नज़र खपे थी यकसानी.
६) अखि अटिके, पर दिलि छो अटिके, भंवर मिसल मनु छा लइ भटिके?
रसु न नींहं निहोड़े नींदो, हासुलु थींदी हैरानी.
७) पंहिंजी आदि ज़ाति सुञाणिजि, पाण में पेही पाण खे ज़ाणिजु,
मड़नी खां पदु तुंहिंजो ऊचो, लाल ज़िया तूं लासानी.

## (5)

क़ुर्ब जी कफ़नी पाइ ग़िचीअ में, ख़ाक लिङनि खे लाईंदसि.
जोगिणि बणिजी झंगल झाग़े, नेठि पुन्हल खे पाईंदसि.
१) हलंदी रहंदसि कीनकी थकिबसि, विछिड़ियल सां वञी आख़िर गड़िबसि.
कंहिंजे झलिए सां कीनकी झलिबसि, अग़िते पेरु वधाईंदसि.
२) हुब जी हथ में झोली खणंदसि, पूरी बैराग़िण बणिजी पवंदसि,
कांध जे क़दमनि ते वञी किरंदसि, बदियूं पंहिंजूं बख़्शाईंदसि.
३) मुहब बिना कीअं मेंदी लायां? इतर फुलेल ऐं तेल लग़ायां,
साथ बिना कीअं सेज वसायां, नींहुं न पंहिंजो लज़ाईंदसि.
४) धोब़िणि खे दिलिगीर करे विया, कांध वठी जत मुंहिंजो परे विया,
दामन दर्द सां ज़िया भरे विया, पेई पाण विज़ाईंदसि.

## (6)

वञण वारनि खे वञिणो हो, विया आख़िर वञण वारा,
असां खां वया करे पासो, हुआ पासो करण वारा.
१) असां खे नींहं जो नातो हुओ ग़ंडिणो, नकी छिनिणो,
मगर जिनि खे हुओ छिनणो, छिनी वया से छिनण वारा.
२) न कंहिंजी का शिकायत आ, न कंहिंजो कोई शिकवो आ,
असीं हर हाल में आहियूं, सदा राज़ी रहण वारा.
३) उहे आख़िर विसारे विया, पंहिंजी दिलि तां भुलाए विया,
हुयासीं कीन जिनि खे हिकिड़ो पल भुलिजी भुलण वारा.
४) ज़िया हो वाक़्यो अहिड़ो जो रुअंदे मूं लिखियो आहे,
असीं न त कीनकी आहियूं, रोई वाक़्यो लखण वारा.

## (7)

मिली वयूं नज़रूं नज़िरुनि सां, विसारे वेठुसि पंहिंजो पाणु.

१) दीदन में हुआ दुंग समाया, नशा ड्रिसण सां चड़िहिया सवाया,
बेहोशीअ जे आलम अंदर, होश जी पेई ज़ाण.

२) माठि में मूंसां कयईं रिहाणियूं, केई ब़ुधायईं कुर्ब कहाणियूं,
राहत सां सभु राज़ सलियाईं, मिली ख़ुशीअ जी खाणि.

३) दिलि में दर्द नएं सिरि जाग़यो, सोज़ु ड्रिसण में आयो साग़ियो,
इश्क़ संदी आतिश जो मन खे, मिलियो ज़िया अहिञाणु.

## (8)

हरि क़दम ते हिकु नओं गुलुशनु बणाईंदा हलो,
बरपटनि में बाग़ जी रंगत रचाईंदा हलो.

१) प्यारु जीअं जाग़ी उथे, जाग़ी उथे इन्सानियत,
एकता जा जाबजा नारा लग़ाईंदा हलो.

२) दाणो दाणो धारि थियो, माल्हा मुहबत जी टुटी,
हिक ई धाग़े में उहे दाणा मिलाईंदा हलो.

३) क़ाफ़िलो हलंदो रहे, ऊंदहि जो कोई ग़मु न आ,
शौक़ ऐं हिमत जे मशाल खे, जलाईंदा हलो.

४) सीर में ब्रेड़ी अथव, सहिकार खे मांझी करियो,
पंहिंजी किश्तीअ खे, किनारे सां लग़ाईंदा हलो.

५) जे रखो था चाहु गुल सां, क़ुर्बु कंडनि सां रखो,
ख़ैरु पंहिंजे बाग़ सारे जो, मनाईंदा हलो.

६) भलि हुजनि क़ालिब लखें, पर क़लिब खे हिकिड़ो करियो,
यकि वजूदिगीअ सां, दुई दिलि जी मिटाईंदा हलो.

७) छो ड्रिसो था हेठि, थी शहिबाज़ु उड्रो आकासु थियो,
आसमान ते पंहिंजा आखेरा, बणाईंदा हलो.

८) राह में जेके ड्रिसो, बेशकि ड्रिसो ऐं कमु कढो,
पर असर खां पंहिंजे दिलि खे, भी बचाईंदा हलो.

९) कर्मु ई संसार में, क़िस्मत जो बणिजे रूप थो,
कर्म सां तक़दीर जी, सोभिया वधाईंदा हलो.

१०) सभु हलो सिर सिर खणी, ठाहियो हयातीअ जो महलु,

जिति भुता भूंगा उते, बंगिला बणाईंदा हलो.

११) हिकिड़ो खाए ब॒ोड़ु ऐं बि॒यो ग॒णितियूं खाए पियो,
हिनि ज़माने जे तफ़ावत खे, मिटाईंदा हलो.

१२) छो तबीबनि ड॒े तकियो, ख़ुदि दर्द जा दर्मान थियो,
थी मसीजा फूक सां, दुख खे उड॒ाईंदा हलो.

१३) ड॒ुख सुखनि जी सूंहं, ड॒ुख ईंदा त सुख आणींदा साणु,
पेचु सूरनि सां ऐं पूरनि साणु पाईंदा हलो.

१४) बहर में ऊन्हा वञो, ड॒ेई टुबि॒यूं मोती लहो,
हीअ ख़बर सभिनी सराफ़नि खे, सुणाईंदा हलो.

१५) बर में बाज़ारियूं लग॒नि ऐं सावकूं सुञ में थियनि,
झंगलनि में ए ज़िया, मंगल मनाईंदा हलो.

(9)

आहीं दमि दमि यादि तूं यार कंवर, लड़ी लुड़क पवनि था लख वारि कंवर.

१) तुंहिंजी नज़र निमाणी कीअं विसिरे,
तुंहिंजी कुर्ब कहाणी कीअं विसिरे?
तुंहिंजी शिकिलि शाहाणी कीअं विसिरे,
तुंहिंजा पवनि था पूर हज़ार कंवर - आहीं दमु ....

२) आहीं कीन जे गड॒ु त बि यादि आहीं,
हरि दिलि में ज़िया आबाद आहीं,
नाशादि असीं तूं शादि आहीं,
आहे तन में तुंहिंजी तंवार कंवर - आहीं दमु ....

(10)

१) सज॒ी उमिरि गुज़िरी न रब यादि आयुमि,
न मंदरु वसायमि, न मस्जिद वसायमि,
न सजदह कयमि, न सिर खे झुकायमि,
न सिमिरनु कयमि, न समाधी लग॒ायमि,
वया व्रत भुलिजी ऐं रोज़ा विसारियमि,
हयाती सज॒ी नास्तिकु थी गुज़ारियमि.

२) खयमि कीन भुलिजी, का माला हथनि में,
न हिकु पलु गुज़ारियुमि, हरीअ जे भजन में,
न तपस्या कई मूं, छडे शहरु बन में,
जपियमि जापु भगवान, जो कीन मन में,
न आबदु बणियुसि ऐं न बणियुसि निमाज़ी,
ज़ामाने में मुंहिंजी, हुई उल्टी बाज़ी.

३) जडहिं वक़्तु वेझो अची वियो मरण जो,
फ़ना खे छडिण जो, बक़ा डे हलण जो,
सिनेहो डिनो काल, मूंखे हलण जो,
फ़लक ते उडामियुसि, छडे जिस्मु फ़ानी,
कयमि चाह मां, सैर थी आस्मानी.

४) उन्हीअ दमि फ़रिश्तो, नज़रि हिकिड़ो आयो,
अची उन फ़रिश्ते, अचानक वरायो,
झले मुंहिंजो अगु, मूंखे खोले बुधायो,
त तोखे ख़ुदा पाण वटि आ घुरायो,
छिके ज़ोर सां मुंहिंजियूं बांहूं बधाईं,
ख़ुदा जे अगियां, मूंखे हाज़ुरु कयाईं.

५) ख़ुदा खे चयाईं त सरकारि रहिमत,
बुधायां थो हिन जी मां खोले हक़ीक़त,
कयईं कीन भुलिजी, अव्हांजी इबादत,
न हिन जी रही अव्हां सां मुहबत,
छडियो नरक डे अहिड़ो पापी उमाणे,
अचे जीअं गुनिहिगारु जो मनु ठिकाणे.

६) चयो मूं ख़ुदा या गुनिहिगारु आहियां,
जो तोखे विसारियुमि ख़तावारु आहियां,
मां बेशकु ख़ता लाइ, सज़ावारु आहियां,
जे दोज़ख़ डियो आऊं हक़िदारु आहियां,
मगर तुंहिंजे बंदनि सां रखियमि मुहबत,
इबादत जे बदिरां, रखियमि थे सदाक़त.

७) फ़र्शितनि खे मौला कयो हुकुम जारी,
त हिनि जे वञे सूए जनत सुवारी,
जो हिनि उमिरि नकियुनि में आहे गुज़ारी,
ऐं मूंखां बि समझायाईं मख़्लूक़ प्यारी,
हयुसि हिकिड़ो आसी, अघामी वयुसि मां,
ज़िया नेठि जनत जे क़ाबिल थियुसि मां.

## (11)

तुंहिंजे शहर में आयुसि क़िस्मत सां, पर सुहिणा कीन रहायो तो,
सुहिणा कीन रहायो तो, मुंहिंजा दिलिबर कीन रहायो तो.

१) तुंहिंजे दर्द में तुंहिंजो देसु छड़े, परदेस में वेठुसि जाइ अड़े,
मां कीन छड़ियां हां तुंहिंजो वतनु,
पर नियापनि साणु घुरायो तो, दिलिबर कीन रहायो .....

२) तुंहिंजे इश्क़ सजुण मज़बूरु कयो,
मूंखे पंहिंजे वतन खां दूरि कयो, मूं तोसां तोड़ निबाही आ,
पर दिलिबर कीन निभायो तो, दिलिबर कीन रहायो .....

३) तूं शाद रहीं, आबाद रहीं, मूंखे हरिदमि दिलिबर यादि रहीं,
'ज़िया' हाणे वञां थो पंहिंजे वतन,
जो दिल तां दोस्त भुलायो तो, दिलिबर कीन रहायो .....

### ड्रोहीड़ो

वतन खां दूरि आहियां, दरिबदरि आहियां,
ग़रीबु आहियां, ड्रिसो छा छा न थियो आहियां.
तड़हिं बि ख़ुशनसीबु आहियां,
सजुणु जीअं जीअं धिकारे थो,
मां तीअं तीअं उन जे क़रीब आहियां.
भुलाइण सां बि न भुलिजां थो,
मां माण्हू को अजीबु आहियां.

## (११४ तालिब (अलमौला))

न ढायूं अखियूं पर नज़ारा खुटी विया,
ग़म इश्क़ में ब्रिया ख़सारा खुटी विया.

१) रसिया नेठि मंज़िल ते तुंहिंजा जिनूनी,
मगर बवालहोसि हू हचारा खुटी वया.
२) वफ़ाउनि में आशिक़ सदाईं अग॒े थिया,
जफ़ाउनि कंदे हुसुन वारा खुटी वया.
३) शब ग़म न पूरी थिए थी ए यारो,
ग॒णींदे ग॒णींदे सितारा खुटी वया.
४) रक़ीबनि बि आख़िरि कई माठि आहे,
संदनि तुहमतुनि जा ग़ुबारा खुटी वया.
५) वञी नेठि सूरनि जे दामन खे वरितुमि,
सुखनि जा जड़हिं सभु सहारा खुटी वया.
६) कंदे प्यारु हरिगिज़ि थको कीन तालिब,
मगर प्रित वारा प्यारा खुटी वया.

**डोहीड़ो**

हर वेले कांगां यार ड॒ेवां, मैं तो रो रो कांग उड॒ारां,
क़ासिद भेजां ते फ़ाला पावां, मैड॒ा थी गया हाल बोमारां.
यार ब॒ाझऊं मैकूं जीवण कूड़े, दे अंदर दर्द हज़ारां,
ग़ुलाब फ़रीद मैं तो ईंवे रोवां, जीवें विछिड़े कूंज क़तारां.

**(2)**

अङणु ब॒ुहारियां तुंहिंजूं वाटूं निहारियां,
ओ यार सज॒ण, हाइ अङण ब॒ुहारियां.
१) तुंहिंजे अचण जूं रखियूं उमेदूं, जीउ जियारियां. तुंहिंजूं ...
२) तोरीअ घड़ियूं ओ यार प्यारा, रोयो गुज़ारियां, तुंहिंजूं ...
३) तालिब मौल तुंहिंजो आहियां, तोखे संभारियां, तुंहिंजूं ...

**(3)**

मुंहिंजो हाणे भंभोर में छाहे!
जेड॒ियूं आउ त केचियुनि खे रसींदसि काहे.
१) आहे पुन्हल सां सिर जी बाज़ी,
अला! मुंहिंजो नींहुं नियापे जो नाहे. जेड॒ियूं आऊ त ...

७) फ़र्शितनि खे मौला कयो हुकुम जारी,
त हिनि जे वञे सूए जनत सुवारी,
जो हिनि उमिरि नकियुनि में आहे गुज़ारी,
ऐं मूंखां बि समझायाईं मख़्लूक़ प्यारी,
हयुसि हिकिड़ो आसी, अघामी वयुसि मां,
ज़िया नेठि जनत जे क़ाबिल थियुसि मां.

## (11)

तुंहिंजे शहर में आयुसि क़िस्मत सां, पर सुहिणा कीन रहायो तो,
सुहिणा कीन रहायो तो, मुंहिंजा दिलिबर कीन रहायो तो.

१) तुंहिंजे दर्द में तुंहिंजो देसु छड़े, परदेस में वेठुसि जाइ अड़े,
मां कीन छड़ियां हां तुंहिंजो वतनु,
पर नियापनि साणु घुरायो तो, दिलिबर कीन रहायो .....

२) तुंहिंजे इश्क़ सज्रण मज़बूरु कयो,
मूंखे पंहिंजे वतन खां दूरि कयो, मूं तोसां तोड़ निबाही आ,
पर दिलिबर कीन निभायो तो, दिलिबर कीन रहायो .....

३) तूं शाद रहीं, आबाद रहीं, मूंखे हरिदमि दिलिबर यादि रहीं,
'ज़िया' हाणे वञां थो पंहिंजे वतन,
जो दिल तां दोस्त भुलायो तो, दिलिबर कीन रहायो .....

### ड्रोहीड़ो

वतन खां दूरि आहियां, दरिबदरि आहियां,
ग़रीबु आहियां, ड्रिसो छा छा न थियो आहियां.
तड्रहिं बि ख़ुशनसीबु आहियां,
सज्रणु जीअं जीअं धिकारे थो,
मां तीअं तीअं उन जे क़रीब आहियां.
भुलाइण सां बि न भुलिजां थो,
मां माण्हूं को अजीबु आहियां.

## (११४ तालिब (अलमौला))

न ढायूं अखियूं पर नज़ारा खुटी विया,
ग़म इश्क़ में ब्रिया ख़सारा खुटी विया.

१) रसिया नेठि मंज़िल ते तुंहिंजा जिनूनी,
मगर बवालहोसि हू हचारा खुटी वया.
२) वफ़ाउनि में आशिक़ सदाईं अग॒े थिया,
जफ़ाउनि कंदे हुसुन वारा खुटी वया.
३) शब ग़म न पूरी थिए थी ए यारो,
ग॒णींदे ग॒णींदे सितारा खुटी वया.
४) रक़ीबनि बि आख़िरि कई माठि आहे,
संदनि तुहमतुनि जा ग़ुबारा खुटी वया.
५) वञी नेठि सूरनि जे दामन खे वरितुमि,
सुखनि जा जड॒हिं सभु सहारा खुटी वया.
६) कंदे प्यारु हरिगिज़ि थको कीन तालिब,
मगर प्रित वारा प्यारा खुटी वया.

**डोहीड़ो**

हर वेले कांगां यार ड॒ेवां, मैं तो रो रो कांग उड॒ारां,
क़ासिद भेजां ते फ़ाला पावां, मैड॒ा थी गया हाल बोमारां.
यार ब॒ाझऊं मैकूं जीवण कूड़े, दे अंदर दर्द हज़ारां,
ग़ुलाब फ़रीद मैं तो ईंवे रोवां, जीवें विछिड़े कूंज क़तारां.

**(2)**

अङणु ब॒ुहारियां तुंहिंजूं वाटूं निहारियां,
ओ यार सज॒ण, हाइ अङण ब॒ुहारियां.
१) तुंहिंजे अचण जूं रखियूं उमेदूं, जीउ जियारियां. तुंहिंजूं ...
२) तोरीअ घड़ियूं ओ यार प्यारा, रोयो गुज़ारियां, तुंहिंजूं ...
३) तालिब मौल तुंहिंजो आहियां, तोखे संभारियां, तुंहिंजूं ...

**(3)**

मुंहिंजो हाणे भंभोर में छाहे!
जेड॒ियूं आउ त केचियुनि खे रसींदसि काहे.
१) आहे पुन्हल सां सिर जी बाज़ी,
अला! मुंहिंजो नींहुं नियापे जो नाहे. जेड॒ियूं आऊ त ...

२) छाजी नसीहत, छाजी हिदायत,

अला! मुंहिंजी अलड़ जवानी त आहे. जेड्रियूं आऊ त ...

३) मुड़दियसि कीन के, वेंदसि वर ड्रे,

अला! आउं त बीठी आहियां लाहे पाहे. जेड्रियूं आऊ त ...

४) हरिदमि तालिब मौली मूंखे,

अला! शल रमज़ इनहीअ में राहे. जेड्रियूं आऊ त ...

(4)

मुहबत में मचंदी वञे, सूरन में सिझंदी वञे,

झोरीअ में झिज़ंदी वञे, ओ दिलि दिलिबर दिलिबर पेई करे.

१) ब्राझर ब्रूरु बि झलियो, साइत हाणे न थी सरे. ओ दिलि ...

२) सारियुनि संग बि कढिया, उतर वाउ थो वरे. ओ दिलि ...

३) ब्रारनि फटियूं झलियूं, ग़णितियुनि मंझि मुठी ग़रे. ओ दिलि ...

## (११५ तालिुब (गोपालदास))

पखी हलिया परदेस ड्रे, वरंदी कीन ड्रिनाऊं,

वरंदी कीन ड्रिनाऊं सचु पचु सभकुझु थे समझायूं.

१) हलण वेले हू वया हली, अग़िते वधण लाइ लधी ग़ली,

कंहिं खां कीन पुछियाऊं, सभकुझु ....

२) तोड़े आयनि राह रुकावट, सर्दी गर्मी थधि या थकावट,

त बि क़ड्रहिं कीन कुछियाऊं, सभकुझु ....

३) विच वासींग वात पटीनि, तोड़े कीहर कूकां कनि,

त बि कंहिंजी कीन ब्रुधाऊं, सभकुझु ....

४) मुर्शिद जी इहा महर समुझी, कड्रहिं प्यासी कीन मुंझनि,

थी अग़े विख विधायूं, सभकुझु ....

५) पोइ पहुता पिरीं पिड़ में, वज़ी सज़ण घर में,

पोइ मिलियूं तिन्हीं वाधायूं, सभकुझु ....

६) ड्रिसी तालिब तात खे, नकी ज़िकिर ज़ाति खे,

कयूं पिरियुनि पूरियूं आछाऊं, सभकुझु ....

(2)

मिटी जोड़ी कुंभार मियां, मिटीअ मज़ो ड्रिठोसीं,
सौ सौ कड्रहिं सींगार थिया, कड़ी चूरि थींदो ड्रिठोसीं.

१) मिटीअ अंदरि बाग़ फिरिया, गुलनि संदा गुलज़ार थिया,
हणी टुब्री ऊनही अंदरि, ब्रारोचल ब्रारो ड्रिठोसीं.

२) मिटीअ अंदरि अजीब निज़ारा, नदियूं नारा समुंड खारा,
मुर्शिद वसाया मेंघ मलारा, इहो नज़ारो ड्रिठोसीं.

३) दम दम में साईं आख़िर देरो, वञी थियो मिटीअ मंझि फेरो,
तालिब सिक सज़्णनि हुई, वरंदो न को ड्रिठोसीं.

## (3)

मियां वो ब्रोली ब्रारोचल हिकु!
हिते हुते अंदरि ब्राहिरि सही सुञाणनि सिक - मियां वो ब्रोले ..

१) हिन ऐं हुन में फ़र्कु न कोई, फ़र्कु हुजे करि तरिकु सिघोई,
मिलण जी भांइजि पक - मियां वो ब्रोले ..

२) हर नज़ारे, हर नूर, पेही ड्रिसु हाज़ुरु हज़ूरु,
तन में वेही करि तक - मियां वो ब्रोले ..

३) तालिब पिर जी हीअ पिरोली, आहे ग़ुझी हीअ ग़ुझ ग़िरोली,
ब्राझहूं मुर्शिद वटि वेही - लोकां वेही कर लिक - मियां वो ब्रोले..

## (अ)

## (११६ अबुदालिक़ादर)

रात ड्रींहं जंहिं लाइ रड़ां थो, मह लक़ा ईंदो कड्रहिं?
दिलि लुटे दिलिबर वयो, सो दिलि सफ़ा ईंदो कड्रहिं?

१) जंहिं बिना हैरानु आहियां, हिक घड़ी आरामु नाहि,
सो मिठो महबूब मुंहिंजो, बावफ़ा ईंदो कड्रहिं?

२) थी सदा सीने में भड़िके, बिरह वारी बाहि हाइ,
सा विसाइ महर मां, ओ दिलिरुबा ईंदो कड्रहिं?

३) थी सिकां सारियां हंजूं , हारियां जंहिं दिलिदार लाइ,

मोटी माग़ुनि ते वरी, सो बाहया ईंदो कड़हिं?

४) कांगड़ा लूंउं लातिड़ी, मूंखे मिठी ब्रोली ब्रुधाइ,
दोस्त दिलिबरु मुंहिंजे दर्दनि, जी दवा ईंदो कड़हिं?

५) इश्क़ जी आतिश अंदर में, थी जलाए जान हाइ!
साहु मुंहिंजो जंहिं मथां, आहे फिदा ईंदो कड़हिं?

६) शाल हिन हीणीअ ते मोटी, का वरी वाहर करे,
अबुदालिक़ादर वटि वरी सो, या ख़ुदा ईंदो कड़हिं?

(2)

जिनि माण्हुनि सां गडु गुज़ारियुमि, से माण्हू अजु था वञनि,
करे गदाई ड्रेई जुदाई, आग लायूं था वञनि.

१) अजु तुरतूं कर त्यारी, जीउ मुहिंजो थो जले,
कीअं करियां काड्रे वञां, सूर सारियूं था वञनि.

२) आसरा सभ आशिक़नि जा, जीअरे जानिब था भजुनि,
दिलि जा दिलिबर हाल महरम, मोकिलायूं था वञनि.

३) अबुदालिक़ादर सां केई, क़ौल कयइं केतिरा!,
से न पाड़ियो पंहिंजा, मूंखे विसारियूं था वञनि.

## (११७ अरस)

सजुण लहु सारू, अला, झोली झोरियमि झोपिड़ी!

१) काहे वया क़हर करे, केची क़तारू. अला!
२) अव्हां ब्राझूं, ए मिठा, ब्रियो केरु खणे उहारू. अला!
३) लूंअ लूंअ मंझि लग़ी वेयूं, लालनि तुंहिंजू लग़ारू .अला!
४) अरस हारीनि अगु जूं, मुईअ खे मयारू. अला!

## (११८ अबद)

1

इन्सान करे, अदराक ड्रई, तो नाऊ खे मुंहिंजे निहोड़े विधो!
हिकु साहु, ब्रियो वेसाहु ड्रई, हर बंदु छिनी तो छोड़े विधो!

१) इहो ॿीजलु छो अड़ॿंगु थियो, उन ॾियाच में कहिड़ो ॾंगु थियो,
उन राज़ में कहिड़ो रंगु थियो, छो चारणु चंग खे चोरे विधो!
२) सा सुहिणी सीर में कींअ घिड़ी, सा लहरुनि सां वञी कीअं लड़ी,
छो कांध न सा क़ुर्बनि में कड़ी, छो मेहरु तंहिंखे मोड़े विधो!
३) मन्सूर लई तूं दार थिएं, तूं सरमद लाइ तलवार[1] थिएं,
सभ सिर में सुञापे यार विएं, तोखे पंहिंजे प्यारनि पिरूड़े विधो!
४) मइबूद आन तूं, तूं मुंहिंजो ख़ुदा, तोखे याद कयां पियो शाल सदा,
तो अलस्तु[1] चयो, असां क़ालो[2] बिला इन वइदे असांखे विकोड़े विधो.
५) ए अबद तूं छो न सियाणो थिएं, उहो नंगु रखी न निमाणो थिएं,
अड़े मस्त छो अहिड़ो अयाणो थिएं, छो हाल अंदर जो तू ओरे विधो!

## (2)

ख़ुशि वसन उहे शाल, मारू मुंहिंजा सयाल,
उमर माड़युनि में कीअं विसारियां!

१) थूहर थर में थिया ललर लाणा, सिङर सिङरियूं छण छण छाणा,
मारुनि छोड़िया माल, खाराइण जे ख़्याल,
तिनि सांगियुनि जी मां संगत सारियां.
२) सूर सांगियुनि जे जीअ में झोरी, रातो ॾींहां लुछ लुछ लोरी,
हीणा थिया हिति हाल, जालण आह जंजाल,
ग़म गूंदर में घड़ियूं घारियां!
३) कड़ु बंदियाणी बंद मां बिल्कुल, रूह मारुनि सां किरियां रिलि मिलि,
ओरियां नेणनि अहवाल, करियां क़ेल मक़ाल,
हंजूं हरदम तिनि लाइ हारियां!
४) वतन वञण जी आस अंदर में, वञां वरी शल पलक पहर में,
अलाह जल जलाल, करि भलायूं भाल,

नितु उनहनि जूं राहूं निहारियां!

५) दर्द मां दमि दमि करियां दांहूं, अघनि इहे शल अबद जूं आहूं,

सिकंदे थिया हन साल, वरे वर्क़ विसाल, वञी मारुनि सां गडु गुज़ारियां!

## (११९ आरफ़)

राति सूंहारी, चोड्रिहीं वारी, चंड चारि चिमकाया,

इझे ज़ाणु मुसाफ़िर आया!

१) हू जे सफ़र संबाहे वयड़ा, थड़ जे थाकुनि तिनि पह पीड़ा,
छपर छड्रे गोंदर में गड्रे वया, बैराग़ी घर बर में अड्रे वया
पिरीं कान कई पोइवारी, ड्राडा ड्रींहं लग़ाया!
इझे ज़ाणु मुसाफ़िर आया!

२) थधिड़ी हीर सरीर सेबाई, वसल विसाल जी वीर वधाई,
तन मां तासूं, अखिनि में आसूं, जर थर में मूं बासियूं बासूं
ड्रीलु ड्रुखनि खां थियो ड्रुखियारी, सुखड़ा सूर फिटाया!
इझे ज़ाणु मुसाफ़िर आया!

३) चंड्रु चोड्रसि जो चह चिमकारो, सुहिणो मनु सुहिणो दिल प्यारो
माठि मिरुनि में जबल झंगलनि में, पखीं वणनि में, घरनि बरनि म
चिप चौधारी निंड नर नारी, पर मूं नीर वहाया!
इझे ज़ाणु मुसाफ़िर आया!

४) मन महबूबनि लइ तनु ताणे, अलाह अजीब अङण शल्-आणे
सुहिणल सारियां, हंजड़ूं हारियां, तारा तकियां चंड निहारियां
ड्रींदो दोस्त अची दिलिदारी, विरहनि व्रत वराया!
इझे ज़ाणु मुसाफ़िर आया!

५) पीर पुछायां, फ़ालूं पायां, आरफ़ मारुनि लइ वाझायां
दिलि फथिके थी, अख फड़िके थी, हर हर हड्र कोए बि अचे थी
पिरह फुटे थी प्यारी प्यारी, सभु थिया सांग सजाया!
इझे ज़ाणु मुसाफ़िर आया!

## (१२० उसिमान)

इश्क़ बिना ब्रियो काहे केरु, पेरु अची हिन पुड़ में पाए?
पेरु अची हिन पिड़ में पाए, सूरीअ ते थो सिरु सिलाहे.

१) इश्कु रुग्गो आहे आतिशबाज़ी, घिड़नि तंहिं में घोरियां ग़ाज़ी,
एड्डा करे थो इश्कु अंधेर, सौ सौ लखनि जा सिर गवाए.

२) नींहु निसूरो आहे नांगो, मूर मलहज़ि रखे न सांगो,
जड्डहिं विझे थो दस्त दिलेर, शाह गदाई अग्गियोंसि छा आहे?

३) इश्क़ जी बाज़ी सुथरी न आहे, समिझणु ड्डाढी अहिंजी आहे,
कोई हुजे साइ मर्दु मथेरु, ख़तरह ख़ौफ़ सफ़ा जो लाहे.
1

४) अहिड़ो इश्कु आहे उसिमान अर्श मथे वञी करे आशियाना,
जाते वेरी न आहे वेर, पल पलक में नेई पहुचाए.

### (2)

तूं त लखें भेरा लोधारीं थो, त बि आऊं त ग्गिचीअ ग्गलि तुंहिंजी आहियां.

१) लालन तोखे लाइकु न आहे, नेण खणी त निहारीं थो,
तुंहिंजे वल वछल जी वरितलु आहियां.

२) तो लई साईं सवें सिकनि था, मुश्ताक़नि खे मारीं थो
हिति हीणी ड्डिठियव हेकलु आहियां.

३) आहे उसमान असुल खां अव्हांजो, धारीं तोड़े लोधारीं थो,
त लेखे लिखयलु तुहिंजे आहियां.

## (१२१ आजज़)

ड्डाढी मुहबत चीज़ महांगी, जेका सस्ती न आहे सहांगी.

१) सुसईअ पेचु पुन्हल सां पातो, जंहिं ज्जाण अग्गे न हो ज्जातो,
त वेंदो केच कोहयारल कांधी.

२) कयो सिरु सुहिणीअ सदिक़े, डिनी कीन दरियाह जे धधिके,
जेका सिक साहड़ जी आंदी.

३) लग़ी हीर खे ड़ाढी हैरानी, जंहिं खां विछिड़ियो रांझन जानी,
जंहिं खे नींहं कयो थे नागी.
४) आहिनि आशिक़ ज़ाति अलाही, रखनि काण न कंहिंजी काई,
इह आजिज़ वाट अणांगी.

## (१२२ अबदालरहीम)

उमर पूर पवनि था पुन्हवारनि जा पल पल,
रोयूं रोज़ रोयूं वहायां थी जल जल.
१) उमिर जिनि जी ज़ाई तंहिं वात वाई, छतनि मंझि छाई,
कयां घोड़ा, घल घल.
२) उमिर आहियूं ज़टियूं भरियूं रोज़ मटियूं, चारियूं घेटा ऐं घेटियूं,
सहेलियुनि सां सल सल.
३) पखिरिड़ा पुराणा मुंहिंजे साह सेबाणा, पाइणु कीन ज़ाणा,
तुंहिंजा पट ऐं मलमल.
४) अबदालरहीम मुहाणी अज़ु की सुभाणे, अलाह तिनि खे आणे,
थियां तिनि सां रिलिमिलि.

## (१२३ आलम)

हलिया जुंगि जोग़ी से निर्वार नांगा,
लताड़े लंघिया लक लकियूं ऐं लांघा!
१) न ब़ोलिनि कंहिं सां, ब़ुधनि कान कंहिंजी,
रखनि कान परवा, पराई न पंहिंजी,
छना सङ सामिनि, सियाका ऐं सांगा.
२) विधिऊं बुख बिगरी, खंयऊं सुञ समर ला,
रमिया राह रुञ जी, कशे तिनि कमर ला,
चड़िही चोट थियड़ा, ड़िसण खां महांगा.
३) शरियत संदा शमिस, तारा तरीक़त,
संदा महिरफ़त महर, हादी हक़ीक़त,
वञी पारि पुहता, तरी तारि तांघा.
४) उथी ग़ोलि इन लइ, ग़लियूं ग़ोठ आलम,
सूंहे जिनि जी सुहबत, संगत साफ़ सालिम,
उनहनि खां सिखिज इश्क़ जा अंग अड़ांगा.

मुंहिंजी ब॒ान्हप जी ब॒ोली, परंदी शाल पुन्हल सां.

१) महिणनि ख़ातिर महुब जे, मूंत झले आही झोली, परंदी शाल...

२) रोई रडींदसि रत मां चाकनि सां चोली, परंदी शाल...

३) जबल ज॒ाणां पालकी ज॒ाणां थर ड॒ूंगर ड॒ोली, परंदी शाल...

४) दिलि वेचारी दर्द में आहि आलम जे ओली, परंदी शाल...

## (१२४ आसी)

अड़े कांगा वञी हाणे, हक़ीक़त हाल हिन वारी,
मिठे महबूब मुंहिंजे खे, सुणाइज ख़बर सारी.

१) विछोड़े आ कयो हीणो, बची ताक़त बदन में ना,
ककर वांगे थियो टिमि टिमि, अखियुनि मां आबु आ जारी.

२) अव्हांजे इश्क़ में मूंखे, मिलनि था लोक जा महिणा,
सहां से भी सज॒ण सिर ते थी भलि ख़ल्क़ में ख़ुवारी.

३) जियापो यार हिन जग॒ में, चवां मुंहिंजा मिठा तूं ई,
बिना तोरीअ हयाती थी, क़यामत काणि मूं कारी,

४) सिकायल तो संदो सुहिणा, चवे आसी पियो रोए,
हलणु जी का मुंजो हेकर, दुखीअ दिलि खे त दिलिदारी.

## (१२५ अज़ीज़)

१) ढके क़फ़नी फ़क़ीरनि जां, हलियसि ग़मख़्वार जे ख़ातिर
दुखायमि जोग॒ी थी, दिलि में दूंही दिलिदार जे ख़ातिर
फिरयसि ब॒हरूपी थी जग॒ में, मिठे मन्ठार जे ख़ातिर
कयमि ही सांग सभु, सुहिणे सज॒ण जे ख़ातिर

२) सदा पी सोज़ फ़िरक़त खां वही हलिया ब॒ुई नारा
भरींदे सर्द आहूं, थे सुज़ियूं रातियूं तकियमि तारा,
पियो थी ज़र्दु चहिरो, दिलि सुकी, थिया ख़ुश्क लब सारा
अड़ाई दीद दिलबर सां, मू ज॒णु आज़ार जे ख़ातिर.

३) उड़ायमि कांग कोड़े, दमबिदम फ़ालूं विझायमि थे
लिखी काग़ज़ विझी डोही, हथां क़ासिद पुज॒ायमि थे

पुछियमि पंडित, कईं ब॒ांभण, सवें मुलां सड॒ायमि थे
हलायमि बि॒या लखें हीला, विसाल यार जे ख़ातिर
४) वियसि परड॒ेह ड॒े काहे, पुछाए ड॒सु तबीबनि जो
दुआउनि ऐं दवाउनि ते लगो जेकी सो मूं लातो
पुरियूं पीतम कईं ज़हिरी, न थियो तिर जो तफ़ावत को
मलम पटियूं ब॒धम सव, ख़ातिर - अफ़गार अख़तार जे ख़ातिर
५) सुखाऊं मूं सेखियूं ऐं दर ते दर्वेशनि जे वयसि काहे
सवें जर ते डि॒ठम जाटूं, डी॒या तारियमि ड॒खी ठाहे
बिही रस्तनि मथे सारी, छडि॒यमि लोकाणी लज॒ लाहे
घिटियूं, बाज़ार, दरियूं ऐं दर, डि॒ठमि दीदार जे ख़ातिर.
६) मुहबत में रही दिलिड़ी सदा साबित क़दम इनजे
मिठो भांयाईं दुनिया में बराबर कोन ग़म इनजे
न भरियाईं थी आलिम में सिवा उल्फ़त जे दम इनजे
रही दीवांगी में निति सनम होशियार जे ख़ातिर.
७) घुमी मस्जिद, मड़ही मंदर ऐं बुत ख़ानो थकियसि अकसर
वयसि कबे ऐं काशीअ ड॒े मगर हासिलु न थियो दिलिबर
नज़र दिलि जे चमन में जां कयमि वेही अज़ीज़ आख़िर
लधुमि तंहिंखे रुलियसि जंहिं यार गुलर ख़सार जे ख़ातिर.

(2)

उमिर! पंहिंजे पुन्हवारनि सां वज॒ी रचंदियूं रचाईंदसि,
उनहनि सां खीरु खाईंदसि ऐं पाणी पेट पाईंदसि.
१) जड़ी झोपनि में मूं झिरमिर पसी पेरूं जिते घर घर,
तूं दस्तर[1] ख़ववान पासे करि मलीदा मां न खाईंदसि.
२) हिते ज़ोरीअ खणी, ज़ालिम! कई होलनि में हेकांदो,
थियसि मारुनि बिना मांदी त तोसां मन मिलाईंदसि.
३) किथे जेडि॒यूं, किथे झांगी, किथे साजन, किथे सांगी,
जीअणु थियो जाड़जन रे तोड़ि ताईं तिनि लइ ताईंदसि.
४) अजाया छो महल आछे इशारा डि॒यनि अभागि॒ण खे,
अज़ल खां खेत जी आहियां न बि॒ए जी आऊ सड॒ाईंदसि.
५) कयूं मारुनि सां मूं आहिनि, उमर! ब॒ारोते में ब॒ोलियूं,
ज़ुबान होर न हिति मां सींध पंहिंजी हुति लज॒ाईंदसि.
६) अज़ीज़ आहे अंदर में आगि लाती सोज़ु सांगियुनि जी,
करे काया खे काठी मां ही जानि आख़िरि जलाईंदसि.

## (3)

१) पुन्हल खां पोइ पाड़ेचूं घड़ी, हिति कान घारींदसि,
ड्रई भंभोर खे बाहियूं, सजुण पासे सुधारंदसि.
२) हिते रे होत जी हाणे हयाती, ग़टु ग़िचीअ जो थी,
हली थियां मां हेकांदी, वेही सुखु कहिड़ो सारींदसि.
३) ड्रियां मां ड्रोहु अजु कंहिंखे, हथां पियड़मि थियसि हीणी,
विञायो निंड वर मूंखां रोई, ग़च छो न ग़ारींदसि?
४) घरेतियूं मरु घुरें घारियो, अव्हां गडु आंजा घर वारा,
छपर[1] मूं छटु धणी वयड़ो, नङी तंहिंखे निहारींदसि.
५) अज़ल[2] खां हरफ़ हो तिनि खंया मूं, सिर मथे सरितियूं,
क़रे ब्रान्हप ब्रोली, कयल क़ौल पारींदसि.
६) कनेज़िक[3] केचें आहियां, बुहारींदार ब्रान्ही मां,
सियाको सङ न को मुंहिंजो, न ब्री दावा का धारींदसि.
७) लंघे लोड्रा लकनि जा जे, थियां होतनि सां हेकांदी,
अज़ीज़! उमिरि गोली थी, गगिरियुनि जी गुज़ारींदसि.

## (4)

१) मुहबत में मिठे मेहर जे, तारनि जीअं तरणु घुरिजे,
छड़े[4] भेले जी भर वाहड़[5] में, वाहर रीअ वरणु घुरिजे.
२) पको खणिजंइ पचाए तूं, पुज़ाए तोड़ जो तोखे,
वञी विज़ुरी न वीरनि में, कचो पासे करण घुरिजे.
३) इहा दरियाह संदी दहिशत, इहे लहरनि जा लड़ लोड्रा,
ड्रिसीं जीअं ड्राहु कनि ड्राढो, धणीअ ते दिलि धरणु घुरिजे.
४) ड्रमरु ड्रम जो न धारे ड्रीलु, जिनि खे सोज़ु साहिड़ जो,
तूं पवन पातार में परितऊं, न कनु कंहिं ड्रे करणु घुरिजे.
५) विसारे विसासा मन जा, कुड़ी पाणीअ में पउ काहे,
पिरियुनि सां पर में थियो पर्याण, तुंहिंजी पति परणु घुरिजे.
६) दरिंदनि जूं बुधी दाहूं, न हारिजि दहिलजी का दिलि,
मतां थीं नींहं में नब्ररी, इनहीअ ड्राहां ड्ररणु घुरिजे.
७) अज़ीज़! छा झलींदो जरु, थिया जे प्रति में पाणी?
वेही क़दमनि में जानीअ जे, क़दम तिनि जां भरणु घुरिजे.

## (5)

१) राणा रुसामो घोरियो, हिक राति वञी रही,
शक जी शिकारु आहियां, अचु काक ते कही.

२) मूं लगि॒ रखी लिकण खे, मारे वएं माठि सां,
सोढा सिझां न हीअं हा, ड॒ीं हा जे कुझु कही.

३) को माणे काक ऐं मां थी वरियसि वल्ही,
पलि पलि उथियो पुकारियां, वञु कांध कर लही.

४) तोरीअ ती खह खथूरी, वहु वयसि ऐं वरनि,
सिक सूंहं विञाए सोढल, करि सोज़ दिलि सही.

५) हुणु तुण खां हजर जे थियो, हिक राति ड॒ीहं रुअणु,
मूमल करे थी मिंथूं, अचु ठाह मां ठही.

६) ब॒ारींदें शमइ शब जी, तुंहिंजी तकियां थी राह,
वांदी विरह खां नाहियां, पटि को आहे पही.

७) मूमल लाइ मेंधिरा कढु ग़ैरत ऐं ग़ैर खे,
पेरा ब॒ु टे भरीं जो, वेंदें न वर लही.

८) ड॒ीहं सुख जा, वसल वरियूं रातियूं, करियां थी यादि,
माणणु अज़ीज़ मुश्किल, वापसि वेल वही.

## (6)

१) तमाचे ज॒ाम खे पंहिंजो कयो नूरीअ, निमाणी थी,
हली हूअ वाट हेठाहीं, पई राणियुनि जी राणी थी.

२) ब॒रियो नूरीअ जे मूंहुं में नूर थे, सूरत ऐं सीरत जो,
झलक जे झाझ पसंदे प्रित मां, पियो ज॒ाम पाणी थी.

३) करे सभु सहज सिक मां थो, समो मोखे मयूं मेरियूं,
गंदेरियुनि गुंदवारियुनि मां जो, धणिजी हिक धयाणी थी.

४) लिमे लुधड़नि जां कींझर में, कपर ते थियूं खेनि कुरड़ियूं,
समे जे सङ सबबि ज॒णु, ढंढ अथनि इमालक अबाणी थी.

५) अचे लज॒ जिनि खिखीअ हाणियुनि, सां लग॒ंदे प्रांदु पासीरो,

टुलिनि थियूं टोर टेग़र मां, समो पियो तिनि जो साणी थी.

६) निमी नूरीअ अग़ियां अग़िरियूं हलनि, ज़ामनि संदियूं ज़ायूं,
मिड़नि खां अज़ु मथाहीं मान में, आहे मुहाणी थी.

७) थिए थो भालु भोरीअ सां अज़ीज़, अटिकल न कमु ईंदी,
रहे थो राइ रीधो तंहिंसां, जा आहे अयाणी थी.

(ग़)

## (१२६ ग़ुलाम)

ओ मुहिबनि कई मज़बूर, अदियूं दिलि मुहिबनि कई मज़बूर
निति पवनि पुन्हल जा पूर!
ओ सज़ण बिना हिति सुहिज समूरा, सरितियूं भांया सूर!
ओ मुहबनि कई मजबूर ...

१) अंग अग़े हो लोह लिखियो, न त ब़ारूचो किथि ब़ांभणु?
अला, प्रित पिरायमि पींघे में, हाणे सूर पया थमि सांभणु,
ओ, ड॒राज ड॒ुखनि जो ड॒िनो ड॒ाड॒ाणनि, पुन्हल जा पिड़यमि में पूर!
ओ मुहबनि कई मज़बूर ...

२) होत खणी वियमि हंज मां, करे धोब़िणि सां धाड़ो,
अला, हाड़हब़ी हलंदसि हेकली, छड॒े पेकनि जो पाड़ो,
ओ, अकुल, शर्म ऐं मत मड़ेई, क़ुर्ब कयमि क़ाफूर!
ओ मुहबनि कई मज़बूर ...

३) ज़ाम! ग़ुलाम जो अर्ज़ु अघाए, आरे आऊ हिक वारी,
दर्दनि दिलिड़ी कई दीवानी, दिलिबर ड॒े दिलिदारी,
घूर कया जे घाव जिगर में, निस्री थिया नासूरु!
ओ मुहबनि कई मज़बूर ...

(2)

जोग़ी प्यारा यार असांजा, मुर्ली बीन बजाए चितु चोराए विया.

१) नाद नफ़लियूं संख वज़ाए, अंदरि जोशु जग़ाए वया.

२) हयूं हबीबनि हथि करे, जादू जीअ में लाए वया.

३) अंदरि लोछ, थो खूरो खामे, अगनि बिरहु बछाए वया.

४) यादिगारी मारे दिलि थी साड़े, अखियुनि आब वहाए वया.
५) राति रोई अखियूं पीआ पुकारिनि, ग़िलनि लुड़क वहाए वया.
६) मनु मांदो मुंहिंजो आहे ड्राढो, आरामु अंदरि फिटाए वया.
७) कंहिंखे ड्रियां दांहं दर्द जी, जेरो जान जलाए वया.
८) आतम धन जूं ग़ाल्हियूं बुधाए, बिरह बंछी खुपाए वया.
९) ग़ुलाम वेचारो बेवसि आहे, दुखाए वया.

## (१२७ ग़मदिल)

आयमि इश्कु अङण क़ुर्ब काह करे,
ड्राजु ड्रुखनि जो ड्रेई वयो, सूरनि साथि साथि भरे.

१) नींहं कया नादान, दान कया दीवान,
प्रित संदा परवान आयमि मंझि अड़ी - आयमि इश्कु ...
२) नींहुं निसूरो नांगो, कोन करे को सांगो,
लाहद खां थियो लांघो, मोरूं कयमि मरी - आयमि इश्कु ...
३) यार बदियूं बदिनामियूं, नींहं मुकियूं निशानियूं,
से त ग़िचीअ ग़लि ग़ानियूं, पातुमि ज़ोंक़ ज़री - आयमि इश्कु ...
४) ग़मदिल गोली आहियां, विरह वसीलो भांयां,
केच धणियुनि ड्रे काहियां, वाहर वेर वरी - आयमि इश्कु ...

## (१२८ ग़ुलाम अकबर)

हिन हाल जी ग़ाल्हि, कंहिंखे बुधायां? हले वसु न कोई, अंदर में पचायां!
१) पियां जे अंदर में, जले जान जेरो, ब्राफियां थो जे ब्राहिरि लक़बु यार लाइयां.
२) कहिड़ी यार लाती, इलाए आ मूंखे, अचे कोन आरामु, अखिएं जलु वहायां!
३) आहे सचु सुहिणल, ड्राढो इश्कु औखो, पवे तरसु न कंहिंखे, तोड़े मां ब्राड्रायां.
४) सितमु सूर सख़्तियूं, वेठो सिरि सहां थो, हले उति न कंहिंजी, सीनो कहिड़ो साहियां?
५) ग़ुलाम अकबर अहिक़रु, वेठो सहु सबुर सां, कोन्हे हर्फ़ु होतनि, नसीबनि ड्राहुं भांयां.

## (१२९ ग़नी)

छिनी छो न हाईअ हणां हारु अजु, ड्डिनो आह एड्डो जंहिं आज़ारु अजु!

१) मणीअ खे ड्डिसी मुंहिंजो मनु मस्तु थियो, हलियो होशु मुंहिंजे हथनि मां वयो,

न वर जो कयो मूं को विचारु अजु!

२) ड्डई वरु वञे केरु कच ते किरे, न दुनिया साँ भेनरु न हीअं को भरे,

कयो हाइ मूं कहिड़ो वापारु अजु!

३) ड्डियां ड्डोह कोनरूअ खे कहिड़ो खणी, ड्डिठुमि चटि चङा जे वया मूंखे वणी,

लिखिए हीअं कयो मूंखे लाचारु अजु!

४) ड्डिसां थी त ड्डाहयनि खे हासिलु ड्डहागु, सवें भोरियूं से सदा मंझि सुहागु,

वणे कहिड़ो वर खे थो वहंवारु अजु!

५) सजुण तुंहिंजी सङ में सवें राणियूं, लखें मूं जियां थियूं खजियल खाणियूं,

वहाए जे वेठियूं बदीअ बार अजु!

६) अकेलीअ खे तुंहिंजो थियो आसरो, पिरीं नाहि तोरें ब्रियो को परो,

अथम आजज़ीअ जो थियो इक़रार अजु!

७) सुयसि ड्डेह में आऊं सजुण तो सङां, मदाइनि माफ़ी थी तोखां मङां!

बुरी बख़्शि बारी तूं बदिकार अजु!

८) हणियो हाणि हथ जीअं थी लीला लुछे, चनेसर जे चह जो पतो थी पुछे,

ग़नी पिणि इएं थियो गुनहगार अजु!

## (१३० ग़रीब)

आहि दुनिया हाल पंहिंजे में हमेशह यार मस्तु,
जाइ पंहिंजी सभु ड्डिठासीं छा बुढा छा ब्रार मस्तु.

१) बादशाहनि माल मस्ती, सां ग़रीबनि हाल मस्तु,
सूंहं वारनि सूंहं मस्ती, सींध ऐं सींगार मस्तु.

२) मस्तु आशिक़ मस्तु माशूक़, रिंद पंहिंजी राज़ मस्तु,
पीर मस्ती, मीर मस्ती, शेख़ मंझि इस्रार मस्तु.

३) मुहबती मांदा ड्डिठुमु, नितु कलालनि[1] कोइ[2] में,
पी प्याला से निराला, मैइ कया ख़ुमार मस्तु.

४) यादिगारी मारे दिलि थी साड़े, अखियुनि आब वहाए वया.
५) राति रोई अखियूं पीआ पुकारिनि, ग़िलनि लुड़क वहाए वया.
६) मनु मांदो मुंहिंजो आहे ड्राढो, आरामु अंदरि फिटाए वया.
७) कंहिंखे ड्रियां दांहं दर्द जी, जेरो जान जलाए वया.
८) आतम धन जूं ग़ाल्हियूं ब़ुधाए, बिरह बंछी खुपाए वया.
९) ग़ुलाम वेचारो बेवसि आहे, दुखाए वया.

## (१२७ ग़मदिल)

आयमि इश्क़ु अङण क़ुर्ब काह करे,
ड्राजु ड्रुखनि जो ड्रेई वयो, सूरनि साथि साथि भरे.

१) नींहं कया नादान, दान कया दीवान,
प्रित संदा परवान आयमि मंझि अड़ी - आयमि इश्क़ु ...

२) नींहुं निसूरो नांगो, कोन करे को सांगो,
लाहद खां थियो लांघो, मोरूं कयमि मरी - आयमि इश्क़ु ...

३) यार बदियूं बदिनामियूं, नींहं मुकियूं निशानियूं,
से त ग़िचीअ ग़लि ग़ानियूं, पातुमि ज़ोंक़ ज़री - आयमि इश्क़ु ...

४) ग़मदिल गोली आहियां, विरह वसीलो भांयां,
केच धणियुनि ड्रे काहियां, वाहर वेर वरी - आयमि इश्क़ु ...

## (१२८ ग़ुलाम अकबर)

हिन हाल जी ग़ाल्हि, कंहिंखे ब़ुधायां? हले वसु न कोई, अंदर में पचायां!

१) पियां जे अंदर में, जले जान जेरो, ब़ाफियां थो जे ब़ाहिरि लक़बु यार लाइयां.
२) कहिड़ी यार लाती, इलाए आ मूंखे, अचे कोन आरामु, अखिएं जलु वहायां!
३) आहे सचु सुहिणल, ड्राढो इश्क़ु औखो, पवे तरसु न कंहिंखे, तोड़े मां ब़ाड्रायां.
४) सितमु सूर सख़्तियूं, वेठो सिरि सहां थो, हले उति न कंहिंजी, सीनो कहिड़ो साहियां?
५) ग़ुलाम अकबर अहिक़रु, वेठो सहु सबुर सां, कोन्हे हर्फु होतनि, नसीबनि ड्रांहुं भांयां.

## (१२९ ग़नी)

छिनी छो न हाईअ हणां हारु अजु, ङिनो आह एड़ो जंहिं आज़ारु अजु!

१) मणीअ खे ङिसी मुंहिंजो मनु मस्तु थियो, हलियो होशु मुंहिंजे हथनि मां वयो,
न वर जो कयो मूं को विचारु अजु!

२) ड्ठई वरु वञे केरु कच ते किरे, न दुनिया साँ भेनरु न हीअं को भरे,
कयो हाइ मूं कहिड़ो वापारु अजु!

३) ङियां ड्रोह कोनरूअ खे कहिड़ो खणी, ङिठुमि चटि चङा जे वया मूंखे वणी,
लिखिए हीअं कयो मूंखे लाचारु अजु!

४) ङिसां थी त ड्राहयनि खे हासिलु ड्रहागु, सवें भोरियूं से सदा मंझि सुहागु,
वणे कहिड़ो वर खे थो वहंवारु अजु!

५) सजुण तुंहिंजी सङ में सवें राणियूं, लखें मूं जियां थियूं खजियल खाणियूं,
वहाए जे वेठियूं बदीअ बार अजु!

६) अकेलीअ खे तुंहिंजो थियो आसरो, पिरीं नाहि तोरे ब्रियो को परो,
अथम आजज़ीअ जो थियो इक़रार अजु!

७) सुयसि ड्रेह में आऊं सजुण तो सङां, मदाइनि माफ़ी थी तोखां मङां!
बुरी बख़्शि बारी तूं बदिकार अजु!

८) हणियो हाणि हथ जीअं थी लीला लुछे, चनेसर जे चह जो पतो थी पुछे,
ग़नी पिणि इएं थियो गुनहगार अजु!

## (१३० ग़रीब)

आहि दुनिया हाल पंहिंजे में हमेशह यार मस्तु,
जाइ पंहिंजी सभु ङिठासीं छा ब्रुढा छा ब्रार मस्तु.

१) बादशाहनि माल मस्ती, सां ग़रीबनि हाल मस्तु,
सूंहं वारनि सूंहं मस्ती, सींध ऐं सींगार मस्तु.

२) मस्तु आशिक़ मस्तु माशूक़, रिंद पंहिंजी राज़ मस्तु,
पीर मस्ती, मीर मस्ती, शेख़ मंझि इस्रार मस्तु.

३) मुहबती मांदा ङिठुमु, नितु कलालनि [1] कोइ [2] में,
पी प्याला से निराला, मैइ कया ख़ुमार मस्तु.

४) मस्तु मांदा मुहब मारिया, रोज़ु रातियूं जे रड़नि,
अज़ु ड्ठिमि ख़ुशि ख़्याल में, से वाइदह दीदार मस्तु.

५) इश्क़ वारा था अचनि, से पतंगनि जां पचनि,
तोर तक सिर जी न कनि, सूरीअ मथे सौ वारि मस्तु.

६) के लड़नि था नफ़्सि सां, के लड़नि शमशेर सां,
आहि मस्ती ज़ोरु हरि कंहिं, तेग़ ऐं तलवार मस्तु.

७) झंग में झांगी रहनि, सांगु कयो सांगी रहनि,
झंग में से रंग लाईनि, कम मथे कमदार मस्तु.

८) साह वारनि आहि मस्ती, छा मिरूं छा ढोर मस्तु,
शेर मस्ती वाघ मस्ती, हरण ऐं हाथार मस्तु.

९) छा चरंदा[1] छा परिंदा[2], सभु वतन मस्तीअ भरिया,
बुलिबुलियूं बस्तान में, लामनि मथे ललकार मस्तु.

१०) जानि वारनि आहि मस्ती, जानि धारां से बि मस्तु,
ज़ाग़ मस्ती, बाग़ मस्ती, सभु कया कलतार मस्तु.

११) बाग़ में जे गुल अजाइबु, से बि मस्तीअ में टिड़नि,
चोट मस्ती, कोश मस्ती, बूंदि मस्तु ऐं ख़ार मस्तु.

१२) ही अनासर[3] जे बुझनि था, से बि मस्तीअ में टिड़नि,
आग मस्ती, आब मस्ती, ख़ाक ऐं पोलारु मस्तु.

१३) मस्तु मैशूक़नि फणी जा चीरजे सौ शाख़ थी,
ज़ुल्फ़ मस्ती, मींढ मस्ती, वार मस्तु ऐं तार मस्तु.

१४) आ मस्ती ए ग़रीबा, क़ौतु क़ादर तो कयो,
साल महिना मस्तु घारिजि, रोज़ु शब हमिवार मस्तु.

## (फ़)

## (१३१ फ़ानी सोभराज)

१) उमिर पंहिंजे पखनि में मां, सूंहां थी सरस सरतियुनि सां,
जिते मारुनि जा झर झूपा, समझनि था प्रीति प्रीतनि सां.

२) मुखे हिति क़ैद कड़युनि में, रखणु लाज़िम न तो ज़ालिम,
रहंदो कींअ दमि राज़ी, पखी पिञिरे में भरतियुनि सां.
३) उमिर चोरीअ ब॒धी ज़ोरी, विछोड़े जी विधइ झोरी,
झझल ड॒ंग ड॒ुख ड॒िसां हिति थी, उमिर माड़ियुनि जी वृतियुनि सां.
४) अदो तूं, मां अदी तुंहिंजी, वड॒ो तू, मां नंडी तुंहिंजी,
उमिर अहिड़ा अहंज आरा, कजनि अड़ब॒ंग अरतियुनि सां.
५) मिठायूं माल तुंहिंजा खुहि, हथ ड॒थ पंहिंजी पाड़यां हे,
न त बख़मल विछाणा हे, खथियुनि लवें छतिड़ियुनि सां.
६) मिलण मुंहिंजे कड॒हिं थींदो, वञी मारुनि सां हुति फ़ानी,
हज॒े थो हींअड़ो जो, पुज॒ा कीअं फंद फिरितयुनि सां.

## (2)

इश्कु आज़ादु भणे[1], अक़ुल गिरफ्तारीअ में,
इश्क़ की कीन वणे, अक़ुल होसि ज॒ारे में.
१) इश्क़ जानदार ऐं बेजान में जानबि पेखे,
अक़ुल खे भेदु भरमु, भिटके पिनण ज़ारीअ में.
२) अक़ुलु आपे जे सियापे में परेशान सदा,
इश्कु आपे खां छुटलु यार जी फुलवारीअ में.
३) इश्क़ तोमानु[2] एं तौलानु[3] जे बहितां ब॒ुधो,
इश्क़ मस्रोरियो[4] महबूब जे गुलकारीअ में.
४) अक़ुल खे माँ खपे, मालिकु खपे मालु खपे,
इश्क़ खे जुहद जफ़ा, ताति सज॒ण वारीअ में.
५) इश्कु हिंदु सिंधु खे घोरे मुखु महबूब मथां,
आह को जादू बुरो हुस्न जे हस्वारी में.
६) अक़ुल जी दोड़ ते इन्सानु परेशानु सदा,
अक़ुल आदम खे मथांयूं करे मुख़्त्यारी[5] में.
७) अक़ुल खे इतिर ऐं अंबर मां तरावत कान्हे,
इश्क़ बरसायो सवनि हुब जे हुब॒कारीअ में.

४) मस्तु मांदा मुहब मारिया, रोज़ु रातियूं जे रड़नि,
अज़ु ड्रिठुमि ख़ुशि ख़्याल में, से वाइदह दीदार मस्तु.
५) इश्क़ वारा था अचनि, से पतंगनि जां पचनि,
तोर तक सिर जी न कनि, सूरीअ मथे सौ वारि मस्तु.
६) के लड़नि था नफ़िस सां, के लड़नि शमशेर सां,
आहि मस्ती ज़ोरु हरि कंहिं, तेग़ ऐं तलवार मस्तु.
७) झंग में झांगी रहनि, सांगु कयो सांगी रहनि,
झंग में से रंग लाईनि, कम मथे कमदार मस्तु.
८) साह वारनि आहि मस्ती, छा मिरूं छा ढोर मस्तु,
शेर मस्ती वाघ मस्ती, हरण ऐं हाथार मस्तु.
९) छा चरंदा[1] छा परिंदा[2], सभु वतन मस्तीअ भरिया,
बुलिबुलियूं बस्तान में, लामनि मथे ललकार मस्तु.
१०) जानि वारनि आहि मस्ती, जानि धारां से बि मस्तु,
ज़ाग़ मस्ती, बाग़ मस्ती, सभु कया कलतार मस्तु.
११) बाग़ में जे गुल अजाइबु, से बि मस्तीअ में टिड़नि,
चोट मस्ती, कोश मस्ती, बूंदि मस्तु ऐं ख़ार मस्तु.
१२) ही अनासर[3] जे बुझनि था, से बि मस्तीअ में टिड़नि,
आग मस्ती, आब मस्ती, ख़ाक ऐं पोलारु मस्तु.
१३) मस्तु मैशूक़नि फणी जा चीरजे सौ शाख़ थी,
जुल्फ़ मस्ती, मींढ मस्ती, वार मस्तु ऐं तार मस्तु.
१४) आ मस्ती ए ग़रीबा, क़ौतु क़ादर तो कयो,
साल महिना मस्तु घारिजि, रोज़ु शब हमिवार मस्तु.

(फ़)

## (१३१ फ़ानी सोभराज)

१) उमिर पंहिंजे पखनि में मां, सूंहां थी सरस सरतियुनि सां,
जिते मारुनि जा झर झूपा, समझनि था प्रीति प्रीतनि सां.

२) मुखे हिति क़ैद कड़युनि में, रखणु लाज़िम न तो ज़ालिम,
रहंदो कींअ दमि राज़ी, पखी पिञिरे में भरतियुनि सां.
३) उमिर चोरीअ ब्रधी ज़ोरी, विछोड़े जी विधड़ झोरी,
झझल ड्रुंग ड्रुख ड्रिसां हिति थी, उमिर माड़ियुनि जी वृतियुनि सां.
४) अदो तूं, मां अदी तुंहिंजी, वड्रो तू, मां नंडी तुंहिंजी,
उमिर अहिड़ा अहंज आरा, कजनि अड़ब्रंग अरतियुनि सां.
५) मिठायूं माल तुंहिंजा खुहि, हथ ड्रथ पंहिंजी पाड़यां हे,
न त बख़मल विछाणा हे, खथियुनि लवें छतिड़ियुनि सां.
६) मिलण मुंहिंजे कड्रहिं थींदो, वञी मारुनि सां हुति फ़ानी,
हज़े थो हींअड़ो जो, पुज़ा कीअं फंद फिरितयुनि सां.

## (2)

इश्कु आज़ादु भणे[1], अक़ुल गिरफ्तारीअ में,
इश्क़ की कीन वणे, अक़ुल होसि ज़ारे में.
१) इश्क़ जानदार ऐं बेजान में जानबि पेखे,
अक़ुल खे भेदु भरमु, भिटके पिनण ज़ारीअ में.
२) अक़ुलु आपे जे सियापे में परेशान सदा,
इश्कु आपे खां छुटलु यार जी फुलवारीअ में.
३) इश्क़ तोमानु[2] एं तौलानु[3] जे बहितां ब्रुधो,
इश्क़ मस्रोरियो[4] महबूब जे गुलकारीअ में.
४) अक़ुल खे माँ खपे, मालिकु खपे मालु खपे,
इश्क़ खे जुहद जफ़ा, ताति सज़ण वारीअ में.
५) इश्कु हिंदु सिंधु खे घोरे मुखु महबूब मथां,
आह को जादू बुरो हुस्न जे हस्वारी में.
६) अक़ुल जी दोड़ ते इन्सानु परेशानु सदा,
अक़ुल आदम खे मथांयूं करे मुख़त्यारी[5] में.
७) अक़ुल खे इतिर ऐं अंबर मां तरावत कान्हे,
इश्क़ बरसायो सवनि हुब जे हुब्रकारीअ में.

1

८) मूं कलर खेत ते लुतुफ़ मां दातार नज़र,
मुंहिंजी उमीद धणी तुंहिंजी दातारीअ में.

९) इश्कु जिन्सार सां दीदार में विन्दरां वरिसां,
मूं विरूहं कानन वणे ब्री का तलबगारीअ में.

१०) दौरु नितु लुतुफ़ जो तुंहिंजो हुजे क़ायमु साक़ी,
का चुकी बख़्श मुखे महिफ़िल मेख़वारीअ में.

११) तूं ख़ता पोशु ख़ता बख़्शि धणी मूं रहिबर,
लुतुफ़ करि मुंहिंजी वही आहि तलफ़ ज़ारीअ में.

**(3)**

१) दुनिया जो कारख़ानो, सभु ख़्वाबु आहे ए दिलि,
बर बहर जो बयानो, सभु ख़्वाबु आहे ए दिलि.

२) छा सां लग़ाइजे दिलि, हर जाइ कूच महिफ़िल,
फासे हिति दीवानो, सभु ख़्वाबु .....

३) गेपियुनि ऐं कान जो हल, केड्रो हो शोर ग़ुल फुल
काथे सो अज़ु तरानो, सभु ख़्वाबु .....

४) हूरनि जे मुहबतनि जो, मनहर महबतनि जो,
गुज़री वयो ज़मानो, सभु ख़्वाबु .....

५) साक़ीअ जी बज़म ख़ाली, संगत जी गति निराली,
दिलि दर्द जो मकानो, सभु ख़्वाबु .....

६) विक्रम ऐं भरतरीअ जो, रावण मंदोदरीअ जो,
कहिड़ो किथे निशानो, सभु ख़्वाबु .....

७) फ़ानी तरनि हज़ारें, से कहिड़ा कहिड़ें पारें,
अखि पटि त सभु फ़सानो, सभु ख़्वाबु .....

## (१३२ फ़ानी खीयलदास)

दुनिया में बस रखणु कंहिंसां अजाई आशनाई आहि,
ड्रुखनि ऐं ड्रोझिरनि में उमिरि सारी मूं गंवाई आहि.

१) ड्रिनमि जंहिंखे अमानत दिलि, तंहिं ख़ूबु ख़्यानत आहि,

दो लाबी दिलि फंदनि फेरन में फासाए फब्राई आहि.

२) बिरह जी बाहि ड्रेए भड़का अला उभिरिनि, मगर दिलिबर,
न कंहिं ड्रींहुं प्रित जो पाणी विझी ब्ररंदी ब्रुझाइ आहि.

३) तलाफ़ी लइ सदा तांघियमि त मन का तास पूरी थे,
मगरि साक़ी न सुरिकी जाम मां चप ते चखाई आहि.

४) चयुमि दिलिदार खे 'बीमारी खे थियसि तुंहिंजे आज़ार खां',
चयाईं 'मूं बणाई दर्द जी तो लइ दवाई आहि'.

५) हुयसि मां बेख़बर, दिलिबरु लंघियो हिकु ड्रींहुं हींअ चवंदो:
'तो वारीअ ते उमेदुनि जी इमारत छो अड्राई आहे?'

६) मूं समझो जंहिंखे रहिबरु तंहिं न लेकिन राह रोशनु कई,
मिले मूंखे न मक़्सदु जे सनम मां रहिमनिाई आहि.

७) लही वयो, जो हुयो मुहिंजे अखियुनि ते धुंध जो परिदो,
सज्री क़ुदिरत जी सूरत मुंहिंजे नेणनि में समाई आहि.

८) लड्रे फ़ानी दुनिया मां हलु, रहणु हिति कीअं रवा आहे?
जिति कारंहि कचाई, गुमुनिमाई बेवफ़ाई आहि.

## (१३३ फ़ज़ल)

बिरह बनायमि बेहयाउ, नींहुं पिरींअ जे नाच नचाया,
ब्रोल ब्र टे ब्रुधु जीजल माऊ, सोज़ सज्रण जे साज़ सराया.

१) अंग उघाड़े पेट भुखे सां, गर्मी सर्दी ड्रील ड्रुखिए सां,
इश्क़ चयो थे अरिड्रो आउ, पेर जड्रहिं मूं पुड़ में पाया.

२) हाकिम हब्रछी पापी पाड़ो, भाऊ बिरादर सेणनि साड़ो,
वेरी भांइजि सभु वियाउ, संगती साथी पारि पराया.

३) ड्रुख ऐं सुख जो ज्राणु न ज्रामनि, कीन ड्रसीनि था आह का कामन,
हमद हिननि जो आहि उपाउ, अरहा सरहा समुझ सवाया.

४) जां ते जइयां मरु मथे में, कंदरी कश्तो ओढ खथे में,
लालनि धारां नाहे लाउ, मुहब जे महिफ़ल रुञ रहाया.

५) आँधीअ मांझीअ जोग़ी जाग़नि, बाहियूं बर में साणु न सामान,

मोननि में मूंहु, तन में ताउ, हू हू जा तिनि हुल हुलाया.

६) बनि ब्रियाई जोड़ न जुड़नि, तंदु तलब जी वहिदत वोड़नि,
वसल जो वाली वारे आउ, रिंदन रोई रूह रीजाया.

७) होड्र न हलंदी पाण न पंहिंजी, तर्कु तुमइ खे कावड़ि क़ंहिंजी,
सुहिणो कंहिंजो नाहि सियाउ, हस्ती मस्ती आर अजाया.

८) वाली वाहद वहदह वाई, वरद वैराग्रियुनि काणि न काई,
फ़ज़ल फ़क़ीरनि पयो पड़ लाउ, अङण असांजे अज़हर आया.

## (2)

मूड़े त मारुअरनि जा, आहिनि हर्फ़ हज़ारें
क़ाबू पेई आहियां कोटनि में, वेठमि विसारे.

१) पलइ पन्हवारनि जे, मां लड़ह लग्री लारे,
1
क़ैदनि कयुसि काहली, ब्रियो त मारियुसि मूंझारे.

२) डुखिया सुखिया ड्रींहंड़ा, मां त वेंदसि गुज़ारे,
सुणाईंदसि साणीह खे, सूर त संभारे.

३) मुईअ जो मड़ह मलीर में, शल वाली खणी वारे,
खणंदेमि खाइर वारियूं, ब्रियूं सरितियूं सीगारे.

४) सारियो सांगीअड़नि खे, हंजूं पेई हारे,
फोड़ाई मंझि फ़ज़ल चवे, मारियसि मारुनि जे मारे.

## (१३४ फ़तह)

मूंखे पुन्हल ड्रे वञणो आहे, हिति कीनकी रहिणो आहे
कमु उहो ई करिणो आहे, झोरीअ में झिरिणो आहे.
न त मूंखे मरिणो आहे.

१) जेड्रियूं मूंखे काई कान झले, भलि रस्तो अणांगो मूंखे मिले,
सोई झोलीअ झलिणो आहे, सूर इहोई सहिणो आहे,
मूंखे कीनकी जीअणो आहे.

२) हाणे खुहि वञी वार सींगार पवनि, ऐं कापिड़ा आरिसियूं हार पवनि,
मथो धूड़ि में भरिणो आहे, मूंखे रिण में रलिणो आहे,
मूंहुं कीनकी मटिणो आहे.

३) पेरा पुन्हल जा मां पुछाईंदसि वेंदसि,
रस्ते में सिरु झुकाईंदी वेंदसि,
पंहिंजे लाल खे लहिणो आहे, जोई सुंदरु सहिणो आहे,
ऐं कीनकी हटिणो आहे.

४) फ़तह अर्ज़ु मालिकु खे आहे इहो, मूंसां मुहबती मुहबु मिलाए उहो,
जंहिंसां जानि खे जड़िणो आहे, मुंहिंजो ॻिचीअ जो ॻहिणो आहे,
दिलिबरु मनु मुहिणो आहे.

(2)

सुहिणी खे सिक साहड़ जी थी, वेई दिले ते पार,
मेहर सां मिली वञे हिक वार.

१) कारी राति कुननि जो कड़िको, दिलो कचो हो,
लुड़ में लुढ़ंदे वया थे वार,
मेहर मेहर ॿुड़ंदे कयाईं, लहिजि अची का संभार.

२) अध दरियाह विचि दिलो टुटी पियो, सड कयाईं सरिकारि,
मूंसां मिले अची मेहार,
सुहिणीअ जो उति अर्ज़ु अघाणो, वेही धणीअ दरबारि.

३) फ़तह फ़िराकुनि जो आहे फटायल, आहे अलहु आधार,
भेरो करि त खणी तूं भतार,
सुहिणीअ जो इति मेलु वञी थियो, लथी मथांउंसि मयार.

## (१३५ फ़क़ीर)

मतां थिएं मांदी, वेझा वण विंदुर जा.

१) काहि पहुचीं केच ॾे, छो पुछीं पांधी.[1]

२) मथे मैथि मुईअ जे, केची थींदा कांधी.

३) सिघो थींदी ससुई, विरह खूं वांदी.

४) फोड़ाईअ में फ़क़ीर चवे, कंदा हेकर हेकांदी.

## (१३६ फ़िदा)

जानब जे जिन्सार तां मां सदिक़े सदिक़े,
सदिक़े सदिक़े, मां सदिक़े सदिक़े!

१) लब अक़ीक़ी लालुनि जहिड़ा, ड्डंद था झड़िकनि मोतिनि जहिड़ा,
शेरियुनि दहनि गफ़तार तां मां सदिक़े सदिक़े.
२) अबरू सज॒ण जो सेफ़ु ईरानी, साहु ऐं सरतनि तां क़ुर्बानी,
चिश्मनि कैफ़ कटार तां मां सदिक़े सदिक़े.
३) लटिकनि लमिकनि कारा काकल, मस्तु ड्डिसी थिया दाना आकुल,
वासींगनि जे वार तां मां सदिक़े सदिक़े.
४) चाह ग़बग़ब सेबु कंदारी, दर्दनि मारी दिलि वेचारी,
क़ैद कई रुख़सार तां मां सदिक़े सदिक़े.
५) जानिबु तां हीअ जान फ़िदाई, शानु फ़िदा थियो आं फ़िदा थी,
जानिब संदे इज़हार तां सदिक़े सदिक़े.

## (१३७ फ़ाइक़)

मींहं कयूं मुल्क ते मुंहिंजे, लख भलायूं भाल भाल!
१) कारि कई अजु कारनि ककरनि, आहीड़ा कयो उतरऊं उभिरनि,
बीहनि, वसनि, पखिड़नि, हलनि, मस्ताननि जी चाल चाल।
२) ड्डहरनि, भटूं थिया ग़ाह सां सावा, वहट ऐं वाना खाई ढावा,
खीर, मखण ऐं ड्डुध जा जावा, पाणी थरनि में ज़ाल जाल!
३) ग़ीच ख़ुशीअ जा सरितियूं ग़ाइनि, पांद में पेरूं चूंडियो खाइनि,
टालियूं कयो थियूं रुह रीझाइनि, ओरनि वेठियूं हाल हाल!
४) वेड़िहीचनि जी वाट निहारियां, फ़ाइक़ सांगीअड़ा थी सारियां,
रोयो हंजूं आऊ वेठी हारियां, सकंदे थियड़मु साल साल!

## (१३८ फ़ना)

तोखे कंहिं पर पायां - प्रीतिम!
१) तूं ठाकुरु मां तुंहिंजी दासी, निति दर्शन लइ नेण प्यासी,
मन मंदिर में तोखे पूज॒ां, जीवनु भेटु चड़िहायां - प्रीतिम!
२) तूं सभुकुझु, मां कुझु बि न साजन!
तूं मुंहिंजे जीवन जी जीवन,
तूं थीऊ चंद्र, चकोर बणां मां! उड्डंदे उमरि गंवायां - प्रीतिम!

३) पाण विञाए तोखे पायां, तोखे पाए पाण विञायां,
त्‌भी, तूं थीऊ, मां भी तूं थियां, पाण में पाण विञायां - प्रीतम!

(2)

ड्रींहं थिया ड्राढा ड्रिठे, तोखे ड्रिसण आयो आहियां,
ख़ैर तुंहिंजे हुस्न जो, तोखां पुछण आयो आहियां.

१) तो कई जीअरे जुदाई, पर न थी मुंहिंजी सरे,
तंहिं करे तो वटि अची, तोखे ड्रिसण आयो आहियां.

२) बेवफ़ा तुंहिंजे बिरह में, कोन को मूं सुखु ड्रिठो,
तूं छिनण जी थो करीं, मां ग॒ढण आयो आहियां.

३) थो करे आज़ी फ़ना हीअ, थो घरी तुंहिंजो विसल,
कुर्ब ख़ातिरि जे घड़ियूं, तोसां कटण आयो आहियां.

## (१३९ क़तब)

रखीं थो तलब जी दावा, वतें वहदत विसारियो तूं.

१) फिटा करि ग़ैर जा ख़्याला, उथी पीऊ शौंक़ जा प्याला,
रहीं मदिहोशु मतवाला, अलस्ती ब्रोल पाड़ियो तूं.

२) टुब्री पाताल में ड्रेई, अमुल्ह उते लाल ड्रिसु वेही,
खब्रे जिनि खाणि पसु सेई, उहे सां सुरिति सारियो तूं.

३) क़ुतब छड्रि कूड़ सभु बाज़ी, मरणु मरिणो अग॒ ग़ाज़ी,
रखिजि तिनि तलब नितु ताज़ी, वतीं बिरहें बहारियो तूं.

(2)

लग॒ी आहियां तुंहिंजे लाम, ब्रियो त सुझियमि थो कीनकी.

१) तारूं तन जूं तोखे घुरनि थियूं, कोन घुरनि ब्रियो कामु.

२) तालब तन में तकियो बनायो, कीन परोड़ियुमि आम.

३) हिन हुन जग॒ खे तर्कु कयाऊं, वठी त तुंहिंजो नामु.

४) कर्म क़तब ते करि तूं साईं, पियो आहियां त तुंहिंजे शाम.

(3)

ही हू ब्रई छिड्रियासीं, हिक नाम सां थियासीं.

१) सुणी राम संदा नारा, विहंदा से कीअं वेचारा?

नेणें वहाईं नारा, पखे पिरिति जे पियासीं,
ही हू ब॒ई छिड॒ियासीं .....
२) वेही विजूद में ड॒िसु, पर तूं पाण में पसु,
आहे असुल अते ड॒िसु, पेही पाण में वियासीं,
ही हू ब॒ई छिड॒ियासीं .....
३) लाहूत संदो लारो, मलूकत जो अलारो,
जबरुत जो उजारो, पाण में पिसियासीं,
ही हू ब॒ई छिड॒ियासीं .....
४) क़ुतब साणि इशारो, आहे इश्क़ खां न्यारो,
ब॒िन्ही खूं आहे प्यारो, जंहिं नींहं में नियासीं,
ही हू ब॒ई छिड॒ियासीं .....

(4)

सुमिरणियूं सोरियुनि, आधी राति जो उदासी.
१) नाद नफ़्लियूं संख सुरत जा, साणु अलख ओरीयुनि.
२) तन जी तसबीह, दिलि जो दाग॒ो, मन जो मणियो फेरियुनि.
३) उथी ओ धूती, तंदु तलब जी, लोक सुते चोरीनि.
४) क़तब काहे सुख़नु सत्गुरु सां, हींइड़े खे हेरीनि.

(5)

हैअ हैअ सरितियूं सूर इहो, दोस्त बिना जे दम वञनि था.
१) सो दमु सरितियूं मूं न सेबायो, जो दमु दिलिबर ब॒ांझूं गंवायो,
ग़मु करे थो चूरि इहो - दोस्त बिना .....
२) सो दमु सरितियूं सुहिणो आयो, जो दमु सत्गुर साणि अठायो,
मन कयो मंज़ूरि उहो - दोस्त बिना .....
३) दम दोस्त रीअ आहनि ख़ाली, अहिड़ा अमल कीअं थियनि ज़वाली,
पल पल मूंखे पूरु इहो - दोस्त बिना .....
४) क़ुतब पाइ दरोनी झाती, यार नफ़ीअ सां थी असबाती,
हरिदमि रखु दस्तूरि इहो - दोस्त बिना .....

(6)

रांझनु आयो खुली बहार, केरु किते साईंअ केरु कमाए?
१) आतण आंजो मूं न सेबायो, यार रांझन सां ही नींहुं लायो,

चौरुख थियो चिकमारु - केरु कते साईं .....

२) सरितियूं सींगार जो करियो अव्हीं सायो, चरो चंदनु ऐं मुश्क मिलायो,
इश्क़ आयो इज़हारु - केरु कते साईं .....

३) चरिखे सां मुंहिंजो चितु न थो लगे, पांणियूं वञनि था कांग उड़ाए,
पौणियूं चरिखे खां थियूं धार - केरु कते साईं .....

४) कुर्बु क़ुतब ते अलहु करे आयो, रांझन साईंअ पाणि वसायो,
हू जा थिया हल्कार केरु कते साईं .....

## (7)

सखी सबाझल ब्राझ करियो का, फ़ज़लु कयो अव्हां हाणे.

१) दर तुंहिंजे ते कएं सवाली, दर तुंहिंजे तां कोन मोटियो खाली,
हीअ बि एक निमाणी.

२) दर्द मुंहिंजे जो दारूं तूंही, ब्रे दर जी मैं नाहियां सूंहीं,
हालु सभोई थो ज़ाणीं.

३) चरिख फ़लक जे घणो सतायो, दुख कटण जो करियो अव्हीं सायो,
मुर्शिद अची थे साणी.

४) कर्म क़ुतब ते करि तूं ख़ालिक़, तो बिना ब्रियो नाहे कोई मालिकु,
दुखड़ा कटीं अची पाणही.

## (१४० क़लेच)

इलाही महर मां पंहिंजे, असां ते का भलाई करि,
गुनाहनि में आहियूं गुमराहु, तूं का रहिनिमाई करि.

१) डुखनि सूरनि संदा ड्रोला, ड्रिठा थऊं हिति उमिरि सारी,
सुखनि खे था सिकूं सारे, ख़ुशी ऐं दिलिकशाई करि.

२) असां जा कम अबसि ऊँधा, वठाइनि पाप में वारी,
वसीलो को ब्रियो कोन्हे, राम सां तूं रिहाई करि.

३) रुली थिया हुयऊं असुल आता रंज़न जे राति कीअं निबिरे?
रसाइजि रोज़ रोशन खे, निमाणनि ते निवाई करि.

४) कयो फ़तननि असां फ़ानी, फ़िक़िर फ़ाता ड्रिठा थऊं निति,

झेड़नि झेड़नि ककर कारा, सुलह जी का सफाई करि.

५) अथऊं चौतरफ़ चौधारी, बलाऊं आफितूं ओड्रियूं,
धिकियो दुश्मन धिकारिनि था, तड़े तिनि खे तवाई करि.

६) अज़ाब ऐं दर्द बीमारियूं, जलाइनि जान खे झोरी,
विलहनि जा वेज़ वाहिर थी, सिहत ड्रे ऐं शफ़ाई करि.

७) कपट ऐं कूड़ खां पासो, वठाइजि महर मां मोटी,
कढी कुलबऊं कचाइनि खां, सुपति ड्रे ऐं सचाई करि.

८) लंघाइजि पेचरा पहिरीं, रुलयासीं राति कारीअ में,
रसिजि मूढ़नि संदा रहिबर, सब्राझा का सहाई करि.

९) असां जो तो बिना कोन्हे वसीलो, चई क़लेच ए रबु,
निमूं था तो अग्रियां साईं, मदद ड्रे ऐं रसाई करि.

(2)

सज़ण खे ए सबा का सार मुंहिंजी राति हुई या न?

हबीबन खे हलण जे चौपचो[1], प्रभाति हुई या न?

१) वरिहिय गुज़िरिया वञी वेठो विसारे दर्द मंदनि खे,
कंहीं पर तंहिंखे का वाई वरण जी वात हुई या न?

२) कयईं थे ग़ाल्हि का मुंहिंजी पुछईं थे हालु हीणे जो,
कंहिं दम लाल जे लब ते बिरह जी बात हुई या न?

३) असांखे हिन जी सिक हरिदमि ऐं हिन जो ध्यानु रातो ड्रींहं,
कड्रहिं का हिक घड़ी हिन खे असांजी तात हुई या न?

४) खिवयूं मारुनि ड्रे थे खिविणियूं हुआ सारंग जा साया,
फुलारिया फोग़ थी थाधल उठी बरसाति हुई या न?

५) उड्राया कांग मूं केई ड्रेई पैग़ाम पिरियुनि ड्रे,
लही लामनि मथे खियांते लईं का लात हुई या न?

६) न लोड़िहिजि दिलि क़लेच आख़िरि पिरीं तोखे कंदा पंहिंजो,
क़बूले ज़ाम ज़ामनि जी, किनी कमादत हुई या न.

(3)

दुनिया में दिलि जो मतलबु, पूरो थियो त छा थिया?

आख़िरि मिलियो न जे रबु, ब्रियो सभु मिलियो त छा थिया?

१) मरु हिते हुजेई शाही, लख लशकर सिपाही,
थींदें अदम[1] ड्रे राही, जगु फ़तह कियो त छा थिया?

२) थीएं इलम में कामिलि, करि पणि अमल खे शामिलि,
आलम जे थियो न आमिलि[2], दफ़्तरु लिखियो त छा थिया?

३) हुति फ़िकर जो फ़सानो, हिति ज़र जो थिए ज़मानो,
हथि करि तूं हू ख़ज़ानो, हीऊ मालु वियो त छा थिया?

४) दुनिया जा सुख फिटा करि, वठु आख़िरत खे आख़िरि,
सौदे में सूद ख़ातिरि, नुक़्सान पियो त छा थियो?

५) सूरह ड्रिख ड्रेखारिई, वेरी सचो विसारिई,
पंहिंजो न नफ़िसु मारेइअु, दुश्मन दसियो त छा थिया?

६) आहे क़लेच अरिमानु, कयो शिरकु[3] तोखे शैतान,
मनु जे न थियो मुस्लमानु, कलमो पढ़ियो त छा थिया?

## (4)

या रब कजईं का मूंते भलाई, तोरीअ न आहे ब्री वाह काई.

१) तोखां सवाइ कोन वारसु विल्हनि जो, तोखे वड्राई तोखे ख़ुदाई.
२) हीणनि जो थीं तूं हरि वक़्ति हमुराहु, मोड़हनि करीं तूं निति रहनुमाई.
३) थिया राज़ दिलि जा सभु तोखे रोशनु, सुधि सभ कंहिं जी तोखे सभाई.
४) राज़ी रहनि सभु तुंहिंजी रज़ा ते, जेका वणे तो वहूलह साई.
५) हथ तुंहिंजे आहे हरि कंहिं जी क़िस्मत, क़ादर असां ते करि का अताई[4].
६) मौला मुरादूं मन जूं पुज्राइजि, हरिको करो थो बख़्त आज़माई.
७) स्वाली क़लेच आहे, ब्रुधु अर्ज़ु उन जो, करि महर का मुश्किल कशाई.

## (5)

ख़ुदा करे त अङण मुंहिंजे मोटी अचे!
निमाणी दर्दमंदी दिलि खे को क़रारु अचे.

१) बदन में बाहि अंदर में उसाट दिलि बरियां[5],
वरायो आ ग़मनि शल सो ग़मसारु अचे.

२) सुखन सां सेज संवारियमु विछाए फ़र्श फ़रोश,

ग़रीबु ख़ानो थियो गुल्ज़ारि गुलैज़ारु[1] अचे.

३) ख़ुशीअ मां वाट वठी आऊ फ़कीरु थी वेठुसि,

त मान शौकत[2] शाहीअ सां शहसुवारु अची.

४) अचे थो सूंहं जो सुल्तानु मूं गदा जे घरि,

इनहीअ[3] शख़्स ते भला कंहिं खे एतबारु अचे.

५) अचे त हांव जे हिजरे में सुर्त सां सांढियांसि,

मतां रक़ीबु लंघे ख़र ख़राबु ख़्वारु अचे.

६) क़लेच तुंहिंजो थियो हर हाल में ख़ुदा हमुराहु,

न करि ख़ौफ़ु जे दुश्मन बि सौ हज़ार अचे.

## (6)

रंज मां वियो रुसी दिलिदारु, ख़ुदा ख़ैरु करे,

दर्द में दिलि थी गिरफ़्तारु, ख़ुदा ख़ैरु करे.

१) दिलिबरीअ सां त ड्रनुइ कोन दिलासो दिलि खे,

वियो ग़मनि में विझी ग़मुख़ारु, ख़ुदा ख़ैरु करे.

२) लख कयमि आज़ियूं नीज़ारियूं, न मञई का मिंत,

कयईं असुल वसुल खां इन्कारु, ख़ुदा ख़ैरु करे.

३) जंहिंखे समझ थी सजु॒ण हाइ, फिरी बदिख़ुवाह,

दोस्तु थियो दुश्मनु ख़ूनख़ारु, ख़ुदा ख़ैरु करे.

४) ड्रोहु कंहिंखे ड्रिजे नाहिकु, आहे क़िस्मत जो क़सूरु,

थियो दलाराम दिलि आज़ारु, ख़ुदा ख़ैरु करे.

५) दौरु दुनिया जो अजबु आयो, थी मुहबत मैदूम[3],

शोरु, शरु निकरी थियो निर्वारु, ख़ुदा ख़ैरु करे.

६) बेकसीअ खूं आहे हैरानु, परेशानु क़लेच,

सभु वियसि चारा थियो लाचारु, ख़ुदा ख़ैरु करे.

## (7)

न आहे यकसानु सदा ज़मानो, घड़ीअ में छाहे घड़ीअ में छाहे!

अजबु ही दुनिया जो कारिख़ानो, घड़ीअ में छाहे घड़ीअ में छाहे!

1

१) किथे वियो दारा किथे सिकंदरु, किथे वियो सुल्तानु हफ़्तु किशोरु?
थियो हरिको हिति मौत जो निशानो, घड़ीअ में छाहे घड़ीअ में छाहे!

२) हमेश्ह हुई जिनि खे शादनामी, कई सदा जिनि थी कामरानी,
मिलियो उनहनि खे बि आबु व दानो, घड़ीअ में छाहे घड़ीअ में छाहे!

३) ख़्याल जिनि जा हुआ हवाई, दिमाग़ में जिनि जे हठ वड़ाई,
वियनि सभेई मुल्क ऐं ख़ज़ानो, घड़ीअ में छाहे घड़ीअ में छाहे!

४) न भरोसो आहे हिकड़े दम जो, थियो जारी रस्तो सदा अदम जो,
क़लेच आहे ही सभु फ़सानो, घड़ीअ में छाहे घड़ीअ में छाहे!

## (8)

वयो इख़्लासु आलम मां, अजबु हीऊ दौरु आयो आ!
डिज़े सभु ख़ल्क़ ज़ालिम खां, अजबु हीऊ दौरु आयो आ!

१) न यारनि में रही यारी, न भाऊरनि में वफ़ादारी,
सचाई वेई उथी सारी - अजबु हीऊ ...

२) घणा जेको मकर ज़ाणे, वणे सभ कंहिंखे थो हाणे,
खरियो खोटो मज़ा माणे - अजबु हीऊ ...

३) दग़ाबाज़नि जी अज़ु बाज़ी, चुग़िलख़ोरनि मां सभु राज़ी,
तड़ियुनि जी आबरू ताज़ी - अजबु हीऊ ...

४) हुनर वारनि जी बदिहाली, फिरनि दर दर मथे स्वाली,
लुचनि जी अज़ु चली चाली - अजबु हीऊ ...

५) क़लेच आह्नीं सियाणो जे, न रखु को भरोसो तिनि ते,
गुज़ारिजि तिनि खां तूं पासे - अजबु हीऊ ...

## (9)

डे सबा सेयो करे, आणे सनेहो यार जो,
मन मोहन मंठार दिलिबर, दिलि घुरए दिलिदार जो.

१) थी बहारी वेई ख़िज़ां, सरिसब्जु थिया सहिरा सभेई,
बुलुबुलुनि में गफ़्तगू पियो, हर घड़ीअ गुलज़ार जो.

३) थो विझां हरिवक़्ति फ़ालूं, ऐं निहारियां चौतरफ़ु,
मान काथऊं को लंवे, कांगल पिरियुनि जे प्यार जो.

३) उमिरि सारी हिजर जी हाञी, कयो मूंखे हलाकु,

या इलाही को दिलासो, दोस्त जे दीदार जो.

४) ए अज़ीज़ो का कजो, मुंहिंजे मसीहा खे ख़बर,
हाणि हे है हालु कोन्हे, बिरह जे बीमार जो.

५) ग़मु न खाउ करि सबुरु, सूरम में सदाईं ए क़लेच,
मर्द मूरौं कीन कनि, संसो इनहीअ संसार जो.

## (10)

१) आरज़ू ईअ थमु त निकिरे दमु तुंहिंजे रूबरू,
मरु त थिए फ़ेसलु सज़ो, कमु तुंहिंजे रूबरू.

२) छा थियो जे मूं निमाणीअ, पाण कयो तो ते फ़िदा?
थो निमे सुहिणा सज़ो, आलमु तुंहिंजे रूबरू.

३) वरिहय थिया दांहूं कंदे, हिकवार मोकल ड॒े पिरीं,
ता अची ओरियां अंदर जो, ग़मु तुंहिंजे रूबरू.

४) चाक दि॒लि जा था चिकनि थिया, ज़ख़्म अला मंझि फ़राक़,
छडि॒ त अजु॒ तिनि जो करियां, मरिहमु तुंहिंजे रूबरू.

५) दर्द तुंहिंजे में रोई, सिरि मूंहुं पिटे परपुठि क़लेच,
कहिड़ो हूंदि बेहद करे, मातमु तुंहिंजे रूबरू.

## (11)

माणा करि न मार सजु॒ण, तूं ज़रे ज़रे,
पाणां न करि मूंखे तूं प्यारा, परे परे.

१) हेकर निहारि नेण खणी, नाज़ मां पिरीं,
वई उमिरि इंतज़ार में, आज़ियूं करे करे.

२) हरिदमु हंजूं वहाए, करे यादि तोखे दिलि,
ग॒ाल्हियूं करे हज़ार, ग॒णनि जूं ग॒रे ग॒रे.

३) मूं कयो कुसण क़बूलि, मगर तूं को क़्यासु करि,
ख़ंजरु वहाइ हल्क़[1] ते, क़ातिल हरे हरे.

४) दिलिबर अची को ड॒ेजु, दिलासो क़लेच खे,
मुहबत में तुंहिंजे, मुहब मिठा पयो मरे मरे.

## (१४१ क़ादरी)

मिठा तोखे अल्लाह आणे, परेशानु हालु आ मुंहिंजो,
ज़मानो सारो भांयां दुश्मनु, जीइण जंजालु आ मुंहिंजो.

१) विसारे यारु वञी वेठेमु, नको न्यापो मुकुई मूंड़े,
थियां जोगी फिरां दरि दरि, फ़क़ीरी ख़्यालु आ मुंहिंजो.

२) मिठा तुंहिंजे जुदाईअ में, जली वियो जानि जिगरु जेरो,
अखियुनि जे आब सां प्यारा, पुसियलु रूमालु आ महिंजो.

३) अखियूं आसाइतियूं आहिनि, खुतल दाइमु तुंहिंजे दर ते,
वसंदा यार जा वेड़िहा, इहो ई स्वालु आ मुंहिंजो.

४) तस्वीर तो संदी प्यारा, महू कई क़ादरी जे दिलि,
हुसुन जे फ़ौज थी फ़ाल्मु, सफ़र फ़ि अलहालु आ मुंहिंजो.

## (2)

चंड जहिड़नि अजु चंबनि सां, मेटि दिलिबरु थे मिलियो!
लङनि लाहिण लाइ लालनि, तेलु तंहिं मंझि थे रलियो!

१) हीऊ मर्तबो मुंखे मिले हा, जे हुजे हा तेलु मेटि,
दर्द वारी दिलि ते मूं, दागु हसिरत जो झलियो.

२) तेलु तड़हिं थो थिए, जड़हिं पाण सारो पीड़िजे,
ग़ैर घाणे मंझ गंवाए, वसल लाइक़ु थे वलियो!

३) इश्क़ जी चाढ़ी अणांगी, उति चड़हनि के सिर लथल,
आह हरिहिकु ड्राको ड्रुख जो, पाण पंहिंजे खे पलियो!

४) जे चड़िहो चाड़ही ते तां, हथ साह खां धोई छड्डियो,
सिरु तिरीअ ते खणी हिकदमु, चाह मां सोरे हला.

५) हिन तरह महबूब जो, मेलापु थिए थो मेटि में,
क़ादरी आह सरि बसरि, सूर ऐं दुख हे सलिया!

## (3)

ग़म त दुनिया में घणा, मगर इश्क़ जो ग़मु ब्रीअ तरह.

१) ज़ख़्म दिलि खे दिलिबरा, कीन छुटनि था रे तबीब,
हिनि जूं लिपरियूं हिनजो, ब्रर्का, हिंजो मरहमु ब्रीअ तरह.

ग़म त दुनिया में घणा ...

२) हुसन वारा केतिरा, मटि न भांयां यार जे,
हिन जूं रमिज़ूं हिन जूं ग़मज़ूं, नाज़ दमु दमु ब॒ीअ तरह.
ग़म त दुनिया में घणा ....

३) इश्क़ वारनि जे बराबर, नाहे मातमु आम जो,
हिन जूं आहूं हिन जूं दांहूं, हिनजो साहु खणणु ब॒ीअ तरह.
ग़म त दुनिया में घणा ....

४) केरु दिलि क़ाबू करे, दिलिबर बिना हिन दाम में,
हिनजो जादू हिनजो अफ़्सूं, हिनजो ज़ल्फ़ ख़मु ब॒ीअ तरह.
ग़म त दुनिया में घणा ....

५) इश्कु इख़्तियारी न ज॒ाणे, कुफ़र ऐं इस्लाम खे,
हिन जो मज़हबु हिनजी हलति, क़ादरी क्मु ब॒ीअ तरह.
ग़म त दुनिया में घणा ....

## (१४२ क़लंदर)

फ़क़ीरानूं साहिब लग॒ंदा प्यारा

१) घट में गंगा घट में जमुना, घट में ठाकुर दुआरा.
२) घट में ब्रह्मा घट में विष्नू, घट में शिव का पसारा.
३) घट में सूरजु घट में चंदा, घट ई नव लख तारा.
४) रोम रोम में साहिब वसंदा, जीअं हड्डियां विच पारा.
५) कहे क़लंदर तन मन अंदरि, ढूंढ लधा मैं प्यारा.

## (क)

## (१४३ कोझी)

विसारण हीअं न वाजिबु हो, वसीला बे वसीलन खे,
छड॒णु छपिरें न लाइक़ु हो, मिठा छोरनि यतीमनि खे.

१) छड॒ायो ड॒ेहु क़िस्मत आ, क़ज़ा कयो दोस्त परड॒ेही,
पुन्हलु परिदेस ते पहुतो, जलावतनी ग़रीबनि खे.

२) नाहे को ड॒ोहु ड॒रनि खे, मुहड़ि सारी मिठा मूंड॒े,
सुते सिपरीं विञायो मूं, चवां पंहिंजे नसीबनि खे.

३) फ़क़ीरियाणी आहियां दर जी, सख़ी सरिवर तुंहिंजो नालो,
मुनास्बु नाह मोटाइणु, पंहिंजे दर तूं फ़क़ीरनि खे.
४) जेही तेही मिठा तुंहिंजी, पनाहे पांद में ढकिजांइ,
सुतरु पोशी मुर्कु तुंहिंजो, उघाड़िजि कीन ऐबनि खे.
५) चङा चोखा खणे सभिको, खरिया खोटा खणी तूंई,
अथेई नंगु यार कोझीअ जो, पहुचु पगिदार हीणनि खे.

(2)

तबीबा ख़्याल सां ड्रिसिबो, अथमि का दिलि जी बीमारी,
जिस्मु ताज़ो तवानो आ, ढरी थमु नबिज़ दिलि वारी.
१) उञायल जाम लाइ जानी, बुखायल बिरह जी प्यारा,
कजइ को सेघिड़ो वदर ओन, मरई थी ना त वेचारी.
२) सड़े थो सोज़ में सीनो, झिज़े थो जीऊ जिगरु सारो,
सतायल हां मां सूरनि जी, ड्रिजाइ का वेज़ दिलिदारी.
३) किताबनि में दवा कान्हे, मिठा हिनि मर्ज़ मुंहिंजे जी,
दवा दारूं सज़ण तूंई, आहे दीदारु दरकारी.
४) मुअल दिलियूं जियारीं थो, लखनि लेखे मसीहा तूं,
जियारणु हिक जेड्री छाहे, पुज़ेई जे कार सरदारी.
५) नाहे का घुरिज सेणनि खे, हलीमा का इलाजनि जी,
ज़रुरत आहि कोझीअ खे, दवा ड्रियो का दर्द वारी.

(3)

अंदर में इस्रारु ड्रिठोसी.
१) दरि दरि ग़ोल्युमि घरि घरि फोल्युमि, कोन लधो कलतारु,
जां जो पायां अंदरि झाती, दिलि घुरियो दिलिदारु ड्रिठोसी.
२) मस्जिद मंदिर मढ़यिूं टिकाणा, सभेई खेड्र मकार,
गंगा जमना मथुरा काशी, रुलणु सभु बेकारु ड्रिठोसी.
३) रोज़े निमाज़ूं ठकि ठकि तसबीह, थीऊ बेज़ारु,
दीन मज़ाहब सभ दुई आ, नीहुं सचो निरवारु ड्रिठोसी.
४) गंवायुमि पाणु साजनु पायुमु, सूरत जो सींगारु,
असां रांझो हिकु थियोसी, वथु रहे न वारु ड्रिठोसी.
५) अंदरि ब्राहिरि सूरत साग़ी, क़समु रबु जबार,

२) हुसन वारा केतिरा, मटि न भांयां यार जे,
हिन जूं रमिज़ूं हिन जूं ग़मज़ूं, नाज़ दमु दमु ब॒ीअ तरह.
ग़म त दुनिया में घणा ....

३) इश्क़ वारनि जे बराबर, नाहे मातमु आम जो,
हिन जूं आहूं हिन जूं दांहूं, हिनजो साहु खणणु ब॒ीअ तरह.
ग़म त दुनिया में घणा ....

४) केरु दिलि क़ाबू करे, दिलिबर बिना हिन दाम में,
हिनजो जादू हिनजो अफ़्सूं, हिनजो ज़ल्फ़ ख़मु ब॒ीअ तरह.
ग़म त दुनिया में घणा ....

५) इश्कु इख़्तियारी न ज॒ाणे, कुफ़र ऐं इस्लाम खे,
हिन जो मज़हबु हिनजी हलति, क़ादरी क्मु ब॒ीअ तरह.
ग़म त दुनिया में घणा ....

## (१४२ क़लंदर)

फ़क़ीरानूं साहिब लग॒ंदा प्यारा

१) घट में गंगा घट में जमुना, घट में ठाकुर दुआरा.
२) घट में ब्रह्मा घट में विष्नू, घट में शिव का पसारा.
३) घट में सूरजु घट में चंदा, घट ई नव लख तारा.
४) रोम रोम में साहिब वसंदा, जीअं हड॒ियां विच पारा.
५) कहे क़लंदर तन मन अंदरि, ढूंढ लधा मैं प्यारा.

## (क)

## (१४३ कोझी)

विसारण हीअं न वाजिबु हो, वसीला बे वसीलन खे,
छड॒णु छपिरें न लाइक़ु हो, मिठा छोरनि यतीमनि खे.

१) छड॒ायो ड॒ेहु क़िस्मत आ, क़ज़ा कयो दोस्त परड॒ेही,
पुन्हलु परिदेस ते पहुतो, जलावतनी ग़रीबनि खे.

२) नाहे को ड॒ोहु ड॒रनि खे, मुहड़ि सारी मिठा मूंड॒े,
सुते सिपरीं विञायो मूं, चवां पंहिंजे नसीबनि खे.

३) फ़क़ीरियाणी आहियां दर जी, सख़ी सरिवर तुंहिंजो नालो,
मुनास्बु नाह मोटाइणु, पंहिंजे दर तूं फ़क़ीरनि खे.
४) जेही तेही मिठा तुंहिंजी, पनाहे पांद में ढकिजांइ,
सुतरु पोशी मुर्कु तुंहिंजो, उघाड़िजि कीन ऐबनि खे.
५) चङा चोखा खणे सभिको, खरिया खोटा खणी तूंई,
अथेई नंगु यार कोझीअ जो, पहुचु पग़िदार हीणनि खे.

(2)

तबीबा ख़्याल सां ड॒िसिबो, अथमि का दिलि जी बीमारी,
जिस्मु ताज़ो तवानो आ, ढरी थमु नबिज़ दिलि वारी.
१) उञायल जाम लाइ जानी, बुखायल बिरह जी प्यारा,
कजइ को सेघिड़ो वदर ओन, मरई थी ना त वेचारी.
२) सड़े थो सोज़ में सीनो, झिज॒े थो जीऊ जिगरु सारो,
सतायल हां मां सूरनि जी, ड॒िजाइ का वेज॒ दिलिदारी.
३) किताबनि में दवा कान्हे, मिठा हिनि मर्ज़ मुंहिंजे जी,
दवा दारूं सज॒ण तूंई, आहे दीदारु दरकारी.
४) मुअल दिलियूं जियारीं थो, लखनि लेखे मसीहा तूं,
जियारणु हिक जेड॒ी छाहे, पुज॒ेई जे कार सरदारी.
५) नाहे का घुरिज सेणनि खे, हलीमा का इलाजनि जी,
ज़रुरत आहि कोझीअ खे, दवा ड॒ियो का दर्द वारी.

(3)

अंदर में इस्रारु ड॒िठोसी.
१) दरि दरि ग॒ोल्युमि घरि घरि फोल्युमि, कोन लधो कलतारु,
जां जो पायां अंद्ररि झाती, दिलि घुरियो दिलिदारु ड॒िठोसी.
२) मस्जिद मंदिर मढ़यिूं टिकाणा, सभेई खेड॒ मकार,
गंगा जमना मथुरा काशी, रुलणु सभु बेकारु ड॒िठोसी.
३) रोज़े निमाज़ूं ठकि ठकि तसबीह, थीऊ बेज़ारु,
दीन मज़ाहब सभ दुई आ, नीहुं सचो निरवारु ड॒िठोसी.
४) गंवायुमि पाणु साजनु पायुमु, सूरत जो सींगारु,
असां रांझो हिकु थियोसी, वथु रहे न वारु ड॒िठोसी.
५) अंदरि ब॒ाहिरि सूरत साग॒ी, क़समु रबु जबार,

कोझी ॿाझी कान रही पोइ, हुसन संदो सरदारु ॾिठोसी.

(4)

अथमि जे उमीदूं, पूरियूं शाल थींदमि,
कंदो महर मोला, पेही होतु ईंदमि,
१) वसे शाल वलिहीअ जो, ही वीरानु वेड़हो,
पंहिंजूं जायूं पाणही, वरी शल भरींदमु.
२) वेठी थी पुकारियां, लुॾे थो ही ॿेड़ो,
अची शाल हथिड़ा, ॾुखी वेल ॾींदमि.
३) हर्फु कोन होतनि, मॾहड़ि सारी मांॾे,
जेही तेही तिनि जी, छनियूं तां छॾींदमि.
४) हा बेवस वेचारी, हलो कोन चारो,
पाणही शाल नंगिड़ो, निधर जो पालींदमि.
५) कोझी थी न मांदी, पिरीं ॼाणु पुहिता,
सख़ी जिनि जो नालो, अॾियो से अॾींदमि.

(5)

ॿाझ भरिया ॿान्हीअ ते, मन भी का ॿाझ पवई,
शाल सदा शाही वसई.
१) सॾु न स्यापो साहियां, अज़लऊं गोलड़ी आहियां,
पांदु ॻिचीअ ॻल पायां, मन भी का कहलि पवई.
२) ॾोह कया थमु बारी, तोब्ह तो दरि ज़ारी,
नेण वहनि था जारी, मन भी को तरसु पवेई.
३) दर्दु हजर जो टारियो, वाॻु वसल जो वारियो,
ॻणितियुनि तुंहिंजियुनि ॻारियो, मन भी को रहमु पवेई.
४) शाल जवानी माणे, पेहु पिरीं तूं अॼु भाणी,
रोज़ पेई ॿाॾाए, मन भी का महिर पवई.
५) कोझी तोड़े कारी, लालन तुंहिंजे लारे,
साजन करि सरदारी, मन भी को क़यासु पवई.

(6)

वञी को यार मुंहिंजे खे, मुंहिंजो हालु पहुचाए,
आहे अहिड़ी का साहिड़ी, रुठो राणलु ॾे रीझाए.
१) दुखनि था दर्द ज़ा दूंहां, सड़े थो सोज़ में सीनो,

पुकारियो दिलि पुकारे थी, सजु़ण खे ड़ी को समझाए.
२) चकनि था चाक सीने में, फ़िराक़नि जे फटनि फाड़ियो,
न पियो को तरिसु पिरियुनि खे, सूरनि सां वियो ड़े सटकाए.
३) नाहे ऐतबारु यारी ते, हबाबनि जे अदी कोझी,
अजु़ तुंहिंजा सुभां ब्रिए जा, इहो पेशो संदनि आहे.
४) उहे हुयड़ो बि के ड्रींहड़ा, सड़े भर में विहारियूं थे,
उहा अजु़ वेल आई आ, छड़ियो थमु लाल लोधाए.
५) लंघे तुंहिंजा ड्रींहं वया कोझी, रक़ीबनि जो आयो वारो,
जीअणु हाणे अजायो आ, अल्लह शल मागि्र पहुचाए.

(7)

प्यालो पिरियुनि पियारो, मस्तानु छोन थींदसि,
जल्वो हुसन ड्रेखारियो, हैरानु छोन थींदसि.
१) घरि पेही घोटु आयो, जंहिं घूर सां घायो,
होशु अक़ुलु विञायो, दीवानु छोन थींदसि.
२) ड्रिसंदेई नींहुं लातुमि, चुमी इश्क़ु सिर ते चातुमि,
ज़ोक़ूं ज़नार पातुमि, सनिआं छोन थींदसि.
३) नैना खणी से क़हरी, खोड़ियो वियो तीरु जिगिरी,
ग़मज़नि फटी आ दिलड़ी, बेजानु छोन थींदसि.
४) ड्राढी इश्क़ आगि लाती, क़तिरो सड़ियो सिफ़ाती,
शैलो पसियो मूं ज़ाती, परवानु छोन थींदसि.
५) लाइक़ु न हुजे निमाणी, ही वड़ कयाऊं पाणही,
अहिड़े क़ुर्ब तूं मां जानी, क़ुर्बानु छोन थींदसि.
६) कोझीअ खंई सदाईं, ब्रांहप अलीअ जी जाई,
दमु दमु सख़ीअ गदाई, सुल्तानु छोन थींदसि.

(8)

अजु़ लंघींदे वाट वेंदा, घोटु घाईंदो वयो,
नाज़ सां नेणनि खे चोरे, नींहुं लाईंदो वयो.
१) दम अंदरि दिलड़ी लुटे वयो, कल न मुईअ खे का पेई,
मुंहुं ड्रेखारे ज़ल्फ़ ढारे, पेचु पाईंदो वयो.
२) चश्म ख़ूनीअ सां निहारे, जां में झोड़ी विधी,
तीरु खोड़े जां झोड़े, मुंहुं छुपाईंदो वयो.
३) कीअं करियां कंहिंखे चवां, हिन हाल जी मां गाल्हड़ी,

कोझी ब॒ाझी कान रही पोइ, हुसन संदो सरदारु ड॒िठोसी.

(4)

अथमि जे उमीदूं, पूरियूं शाल थींदमि,
कंदो महर मोला, पेही होतु ईंदमि,
१) वसे शाल वलिहीअ जो, ही वीरानु वेड़हो,
पंहिंजूं जायूं पाणही, वरी शल भरींदमु.
२) वेठी थी पुकारियां, लुड॒े थो ही ब॒ेड़ो,
अची शाल हथिड़ा, ड॒ुखी वेल ड॒ींदमि.
३) हर्फु कोन होतनि, मँहड़ि सारी मांड॒े,
जेही तेही तिनि जी, छनियूं तां छड॒ींदमि.
४) हा बेवस वेचारी, हलो कोन चारो,
पाणही शाल नंगिड़ो, निधर जो पालींदमि.
५) कोझी थी न मांदी, पिरीं ज॒ाणु पुहिता,
सख़ी जिनि जो नालो, अड॒ियो से अड॒ींदमि.

(5)

ब॒ाझ भरिया ब॒ान्हीअ ते, मन भी का ब॒ाझ पवई,
शाल सदा शाही वसई.
१) सड॒ु न स्यापो साहियां, अज़लऊं गोलड़ी आहियां,
पांदु ग॒िचीअ ग॒ल पायां, मन भी का कहलि पवई.
२) ड॒ोह कया थमु बारी, तोब्ह तो दरि ज़ारी,
नेण वहनि था जारी, मन भी को तरसु पवेई.
३) दर्दु हजर जो टारियो, वाग॒ु वसल जो वारियो,
ग॒णितियुनि तुंहिंजियुनि ग॒ारियो, मन भी को रहमु पवेई.
४) शाल जवानी माणे, पेहु पिरीं तूं अज॒ु भाणी,
रोज़ पेई ब॒ाड॒ाए, मन भी का महिर पवई.
५) कोझी तोड़े कारी, लालन तुंहिंजे लारे,
साजन करि सरदारी, मन भी को क़यासु पवई.

(6)

वञी को यार मुंहिंजे खे, मुंहिंजो हालु पहुचाए,
आहे अहिड़ी का साहिड़ी, रुठो राणलु ड॒े रीझाए.
१) दुखनि था दर्द ज़ा दूंहां, सड़े थो सोज़ में सीनो,

पुकारियो दिलि पुकारे थी, सज़ुण खे ड़ी को समझाए.
२) चकनि था चाक सीने में, फ़िराक़नि जे फटनि फाड़ियो,
न पियो को तरिसु पिरियुनि खे, सूरनि सां वियो ड़े सटकाए.
३) नाहे ऐतबारु यारी ते, हबाबनि जे अदी कोझी,
अज़ु तुंहिंजा सुभां ब्रिए जा, इहो पेशो संदनि आहे.
४) उहे हुयड़ो बि के ड्रींहड़ा, सड़े भर में विहारियूं थे,
उहा अज़ु वेल आई आ, छड्डियो थमु लाल लोधाए.
५) लंघे तुंहिंजा ड्रींहं वया कोझी, रक़ीबनि जो आयो वारो,
जीअणु हाणे अजायो आ, अल्लह शल मागि़ पहुचाए.

## (7)

प्यालो पिरियुनि पियारो, मस्तानु छोन थींदसि,
जल्वो हुसन ड्रेखारियो, हैरानु छोन थींदसि.
१) घरि पेही घोटु आयो, जंहिं घूर सां घायो,
होशु अक़ुलु विञायो, दीवानु छोन थींदसि.
२) ड्रिसंदेई नींहुं लातुमि, चुमी इश्क़ु सिर ते चातुमि,
ज़ोक़ूं ज़नार पातुमि, सनिआं छोन थींदसि.
३) नैना खणी से क़हरी, खोड़ियो वियो तीरु जिगिरी,
ग़मज़नि फटी आ दिलड़ी, बेजानु छोन थींदसि.
४) ड्राढी इश्क़ आगि लाती, क़तिरो सड़ियो सिफ़ाती,
शैलो पसियो मूं ज़ाती, परवानु छोन थींदसि.
५) लाइक़ु न हुजे निमाणी, ही वड़ कयाऊं पाणही,
अहिड़े क़ुर्ब तूं मां जानी, क़ुर्बानु छोन थींदसि.
६) कोझीअ खंई सदाईं, ब्रांहप अलीअ जी जाई,
दमु दमु सख़ीअ गदाई, सुल्तानु छोन थींदसि.

## (8)

अज़ु लंघींदे वाट वेंदा, घोटु घाईंदो वयो,
नाज़ सां नेणनि खे चोरे, नींहुं लाईंदो वयो.
१) दम अंदरि दिलड़ी लुटे वयो, कल न मुईअ खे का पेई,
मुंहुं ड्रेखारे ज़ल्फ़ ढारे, पेचु पाईंदो वयो.
२) चश्म ख़ूनीअ सां निहारे, जां में झोड़ी विधी,
तीरु खोड़े जां झोड़े, मुंहुं छुपाईंदो वयो.
३) कीअं करियां कंहिंखे चवां, हिन हाल जी मां गाल्हड़ी,

कातु हणंदो ख़ूनु पीइंदो, मासु खाईंदो वयो.
४) उथु ड़ी कोझी करि तैयारी, सिर लड़े हिन यार सां,
आश्क़नि जे सिर वढण जा, ठाह ठाहींदो वयो.

(9)

का कंहिंजी का कंहिंजी, मां तुंहिंजी ख़ुलासी,
सजुण ब्रियो न घुरिजे, मां तुंहिंजी प्यासी.
१) अज़ल खूं अजीबां, लधमि ख़ान लावां,
मतां घोट टोड़ीं, इहा प्रीति ख़ासी.
२) असलु जूं अव्हां सां, बुधल यार ब्रोलां,
हाणे छो हिजर सां, करीं थो उदासी.
३) जहीं रीति रीझीं, राणल राज़ु ड्रे सो,
तुंहिंजे काणि थी हां, मां जोगिणि संयासी.
४) सजुण नेठि लहिवां, आदम खोंई पवंदियूं,
ढकण हार तूं ही, मां इन्सानु आज़ी.
५) नाहे होत वाजिबु, निमाणनि सां माणो,
तूं सुहिणो शहंशाहु, मां कोझी मेरासी.

(10)

आसरोंदड़ी आहियां सरितियूं, होतु अची हिकु थींदा,
ड्रेह मुबारक ड्रींदा, होत अची हिकु थींदा.
१) ब्रंधणनि जी आऊं ब्रान्ही आहियां, ब्रान्ही शाल सड्रींदा,
शानु पिरुयुनि जो नाहु विसारणु, गोलिणि खे बि गड्रींदा.
२) लख हज़ारें होत निवाज़नि, हिकड़ी कीन छड्रींदा,
मर्कु जिनीं जो आह सख़ावत, अड्रियो सेई अड्रींदा.
३) ऐब मदायूं मूं में घणेरियूं, पाणऊं कुर्ब वंडींदा,
नंगड़ो नेठि नंगीअ ते आहे, ढकड़ो शाल ढकींदा.
४) सालनि खूं आऊं साइल आहियां, ख़ाली कीन छड्रींदा,
वेठड़ी आहियां वाट वंदुर में, होत अची हथु ड्रींदा.
५) दर त सजुण जे स्वालणि कोझी, मिंथूं शाल मञींदा,
लहिरियुनि विच में कीन छड्रींदा, नेठि किनारे नींदा.

## (11)

आहे मूं त ग़रीब जो, नंगु मथे नंग पाल यार.
१) जहिड़ी तहिड़ी यार जी, लज़ मथे लज़पाल यार.
२) मैलूम सारो होत खे, हीणीअ संदिड़ो हाल यार.
३) घुरिज चवण जी कानका, आगहि कुलु अहिवाल यार.
४) शाहु क़बूलण क़ुर्बदार, जग संदो जगपाल यार.
५) कोझ़ी छड़ींदुमि कीनकी, नींदो निमाणी नाल यार.
लज़ ढकींदुमि लाल यार.

## (12)

आऊ त जेही तेही पंहिंजे यार जी, मूंसां नाहि कंहिंजो वास्तो.
१) लालु मुंहिंजो आऊ लाल जी आहियां, लाल बिना ब्रे कंहिंजड़ी नाहियां,
आऊ त ब्रान्ही ब्रारूचल यार जी, मूंसां नाहि कंहिंजो वास्तो.
२) ऐब मंदायूं मूं में घणेरियूं, ढोल ढकींदुमि से त साहिड़ियूं,
आऊ त नाहियां अदियूं कंहिं कार जी, मूंसां नाहि कंहिंजो वास्तो.
३) ख़ासि ख़ुलासी ढोल जी आहियां, ढोल जे मटि ब्रिए खे न भांयां,
मूंखे टेक क़बूलण यार जी, मूंसां नाहि कंहिंजो वास्तो.
४) शाह दराज़ी जेका काहे, नंगु विझी नंगपाल ते लाहे,
तंहिं खे काण न ब्रिए कंहिं पार जी, मूंसां नाहि कंहिंजो वास्तो.
५) कोझ़ी आहियां तोड़ी कारी, यार सुहणल जी आहियां सारी,
आऊं त साम सख़ीअ सरदार जी, मूंसां नाहि कंहिंजो वास्तो.

## (13)

वञी ड्रे तूं कांगल, निमाणीअ जो न्यापो,
सज़ण बिना मुश्किल जड्डीअ जो ज्यापो.
१) हिते मां मरां थी, हुते सार कान्हे,
जिगरु फाड़े ड्रिजु तूं, ड्रुखीअ जो ड्रोरापो, वञी ड्रे ...
२) जड्डीअ साणु जीअरे, अची होत हिकु थी,
मरण बैदि सुहणा, कहिड़ो आ मेलापो, वञी ड्रे ...
३) कयल क़ौल पंहिंजा, कड्डहिं तूं पाड़ींदें,
लंघे वेई जवानी, अची वयो ब्रुढापो, वञी ड्रे ...

४) प्रीतऊं जा पालयइ, ड्डुखनि में सा ड्डाढी,
वञी सुखु सुम्हएं तूं, लाहे लग्गु लाग्गापो, वञी ड्डे ...

५) सज्जणु मुंहिंजो सुहिणो, आऊ कोड्डी सज्जण जी,
हुजत ब्बी न काई, नको सङ सियाको, वञी ड्डे ...

(14)

भेरो कीअं मां भञां, क़ौल कया हमु कांध सां.

१) वाइदा ब्बुधा हमि वर सां वेही, यादि अथमु से अञां.
२) मुहब जूं मुहरां लखें करोड़ें, कहिड़ियूं मञी कहिड़ियूं मञां.
३) नींहं जो नातो तोड़ निभाईंदसि कोड्डी अग्गिते, पेरु न पुठिते वञां.

भेरा कीअं मां भञां ....

(15)

जीअरे लाहि ज़जीर, मुए पुज्जाणां केरु थो ज्जाणे.

१) टोड़ि हिजाबु हयातीअ अंदरि, अथमु ईहा उकीर.
२) साल घणेरा थिया तकींदा, लाहि फ़िराक़ फ़क़ीर.
३) वेसहु कोन्हे यार! वहीअ ते, हाणे अची मिलु मीर.
४) को त ज़मानो बोते अंदरि, करि आज़ादि सीर.
५) मरण में महणो नाहि प्यारा, भूं तूं मारि अमीर.
६) वेल पछाड़ी कहिड़ो मेलो, वसुलु अग्गे ड्डे वीर.
७) नाहि लखियो जे लोह क़लम में, फेर खणी तक़दीर.
८) कोड्डी जो आ अर्ज़ु इहोई, मञ्जु क़बूलण मीर.

जीअरे लाहि ...

(१४४ कल्याण)

आली मैं ड्डेवां लालनि को लोली,
लोली लोली, आहियां ब्बान्ही तुंहिंजी गोली.

१) दासन तेड्डनि की दासण हूं मैं, गोलन संदड़ी गोली.
२) तन मन मस्तु करि गया मोहन, मधुरु मधुरु कर ब्बोली.
३) इक दम दर्शन दे प्यार सदिक़े, करूं जिंद घोली.
४) कल्याण लाज ब्रिज की राखो, पकिड़ी मैं तेड्डी झोली.

## (१४५ किशू)

हीअ दिलड़ी निमाणी थी सारे,
आउ रे मोहन असांजे वेड़हे.

१) घणो तोखे सारे, पूरब मंझि पछारे.
२) आणियो आबु अखियुनि में, वेठी ग॒ोड़हा ग॒ाड़े.
३) पायो मूंहु मोननि में, वेठी वाटूं निहारे.
४) वारिज वाग॒ विसाल जो, किश् सख़नि पारे.

## (१४६ करीम ड॒िनो)

कुर्बू पंहिंजे यार सियाणा, ख़ासो ड॒े को ख़ियालु,
वो महाही यार.

१) सिकंदे सिकंदे तुंहिंजे दर ते, ग॒चु लंघे वया साल.
२) चरख़ो चोरे मूं न ज॒ाणां, कोन्हे मुईअ जो हाल.
३) तोरीअ साईं केरु पुछे थो, लहंदो केरु संभाल?
४) जुग॒ु जुग॒ु जीवें सुहिणल साईं, विंगो हुजेई न वाल.
५) पाड़िजि पंहिंजा करीम ड॒िन सां, क़ौल कया जे काल.

## (2)

लालन तुंहिंजे लारि लग॒ी आहियां, लग॒ी आहियां मां त तग॒ी आहियां.

१) वेंदसि पारि पुन्हल ड॒े, मां वेंदसि पारि पुन्हल ड॒े,
शहर भंभोर खां भग॒ी आहियां - लालन तुंहिंजे ....
२) पेर फुटिसी फाकूं जो थीअड़ा, पेर फटिसी फाकूं जो थीअड़ा,
जबलनि मंझि मां झग॒ी आहियां - लालन तुंहिंजे ....
३) दांहूं कंदे मुंहिंजो साहु वयड़ो, आंहूं कंदे मुंहिंजो साहु वयड़ो,
वणनि मंझि मां त वग॒ी आहियां - लालन तुंहिंजे ....
४) ब॒ान्हीं क़बूलण यार जी, ब॒ान्हीं सख़ी सरदार जी,
करीम ड॒िन मां त सग॒ी आहियां - लालन तुंहिंजे ....

## (१४७ कुंदन)

अथमि यार तुंहिंजी तलब तार तन में,
सदा थो संभालियां मिठा तोखे मन में.

१) जुदा थीएं जड़ हांको तलब थियमि तड़हांको,
ख़ोराकूं पोशाकूं रहां थो ग़मनि में.
२) जानिब कयो जगि़यासी सदाईं सन्यासी,
बेराग़ी उदासी रहां यार बन में.
३) करियां अंदरि आहूं मंझा दर्द दांहूं,
ड्रसियो अंदराहूं जोटों ड्रियां झंगनि में.
४) बिना तुंहिंजे बिल्कुलु अचे कीन तहमल,
गुज़ारे वया कल सुञे शहर सुन में.
५) रुठा छो रसाणा मिठा करि न माणा,
समुझु यार सयाणा क़ुर्ब धरि कुंदन में.

## (१४८ केवल)

सरितियूं सामीइड़ा करे वया त छोरी,
लातुमि नींहुं अजायो भेनरु थियसि मां भोरी.
१) ड्रई दिलि तिनि खे वेठसि पाणु फासाए,
हले वसु न मुंहिंजो नका हले थी ज़ोरी.
२) सन्ही तार सिक जी कची तंदु आहे,
हलायां हुजत खे टुटे थी त ड्रोरी.
३) करियां कीअं भेनरु हले वसु न मुंहिंजो,
नातो कीअं निभायां अथमि ग़ाल्हि ग़ौरी.

## (2)

मुंहिंजो हालु हीणो जोगि़युनि बनायो, खसे वया दिलड़ी मुंहिंजो चितड़ो चोरायो.
१) दिलड़ी खसे वया मनड़ो खसे वया, ड्रई सूर सरितियूं ग़म में गड्रे वया,
कंदसि कीअं हाणे सूरनि आ सतायो.
२) इहो हाल जेड्रियूं कंहिं सां ओरियां, सांगियुनि लाइ थी ड्रूंगर ड्रोरियां,
बर में छड्रे वया रिण में रुलायो.
३) उमीदूं थी भांयां वरी शाल ईंदा, करे ब्राझ पंहिंजी दुखिड़ा कटींदा,
कंदा महिर मुईअ ते थींदुमि लायो सजायो.

४) केवल क़्यासु पवंदुनि अची ड्रात ड्रींदा, गोली खे गड्रींदा, छिनी न छड्रींदा,
बदियूं सभु बख़्शायां ग्रिचीअ पांदु पाए.

## (१४९ कंवराम भग्रत)

ज्ञान गुरु ग्रंथ जो सुणे, तूं जीअ अंदरि जोती जग्राइ,
सिक सज्रण जी तार तन में, वक़्तु वेही ना विञाइ.
१) कर्म जी कोड्रर खणी, खोलि दिलि ऐं मन मड़ही,
तंहं मुड़हीअ में मनु मिठो, लिंव सची तंहिं सां लग्राइ.
२) कर्म भग्रतीअ ज्ञान जो, उति वहे दरियाह थो,
तौकल संदो तरहो ब्रधी, हलु हलेमी हथु हलाइ.
३) कर्म करि निष्कामु थी, पोइ सचो सुखधामु थी,
अनुभव संदे उस्ताद वटि, जे झले पसु जा बजाइ.
४) पिरीं पसिजि कंवर पाण में, सिरु वढे सटि काण में,
हू त तोरींदड़ु तिखो, हुजत तंहिं सां ना हलाइ.

## (१५० केहर)

१) कड्रहिं आश्क़, कड्रहिं माशूक़, कड्रहिं ख़ुशी ऐं ख़्याल ड्रिसां थो.
२) कड्रहिं महबूब, कड्रहिं मज्लसि, कड्रहिं कुल्फ़त काल ड्रिसां थो.
३) कड्रहिं बादशाह, कड्रहिं वज़ीर, कड्रहिं तंबू तंबेला ताल ड्रिसां थो.
४) कड्रहिं घोटु, कड्रहिं कुंवारि, कड्रहिं वाप्सी विसाल ड्रिसां थो.
५) कड्रहिं दुनिया, कड्रहिं दौलत, कड्रहिं मतलब वरी माल ड्रिसां थो.
६) कड्रहिं कचहड़ी, कड्रहिं हिकिड़ो, कड्रहिं हीणो वरी हालु ड्रिसां थो.
७) कड्रहिं गदाई, कड्रहिं ग़रीबत, कड्रहिं सूर ऐं स्वाल ड्रिसां थो.
८) केहर पंहिंजे क़रीब जा, पलि पलि पूर पसां थो.

## (१५१ कमाल)

आयो बिरह जिनि ते बरसी - मारिया मैदान में,
मूतूं मांझी मरी वया - जीअरे जहान में.
१) इश्क़ ड्रिसु इमाम खे - चाड़िहियाऊं निशान में,

मन्सूर सूलीअ चड़िहियो - जुज़बे जौलान में.

२) मजने जहिड़ा मुंसफ़ - बीठा बड़बान में,
लखें लीलीअं जहिड़ियूं लाड़िलियूं - हरिदमु ध्यान में.

३) यूसफु विकाणो बाज़ार - बिर्दे ब्यान में,
पुन्हल छीटूं छरियूं - धोब्रियुनि दुकान में.

४) फ़रहाद ड़ूंगर ड़ारिया - शींरीं जी शान में,
सैफ़ल सिरु फ़िदा कयो - बदीअल ब्यान में.

५) रांझन घुरुनि घायो - पिंबिणियुनि पैग़ाम में,
भरे हीर हंयुसि तीरु - कशे कमान में.

६) कमाल कठा केतिरा - चले चौग़ान में,
लखें लाड़िला लताड़िया - हिन ला मकान में.

## (१५२ कृष्ण गर)

कर माफ़ी राम माफ़ी - मूं में ड्रोह अची पया अथेई.

१) हे निमाणो ऐबनि हाणो, तंहिं सां करि न सत्गुरु माणो,
खोलि अंदर जी ताकी.

२) तुंहिंजे दर जी ब्रान्ही गोली, अवलीअ मां अची करि का सवली,
तुंहिंजे चरननि जी आहियां मां दासी.

३) कड़हिं सत्गुर मूं वटि ईंदें, दया करे पंहिंजो दर्शनु ड़ींदें,
तुंहिंजे दर्शन जी आहियां प्यासी.

४) तूं ई स्वामी आहीं दयालू, कृपा करीं तूं राम कृपालू,
हे ईश्वर अबिनासी - करि माफ़ी .....

५) कृष्ण गर जो अर्जु अघाइजि, पंहिंजो पाण सां पाण मिलाइजि,
पाटिजि जम जी फासी - करि माफ़ी .....

## (१५३ कमल प्यासी )

ब्रेड़ी पारि उतारि - लालण, तूं मुंहिंजो आधारु झूलण.

१) तूं दूलह दरिया जो साईं, हरिकंहिं लाइ सहारो आहीं,
लहिजांइ सार संभार लालण, तूं मुंहिंजो आधारु झूलण....
२) तोखे केड़ो थो ब़ाड़ायां, लाल उड़ेरा तो दरि आहियां,
तूं क़ादुरु करितारु लालण, तूं मुंहिंजो आधारु झूलण.....
३) महर खपे थी दमि दमि, ब़ाझ कंदें ब़ाझारा हरदमु,
जग़ जा पालण हारा लालण, तूं मुंहिंजो आधारु झूलण....
४) जुग़ु जुग़ु तुंहिंजी जोति जले, जुग़ु जुग़ु तुंहिंजी जोति जले,
वाऊ बि तुंहिंजीअ वाट हले, तूं ई तारण हारि लालण.
तूं मुंहिंजो आधारु झूलण ...

## (१५४ लक्ष्मण कोमल)

## झूलेलाल जो गीतु

ब़ेड़ो पारि उकारण आयो आहीं, मुंहिंजा साएं,
झूले लाल, तूं सभिनी जी हरिदमि आसि पुज़ाएं.
झूले लाल साईं.

१) वरिहियनि खां जे विछिड़िया, तिनि खे वरी मिलाइण आईं,
हिनि धरतीअ तां लाल उड़ेरा, पाप मिटाइण आईं,
तुंहिंजे दर तां ख़ाली कोई मोटियो कोन सुवाली,
सभिनी जी तू लालण मुंहिंजा सदा कई रखवाली,
तुंहिंजीअ महर मया सां जग़ में आहि उजालो साईं,
झूले लालण, तूं सभिनी जी हरिदमि आस पुज़ाईं.
२) देसु छड़े परिदेसि अची जिनि ठाहिया पंहिंजा देरा,
मटिजी विया जिनि मारूइड़नि जा धरतीअ तां ई पेरा,
तोई आस असां में आहि उभारी अज़ु जीअण जी,
सघ ड़िनी तू साईं सभ खे हर दुख दर्द सहण जी,
तूं ई भाग़ु संवारीं सभ जो, तूं ई क़िस्मत ठाहीं,
झूले लालण, तूं सभिनी जी हरिदमि आस पुज़ाईं.
३) वयो वसीलो हिकिड़ो जे, तो खोलियूं केई राहूं,
बंदि थियो जे हिकु दरवाज़ो, अग़िते वधियूं निगाहूं,

मन्सूर सूलीअ चड़िहियो - जुज़बे जौलान में.

२) मजने जहिड़ा मुंसफ़ - बीठा बड़बान में,
लखें लीलीअ जहिड़ियूं लाड़िलियूं - हरिदमु ध्यान में.

३) यूसफु विकाणो बाज़ार - बिर्दे ब्यान में,
पुन्हल छीटूं छरियूं - धोब्रियुनि दुकान में.

४) फ़रहाद डूंगर ड्रारिया - शींरीं जी शान में,
सैफ़ल सिरु फ़िदा कयो - बदीअल ब्यान में.

५) रांझन घुरुनि घायो - पिंबिणियुनि पैग़ाम में,
भरे हीर हंयुसि तीरु - कशे कमान में.

६) कमाल कठा केतिरा - चले चौग़ान में,
लखें लाड़िला लताड़िया - हिन ला मकान में.

## (१५२ कृष्ण गर)

कर माफ़ी राम माफ़ी - मूं में ड्रोह अची पया अथेई.

१) हे निमाणो ऐबनि हाणो, तंहिं सां करि न सत्गुरु माणो,
खोलि अंदर जी ताकी.

२) तुंहिंजे दर जी ब्रान्ही गोली, अवलीअ मां अची करि का सवली,
तुंहिंजे चरननि जी आहियां मां दासी.

३) कड़हिं सत्गुर मूं वटि ईंदें, दया करे पंहिंजो दर्शनु ड्रींदें,
तुंहिंजे दर्शन जी आहियां प्यासी.

४) तूं ई स्वामी आहीं दयालू, कृपा करीं तूं राम कृपालू,
हे ईश्वर अबिनासी - करि माफ़ी .....

५) कृष्ण गर जो अर्ज़ु अघाइजि, पंहिंजो पाण सां पाण मिलाइजि,
पाटिजि जम जी फासी - करि माफ़ी .....

## (१५३ कमल प्यासी )

बेड़ी पारि उतारि - लालण, तूं मुंहिंजो आधारु झूलण.

१) तूं दूलह दरिया जो साईं, हरिकंहिं लाइ सहारो आहीं,
लहिजांइ सार संभार लालण, तूं मुंहिंजो आधारु झूलण....

२) तोखे केड्डो थो ब्राड्डायां, लाल उड्डेरा तो दरि आहियां,
तूं क़ादुरु करितारु लालण, तूं मुंहिंजो आधारु झूलण.....

३) महर खपे थी दमि दमि, ब्राझ कंदें ब्राझारा हरदमु,
जग्ग जा पालण हारा लालण, तूं मुंहिंजो आधारु झूलण....

४) जुग्गु जुग्गु तुंहिंजी जोति जले, जुग्गु जुग्गु तुंहिंजी जोति जले,
वाऊ बि तुंहिंजीअ वाट हले, तूं ई तारण हारि लालण.
तूं मुंहिंजो आधारु झूलण ...

## (१५४ लक्ष्मण कोमल)

### झूलेलाल जो गीतु

ब्रेड़ो पारि उकारण आयो आहीं, मुंहिंजा साएं,
झूले लाल, तूं सभिनी जी हरिदमि आसि पुज्राए.
झूले लाल साई.

१) वरिहियनि खां जे विछिड़िया, तिनि खे वरी मिलाइण आईं,
हिनि धरतीअ तां लाल उड्डेरा, पाप मिटाइण आईं,
तुंहिंजे दर तां ख़ाली कोई मोटियो कोन सुवाली,
सभिनी जी तू लालण मुंहिंजा सदा कई रखवाली,
तुंहिंजीअ महर मया सां जग्ग में आहि उजालो साईं,
झूले लालण, तूं सभिनी जी हरिदमि आस पुज्राईं.

२) देसु छड्डे परिदेसि अची जिनि ठाहिया पंहिंजा देरा,
मटिजी विया जिनि मारूइड़नि जा धरतीअ तां ई पेरा,
तोई आस असां में आहि उभारी अज्जु जीअण जी,
सघ ड्डिनी तू साईं सभ खे हर दुख दर्द सहण जी,
तूं ई भाग्गु संवारीं सभ जो, तूं ई क़िस्मत ठाहीं,
झूले लालण, तूं सभिनी जी हरिदमि आस पुज्राईं.

३) वयो वसीलो हिकिड़ो जे, तो खोलियूं केई राहूं,
बंदि थियो जे हिकु दरवाज़ो, अग्गिते वधियूं निगाहूं,

तूं ई थंबो, तूं ई थूणी, तूं ई रहिबरु आहीं,
तूं ई लाल उडे॒रा सभ खे दग॒ नएं ते लाईं,
आहि रज़ा में राज़ी तुंहिंजे हरिको सिंधी साईं,
झूले लालण, तूं सभिनी जी हरिदमि आस पुज॒ाईं.

४) डी॒ए सां जीअं घर जो गहिरो दूरि अंधेरो थिए थो,
तुंहिंजे दर्शन सां तीअं लालण मनु रोशन बणिजे थो,
तुंहिंजो ई डे॒खारियलु ड॒सु आ हरिकंहिं सही सुञातो,
घाटे झंगल में जीअं भिटिकयल राहीअ रस्तो पातो,
तूं ई पंहिंजीअ महर मया जा सभ ते मींहं वसाईं,
झूले लालण, तूं सभिनी जी हरिदमु आस पुज॒ाईं.
झूले लालण साईं.

## (2)

१) धरती आ - आस्मानु आ - मस्ती आ - दिलि जवान आ,
ग़मगीन छो तूं थीं थो? छा लाइ दुख सहीं थो?
दुनिया में ऐश जो ई - रंगीनु दास्तानु आ,
धरती आ - आस्मानु आ - मस्ती आ - दिलि जवान आ.

२) ख़ुशबू रचे हवा में, जादू भरियलु फ़िज़ा में,
दुनिया जा ही नज़ारा, तोसां ई हलंदा प्यारा,
ग़मगीन छो तूं थीं थो? छा लाइ दुख सहीं थो?
दुनिया में ऐश जो ई - रंगीनु दास्तानु आ,
धरती आ - आस्मानु आ - मस्ती आ - दिलि जवान आ.

३) हिकिड़ी ई ज़िंदगी आ, मोटी वरी न ईंदी,
अहिड़ी हसीन हयाती, ब॒ीहर मिली न सघंदी,
ग़मगीन छो तूं थीं थो? छा लाइ दुख सहीं थो?
दुनिया में ऐश जो ई - रंगीनु दास्तानु आ,
धरती आ - आस्मानु आ - मस्ती आ - दिलि जवान आ.

४) माणे मज़ा हलियो हलु, दुनिया जले जलणु डे॒,
दिलि खे न रोकि दिलिबर, जेड॒ांहुं हले हलणु डे॒,
जग॒ में जीअण लइ आएं, खाइणु पीअणु लाइ आएं,

ग़मगीन छो तूं थीं थो? छा लाइ दुख सहीं थो?
दुनिया में ऐश जो ई - रंगीनु दास्तानु आ,
धरती आ - आस्मानु आ - मस्ती आ - दिलि जवान आ.

## (ख)

## (१५५ खीयल)

असीं मोहन में मोहनु असां में, बुधु मोहन जूं बातियूं सारियूं रातियूं.
१) श्याम सुंदर अहिड़ो सुहिणो आहे, सिज चंड जी जिते जाइ बि नाहे,
पाइ अंदर में झातियूं, सारियूं रातियूं.
२) हृदे में थो हुलु हलाए, मौज मनोहर मुर्ली वजाए,
लालु लखें करे लातियूं, सारियूं रातियूं.
३) रग रग में थो रासि रचाए, शब्द सुरनि जी धुन लगाए,
छमि छमि कनि थियूं छातियूं, सारियूं रातियूं.
४) खीयल खेल खेले खिलारी, माधव मोहन कृष्नु मुरारी,
ड्राण ड्रिए पियो ड्रातियूं, सारियूं रातियूं.

## (2)

रांझन यार रीझाइण केते, सौ सौ वेस करींदे हां.
१) कुड्रां त गेड़ू अल्फ़ी पाकर, भस्मी बुत मिलंदी हां.
२) कुड्रां त सुरंदा सोज़ां वाला, चाह मंझूं त वज़ींदी हां.
३) कुड्रां त नेणनि नीरु वहावां, रो रो पलव पुसींदी हां.
४) कुड्रां त सुरमा सींध चिटांवां, मेंदी मश्कु मलींदी हां.
५) कुड्रां त घुघुरूं पेरे पाकर, नाचूं बनकर नचींदी हां.
६) कुड्रां त खीयल ख़्याल इहें विच, गीत अनाअलहक़ ग़ींदी हां.

## (3)

चरी चोरि चरख़ो घोरे छड्रि घुमण खे,
जुंबी वञु जेड्रिनि सां ऐट कुतण खे.
१) अग्रियां पंधु बारी थधी कोसी वारी,
समरु कोन तोखे नकी कयइ का तयारी,

निंढ थी निभाग़ी, साड़े छड्डि सुमहण खे, चरी चोरि .....
२) समुंड सीर सख़ितियूं कुननि जा थी कड़िका,
1
कश्ती बान करिड़ा ड्डियनि दोस्त दड़िका,
कतियइ कान कौणी ड्डींदे छा पतण खे, चरी चोरि .....
३) सन्हो जिनि कुते सुटु खंयो आहे सरितियूं,
समरु साणि तिनि सां वञनि जे था वरितियूं,
तिन्हीं खे लोड्डो लहर मुहब जे मिलण खे, चरी चोरि .....
४) खीयल वेल असुर जी जिनीं ऐट ओरिया,
सिक त संदा वेही सग़ा जिनीं सोरिया,
पहुता सेई पारि वञी मिलिया सज़ुण खे, चरी चोरि .....

## (4)

इश्कु पिया ब्रोले यारों यारु, बे सिर सूफ़ी बे इख़्तियार.
१) सूफ़ी खे थी रंगु सदाईं, परवाना त पतंग सदाईं,
मौज़ इनहीअ में मस्तु ख़ुमार - इश्कु पिया .....
२) सूफ़ी सोई साफु सदाईं, लाग़ा तिनि तां माफु सदाईं,
नका ब्रनी न का ब्रार - इश्कु पिया .....
३) अवलि इश्क़ ज़लख़ा ज़ाता, ख़्वाब यूसफ नूं झोली पाता,
दरि दरि रोअंदा ज़ारों ज़ार - इश्कु पिया .....
४) ड्डूजा इश्क़ त मजने कीता, पुरु करि प्याला असलऊं पीता,
रातियूं ड्डींहां लील पुकारि - इश्कु पिया .....
५) टीजा इश्क़ त हीर कमाई, शाह रांझे नूं बीन वज़ाई,
नदियां लंघंदे तारूं तारि - इश्कु पिया .....
६) चौथा इश्क़ त ससुई वाली, पुन्हल ख़ातिरि जबलें जाली,
पेरें प्यादी थी लाचारि - इश्कु पिया .....
७) ताजल आखे सिक खीयल दा, तालिब ही तकरार सचल दा,
मीरपुर दे विच गुल बहार - इश्कु पिया .....

## (5)

थीउ न तालिब तकिड़ो अदा, मतां तिर मथां तिरिकी पवीं,
ही दौरु दुनिया जो ड्डिसी, मतां हरस में हिरखी पवीं.

१) मखि विहे माखी उते, जीएं ही सजो संसारु आहि,
ईअं समझ रखु सियाणो थिजाइं, मतां लार में लुड़ी पवीं.
२) जे ठाहिया तो बाग़ बंगला, कमि न ईंदइ से कड़हिं,
कर ग़रीबीअ में गुज़रु, मतां ढव डि्सी ढुरकी पवीं.
३) आम जी सुहबत छडे, गोशी गुफा में रहु सदा,
करि जिकिरु ज़ाती भला, मन क़ुर्ब में कुड़की पवीं.
४) जे न गोशी में रहीं तां, प्रेम वारनि सां पचाए,
मन तिनीं मुहबत मंझारूं, ज़ुर लग़ेई ज़ुरिकी पवीं.
५) वाहद हू अल्लह हू, जो सैरु करि खीयल सहे,
सिक सचीअ सां रहु तूं, शाग़िल मनु मुहब अग़ियां मुरकी पवीं.

## (6)

मन्सूरी मैदान में काहे, आशिक़ अची ओक़ाती यार.
१) हस्ती होड़ दुई पे दमि दमि, रिंद हणनि था रवाती यार,
मन्सूरी मैदान में काहे ....
२) नींहं विचूं थी नांगा निसंगी, माणिनि मौज़ मवाती यार,
मन्सूरी मैदान में काहे ....
३) सुरति रखी था सूरत सुञाणनि, जुहिदूं पाइनि झाती यार,
मन्सूरी मैदान में काहे ....
४) खीयल जो शौक़ जोशु जग़ाइनि, ज़ौंक़ रखनि था ज़ाती यार,
मन्सूरी मैदान में काहे ....

## (7)

मुंहिंजी रहिजी अचे पंहिंजनि प्यारनि सां,
उनहनि दर्दवंदनि दिलिवारनि सां.

1

१) जेके रातियूं ड्रींहां डि्सी, रिंद रड़नि,
पंहिंजे प्यारनि लाइ मुंझी सूर सड़नि,
नकी बिरह बिना ब्री का बात करनि,
अहिड़नि मुहब मिठनि मन्ठारनि सां, मुंहिंजी रहजी अचे.
२) जिनि जीअ मालिक सां जोड़े छडि्या,
ब्रिया दौर दुनिया ई घोरे छडि्या,

उन नंग नामूस सभु टोड़े छड्रिया,
अहिड़नि बांकनि बेपरवाहनि सां, मुंहिंजी रहजी अचे.

३) जेके मुहिब मथां मस्ताना बणी,
वेठा सिरु ड्रियण लाइ परवाना बणी,
कया दर्द उहे त दीवाना हणी,
अहिड़िनि सिक वारनि सरदारनि सां, मुंहिंजी रहजी अचे.
1

४) खीयल ख़्याल संदी जिनि खिड़की खोली,
ब्रोलिनि मुहब बिनि ब्री का न ब्रोली,
आहियां तिनि जे ग़ुलामनि जी बि गोली,
अहिड़े वहदत जे वणजारनि सां, मुंहिंजी रहजी अचे.

## (१५६ खिम्यादास)

पेर भरे जे ईंदें सत्गुर द्वारे, दरब्रार वारा कंदुइ भलो ...

१) सुवाली बणिजी अचु दातार दर, तुंहिंजी सत्गुरु आस पुज्राईंदो,
दुख दुनिया जा दूरि करे, तोखे रहिबरु राह रसाईंदो,
श्रधा सां जे तूं ईंदे सत्गुर द्वारे - दरब्रार वारो ....

२) भरियल आहिनि भंडारा गुरनि जा, कोन वयो हितिड़ां खाली,
जंहिं ते राज़ु थिए सत्गुर जो, अखंड ड्रे तंहिं खे माली,
अहिड़े दाता जे दर खे, छड्रि न विसारे - दरब्रार वारो ....

३) पीर फ़क़ीर बि तंहिंजे दर ते, पंहिंजो सीसु झुकाइनि था,
दुआ वठण दाता जे दर जे, रोज़ पिया ब्राड्राइनि था,
खिम्यादास तूं बि अचिजइं सीसु झुकाए-दरबार वारो ....

## (ग)

## (१५७ गुल)

मुहबत बिना ग़ोलण ख़ुदा, आहे अबसु आहे अबसु,
मुहबत छड्रे थियणु जुदा, आहे अबसु आहे अबसु.

१) ड्रुख खां थो हासिलु सुखु थिए, रे ड्रुख कहिड़ो मूंहं मख थिए,

हासुलु जफ़ा धारां शफ़ा - आहे अबसु .....

२) धारां लुछण खामण पचण, हजु़ण झोरीअ झिजु़ण,
महबूब वटि का इल्तिजा - आहे अबसु .....

३) मुहबत वटण पड़हीं कना, मस्लहत पुछणु चरियनि कुना,
ब़ारणु डी़यो अंधनि अगि़यां - आहे अबसु .....

४) पाणी पुछाइणु रुञ में, सांगी डु़साइणु सुञ में,
रीअ मींहं सांवण जे बिना - आहे अबसु .....

५) जंहिंजे सुख़नि खे नाहि सचु, वाइदा करे जे क़ौल ग़चु,
फूलण वफ़ा कूड़नि कना - आहे अबसु .....

६) गुल थी फ़ना ता आब थिएं, ख़ूशबू ऐं रंग व ताब थीएं,
मरण बिना माणणु लक़ा - आहे अबसु .....

## (2)

करि ख़ुदा खे यादि, वठु दिलि! हीअ सची सुहणी सलाह.
यादि में थिए शादि, वठु दिलि! हीअ सची सुहणी सलाह.

१) ब़धु ब़ुई ब़ांहूं अगि़यां साईंअ जे मंझि संझे सुबह
तार सीं तूं दाद, वठु दिलि! हीअ सची ....

२) थी जबलु तोक़फ़ि जो, कख पन जींअ मंझि वाच झकि,
वजु़ में तूं बर्बाद, वठु दिलि! हीअ सची ....

३) हिंरस में वझ कीम मुंहुं, हथ हाज खां झलि हकु तलब,
तां थींएं आज़ाद, वठु दिलि! हीअ सची ....

४) गुल चवे थो, गुल करे शतरंज पंहिंजी नफ़्स सां,
थियमि मोग़ी माद वठु दिलि! हीअ सची ....

## (१५८ ग्वाल)

छडि़ हठु हुअण जो हाणि, मेरे मन, सांत सुख तूं माणि.

१) पी तूं प्रेमु अगम दा प्याला, अठ पहर रहिजि मतवाला,
लही आतम धन जी खाणि.

२) डि़सु वजूद में झाती पाए, त छा मां आहियां छा ईश्वर आहे,

परुझी पाणु पछाणि.

३) वेह न विसारे भोरा वर खे, लहिजि आदी आतम घर खे,
राति दिन तंदि ताणि.

४) ॻवाल गुमु थी अगम माहीं, हलु उते जिते तूं मां नाहीं,
पाए पदु निर्ब्रानु.

## (2)

प्रभाति पीतो जंहिं प्रेम प्यालो, पंहिंजे अंदर खे कयो तिनि उजालो.

१) नंडिड़ी निभाॻी नेणें त्याॻी, सालिक सजाए खोलियो सो तालो.

२) खणी ग्यानी सौंटी कडी मनु खोटी, गही काल चोटी निर्भइ निरालो.

३) सुखु शांत माणे रहु भाॻु भाणे, हिकिड़े टिकाणे सदाई सखालो.

४) ड्ठिो मुल्कु सोई जिति जमु न होई, आदि देस जोई कयो ॻवाल आलो.

## (१५९ गरामी)

पासे न पलि तोखां हटियूं जेके क़ुर्ब जे कातियुनि कटियूं.

१) अखरनि में जे अंधा अड़िया, सिक सोज़ खां तारक तड़िया,
मन्सूरु जीअं सूरीअ सड़िया, जिनि प्रित जूं पढ़िहियूं पटियूं.

२) ज़ाहिरु ज़माने में ग़र्क़ु, फ़ानी फ़ना में बे फ़र्क़ु,
मामूं, संदनि सभ बे दरक समिझनि उहे, सूरनि - सटियूं.

३) तसिलीम में तालिबि थी रहु, सांगा छड्डे पियो सिर ते सहु,
रखु प्रित वारो यार पहु, पी सभ सुतियूं खारियूं खटियूं.

४) ड्डे अक़ुल खे ब्रारे तूं ब्रनि, कर शौक़ खे तूं शैल ज़न,
रखु माम तूं मुहबत जी मन, पी पुरु करे, वह जूं वटियूं.

५) कारियूनि ककोरियुनि जूं कुठल, मुक्तल में पयूं फथिकनि फटियल,
सिक सूर जूं, साणियूं सटियल, से कीअं वरनि, जानिब-झटियूं.

६) सिक सूर वारा विया लड्डे, छोरी छपर में विया छड्डे,
गोली ग़मनि में विया गड्डे, मन्ठार से मुंहड़ो मटियूं.

७) सिक सूर जो खणु को समरु, आहे ज़मानो दमि गुज़रि,
औखो गरामी आ सफरु, ग़मु इश्क़ु जो घायलु, घिटियूं.

## (१६० गिरधारीलाल)

तर्ज़ : रमिजुनि साणि गुलाम कयो थव सज़ुण असांखे.
थलु : मोहन मुर्ली वज़ाए, मोहे वयो मनु त असांजो.

१) अजबु अजाइबु रूपु ड्रेखारे,
सुधि बुधि सारी भुलाए - मोहे वयो मनु त असांजो.

२) हिंदोरे हैरत में वयो त विहारे,
मोहन झूलो झुलाए - मोहे वयो मनु त असांजो.

३) लूंअ लूंअ खे वियो रंग में रचाए,
लाली रंग लग़ाए - मोहे वयो मनु त असांजो.

४) गिरधारी गुण ग़ाइयां तुंहिंजा,
जग़ि मग़ि जोति जग़ाए - मोहे वयो मनु त असांजो.
मोहन मुर्ली वज़ाई, मोहे वयो मनु त असांजो.

(2)

तर्ज़ : रमिजुनि साणि गुलाम कयो थव सज़ुण असांखे.
थलु : मर्ली वारा श्याम, अची मूंखे दर्शन ड्रे ड्रे.

१) नेण खंयों मां वेठी निहारियां,
अथमि उकीर तमामु - अची मूंखे दर्शन ड्रे ड्रे.

२) सुख संसारी हुजनि हज़ारें,
तो बिनु नाहे आरामु - अची मूंखे दर्शन ड्रे ड्रे.

३) ख़ुशि थी खारायां तोखे भग़वान,
मिस्री मेवा बादाम - अची रे मूंखे दर्शन ड्रे ड्रे.

४) गुलनि फुलनि सां सेज सींगारे,
सुग़ंधियूं छटायां जाम - अची मूंखे दर्शन ड्रे ड्रे.

५) गिरधारी गुण ग़ाए तुंहिंजा,
पायां तड़हिं विश्रामु - अची मूंखे दर्शन ड्रे ड्रे.
मुर्ली वारा श्याम, अची मूंखे दर्शन ड्रे ड्रे.

(ल)

## (१६१ लुतफ़)

मंदो मारुनि जो आऊं कींअं सुणां, वञी माग़ मकान ते शाल मरां.

१) हिति क़ैदु थियसि, थी जाड़ जीयां, डुठ ड्रोथिइड़नि खे कहिड़ा ड्रियां,
मट मारे वेठा, कहिड़ी तांघ कयां, रोई रोज़ु वतन ड्रे गाटु खणां.
२) ड्रिसां खेज खिंविणि जा हज़ार हिति, वसी मींहं कइ आह बहार हुते,
फुटा लोत पटनि ते लयार हिते, हिते मेंढ मुंझी, वेठी वार छिनां.
३) वसंदे मींहं बाबीहो ब्रोल करे, मिठी लात बुधी मुंहिंजो जीऊ गुरे,
को वसु न हले, थिया पवंहार परे, साँभे कीन सघां, ड्रुखु कीअं चवां.
४) बेवसु बांदी बणियसि, लाचारि थियसि, छिज़ी टबुर टिले खां धारि थियसि,
वयो हुसनु हली बेकारि थियसि, की भागु पयो, थी लोड़ियां मां.

(2)

लगी साह में आहि सांगियुनि जी लोरी, विसारियां न विसिरनि मारुइड़नि मक़ालूं!
१) अथमि रोज़ उण तुण अबाणनि जी अंदरि, जलायो जिगर जानि, सूरनि सरासरि,
वई आ विछिड़जी, छगेरनि खां छोरी, विझां थी वरन मन वेठी रोज़ु फ़ालूं.
२) कड़िहां हिति थी कोटन में आऊ अकेली, न को हालु महरमु न सुरती सहेली,
हुजनि गडुलगी जिनि जी आ जीअ में झोरी, ड्रियां बाह पट खे, सड़नि शाल शालूं.
३) कड़नि ऐं कड़ोलनि में हिति थियो ज्यापो, थियसि ड्रूरि कंहिंखे ड्रियां मां ड्रोरापो,
जुदाई जो जालणु बणी गाल्हि गौरी, परे थियमि पुन्हवारनि जा पखिड़ा ऐं पालूं.
४) मोटी मुल्कु मींहं कई आ बहारी, थधी थी बुधां थी वेड़िहीचनि जी वारी,
मूंखे हिति ड्रुखनि जी डिघी आह ड्रोरी, हिति ड्रोरंड़ ते थियूं छीज़ूं धमालूं.
५) करे यादि ड्रेही, अखियुनि नीर हारायां, थर जूं संभारूं सदा लुत्फ़ सारियां,
पाइर जे घड़ीअ तां सड़ी ज़ान घोरी, सहेलियुनि जे सुहिमनि विज़ाओ आ हालूं.

(3)

१) प्रेम जो सागरु सुंदरु रूपी, कड्रहिं आ प्रघटु कड्रहिं अलूपी,
हर कोई आहे प्रेम बेखारी, दुनिया सारी प्रेम पुज़ारी.
२) बरखा ऋतु सुहागिण आई, पी पी पपीहे ब्रोली वाई,
कमली कोयल लात पुकारी - दुनिया सारी....
३) कोमल फूल कंवल जो झूले, भौंरो प्रेमु भज़नु थो ब्रोले,
जंतर जीव प्रेम उधारी - दुनिया सारी....
४) चंदरु उभिरियो राति विहाणी, दर्शन लाइ चकोर उड्राणी,
ब्रह्मा रोग जी चिंता मारे - दुनिया सारी....
५) पीत लगन में फाथी दासी, प्रीतम अज़ु थी हृदे वासी,
प्रेम मगन आ नरु ऐं नारी - दुनिया सारी....

## (१६२ लाल)

मिठिड़ो वचनु को ब॒ोलि तूं, रण में हीउं न रोलि मूं.

१) दर्द जी दांहं दूंहड़ा दुखाया, इश्क़ अंदर जी उलिड़ा उथारिया,
बिरह बादल खे खोलि तूं.

२) निंढिड़ीअ निभाग॒ीअ डोह जो कयड़ो, तोखे जुदा मूंखा जो कयड़ो,
पाण लिकाए पोइ ग॒ोलि तूं.

३) जबल तोड़े ड॒ूंगर ड॒ोरायां, पुन्हल बिना मुंहुं मूलि न मोड़ियां,
भाइंज न ब्रियो को भोलि मूं.

४) लाल अथई इहा बिरह जी बाज़ी, खटी उहे वया जिनि कई आजी,
सचो कयो आहे क़ौलु मूं.

### (2)

बर में ओ थर में, बंदीअ खे पुन्हल पाण सुञाणु,
हींअं न छड॒िजि यार, हींअं न छड॒िजि यार.

१) ब॒ंधण ब॒धाऊं लोलिड़ियूं ड॒िनाऊं, हीउ त वयाणी पींघे पाताऊं,
साहु खरी वियसि साण भलारा, हींअं न छड॒िजि यार ....

२) ससुई जा ज़ाई, सूरनि में आई, विझी त संदूक़े, समंडे लोड़हाई,
ड॒ुख ड॒िनाऊंसि ड॒ाज भलारा, हींअं न छड॒िजि यार ....

३) जिनि जा वर वञनि, से कीअं सुख सुम्हनि, ग॒ोढ़ा ग॒लनि तां, लुड़की लाल वहनि,
अहिड़ा जत जवान हलिया वया, भलारा, हींअं न छड॒िजि यार ....

### (3)

जीजल जोग॒ीइड़ा जादू हणी वया, जादू हणी वया, दिलड़ी खणी वया.

१) अदियूं आदेसी आया अल्लाह सीं, जिन जे अचण सां बणिजी वेई बस्ती,
ड॒ेई मौज मस्ती, करे धार धणी वया, जीजल जोग॒ीइड़ा जादू हणी वया ....

२) भरे भरे भेनरु ड॒िनाऊं को प्यालो, जंहिं जे पीइण सां मनु थियो मतिवालो,
नशो निरालो चुकी ड॒ेई खणी वया, जीजल जोग॒ीइड़ा जादू हणी वया ....

३) लाल लाहूती लाए वया थमि लोरी, जीअ में जोग॒ियुनि जी ड॒ींहं राति थमि झोड़ी,
छड॒े छिनी छोरी करे हिकिड़ी ज़ुणी वया, जीजल जोग॒ीइड़ा जादू हणी वया ....

## (म)

## (१६३ मिस्कीन)

वसे बिरह संदी बरसाति, चमनि चौधारि लगे.

१) आड़ंग इश्कु आगमु मूं आयो, वसाए वीरानु बिरह बहार लगी.

२) मुख़फ़ी मेंघ वसण लाइ आयो, कयरी ग़ैर गुमान वसण वहंवार लगी.

३) बादल बरसण सां बहारियो, हैरत में हैरान अजबु ऐतबारि लगी.

४) मुहबु अडण ते मिस्कीन जे आयो, दिलिबर ड्रिनिड़ो दानु तालिब तन तार लगी.

## (2)

तलब तुंहिंजी आहे मिठा - मिलु ख़ुदा जे वास्ते.

१) ए सबा नाले ख़ुदा जे - ख़तु खणी दिलिबर ड्रे वञु,
कजि अरज़ु ज़िबानी रूबरू - जां ख़ुदा जे वास्ते.

२) ज़हर थी तुंहिंजी जुदाईअ में - जवानी मूं संदी,
तो कमरि कशी ज़ुल्म ते - ज़ुल्मूं जफ़ा जे वास्ते.

३) शौंक तुंहिंजो अथमि दिलिबर - हिकु दफ़ो तोखे ड्रिसां,
पोइ भले हणु हथ सां - खंजरु ख़ुदा जे वास्ते.

४) ए सनम ड्रिसु हालु तूं - मिस्कीन जो तोखे मुदामु,
दांहं सुणि दिलिगीर जी - साहिब सख़ा जे वास्ते.

## (3)

जीउ थो चवां उनहनि खे - जिनि हीअ सुख़नि सेखारियो,
ऊंदहिं हुई अंदर में - सुहिणलु हो सिजु उभारियो.

१) वेसाहु थियो मंदर में - प्रकाशु थियो अंदर में,
आयो नेकु बदि नज़र में - तड़हिं हीअ प्रेम पधारियो.

२) अस्यान[1] ऐं मदायूं - मेटीं सभेई ख़ताऊं,
अदत्त पुज़ां न आऊं - अहिड़ो पुन्हलु प्यारो.

३) पूरो सो पेचु पाईं - दिलि खे खणी फसाईं,
अखियूं अखियुनि अड़ाईं - नेणें रखी नज़ारो.

४) मिस्कीन जी बीमारी - वेधनि हुई यार वारी,

पीर मगां पसारे - जड़हिं ही होलक उकारियो.

(4)

दिलिदार तेड़े दर ते - फेरेदार वांगे आया.

१) दीदार दान दीओ - मेरे दुखु छीन लीओ,
तुसी कोल साड़े रहो - सानूं इश्क़ सताया.

२) तेरा हुस्नु कमाली - वेखे कोई मवाली,
लाग़र्ज़ तेड़ी चाली - छोड़ो नक़ाबु राया.

३) तुसां जो ही बेनियाज़ी - मेड़ी सदा ही आज़ी,
कड़हिं बारु थीवें राज़ी - सांनूं बिरह बछाया.

४) आखे मिस्कीन वीचारा, दिलिबर दीयो दीदारु,
घूंघट खोलि सारा - सांनूं इश्कु फ़िराक़ लाया.

## (१६४ एम. कमल)

जंहिं राति जुड़ियो तोसां नातो हुओ,
तंहिं राति चंडु भी ग़ातो हुओ.
रूह शान्त, जिस्मु फिथिकियो थे,
नूर चुपु, ऊंदहि शोरु लातो हुओ,
अज़ु न रहियो आ पर कलह ताईं,
रंग जो ख़ुशबूअ सां नातो हुओ.
मुंहिंजो अङणु ओरांघे वेंदड़
रूह तुंहिंजे सड़ लाइ आतो हुओ.
आस पुनी क़िस्मत वारे जी,
पलउ त हूंअं सभिनी पातो हुओ.
विकिजी वया यां क़तल थियासि,
जिनि क़ातिल खे सुञातो हुओ.
तिनि जा चहिरा पीला छो हुआ?
जिनि महिफ़िल में रंगु लातो हुओ.

(2)

शहरु आ ग़ुतियलु मां दिलि जी दुनिया किथे रखां,
हिन तंगि बस्तीअ में हीऊ सहिरा किथे रखां?
सपना त पुर्ज़ा पुर्ज़ा थी वया हुआ मगर,
यादुनि जे आईने जा टुकड़ा किथे रखां?
दाग़नि त तिर छुटण जी दिलि में छडे न जाइ
मां बाक़ी हस्तरनि जा ड्रीया किथे रखां?
चालकु चोरु वक़्तु आ ह़र हंधि हणे थो खाटु
सारुन जा ड्रिस मां सोना सिका किथे रखां?
दफ़नाया मूं यक़ीन में मुर्दा गुमान जा
पर निति नवां ही ज़िंदह ख़तरा किथे रखां?
नाहे ज़मीन मुंहिंजी, ऐं न आस्मानु आ
पंहिंजे वजूद जा गुल तारा किथे रखां?

## (१६५ महमूद ख़ान)

आयो कोन चरिख़ो, चरीअ जे कतण में! वेंदो वक़्तु गुज़िरी, सड़ीअ खे सुम्हण में!

१) तिखी तेज़ सख़्ती, ऊंदहि अंधकारु, कश्तीअ वाइ वारी, चले कोन चारा,
पैसो नाहे पलव में, ड्रींदसि छा पतण में!

२) अज़ु सुभाणे वेचारे जो वारो, कतणु कीअं कंदसि मां, ड्रींदसि कीअं उधारो,
हाणे हथिड़ा हणे थी, सिजु वयो लहण में!

३) अठई पहर जाग़ी, जिनी अरिट ओरिया, पंहिंजा सभ क्या तिन, मंझां प्रित पवार,
भली से थियूं मुर्कनि, आरे जे आतण में!

४) महमूद ख़ान चवे, या रबु तुंहिंजे सितारे, मूआ मज़ु मुल्क मां, वया वर्क़ वारे,
छिना सभु छेहनि खूं, हर्फ़ु पाक पड़हण में!

(2)

१) सिवा यार जे दीदार करे सींगारु कबो छा?
थिए धार जे दिलिदार जे ज़ुमार कबो छा?

२) मंझि मैदान, छो जवानु कनि चोगान घणेरा,
वक़्तु तंगि लगु जंगि रे, हथियारु कबो छा?
३) मंझि बाज़ार कनि वापारु शाहूकार घणेरा,
क़दुरु सो न ज़ाणनि कोन ख़रीदारु कबो छा?
४) पंहिंजे हाल संदी गाल्हि कजे पेशु न कंहिंजे,
सुणे गोशु न गुफ़्तार तंहिं इज़हारु कबो छा?
५) महमूद पाण थी गुलाम मथां नामु विकाणो,
जंहिंजे वाति न पकी बाति तंहिं दुआवार कबो छा?

(3)

ख़्याल में गुमु थी ख़्यालु कमाए ख़्याल जो मतलबु ख़्याल में आ.
१) पाणु विञाइणु पाण सुज़ाणु, हैरात वारे हाल में आ.
२) मरणु किना अगु मरणु ड्रेखारणु, इहा वाट विसाल जी आ.
३) आहियां पाण अलहु ड़े सरितियूं, इहा गाल्हि मिसाल जी आ.
४) महमूद ड्रिसु तूं मौज इहाई, इहो क़ुर्बु कमाल में आ.

## (१६६ मोती (प्रकाश))

सांवणु केरु मल्हाए, सरतियूं! सांवणु केरु मल्हाए?
१) मां भी प्यासी, नेण बि प्यासी, हर जाइ मूं लाइ छाईं उदासी,
रतु जो तेलु विझी मां वेठसि, आस जो दीपु जलाए.
सांवणु केरु मल्हाए?
२) जोड़ियुमि जीवन भर जो नातो, पेचु मूं पुख़्तो अहिड़ो पातो,
सच खे कीन सुञातो, तंहिंखे को समिझाए.
सांवणु केरु मल्हाए?
३) मुंद ते मोटियूं ही बरिसातियूं, पेई लवें कोयल बि लातियूं,
चंड मंझां चांडोकी छटिके, मूंते आगि वसाए.
सांवणु केरु मल्हाए?
४) पनु पनु मूड़े करे इशारा, मुर्कनि ऐं चेड़ाईनि तारा,
हाइ अकेली ज़ाणे जगु थो, शर्माए तड़िफाए,
सांवणु केरु मल्हाए?

५) साइत साइत साल थी गुज़रे, ड्रींहुं ड्रुखनि में मुंहिंजो निबिरे,
राति विहामी मुंहिंजी, वर वर, वाटनि ते वाझाए.
सांवणु केरु मल्हाए?

(2)

राणा, ओ ज़ोरावर राणा! राणा, साह सेबाणा राणा!

१) काक महल में आ ग्रहेली, वेठी आहियां हाइ अकेली,
सूमल नाहे, न संगि सहेली, पहिर लंघे थिया सांझीअ टाणा.
राणा, ओ ज़ोरावर राणा!

२) मां वड्र भाग्रिणि, तोखे पातुमि, पातुमि, तोसां नींहड़ो लातुमि,
हाइ, मगर तोखे न सुञातुमि, मूं त कया थे मिठिड़ा! माणा.
राणा, ओ ज़ोरावर राणा!

३) चीड़ चग्रू कीअं आऊ संवारियां? सुरति न पंहिंजी सिर जी सारियां,
हर हर हंजूं पई हारियां, ग्रारीनि था ग्रणितियूं ग्राराणा.
राणा, ओ ज़ोरावर राणा!

४) आयो ओभर - वाउ ओ प्रीतम! विछिड़िए कहिड़ो साउ ओ प्रीतम!
अचु त करियूं पछताउ ओ प्रीतम! भोग्रियमि भारी भाग्र जा भाणा.
राणा, ओ ज़ोरावर राणा!

(3)

पिरीं पेर पंहिंजा कड्रहिं हिति धरींदा?
कड्रहिं पाड़ीची मूंखे वाधाई ड्रींदा?

१) निहारे थकियूं वाट मुंहिंजूं निगाहूं,
ऐं फूकारे नंगनि जां उल्झन थियूं राहूं.
गले में वञनि घुटिजी थियूं दांहूं आहूं,
वञनि ख़्याल मुंहिंजा ई मूंखे ड्रंगीदा,
पिरीं पेर पंहिंजा कड्रहिं हिति धरींदा?

२) ढकींदा अची ढोल मुंहिंजी ढिलाई,
कंदा माफ़ मेरीअ मंदीअ जी मंदाई,
मूं जे सां हयातीअ जे आ लिंव लग्राई,

उहे कीअं झले हथु, हथनि मां छड्डींदा?
पिरीं पेर पंहिंजा कड़हिं हिति धरींदा?

(4)

आंधीअ में जोति जग़ाइण वारा सिंधी,
मिटीअ खे सोनु बणाइण वारा सिंधी.

१) शाह सचल सामीअ जे वरिसे वारा, नस नस में जिनि जे वहे थी सिंधू धारा,
झर ऐं झंगल में झांगीअरा, बरपट खे बाग़ बणाइण वारा सिंधी. आंधीअ में...

२) प्रेम भाव एकेसां रहंदा जग़ में, महनत जो भाउ भरियलु आहे जिनि जे रग़ रग़ में,
सभिनी सां प्रेमु वधाईंदा, कुझु ड्डींदा कुझु पाईंदा,
संसार में प्रेमु वधाइण वारा सिंधी. आंधीअ में...

३) बेंगाल में रहंदा ऐं सिखंदा बेंगाली, केरल में रहंदा ऐं सिखंदा मल्यानी,
गुजरात में सिखंदा गुजराती, त बि अमर सदा सिधी जाती,
सिंधीअ सां नींहुं निभाइण वारा सिंधी. आंधीअ में...

४) मोहन जी दड़ेजां दब्रिजी ऊंचा रहंदा, तूफ़ान ज़िलज़िला, सूर ऐं सख्तियूं सहंदा,
हेमूंअ जां फासी खाईंदा, त बि मुरकी मुरकी ग़ाईंदा,
हे कुड़ंदे कंधु कपाइनि वारा सिंधी. आंधीअ में...

(१६७ मुराद)

संतो प्रेम प्यारा गुर दीया, जामूं मस्त मघन हम थीया.

१) प्रेम बठे का सत्गुरु साक़ी, सिरु साटे हमु लीया,
पीवत प्रेम विसर गई काया, दिलि दर्पण कर लीया.

२) अठई पहर रहूं मतिवाला, लाली का रंग लीया,
चढ़त ख़ुमारी उतिरत नाहीं, लाल अमल हम दीया.

३) प्रेम की महिमा मुखूं कही न जावे, घट उजाला थीया,
प्रघटी जोति राम रंग लागा, भोल भूम मिट गइया.

४) प्रेम कला से यह पद पाया, जन्म मरण दुखु गइया,
कहत मुराद सुनो भाई साधू, सदा अमर जग जीया

## (१६८ मसरूर)

तुंहिंजे ज़ुल्फ़ जी बंदि कमंद विधा[1], ज़िंदा हज़ारें, मां न रुग़ो.

१) तुंहिंजे ज़माल जे अशिवह[2] गरी, मुल्कु मतीअ[3] वसीअ[4] वरी,
छा जन मलाइक हूर परी, दरब़ान हज़ारें, मां न रुग़ो.

२) केई घायल तुंहिंजे घूर संदा, मख़मूर ग़फ़ूर सरवर संदा,
तुंहिंजे नूर व हज़ूर ज़हूर[5] संदा, निगरान हज़ारें, मां न रुग़ो.

३) केई अबरू तेग़ शहीद किया, केई नाज़ मज़ीद[6] मुरीद कया,
रे नाणे दीद ख़रीद किया, सुल्तान हज़ारें, मां न रुग़ो.

४) ए माह लक़ा महबूब मिठा, तुंहिंजे नाज़ अदा तां जानि फ़िदा,
थिया दामन गीर अमीर गदा, हैरान हज़ारें, मां न रुग़ो.

५) दिलिबर प्यारा नूर नज़र, मसरूर आलिम मफ़तूं[7] सर,
थिया तो तां तारा शमस क़मर, क़ुर्बान हज़ारें, मां न रुग़ो.

## (१६९ मैरूफ़)

मूंखे मुहब माणनि सां, मारे हलियो वियो,
कयल क़ौल वाइदा, विसारे हलियो वियो.

१) ड्रिसण सां वयुमि होशु, बेहशु थियड़सि,
खणी नेण नूरी निहारे हलियो वियो.

२) ड्रिनो कोन दिलिबर, को दिलि खे दिलासो,
विरह जी वाटुनि ते, विहारे हलियो वियो.

३) विझी घूर घायो, सज्रण सरसु मूंखे,
प्यालो प्रित जो, पीयारे प्यारो हलियो वियो.

४) अङण मुंहिंजे आयो, महबूब मैरूफ़,
मुंहिंजे जीअ जड़े खे, जीआरे हलियो वियो!

## (१७० मिस्री शाह)

पंधु पड़ाहूं मंज़िल डूरि, डाघा जीअं डींहुं न उभिरे.

१) चलत चांगा चंदन चारायइं, माखियूं मिस्रियूं ब्रिया मोक पीयारियइं,
कहिड़ो लग्रो थई कलूर,
पंधु पड़ाहूं मंज़िल डूरि, डाघा जीअं डींहुं न उभिरे.

२) करहा कोड़ ग्रिचीअ ग्रलि पाईं, हलंदे हबीबनि छो हकलाईं,
आधी हुजे तोड़े असूर,
पंधु पड़ाहूं मंज़िल डूरि, डाघा जीअं डींहुं न उभिरे.

३) चोड़सि रइनि चटाई चंड जी, मिस्री शाह चए महिल न निंड जी,
होत जे पहुचु हज़ूर,
पंधु पड़ाहूं मंज़िल डूरि, डाघा जीअं डींहुं न उभिरे.

## (१७१ मल्काणी)

### (गीतांजलीअ जो तर्ज़मो)

पूज़ा पाठ, भज़न आराधन, स्मिरन खे करि तर्क सफ़ा,
मंदर जे कोने में, पूरे दरु, कंहिंजी थो करीं पूज़ा.

१) अंधकार में पंहिंजे मूंहं सिरि, भग्रितीअ में आहीं ग़ल्तानु,
खोलि अखियूं ऐं जाच त करि का, किथे आहे तुंहिंजो भग्रवानु?

२) हू त वञी उन जाइ रसियो जिति, हारी धरती खेड़े थो,
पहणु मज़ूरु जिते पियो फोड़े, फोड़े ऐं गड्डु मेड़े थो.

३) ततीअ थधीअ में, वस्त्र धुधिड़ियल, सभिनी सां पियो कमु करे,
वेसु तजे, हिनि वांगुरु तूं भी, आउ मिटीअ में पेरु भरे.

४) मुक्ती? मुक्ती किथि पाईंदें? मुक्ती आहे कहिड़े पार?
मालिकु पाण ब्रधो ब्रंधणनि में, आहि असांजो हरिदमु यार?

५) टोड़ समाधी फूल फिटा करि, वासु ऐं धूपु उझाए छड़ि,
कम करे ऐं पघरु वहाए, पाण खे दिलिबर सां तूं गड़ि.

### (2)

क़ैद में तोखे कंहिं कयो क़ाबू, ख़बर त करि ए क़ैदी का?
ठह पह क़ैदीअ उतरु ड्रिनो :- 'ही मालिक मूंखे पेद विधा.'

१) चयमि त ताक़त ऐं दौलत में, सभिनी जो सरदारु थियां,

## (१६८ मसरूर)

तुंहिंजे ज़ुल्फ़ जी बंदि कमंद[1] विधा, ज़िंदा हज़ारें, मां न रुगो.

१) तुंहिंजे ज़माल जे अशिवह[2] गरी, मुल्कु[3] मतीअ[4] वसीअ वरी,
छा जन मलाइक हूर परी, दरबान हज़ारें, मां न रुगो.

२) केई घायल तुंहिंजे घूर संदा, मख़मूर ग़फ़ूर सरवर संदा,
तुंहिंजे नूर व हज़ूर ज़हूर संदा, निगरान[5] हज़ारें, मां न रुगो.

३) केई अबरू तेग़ शहीद किया, केई नाज़ मज़ीद[6] मुरीद कया,
रे नाणे दीद ख़रीद किया, सुल्तान हज़ारें, मां न रुगो.

४) ए माह लक़ा महबूब मिठा, तुंहिंजे नाज़ अदा तां जानि फ़िदा,
थिया दामन गीर अमीर गदा, हैरान हज़ारें, मां न रुगो.

५) दिलिबर प्यारा नूर नज़र, मसरूर आलिम मफ़तूं[7] सर,
थिया तो तां तारा शमस क़मर, क़ुर्बान हज़ारें, मां न रुगो.

## (१६९ मैरूफ़)

मूंखे मुहब माणनि सां, मारे हलियो वियो,
कयल क़ौल वाइदा, विसारे हलियो वियो.

१) ड्रिसण सां वयुमि होशु, बेहशु थियड़सि,
खणी नेण नूरी निहारे हलियो वियो.

२) ड्रिनो कोन दिलिबर, को दिलि खे दिलासो,
विरह जी वाटुनि ते, विहारे हलियो वियो.

३) विझी घूर घायो, सज़्रण सरसु मूंखे,
प्यालो प्रित जो, पीयारे प्यारो हलियो वियो.

४) अङण मुंहिंजे आयो, महबूब मैरूफ़,
मुंहिंजे जीअ जड़े खे, जीआरे हलियो वियो!

## (१७० मिस्री शाह)

पंधु पड़ाहूं मंज़िल ड्रूरि, ड्राघा जीअं ड्रींहुं न उभिरे.

१) चलत चांगा चंदन चारायइं, माखियूं मिस्रियूं ब्रिया मोक पीयारियइं,
कहिड़ो लग्गो थई कलूर,
पंधु पड़ाहूं मंज़िल ड्रूरि, ड्राघा जीअं ड्रींहुं न उभिरे.

२) करहा कोड्र ग्रिचीअ ग्रुलि पाईं, हलंदे हबीबनि छो हकलाईं,
आधी हुजे तोड़े असूर,
पंधु पड़ाहूं मंज़िल ड्रूरि, ड्राघा जीअं ड्रींहुं न उभिरे.

३) चोड्रसि रइनि चटाई चंड जी, मिस्री शाह चए महिल न निंड जी,
होत जे पहुचु हज़ूर,
पंधु पड़ाहूं मंज़िल ड्रूरि, ड्राघा जीअं ड्रींहुं न उभिरे.

## (१७१ मल्काणी)

(गीतांजलीअ जो तर्ज़मो)

पूज़ा पाठ, भज़न आराधन, स्मिरन खे करि तर्क सफ़ा,
मंदर जे कोने में, पूरे दरु, कंहिंजी थो करीं पूज़ा.

१) अंधकार में पंहिंजे मूंहं सिरि, भग़ितीअ में आहीं ग़ल्तानु,
खोलि अखियूं ऐं जाच त करि का, किथे आहे तुंहिंजो भग़वानु?

२) हू त वञी उन जाइ रसियो जिति, हारी धरती खेड़े थो,
पहणु मज़ूरु जिते पियो फोड़े, फोड़े ऐं गड्डु मेड़े थो.

३) ततीअ थधीअ में, वस्त्र धुधिड़ियल, सभिनी सां पियो कमु करे,
वेसु तजे, हिनि वांगुरु तूं भी, आउ मिटीअ में पेरु भरे.

४) मुक्ती? मुक्ती किथि पाईंदें? मुक्ती आहे कहिड़े पार?
मालिकु पाण ब्रधो ब्रंधणनि में, आहि असांजो हरिदमु यार?

५) टोड़ समाधी फूल फिटा करि, वासु ऐं धूपु उझाए छड्डि,
कम करे ऐं पघरु वहाए, पाण खे दिलिबर सां तूं गड्डि.

(2)

क़ैद में तोखे कंहिं कयो क़ाबू, ख़बर त करि ए क़ैदी का?
ठह पह क़ैदीअ उतरु ड्रिनो :- 'ही मालिक मूंखे पेद विधा.'

१) चयमि त ताक़त ऐं दौलत में, सभिनी जो सरदारु थियां,

उनहीअ करे मूं भरियो ख़ज़ानो, शाह जे हक़ी दौलत सां.
२) निंड थे आयमि, आऊ सुम्ही पयुसि, सेज ते, जा हुई मालिक जी,
जागॖण सां मूं ॾिठो त पंहिंजे, गंज में ई पयुसि क़ैदी थी.
३) जोड़ी कंहिं ज़ंजीर भला, ए क़ैदी त बॖधाइ ख़बर,
'पाणु बनायमि, पंहिंजे हथनि सां,' ॾिनो ही क़ैदीअ साफ़ु उतरु.
४) समुझियुमि मुंहिंजी अजी त ......, सोभ जॻ ते पाईंदी,
मूंखे निति आज़ादु बनाए, सभ खे .... बणाईंदी.
५) लोह खे खूरे मंझि तपाए, ॾेई मार मुतुर्कनि जी,
ॾींहं राति मूं करे कशाला, ठाही पोइ ज़ंजरी पकी.
६) रास जड़हिं थियो कमु समूरो, बणिजी वई ज़ंजीर ...
छा थो पसां ज़ंजीर इहाई, जकिड़े वई मूंखे चौधारि.

(3)

छा, संदसि ख़ामोश आहट ना बॖधीं थो?
हू अचे पियो, हू अचे पियो, निति अचे पियो.
१) हरि घड़ीअ, हरि वक़्त, हरि अयाम में,
हरि सुबुह ऐं हरि मंझंदि, हरि शाम में,
हू अचे पियो, हू अचे पियो, निति अचे पियो.
२) गीत मन जे मौज वारा था चवनि,
सभु मिली आलाप हिकिड़ी ॻाल्हि कनि,
हू अचे पियो, हू अचे पियो, निति अचे पियो.
३) चेट जी रोशन, सरहे ॾींहं मां,
झंगलनि, बॖेलनि जी गुस ऐं राह तां,
हू अचे पियो, हू अचे पियो, निति अचे पियो.
४) राति कारीअ में जड़हिं बारिश वसे,
गर्जंदड़ ककरनि जे भयंकर रथ ते,
हू अचे पियो, हू अचे पियो, निति अचे पियो.
५) था मूंते दुखड़नि पुठियां दुखिड़ा अचे,
पेर हिन जा दिलि ते मुंहिंजे पया पवनि,
पंहिंजा प्यारा पेर सोना थो धरे,
मुंहिंजे आनंद खे थो हू रोशन करे.

(4)

जोति किथे आहि? जोति जगाइ, बाहि बिरह सां जोति जलाइ.

१) आहि ड्रीयो पर जोती नाहे, भाग में तुंहिंजे लिखियलु छा आहे?
मौतु उनहीअ खां बहितर आहि, जीअण जी कान्हे तोलइ जाइ,
जोति किथे आहि? जोति जगाइ.

२) दुखु पियो तुंहिंजो दर खड़काए, पिरींअ वटां पैग़ामु पुज़ाइ,
हिकिड़ो दमु भी देरि न लाए, सड़े थो तोखे मिलण लाइ,
जोति किथे आहि? जोति जगाइ.

३) आस्मान में बादल छाया, रिमिझिमि मेंघ मलार वसाया,
मुंहिंजे दिलि मनु मूंझ मुंझाया, मतलबु उन जो छाह अलाइ?
जोति किथे आहि? जोति जगाइ.

४) पलु चिमिको विज़ुलीअ जो थीये थो, वेतर कारोंभार वधे थो,
माग उनहीअ लइ मनु भटिके थो, राति जो गीतु सड़े जंहिं जाइ,
जोति किथे आहि? जोति जगाइ.

५) ककरनि में गजगोड़ थिए थी, वायू वाक़ा कंदी वञे थी,
राति भयानक रूपु धरे थी, ऊंदहि में ना वक़्तु विञाइ,
जोति, प्रेम जी जोति जलाइ, प्रान जलाइ, जोति जगाइ.

## (१७२ मुबारक)

उथी संभिरु साथी घड़ी दमु गुज़ारे
वहियूं वतनु पंहिंजो वेठें कीअं विसारे?

१) दुनिया थेई दुरंगी, कड़हिं कम न ईंदइ,
चाड़हे ब्री चिकनि ते, छड़े विचि में वेंदइ,
पिटियलु जो ब्रहग्रणु लखें वियड़ा धतारे-उथी संभिरु ...

२) छड़े महल माड़ियूं लड़े हितां वेंदें,
वरी तूं म भांइजि असलु की ईंदें,
मिठे मुहब मंठार जे पउ पनारे - उथी संभिरु ...

३) जंहिं जे अङण ते खुलिया बख़्त तारा,
तिन्हीं जे हलण जा थिया हुलु पसारा,
अहिड़ा घोट खाए अजलु मौत मारे - उथी संभिरु ...

४) फ़ना जे फ़िकर जा लड़े लोइ वेंदा,

छड्डे मुल्कु पंहिंजो वरी कीन ईंदा,
को कनि सुणु सड्डि क़बर थी कुकारे - उथी संभिरु ...
५) अदा ड़े मुबारक कचो कमु कमाए,
गिलादार ग़ैबत वखरु सभु वहाए,
अग्रियूं सुञ थी सजी समरु खणी सारे - उथी संभिरु ...

## (१७३ मजरुह मुबारक)

खणी अखि नाज़ सां जानी, निहारींदें त छा थींदो?
भला मशताक़ खूं मुन्हड़ो, छिपाईंदें त छा थींदो?
१) उञायल हां सदा सुहिणा, मिठी तुंहिंजे मुहबत जो!
वसलु शरपति संदो मुसाफ़िरु, पियारींदे त छा थींदो?
२) हिजर मूं हालु कयो हीणो, सिघो सजुण मरी वेंदुसि!
अची लहद मुई पोइ तूं, पुकारींदें त छा थींदो?
३) हुसन जे दर्स में वेही, बिरह जा बाब कयमु पूरा!
सबक़ - सूरनि संदा, हर हर पड़िहाईंदें त छा थींदो?
४) चशम तल्वार सां क़तलु, थियो मजरूह आ घाइलु!
हुस्न जे फ़ौज तूं ब्रीहड़, अड़ाईंदें त छा थींदो?

(2)

ब्रुधायां छा भेनरु पंहिंजो हालु सारो.
अथमि रातियां ड्रीहां पिरियुनि जो पचारो.
१) अदियूं मां थी ओरियां, सग्रो सूर सोरियां,
कटियल क़लबु कोरियां, आहे इश्कु आरो.
२) अचे कीन काहणु, थो चरिख़ो वहाइण,
सन्ही तंदु समाइणु, पसाइणु पसारो.
३) अञां हां अयाणी, न ब्रान्हीं न राणी,
उहा आ धयाणी, पसियो जंहिं नज़ारो.
४) मां कोझी हां कारी, निमाणी ऐं नारी,
खणे बार बारी, दराज़ी दुलारो.
५) लथो भउ आ भोलो, विझो छो थियूं रोलो,
हे मजरूह गोलो, रहे थो न्यारो.

## (१७४ मस्तान)

१) जे निम्रता सां हलीं नाहि ज़रूरत ढाल जी,
जे विद्या काफ़ी अथई नाहि ज़रूरत माल जी,
ज़े मधुर ब्रोलणु अथेई नाहि ज़रूरत जाल जी,
जे कयुउ आपो फ़ना नाहे ज़रूरत काल जी,
जे भरियलु कावड़ि सां आहीं घुरज दुश्मन जी न आ,
जे आहीं ब्रुलवानु काफ़ी घुरज जोभन जी न आ.

२) जे अथई संतनि जो संगु तां राज़ुधानी ना खपे,
जे अथई शांत हृदो सुर्ग़ुधानी ना खपे,
जे आहीं जाहिलु त बसि ब्री कारि शेतानी ना खपे,
राह हक़ में थीं फ़ना तां ब्री दोगानी ना खपे,
पर आहीं जे कूड़ सां फटिकारु घुरिजे कोन थो,
जे आहीं ग़ुणितियुनि में पुरि ब्रियो बारु घुरिजे कोन थो.

३) मन अंदरि मूरत अथई तां वसल जो नाहे ज़रूर,
जे आहीं तूं साफु साबितु ग़ुसल जो नाहे ज़रूर,
आह दिलि रोशन संदइ तां शुग़ल जो नाहि ज़रूर,
जे संगति बुछिड़ी अथई तां क़तल जो नाहि ज़रूर,
जे आहीं नेमनि ते पूरो कोन घुरिजे तबीबु,
जे अथई सीने में सचु तां कोन घुरिजे थो हबीबु.

४) जे आहीं ख़्यालनि खां आजो ग़ार जो नाहि ज़रूर,
जे ब्रियनि जो आहीं हासिदु ख़ार जो नाहि ज़रूर,
जे अदबु इख़लाक़ु अथई सींगार जो नाहि ज़रूर,
जे आहीं मोहन लाइ मस्तान बंदगीअ जी घुरिज नाहि,
जे न पर शेवा करीं तां ज़िंदगीअ जी घुरिज नाहि.

## (१७५ मलूक शाह)

जिनि मारूनि सो गुड़ुगुजारियुमि, से मारू विछिड़िया वतन.

१) खणी घड़ो हली खूह ते, जां ड्रिसां ओटी अचनि,

हथिड़ा खणी हकलूं करियां, मन वाहिर मूं विलही वरनि.

२) उमर अबाणे पार ड्डे, मींहं मुहबत जा वसनि,
वज़नि वारो वार कई, पखा पुन्हवारनि जा वसनि.

३) हिन क़ज़ा जे कोट में, उमिर बेड्डोहियूं बंदि ना कजनि,
महर पवेई मलूक शाह चवे, विछिड़िया मुहब मिलनि.

(2)

से साधूइड़ा भली आया, मुंहिंजे मन माणल वीर.

१) अखिड़ियुनि में आसनु ड्डेवां, घर घर घर ड्डेवां खीर.

२) हंस मोती मूंहं में, चुग़नि माणिक हीर.

३) जिनि ड्डिठिड़े मनु ठरे, सहाओ मंझि सरीर.

४) भूंइ जहिड़ा बारी पिरीं, साइल साइल सीर.

५) भौंत भञी शांत रहनि, पीअनि अमन रसु नीर.

६) मलूक शाह वेसाह सां, जिनि खे मिलुव शाह सुधीर.

(१७६ मेंघो)

नाहकु थी नादानु, वेठी पंहिंजी वाट विञाए.

१) काड्डहूं आएं काड्डहूं वेंदें, हिति ना हूंदे,
लोइ लड्डींदे संभरी करि सामानु, तुंहिंजो ड्डाढो तइजबु आहे.

२) हरस हवा में थीए हैरानी, दसे वेठ कीअं दीवानी?
मफ़लस वारी माम, तालिब, दुनिया तो मंझि आहे.

३) गंगा जमुना पंधु पुछाईं, दुनिया सां थी दिलि अड़ाईं,
कढु दोईअ जो दामु, क़ाबो काशी तो मंझि आहे.

४) मेंघा मुहबत मचु मचाए, परवानो थी पाणु पचाए,
बिरह करे बैरानु, वीरानु मुल्कु वसायो आहे.

## (१७७ मोहन)

उल्टो बिरह जो बारु, पधरि अची मां पेई आहियां.

१) मुल्कु सारो वयो विसरी दिलि ते सो दिलिबरु यारु, पधरि अची .

२) काथाहीं कीन अचे थो कोटनि मंझि क़रारु, पधरि अची ...

३) मोहन जो महबूब आहे, नींहं वारो निर्वारु, पधरि अची ...

## (१७८ मेवहि गर)

वञेई थो हाणे हलियो, वक़्तु यार विसाल जो,
ॿधु कमर होशियारु थीउ, सॾु थींदुइ जम काल जो.

१) बाक़ी दुनिया जा सज़ण साईं, ॾींहं अथई पंज चार के,
यार जोभन थो वञेई, छड्ड़ि ख़फ़त ख़ाम ख़्याल जो.

२) वतनु वेठीं तूं करे, ध्यानु दुनिया जो धरे,
फंदे में पाणेही फाथें, हैफ़ु अथेई हिन हाल जो.

३) रसनि रीझाए विधइ, हाणे कांइर तूं कीअं कंदे?
प्यारा अथेई पंधिड़ो परे, लहु पेरो तूं लाल जो.

४) मेवहि गर मनु मारि तूं, ॾेई जफ़ा जीउ जीयारि तूं,
निकिरी थी निर्वारु तूं, दीदार करे सिरी राम जो.

## (१७९ मदद अली)

छो झली अथेई झल में, ही पुर जी बंदियाणी,
ज़ुल्म ज़ोर कमु न ईंदइ, जोभन जवानी.

१) भटनि पासे झोपड़ा, जिति मिरट मंधियाणी,
कंगालिणि थे क़ैद कई, ज़ाणी सुज़ाणी.

२) मिठे मुल्क मलीर जी, ॿी ललर ऐं लाणी,
लोई लज़ायां कीनकी, असुलु अबाणी.

३) मदद अली चवे मारुनि जी, मूंखे सिक बि सामाणी,
मोकलि मलीर ॾे वञां, भरियां पिरियुनि जो पाणी.

## (१८० मन्ठार)

बिरहु खटी वयो सारी बादशाही, इश्क़ अक़ुल खे आहे गुमु कइड़ो.

१) इश्कु अक़ुल जे जंगि लगे़ हे, अक़ुल जी पलटण बेशक भगे़ हे,
शौंक़ु शहर में मुक़ररु थिअड़ो - इश्क़ अक़ुल ....

२) जड॒हिं मौज़ बहर सां मुहबत आई, पोइ ड॒ाहिप ड॒ेहीई जी थिअड़ी तवाई,
उन जो सारो ख़ज़ानो फरे नींहं नीअड़ो - इश्क़ अक़ुल ....

३) तख़्तु दलीअ जो क़ैदु कयाईं, ऐं नौकर चाकर साणु नियाईं,
साणुनि शरीकु न मतलबु ब्रिअड़ो - इश्क़ अक़ुल ....

४) चवे मन्ठार समिझो वे यारो, हालु हक़ीक़त साबितु सारो,
घर घर में पड़हो उनजे फ़तह जो पिड़ड़ो - इश्क़ अक़ुल ....

## (2)

जिनि जी मुहबत साणि मेहार असुल, जिनि जी मुहबत साणि मेहार,
वेंदियूं से दोस्त ड॒िसण दरियाह तरी.

१) पाड़े वारियूं रोज़ु पलींदें, महिणा ताना मूंहुं ते ड॒ींदें,
त बि जुठियूं तिनि जीवन कीन झलींदइ, करे जे ड॒मु ड॒मर ड॒हिकार तोड़े,
1
करे जे ड॒मु ड॒मरु ड॒हकार, त बि वेंदियूं साणि सचाई जे साह तरी.

२) सीसर वागू॒ कुननि क़हर, लखें बलाऊं घुमनि बहर में,
लधिड़ा मछ दरियाह लहर में, झूड़ि नांग खपर ख़ौफ़ दार तोड़े,
2
झोड़ नांग खपर ख़ौफ़ दार, त बि वेंदियूं साइर समुंड सांबाह तरी.

३) जिनि जी साहिड़ ड॒ांहु सचाई, तिनि खे लोड॒ो लहर न काई,
से वेंदियूं समन ते साइत साई, उहे झागे॒ कनि कारोंभार असुलु,
उहे झागे॒ कुन कारोंभार, वञी उकिरंदियूं आड़ाह तरी.

४) साहड़ साणी आहे उते जो, हूंदो सचो बिरह बहालु जिनी जो,
तौकल तुरहो तार में तिनीजो, वञी मिलंदियूं से मन्ठार असुलु,
वञी मिलंदियूं से मन्ठार, आहर साणि अल्लाह तरी.

## (१८१ मैया (माता कंदी ब॒ाई))

राधे श्याम, राधे श्याम, राधे श्याम, राधे श्याम.

१) बणियो अविद्या संदो संसारु आहे, राधे श्याम जो नालो ठारु आहे,
जंहिंजे जपण सां ब॒ेड़ो पारि आहे - राधे श्याम ......

२) ब॒ियो कूड़ो सज॒ो ही महा ज॒ारु, हिकु नामु ई सब जो आधारु आहे,
जंहिंजे जपण सां जय जय कार आहे - राधे श्याम ......

३) ब॒धी हथ मैया थी अर्ज़ु करे, पीउ प्रेम जो प्यालो ख़ूबु भरे,
पोइ मैल पापनि जी मथाऊं टरे - राधे श्याम ......

राधे श्याम ...... राधे श्याम ...... राधे श्याम ......

### (2)

तर्ज़ु : आहे सज॒णु मुंहिंजो आहे ....

थलु : हलो वृंदावन में काहे, जिते ड॒ाढो आनंदु आहे.

१) मिठी मुर्ली थो मोहन वज॒ाए, मन सभिनी जा थो हू लुभाए,
जंहिंजो मधुरु आवाज़ु आहे, हलो वृंदावन में काहे.

२) छड॒े ब॒ार ब॒चा सखियूं आयूं, खणी मेवा माल मिठायूं,
ड॒ाढो प्रेमु अणांगो आहे - हलो वृंदावन में काहे.

३) जिनि प्रेमु प्रभूअ सां पातो, तिनि कार्ज़ु पंहिंजो ज॒ातो,
तिन खे तारि बि तांघो आहे - हलो वृंदावन में काहे.

४) ईहो अर्ज़ु मैया जो आहे, छड॒ियो मालिक सां मनु लाए,
हीअ कूड़ी दुनिया सभु आहे - हलो वृंदावन में काहे.

हलो वृंदावन में काहे, जिते ड॒ाढो आनंदु आहे.

### (न)

## (१८२ नानक यूसुफ़)

तुंहिंजीअ तार तग॒ां तन मन में मुईअ जा मालिक तूं.

१) पन ब॒ोड़ीं पातार में, पहण तारीं तूं. तुंहिंजी तार तग॒ां ....

२) हैफ़ उनहनि जे हाल खे आहे, जेके भाइनि ड॒ूं. तुंहिंजी तार तग॒ां ....

३) हिंदू मुस्लिम हर मज़हब में, सही सुञातो मूं. तुंहिंजी तार तग॒ां ....

४) नानक यूसुफ़ ते यार सचल जा, महर जा हथिड़ा मथूं. तुंहिंजी तार तग़ां ....

(2)

ग़ाफ़िल बंदा छो थो गुज़ारीं, आहे त गुज़र जो मकानु.

१) जोग़ी आहिनि पंहिंजे जोइ में, वेठा रीझाइनि रामु.

२) मुलां वे क़ाज़ी विचि मसीतां, वेठा पढ़हनि क़ुरानु.

३) नानक यूसुफ़ यार दा, ब़ाँहुनि ब़धा त ग़ुलामु.

## (१८३ नेवंद)

मुंहिंजा मन कबूतर, मुंहिंजी दिलि कबूतर.
हथनि सां हाज कई करि, पेरनि सां पंधुकयो करि,
कुल्हे ते वार धरिया करि, नेणनि सां नाटु कयो करि,
धणीअ जा गुन ग़ाया करि, मुख सां नामु जपियो करि,
वात सां ग़िटि ग़िटि कई करि जानीअड़ा,
तोखे नेणें जादू लाया यार नेणें जादू लाया.

१) एक गली में नांग है कहरी, दूजे गली में चूहा,
राह मुसाफ़िर मारियो वेंदें, हइ हइ तैं न कीता,
मुंहिंजा मन कबूतर, मुंहिंजी दिलि कबूतर....

२) तूं मुंहिंजो जानी, आऊ तुंहिंजी ब़ान्ही,
तोतां करियां सिरु क़ुर्बानी, रमज़ चङी ड्रेखारि,
मुंहिंजा मन कबूतर, मुंहिंजी दिलि कबूतर....

३) तूं मुंहिंजो मालिकु, तूं मुंहिंजो ब़ालकु,
तूं प्रित पालकु, दिलि में धीरजु धारि.
मुंहिंजा मन कबूतर, मुंहिंजी दिलि कबूतर....

४) नेवंद आहे तो दरि सुवाली, तंहिंखे मूर न छड्रिजि ख़ाली,
साईंअ जे आधार भोले जे आधारि.
मुंहिंजा मन कबूतर, मुंहिंजी दिलि कबूतर....

## (१८४ नबन)

भली आएं भूरल प्यारा, मरु लोक ड्रिसे जग़ सारा!

१) राज़ तुंहिंजे मां रंगु जो लग़ियो, खिलियो आहे गुल गुलज़ार.

२) दीननि तुंहिंजनि दूंहाँ दुखाया, आणे अद्रियासी अवतारा.

३) सिकंदे सिकंदे साल लंघे विया, नेणनि मूं वहनि नारा.
४) नवां नींहड़ा लातइ यार ॼबॼ सां, सूरत जा सरदारा.

(2)

को दमु गडु गुज़ारि, दमु न थी तूं धार दिलिबर.
१) नालो बुधी मां नींहड़ो लातो, तुंहिंजी त पचार दिलिबर.
२) गोल्हे फोल्हे यार लधोसी, नेणें करे निर्वार दिलिबर.
३) सही सुञातोसे साग्रियो सरहो, गोली थी त गुज़ारि.
४) नालो ॼबॼ तुंहिंजो, अर्श में आहि इज़हार दिलिबर.

## (१८५ निमाणो)

तुंहिंजे दर ते हे सचा साईं करियां थो अर्ज़ु मां,
ड्रे सुमति साहिब सची, शल क़ौल ते क़ाइमु रहां.
१) लोभु लालच ऐं दग़ा दोलाब खां दाता बचाइ,
करि इहा आसीस मां निश्कामु थी शेवा करियां.
२) दर्द मंदनि लाइ दिलि में दर्दु शल पैदा थिए,
ग़मज़दनि जो ग़मु ड्रिसी ग़मुख़्वार शल तिन थो थियां.
३) तुंहिंजी सभु मख़्लूक़ सां, छो भेदु पंथनि जो रखां?
प्यार सब कंहिं लइ सचो दिलि जे अंदरि दिलि में धरियां.
४) मां निमाणो आरज़ू आ ईश्वर मुहिंजी इहा,
सिरु वञे सेवा कंदे, शल सिरु ड्रेई सरहो थियां.

(2)

ईश्वर दरि दाइमा आर्ज़ू हीअ आ मुंहिंजी आर्ज़ू,
हिर्स होसनि खां पलउ मुंहिंजा बचाइबि चारि सौ.
१) उमिरि सारी आहि ग़फ़्लत में विञाए मूं छड्री,
करि दया दाता बचाइजि हाणि मुंहिंजी आबिरू.
२) बुदि बुदे पाणीअ मिस्ल आ हीअ सज़ी जीवति संदमु,
ख़ल्क़ ख़िज़िमत में लग्रायां आऊ ड्रसु ड्रे रूबरू.
३) कूड़ वारी कल्पना ते हिर्खिजी हैरानि थी,
बेवफ़ा बणिजी कई मूं कीन सच जी जुस्तजू.
४) हाल इन ते लुड़क हारण अज़ु निमाणा नेण था,
तार मां करि पार तारणहारु आहीं तूं ही तूं.

## (१८६ नूरी)

लुत्फ़ सां पारि लंघाइजि ब्रेड़ीअ वारा!

१) ब्रेड़ी तुंहिंजे ब्राझ जी, अवगुण तूं न विचारिजि.
२) पतणु अथमि कीनकी, निधर निमाणी न विसारिजि.
३) तिखियूं लहरूं तेज़ लगनि थियूं, महर में मोजी विहारिजि.
४) ककर कारा तूफ़ान तिखेरा, पइज तूं हे पारिजि.
५) पंध करे मां थकी आहियां, रहम जो पाणी पीयारिजि.
६) नूरी निमाणी हिकु आसरो तुंहिंजो, पोरि बंदरु पहुचाइजि.

## (2)

ग़ली ग़ली अथमि तो लइ ग़ोली.

१) शाम प्यारा, नींहं न्यारा! ग़ली ग़ली अथमि तो लइ ग़ोली!
ग़ली ग़ली ...
२) लोक लज़ा सभ लाहे लाहे, झली अथमि त झोली झोली,
ग़ली ग़ली ...
३) रहिमान अची आ! अंदर अंदर, मुंहिंजी ग़फ़लत जी ग़ंढ खोली खोली,
ग़ली ग़ली ...
४) प्यास जे पींघे विचि दिलि मंदर, तस्वीर तुंहिंजी ड्रियां लोली,
ग़ली ग़ली ...
५) क़ौल क्यमि जे अजीबनि अघायां, से पारियां, थियां तुंहिंजी गोली गोली.
ग़ली ग़ली ...

## (3)

बख़्श मड़ी तक़सीर!

१) ब्रेड़ी मुंहिंजी त आहे पुराणी, पेई लुड़े सा विच सीर - बख़्श ...
२) कर्मु न ज़ाणां, धर्मु न ज़ाणां, ड्रिसु अंदर तूं इक उकीर - बख़्श ...
३) क़सूर मुंहिंजा त जबलनि जेड़ा, पर फ़राक़ तुंहिंजी कयो आ फ़क़ीर - बख़्श ...
४) ना कोई राजन आऊ सुज़ाणां, तूं इक मुंहिंजो शाह उमीर - बख़्श ...
५) रोज़ पुकिरायां साजन तोखे, रोज़ वहायां अखियां नीर - बख़्श ...
६) ग़ोड़हा मुंहिंजा तोखे ग़ाइनि, आ! महर में भज़ अची ज़ंजीर - बख़्श ...
७) माफ़ी ड्रे बिखारी नूरी, हिनि दिल में अथेई दर्द जा चीर - बख़्श ...

## (4)

ढोलण जा वेठा ढोल बजायूं!

आया आहियूं परे परे खां, यार मुसाफ़िर हितिड़े हितिड़े! ढोलण जा ...

१) धामु असांजो जिति जोति अबिनासी, हितिड़े फिरूं पया बेराग़ी उदासी,
प्यारल जा पिया पंध पुछायूं!

२) यादिगिरियूं रोज़ु अचनि थियूं, नींहं सितारूं रोज़ु नचनि थियूं,
दर्द जा दूंहां वेठा दुखायूं!

३) धाम असांजे ना सिजु चंडु चिमिके, महबूबनि मुखड़ो इक उति मुश्के,
हिति बिरह जूं बाहियूं वेठा मचायूं!

४) हितिड़े अखियुनि आहे इन्तज़ारी, तस्वीर तुंहिंजी आहे नूरी निहारी!
कुर्ब जे करोस ते कंधु कपायूं!

## (5)

मां पांधु ग़िचीअ में पायां!

आऊं गोली तूं साजनु साईं, पांधु ग़िचीअ में पायां पायां! आऊ ...

१) कुर्ब जे कोठीअ में वेही वेही, इक सूरत तुंहिंजी ध्यायां ध्यायां!

२) गलीअ गलीअ में फिरंदे फिरंदे, वाट तुंहिंजी आऊं पुछायां!

३) पंखी उड़ामे या पुष्प उझामे, इक तुंहिंजो नामु ई ग़ायां ग़ायां!

४) राति अची नेण नेण नची, तस्वीर तुंहिंजी लिङनि लग़ायां!

५) मुंहिंजे पखनि इक वार अचीं तूं, ज़िंदह जोति, जोति जग़ायां!

६) मींहं जी मुंद त मोटी आई, वेठी दर्द जा दूंहां दुखायां!

७) नूरी आब अखियुनि में आणे, जाग़ी जाग़ी मच मचायां!

## (6)

हुजां शाल हरिदम पिरियुनि जे पनारे, रहां शाल दमि दमि कुर्ब जे किनारे.

१) रखां शाल मां हीअ दिलिड़ी निमाणी, प्या प्रित सीं मां पिरींअ दर जो पाणी.

२) सिक सीं सज़ण खे सदाईं संभारियां, उञायल अखियुनि सीं निति नऊं निहारियां.

३) नूरी निमणी न दरु शल विसारे, पंहिंजे रूबरू शल, पलि पलि विहारे.

## (7)

तो दरि मंगता लख हज़ार, आऊं बि लालण इकु फ़क़ीरु!

१) तो लइ लोक लज़ा सभु लाथमि, तो लइ अखिड़ियूं मंझि उकीर!
तो दर ...

२) रोई रोई राति गुज़ारियमि, बख़्श तूं मुंहिंजी तक़सीर!
तो दर ...

३) तो बिनु ना ब॒ियो कोई सुञाणां, तूं इकु मुंहिंजो शाहनु पीरु!
तो दर ...

४) दर जी ख़ाक ड॒े ख़ादिम खे, थी नूरी निमाणी वहाए नीरु!
तो दर ...

## (१८७ वासुदेव निर्मल)

अला! मूं नथा विसरनि सिंधु जा नज़ारा,
सखरु साधि ब॒ेलो, सिंधूअ जा किनारा.

१) हसीनि हैदर आबाद, चंचल फुलेली.
कराची मन्होड़ो भुलां कीअं मां ब॒ेली,
अखियुनि आड॒ो आहिनि से पल पल पसारा, अला! मूं न था विसरनि ...

२) खंजियूं छाहियूं, खुंभियूं, कतल ऐं मितेरा,
उहे ब॒ेर, पेरूं ऐं ब॒ुरी पाब॒ोरा,
भुलां फारूआं कीअं से मिठिड़ा ऐं कारा, अला! मूं न था विसरनि ..

३) हू कूंजुनि जूं कीहूं, हू मोरनि जूं मस्तियूं,
उहा कोयल जी कूं कूं ऐं ग॒ेरनि जी ग॒टि ग॒टि,
ग॒णियां कहिड़ा कहिड़ा पखीअड़ा से प्यारा, अला! मूं न था विसरनि ...

४) मसीतियूं मंदर से क़ुबा ऐं मड़िहियूं से,
दड़ा देवल्लियूं से, भटूं ड॒ेवरियूं से,
अलग॒ि धर्मु हूंदे, सिंधी हिकु हा सारा, अला! मूं न था विसरनि ..

## (१८८ न्याज़)

१) गुल ऐं बुलिबुलि में आ झग॒िड़ो त चमनु कंहिंजो आ,
नाहि कंहिंजी बि ज़मीन ऐं न अदनु कंहिंजो आ,

नाहि कंहिंजो बि अजमु ऐं न अदनु कंहिंजो आ,
नाहि कंहिंजो बि यमनु ऐं न ख़तनु कंहिंजो आ,

याने अक़िबा खां सवाइ कोन वतन कंहिंजो आ,
गुल ऐं बुलिबुलि में आ झग॒िड़ो त चमनु कंहिंजो आ!

२) ए सबा चउ वञी बुलिबुलि खे त करि कुझु त हया,
आशिक़ु गुलु थी लड़ीं गुल सां इहा चइबी वफ़ा?
पंहिंजे दिलिबर तां थो आशिक़ु त करे सिरु बि फ़िदा,
ज़ा अजबु नाहि जो हीअ ग़ाल्हि हले पेई हरजा?
गुल ऐं बुलिबुलि में आ झगिड़ो त चमनु कंहिंजो आ!

३) ए सबा गुल खे बि समुझाइ जो महिमानु आहे,
आशियानो जे खणीं बुलिबुलि बि बणायो छा आहे?
सैर लइ आहि चमनु कंहिंजो को वरसो नाहि,
शल गुलीचीनि ब्रधी हैं पए न चमन में काहे,
गुल ऐं बुलिबुलि में आ झगिड़ो त चमनु कंहिंजो आ!

४) था चवनि आई इझा ज़ाणु गुलस्तान में ख़िज़ा,
वेंदी बुलिबुलि बि लड़े जा थी करे शोरु व फ़ग़ां,
नाज़नीन गुल जो त रहंदो न तड़हिं नाउं निशानु,
अजु त काविड़िजी थियो लाल चयो ख़ोरद व क़लां,
गुल ऐं बुलिबुलि में आ झगिड़ो त चमनु कंहिंजो आ!

५) फ़र्ज़ु बुलिबुलि ते आ गुल साणि करे अजज़ु व न्याज़ु
गुल बि राज़ी थी रखे इन ते सज़ो पंहिंजो राज़ु,
उमिरि गुल जी थिए बुलिबुलि जे दग़ा साणु दराज़ु,
केरु पोइ चवंदो त ही पाण में आहिनि नासाज़ु?
गुल ऐं बुलिबुलि में आ झगिड़ो त चमनु कंहिंजो आ!

(2)

जेको यारु रहे याक़ी, तंहिं यार खे कबो छा?
बेदर्द ऐं दुरंगे दिलिदार खे कबो छा?

१) अहिड़ो हुस्नु कबो छा जेको आहे टोह वांगे?
बेक़दुरु बे वफ़ा जे सींगार खे कबो छा?

२) इंज़ामु क़ौल वाइदा पाड़े न थो जो हरिगिज़,
हर हर तुंहिंजे कूड़े इक़रार खे कबो छा?
३) हुजत हले न जिनि सां तिनि सां कजे हमेशह,
मतलब त न्याज़ निवड़त तकिरार खे कबो छा?

## (१८९ निहचलु)

आऊ त प्यारा पती खेड़ूं वेही विच बाज़ार - वो शल जीवें.

१) यके सां तूं प्रीति लग़ाई, बादशाह खां तो दिलि बतलाई,
राणी तोखे रोह रुलाए, गोलो थी त गुज़ारि - वो शल जीवें.
२) दुहिले खे तूं रखु ड्डोरीअ में, अठी नउली झलि झोरीअ में,
सत्ती सतु संभारि 6 - वो शल जीवें.
३) छुके चौंकी आहे साफ़ी, पंजे खेतूं कडी हणु काती,
टकीअ सां तूं पाइजि झाती, ब्रिकीअ खे वञी ब्रारि - वो शल जीवें.
४) चवे निहचल जेको रांदि पछाणे, मन अंदरि सो मोजूं माणे,
छोह अंदरि मूं कढु तूं छाणे, निर्मल नूरु निहारि - वो शल जीवें.

## (१९० नूर मुहमद)

१) यादि वारनि खे विसारीं यार छो?
ग़मज़दनि सां गडु न घारीं यार छो?
२) जे पतंगु जीअं प्रित पंहिंजीअ में पचनि,
तूं न तिनि सां प्रित पाणीं यार छो?
३) हुब मां आं वटि हली जे था अचनि,
दर मथां तिनि खे धिकारीं यार छो?
४) जे मुआ मारण अव्हां जे खां अग़े,
मुफ़्तु मोटी तिनि खे मारीं यार छो?
५) हुब तुंहिंजे में हंयल हैरान जे,
दुश्मनी तिनि साणि धारीं यार छो?

६) मूंहु ड्रिसण लइ मस्तु मांदा था मरनि,
वसल खां वांजे से वारीं यार छो?
७) नूर मुहमद जे निमाणे हाल ते,
कीन नरमीअ सां निहारीं यार छो?

(2)

खसे दोस्त दिलिड़ी, धतारे हलियो वयो,
करे क़ौल पंहिंजा, विसारे हलियो वयो.
१) कयो कोन दारूं फटी दिलि जो दिलिबर,
वसल जे कमान ई विहारियूं हलियो वयो - खसे ....
२) कयो कोन को क़ुर्बु दिलिदार मुईअ सां,
रुगो हुस्नु पंहिंजे ड्रेखारियूं हलियो वयो - खसे ....
३) साक़ी कोन आंदो भरे जामु कोसर,
प्यालो प्रित जो पीयारियूं हलियो वयो - खसे ....
४) नज़र नूर मुहमद तेथी दिलिबर हा,
ग़मनि जा सभेई बार चड़िहियूं हलियो वयो - खसे ....

## (१९१ नूरल)

१) जोग़ीअड़नि ओ पीतो जामु, मस्तु रहिया मख़मूर मुदामु,
घाटो गहिरो गुरुअ प्यारे, गारोड़नि खे कयो गुमनामु.
२) सुरकी पी से सामी सनरा, बनिया बेराग़ी जे बसि बनरा,
चोरे चंगिड़ा केनर कनरा, रावल रीझाइनि था रामु.
३) लाहूती अध राति लीलाइन, पिर में पंहिंजो पाणु पचाइनि,
जोग़ अंदरि जिंदु जानि जलाइनि, खाइनि ख़ुदीअ खे सुबुह ऐं शाम.
४) पूरबु परिया चोता चाड़हे, हाज़कु हलिया हेजां हाड़े,
कीन कंवाट कंबाया काड़हे, आयनि उञ बुख में आरामु.
५) नूरल नांगनि खे नींहुं नवायो, बेवस तिनि खे बिरह बनायो,
वेराग़िनि वीरानु वसायो, अलख आदेसियुनि थियो इनामु.

## (व)

## (१९२ वरंद)

ड्रेह खे ड्रातार ड्रिनियूं, अखिड़ियूं ड्रिसण वास्ते,
मां भांयों मूंखे मिलियूं, रुगो रोइण वास्ते.

१) से चुमी चश्मे धरियमि, पीउ माउ खां जे मिलियमि,
ड्राज में ड्रुखनि संदी, ड्रोली सुम्हण वास्ते.

२) दर्दु मूं दर्दीअ जो, दिलिदार दिलि लाइ ब्रुधो,
कांध तोखे कन मिलिया, कूकनि सुणण वास्ते.

३) मां उञारो थो मरां, मालिक मूंते का महिर करि,
वसल वारो पुर करे, ड्रे प्यालो पीअण वास्ते.

४) वरंद वाणियो ऐबनि हाणो, बिरह जी बीमारीअ खूं,
अचु पिरीं पेरा भरे, प्यारल पुछण वास्ते.

(2)

ड्रिनी तो ड्रुखनि जी लोली अमां, ब्री कान ब्रुधायइ ब्रोली अमां.

१) तुंहिंजो सुरु त मिठो हो सदोरो हो, पर मुंहिंजे लेखे निदोरो हो,
माण्हुनि लेखे हिंदोरो हो, इहा मूं लइ ड्रुखनि जी ड्रोली अमां.

२) वञी ज़ाती पाक ज़हीरनि ते, केड्रा पेर भरियां हैइ फ़क़ीरनि ते,
करे ब्राझ मंझां पंदु पेरिनि ते, मुंहिंजे काणि झलीअ झोली अमां.

३) वरंद चवे कंहिंखे ड्रोहु न ड्रियां, मां त पंहिंजे नसीबनि ते थी रोआं,
धणीअ दरि रोज़ु इहो सुवालु करियां, कंदो अवलीअ मां ईहो सवली अमां.

## (१९३ वफ़ा)

जेसीं जान में बाक़ी दमु रहंदो, दिलि में विछोड़े जो ग़मु रहंदो.

१) हीअ आहे आगि उहा मन जी, हीअ आहे उछल उमंगनि जी,
रोकण सां भी रुकिजी न सघे, पुठिते मुंहिंजो क़दमु रहंदो, जेसीं जान ...

२) हीअ आगि अंदरि भड़िकी उथंदी, दिलि जोश मंझां फड़िकी उथंदी,
हीऊ ज़ुल्मु सितम वारो आलमु, दाइमु न इहो सालिमु रहंदो, जेसीं जान ...

३) पोएं पहर ताईं मां निहारींदसि, बिना तेल ड्रीओ ई ब्रारींदसि,
वटि सोरे वफ़ा पेई सोरींदसि, दर तो लइ पटियो हरिदमु रहंदो, जेसीं जान ...

(2)

तुंहिंजो शहंशाही शानु सुहिणा यार,

तुंहिंजो ई नूरु आहे ज़ाहिरि ज़हूरि आहे,
सूंहं तुंहिंजी आ सुबहानि - सुहिणा यार.

१) अखिड़ियुनि में बान सुहिणा, अबरू कमान सुहिणा,
तुंहिंजो ई नूरु आहे ज़ाहिरि ज़हूरि आहे,
नींहं तुंहिंजे चिटियो निशानु - सुहिणा यार.

२) नेणनि में केरु निहारे,
मुख मां थो केरु पुकारे?
ब़ोले थो केरु अंदरि में तड़िफे थो केरु जिगर में?
सभ में आ रूपु तुंहिंजो, रूपु अनूपु तुंहिंजो,
दिलि में आ तुंहिंजो आस्थानु - सुहिणा यार.

३) शाहन जो शाहु आहीं, मुश्किल कशाह आहीं,
रहिबर ऐं राह आहीं, माहिरु मलाहु आहीं,
तूं ई पतिवार मुंहिंजो, तूं ई आधारु मुंहिंजो,
तूं ई मुंहिंजो निगहबानु - सुहिणा यार.

४) गुल में वफ़ा ख़ुशबू तुंहिंजी,
रंगति न्यारी हर सू तुंहिंजी,
क़ुदरत जी आबरू तूं, बुलबुल जी जुस्तजू तूं,
हुसुनु कमालु तुंहिंजो, जल्वो जमालु तुंहिंजो,
हुसुन तुंहिंजे कयो हैरानु - सुहिणा यार.

## (3)

धन जे धुनि में मूर्ख वेठें भुलिजी तूं भग़वानु,
रांदीकनि सां दिलि रीझाईं ब़ारु बणी नादानु.

१) परमेश्वर जो समुझी धन खे, नष्टु कंदो पंहिंजीअ जीवन खे,
धन जो आहि ख़ज़ानो मन में, धरतीअ में धनु धूड़ि समानु.

२) ग़रज़ ग़रीबीअ वारी ज़ाणे, मुफ़्त रुग़ो मोजूं थो माणे,
तूं त नफ़े जे आहि नशे में, ब़े जो भले थे नुक़्सानु.

३) कारि इहा कासाई वारी, चऊ तोखे हीअ कंहिं सेखारी?
उन ब़करीअ तें कातु हलाईं, जंहिंजे मुख में नाहि ज़िबान.

४) हिक वरिसे ब़े जी पइमाले, हिक किंगरी भरिजे ब़ी ख़ाली,
ब़े जे संकट में थो समुझी, पंहिंजो सुखु सौमानु.

## (4)

मुंहिंजी गुल फुल राणी आई रे, मूंखे वसल जी डियो वधाई रे,
मुंहिंजी गुल फुल राणी आई रे.

१) जंहिंजी चोटी में तेल फुलेल रहनि, टांगर मोगरा राबेल रहनि,
छा इतर हुअ छिटिकाए थी, आ छाई अजब सरहाई रे, मुंहिंजी ....

२) जंहिंजे अखिड़ियुनि मां मेघ मलार वसनि, निति अम्रत जा वस्कार वसनि,
अजु मन जी मुखड़ी महिके थी, डाढी बाग़ बहारी छाई रे, मुंहिंजी ....

३) छा हिन जे छुहण में जादू आ, थो तन में लगाए खूबु लक़ा,
नज़ुरनि में वफ़ा छा आहि नशो, दिलि मस्ती में लहिराई, मुंहिंजी ....

## (5)

ओ मुंहिंजा परदेसी प्रीतम तुंहिंजी यादि सताए थी.

१) मस्त हवा जे लहरुनि में जीअं कली कली लहराए थी,
जीअं गुलशन जी गुलकारीअ में ख़ुशबू खेल रचाए थी,
ओ मुंहिंजा परदेसी प्रीतम तुंहिंजी यादि सताए थी.

२) जीअं रंगीन गुलनि जे चौधारि बुलिबुलि फेरा पाए थी,
मस्तीअ जे अलम में पेही प्रीत जा नग़मा गाए थी,
ओ मुंहिंजा परदेसी प्रीतम तुंहिंजी यादि सताए थी.

३) जड़हिं वफ़ा तारनि जी महिफ़ल अर्श ते टिमिटिमि लाए थी,
नरम नरम जलिवनि सां जीअं चांडोकी मनु मचिलाए थी,
ओ मुंहिंजा परदेसी प्रीतम तुंहिंजी यादि सताए थी.

## (6)

छेरुनि जी छिमकार करे तूं झिरिमिर झुमिरियूं पाए विएं,
रासियूं ख़ूब रचाए विएं ऐं मेला कंवर मचाए विएं.

१) अजु बि हल्की हल्की आहट तुंहिंजे पेरनि जी गूंजे कन में,
सन्हड़ा, सरल, मिठा ऐं मिठा सुर ऐं साज़ बुरनि था मन में,
अमृत रसु बरिसाए विएं ऐं रूहनि में रिमिझिमि लाए विएं.

२) तो बिनु वेसाखियूं वेगाणियूं, तो बिनु रूअनि था बहिराणा,
कछ में लालु खणी माताऊं पेयूं निचोइनि नेण निमाणा,
पलउ गिचीअ में पाए मिठिड़ियूं लोलीयूं साईं गाए विएं.

३) कडी कुननि मां बुड़ंदड़ बेड़ा केई पारि उकारियइ साईं,

महुताजनि ऐं मिस्कीननि जा बिगिड़ियल कार्ज सवांरियइ साईं,
पीड़ा पराई पंहिंजी समुझी, झट में सूर समाए विएं.

४) असुली भगवानु हुएं जगत में भगतु बणी तूं आएं,
हुएं त निर्मल नूरु वफ़ा छो बुत जो बारु खणी तूं आएं,
इन्सानी जामे जे अंदरि अजब जी जोति जरकाए वएं.

## (7)

मूंहुं मूमल जो महबूबाणो लगंदो आ,
हिन जे साम्हूं चंडु पुराणो लगंदो आ.

१) डंदु डंदु मोतीअ जो दाणो लगंदो आ,
हिन जो हथु मखण जो चाणो लगंदो आ.

२) संदसि नशीला नेण डिसी थी निंड अचे,
जिस्मु गुलनि जो नरमु विहाणो लगंदो आ.

३) जड़हिं चपनि सां हिन जो चहिरो लातो थमि,
मिठो मिठो ज़णु माखीअ हाणो लगंदो आ.

४) हिन जी हिक हिक मुर्क लखनि जे मटि आहे,
अर्बनि जे मुल हिकु हिकु माणो लगंदो आ.

५) दावपेच सभु ज़ाणे दुनियादारीअ जा,
गर्चु वफ़ा मइसूम निमाणो लगंदो आ.

## (8)

मुंहिंजा कामिल यार मलाह, ब्रेड़ी मुंहिंजी पारि लगाइ.

१) आई आहियां तुंहिंजे द्वारे, पयड़ी आहियां साईं तुंहिंजे पनारे,
तूं ई वसीलो तूं ई वाहु - मुंहिंजा कामिल ....

२) तूं ई दाता दावरु आहीं, मुंहिंजे सुखनि जो सागरु आहीं,
तूं ई मुंहिंजी पुश्तु पनाह - मुंहिंजा कामिल ....

३) मूं में आहिनि लख बुरायूं, मुंहिंजूं अची ढकि ढोल ढिलायूं,
बख़्श बदियूं सभु ड्रोह गुनाह - मुंहिंजा कामिल ....

४) दुखु भी छलु आ ऐं सुखु छाया, जूठी वफ़ा हीअ जग जी माया,
तूं ई सचो हिकु शहंशाहु - मुंहिंजा कामिल ....

## (9)

'धीरजु धरि मन खेदु न करि, मन दांहं न करि, मन आह न भरि.'

कष्ट कशाला कटिबा वेंदा, हिकु हिकु थी, हिकु हिकु थी,
दर्द ख़ुशियुनि में मटिबा वेंदा, हिकु हिकु थी, हिकु हिकु थी.

१) ख़ुश्कु ख़िज़ाऊं पूरियूं थींदियूं नेठि बहार बि ईंदा,
मुखिड़ियूं अजु जे आतियूं आहिनि आख़िरि गुल भी थींदा,
पोश कलियुनि जा पटिबा वेंदा, हिकु हिकु थी ....

२) कंडनि जे सेजा ते पुष्प परियूं बि लेयिटल आहिनि,
ककरनि जे आंचल में किरणा भी त समेटियल आहनि,
ग़म जा बादल घटिबा वेंदा, हिकु हिकु थी ....

३) मुर्की मुर्की लुड़क, वफ़ा अखिड़ियुनि में पी जे वेंदें,
राहुनि जे घटि घेरनि खां तूं वाक़्फु थी जे वेंदें,
पत्थर पाणेही हटिबा वेंदा, हिकु हिकु थी ....

## (10)

ओ हूअ जा वणिकार ड्रिसीं थो उहो थी वतनु मुंहिंजो,
उहो थी वतनु मुंहिंजो, उहो थी चमनु मुंहिंजो,
ऐं हूअ कुरिईंदड़ कूंजनि संदी क़तार ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

१) पोयाड़ीअ जो पट ते वेही ग़ाइनि था ड्रिसु काफ़ी ड्रेही,
सिड्रियूं सुरंदा सारंगियूं मटिका यकितारा ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

२) खबड़ खजियूं ऐं अक ड्रिसीं थो टकरनि विचमां लक ड्रिसीं थो?
पटनि मथां करहा ऐं कजावा ऐं कोहियार ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

३) डूरि ड्रिसीं थो छनाउपर हो, परियां वछेरनि संदा वग़र हू,
विच वारीअ में वहंदा हो नेसारा नार ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

४) धूणनि था सर संग संहिरा पेहे ते पेही ड्रियनि था पहिरा,
खेतनि में खिलणियुनि जे खिल खिल ऐं खीकार ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

५) जिति मेंदीअ जी महक अचे थी जिनि ड्राड़ुहुनि जी लाम नचे थी,
कोणियूं कुम ऐं केसू फुल हू लवा लियार ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

६) हूअ मोरनि जी राड़ ब्रुधीं थो राड़ूं हीऐं फाड़ ब्रुधीं थो,

थर जे पोठनि ते वारीअ जी हूअ वसिकार ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

७) जिनि सांगियुनि सां जन्मु गुज़ारियुमि तिनि खे अजु ताईं न विसारियुमि,
अमड़ि अबे जी ख़ाक खथोरी ख़ुशुबूदारि ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

८) वेड़िहेचिनि सां मन वागियलु थी साह वफ़ा तिनि साणु सुबियलु थी,
सरलु सब्रुझा सिक वारा मारू मंठार ड्रिसीं थो?
उहो थी वतनु मुंहिंजो?

## (१९४ विशिनदास)

मां त लेखे कीन छुटां थी, करि को फ़ज़लु ग़रीबनि ते.

१) अचण लाइ त अजीबनि जे पेरें पंधिड़ो, करे न पुज़ां थी.

२) पंधु करण जी ताक़त न आहे, पिरीं छूट करीं त छुटां.

३) विशनदास जो वसु न चले थो, मां त ख़ुशि थी कान घुमां थी.

## (ह)

## (१९५ हेमन)

वाह वाह तुंहिंजी सुहिणी सूरत, दिलि में दूद दुखाया मच मचाया.

१) आश्क़ु होवनि इश्क़ु कमावनि, सिर तलीअ ते चाया,
दूद दुखाया वाह वाह तुंहिंजी ....

२) दीद दिलिबर जी किया दीवान, कोड़ियुनि कंध कपाया,
दूद दुखाया वाह वाह तुंहिंजी ....

३) दर्द रखीं दिलिबर दिलि विच, ब्रिया सभु पंध अजाया,
दूद दुखाया वाह वाह तुंहिंजी ....

४) इश्क़ु जंहीं विच ख़ीमा खोड़िया, मास जिगर दा खाया,
दूद दुखाया वाह वाह तुंहिंजी ....

५) हेमन थीऊ तूं सदिक़े उन्हां तूं, जिनि आपे नींहड़ा लाया,
दूद दुखाया वाह वाह तुंहिंजी ....

## (2)

विसर गई तड़िहां कार कतण जी, जड़िहां जानिब झाती पाती,
आहि दिलि फाथी - विसर गई ....

१) दिलिबर दा नाहे कोई सानी सूरत साफु सुञाती,
आहि दिलि फाथी - विसर गई ....
२) रोज़ अज़ल खूं यार असां सां ड्राढी लंवरी लाती,
आहि दिलि फाथी - विसर गई ....
३) वेखियमु जल्वो यार हादी दा ला वारे वही काती,
आहि दिलि फाथी - विसर गई ....
४) अदा आशिक़नि कयो असलु खूं रोइण रड़ण दनि ते,
आहि दिलि फाथी - विसर गई ....
५) गुण हेमन तुंहिंजा हरिदमु ग़ाईंदो जो दमु दोस्त हयाती,
आहि दिलि फाथी - विसर गई ....

(3)

उथी जपि तूं रामु रामु, निर्मलु सोई नामु नामु.
१) निंड निभाग़ी तोखे निहूड़ियो, सुबह सुम्ही शाम शाम.
२) कुटुंब क़बीला कहिड़े कम जा, दौलत दारा धाम धाम.
३) प्रभात वेले पाण पछाणिजि, ख़ियाल कढी सभु ख़ाम ख़ाम.
४) हेमन चवे हाणि हरी, शरण पकड़ि शाम शाम.

## (१९६ होतचंद)

हरि जो रखु उनजो सिखु ज्ञानु, ज्ञान ध्यान धारां कंदें पंहिंजो ज़ियानु.
१) जीवत आहे थोरी रखीं ना थो झोरी, लग़ई कहिड़ी लोरी विसारियुइ भग़वानु,
हरि जो रखु ........
२) पंहिंजा ज़ाणी जेके तुंहिंजा मूरि न सेई, मतलब जा मिड़ेई, फिटो करि अज्ञानु,
हरि जो रखु ........
३) आहीं हिति मुसाफ़िरू, रहिणो नाहे कीथर, फ़र्क़ नाहे तंहिं में तिर, थोरा ड्रींहं महिमानु,
हरि जो रखु ........
४) पीइज गुरु जे पक सची रखी सिक, वञ्ञी ड्रिजांइ तक खिड़ी पवंदइ भाणु,,
हरि जो रखु ........
५) दिलि सां सुणु फ़क़ीर सची रखु उकीर, माफ़ी थिए तक़दीर मिलेई **होत** मान,
हरि जो रखु ........

## (१९७ हरोदास)

उथी जागु जानी, छड्डे पशेमानी, हैरत हुलु हुलायो, अथई जहानु फ़ानी.

१) ड्रिसण में अचनि पिया सरूप सभेई खोटा, जागिरति जागी जग्त में, झुलीं छोन जानी.
२) पुट मित्र ज़ाल, सभेई घुरनि माल, छड्राए कोन कालु, वेंदइ राज़धानी.
३) हलिया वया पैग़म्बर, जिनीं जे मथां पर, छुटा कीन ओसर, ज्ञानी विया ध्यानी.
४) जपियो रामु जिनि जीअ, लहंदी तिनि मथां पीह, दास वछल स्वामी मङजि महरबानी.
५) सन्तनि सुमति पाती, कंहीं विरले ज़ाती, खणिजि वीचार काती, ना हरीदास जानी.

## (2)

सदाईं मन जो मानु वेही भञु, चंचल मन इन्द्रियुनि खे तपाए.
१) धीरज घर में ध्यानु रहे थो, सो अथई सनतनि जे संगि.
२) पूरी न तृष्ना कंहिंजी जग़, पूरन अथई परमानन्द.
३) मिटीअ ब्रियो पुतिलो मानु करे थो, प्रभू न ज़ाणे रंग संग.
४) हरीदास चवे इहा ग़ाल्हि डुखी अथई, सदाईं रहो राम नाम रंग.

## (१९८ हरदास)

वेंदसि यार मरी, तुंहिंजे दर्द फ़राक़ में.
१) जेकी ड्रिसिजे थो, जेकी बुधिजे थो,
सभ में आहीं तूं हरी, तुंहिंजे वो दर्द फ़राक़ में.
२) आऊ जीअं आहियां उठ जीअं ब्रेले, चड़हंदसि चाड़ह चड़ही.
३) रेझी वियसि भौंवर जीअं ख़शिबूइ, देरि न करि तूं ज़री.
४) ज़ाणां बुझां ब्रियो असलु कीनके, लाहीमि भल भरी.
५) हरिदास प्रभू तुंहिंजे चरने शरने, दर्शन ड्रियोमु हरी.

## (य)

## (१९९ यूसफ़)

आवंदा नहीं, ढोलण, आवंदा नहीं,
कहिड़ा ड्रोह मेरे पासि, फेरा पावंदा नहीं.
१) गुफ़तार तेड्री शीरिनि, मिठी हइ शकर कनूं,
अपने नाज़ मुशताक़ नाल, ग़ल लावंदा नहीं.
२) वाह वाह तुसांड्री चाल, अजबु यार ड्रिठी सीं,
हसि हसि छपींदे आप, चशम चवंदा नहीं.
३) दीदार कीते जानी, मुशताक़ मरींदे हनि,

चशमु चाक दर्द फ़राक़, मरिहमु आवंदा नहीं.
४) यूसफ़ गुलाम बरदा, चाकर गुलाम दर्दा,
तो, ब्राझऊं ओर ख़्याल, मन भावंदा नहीं.

(2)

दिलिदारियूं त ड्रिजनि यार, दिलिबर दर्दवंदनि खे.
१) ब्रेड़ी चाड़हे सिपरीं, छिन में न छड्रिजनि.
२) हीणे संदे हाल ते, दस्त भरी धरिजनि.
३) जेही तेही तंहिंजड़ी, पेर भरे पुछिजनि.
४) घणो पुछिजे तिनि खे, जिनि वटां होत वञनि.
५) यार यूसफ़ चूं आजज़ूं, अर्ज़ क़बूलि कजनि.

(3)

गुमु होइके वेखि नज़ारा, आपु सारा, महबूब की सूरति में.
१) रखु नूर जमाल नज़र विचि, तस्वीर नगार अंदरि विचि,
सुणु आश्क़ इश्क़ इशारा, बिरह नक़ारा.
२) रखु ध्यानु हिको दिलबर दा, दमु दे विच ख़ौफ़ ख़सम दा,
दिलि करि तूं जिस्म विसारा, आख़िरि गुज़ारा.
३) जिसि विच महबूब समावंदा, फिर मौत न उस पर आवंदा,
सानूं क़समु सचे साईं दा, करि ऐतबारा.
४) विच बिरह बेख़ुद होइके, जिंद जानि कनूं हथ धोइके,
पेछे मारीनि नींहं नक़ारा, अना अलहक़ नारा.
५) सानूं पेर मुग़ां फ़रिमाया, वहिदत दी राह बताया,
ब्रलिहार जाऊं ब्रलिहारा, यूसफ़ यारा.

## (२०० यइक़ूब)

ड्रिठो मूं कोन को काथे, मिस्ल महबूब तो जहिड़ो,
नंगी तलवार जंहिं हथ में, आशिक़नि लइ ही क़तलु कहिड़ा?
१) वेखिया देस मूं आहिनि, सवें हिन सैर में साईं,
ड्रिठो मूं कोन को काथे, मगर महबूबु तो जहिड़ो.
२) सवें मूं सैर आहिनि कया, दुनिया जे बाग़ गुलशन जा,
चमन चैन अरमु साईं, न हो गुलज़ारु तो जहिड़ो.

३) गुल लाल हज़ारें हुआ, समन सूरज मिठा मोती,
मगर मजिलस महसन में, न हो सानी सनम जहिड़ो.

४) गुलाबी गुल घणा पैदा, सवें सर्व सनम सुहिणा,
लखें यक़ूब ड्रिठा खिलणा, मगर गुलड़ो न तो जहिड़ो.

## (२०१ हासद)

दिलि में वसनि था के के, दिलि खां परे परे,
कंहिंजी सताए यादि थी, दिलि खे ज़रे ज़रे.

१) हरि कंहिं जो पंहिंजो आहि, जीअण जो अलगु मिज़ाजु,
प्यासो रहे थो को को पीए थो भरे भरे.

२) कोई लुछे थो, तड़िफे थो, क़िस्मत जी ग़ाल्हि आ,
का आगि आहे थी, जा हरिदमु ब्रुरे ब्रुरे.

३) लग़ुंदासीं अजनबी बि वरी, तिनि खे जिनि कड्रहिं,
हर हर चयो थे तोखां सवाइ पलु नथी सरे.

४) शायद जीअण मरण जो बि थींदो शऊर आ,
के हर घड़ीअ मरनि, को मरी भी नथो मरे.

५) हासद आहे ग़ाल्हि थोरी, फ़क़्त दिलि जे दर्द जी,
पर कोई अहिड़ी ग़ाल्हि भी, कंहिं साणु कीअं करे.

## (२०२ लोक गीत)

### ड्रोहीड़ा

१) इएं म होइ, जीअं आऊं मरां बंद में,
जुसो ज़ंजीरनि में, रातो ड्रींहां रोइ,
कहिड़ी वञां लोइ, पोइ मरु पुज़नम ड्रींहड़ा.

२) पिरह फुटंदे फाल, विधमु वेड़िहीचनि जा,
वुठा मींहं मलीर ते, मारुनि चाड़िहिया माल,
हैफु मुंहिंजे हाल, मुंद सारियो न मरां.

## कलाम

मुंहिंजे लाइ अबाणा रुना कीअं न हूंदा,
पलव पांद तिनि जा भना कीअं न हूंदा, दामन तिंनी जा भिना कीअं न हूंदा.

१) मुंहिंजा खेत मारु, नाहनि मैयारी,
तुंहिंजे डाव डप खां डिना कीअं न हूंदा - मुंहिंजे लाइ अबाणा ....

२) कयमि ड्रोह कहिड़ा, पलइ कोटु पियड़ो,
कारा वेसि तिनि वो कया कीअं कीअं न हूंदा - मुंहिंजे लाइ अबाणा ....

(1)

लुड़हंदी वञां विच लहुरनि में,
मुईअ जो मदारु तोते, मुईअ जो मदारु तोते.

१) विच त दरियाह में कंदी वतां दांहूं,
सड्डिड़ो सुणी मेहरु ईंदमु ओड्डांहीं, कोन्हे यार वसीलो यार ...

२) घड़ो जो भज़ी पियो विच दरियाह में,
कचो लिखियो कर्मनि, कचो लिखियो कर्मनि, कहिड़ो ड्रोहु कुंभार यार ....

३) वाघुनि वरायो मासु छिनण लाइ,
कछ मछ मांघर सवें त हज़ारें, लुड़हंदी वञां थी.

(2)

सदिक़े सदिक़े लाल झूलण.
झूले झूले लाल झूलण सेवहण जा शहिबाज़ क़लंदर.
सिंधड़ीअ जा सरिदार झूलण.
दमादमु मस्तु क़लंदर.

१) लाल उड्डेरो तुंहिंजो नालो, सिक वारनि खे तुंहिंजो सहारो,
अड़ियुनि जा आधार लाल साईं - सदिक़े ...

२) जग॒ जी आस पुज़ाइण वारा, बिगिड़ियल बात बनाइण वारा,
ब॒ेड़ो मुंहिंजो तारि लाल साईं - सदिक़े ...

३) झोली ख़ाली आहियां सुवाली, भरि तूं दूलह जग॒ जा वाली,
आलम जा आधार लाल साईं - सदिक़े ...

(3)

ओ जीअं हलाईं तीअं वाह वाह, छा में राज़ी कंहिं सां राज़ी
बाज़ीगर जी आहे बाज़ी, जीअं निपाईं तीअं वाह वाह

जीअं हलाईं तीअं वाह वाह .....

१) तुंहिंजो आहियां तुंहिंजो थींदुसि, तुंहिंजो दरु साईं कीन छडींदुसि,
जीअं घुमाईं तीअं वाह वाह - जीअं हलाईं ...

२) सिक वारनि जी साईं सार लहे थो, झूलियूं तिनि जूं सदाईं भरे थो,
सभु तुंहिंजे हथ में वाह वाह - जीअं हलाईं ...

३) पाण ई ठाहे, पाण ई डाहे, हिन जे हथ में ड्डोरी आहे,
जीअं घुमाईं तीअं वाह वाह - जीअं हलाईं ...

४) लख ड्डेई कंहिंखे लाल करीं थो,
ओ कंहिं खे ड्डाण ड्डेई साईं पंहिंजो करीं थो,
जीअं खाराईं तीअं वाह वाह - जीअं हलाईं ...

## (4)

ओ लाल मुंहिंजी पति रखिजाइ भला झूले लालण.
सिंधड़ीअ जा सेवहण जा, शहबाज़ क़लंदर ....
दमादम देगियुनि वारा, छमाछम छेज़ियुनि वारा.

१) चार चिराग़ तुंहिंजा ब्रनि हमेश्ह,
पंजों मां ब्बारण आई आहियां-झूले लालण ...

२) जंहिं बि झूलण जी जोति जग़ाई,
तिनि जा भरीं भंडारा भला - झूले लालण ....

३) पीरनि जा पीर अचु तूं विच सीर में,
नाले अलख जे ब्बेड़ो तारि - झूले लालण ....

४) माताउनि जा झोल भरीं थो,
नियाणियुनि जा करीं भाग़ भला-झूले लालण ....

## (5)

ब्बूटी पीती हरी नाम वाली, घोलि घोलि के.
घोलि घोलि के, घोलि घोलि के ... घोलि घोलि के.

१) ब्बूटी पीती धना जट, आया मोहन झटिपटि,
भोग़ लग़ाए नटि खटि, मुखड़ा खोलि खोलि के - ब्बूटी पोती...

२) ब्बूटी पीती हनुमान, मिलिया राम भग़वान,
जिन्हूं जपंदा जहान, मनवा खोलि खोलि के ....

३) ब्बूटी दुरु भग़त ते पीती, रीति सब से अनोखी लेती,
ब्बूटी बाबा नानक पीती, रीति सब से अनोखी लेती,

कीती राम नाम से प्रीती, झंगल फूलि फूलि के....

४) ॿटी पीती मीराॿाई, आया मोहन यादवराइ,
दर्शन कीते दुख हर जाइ, अखियां खोलि खोलि के - ॿूटी पीती ...

## (6)

ठारि माता ठारि पंहिंजे ॿचड़नि खे ठारि,
अमा ॾाण ॾींदींअ, दयावान थींदींअ,
ॾिठड़ा ॾोह मुंहिंजा माफ़ु कंदींअं,
जीजल तो शरण तो शाम,
हीउ लक लंघे ॿचा पवंदमि पारि.

१) अमा! हेठि बि माड़ी मथे बि माड़ी,
विच माड़ीअ में छिको,
ओरल जा आयमि, जीजल जा आयमि,
ॾिनाईं सिन्दूर जो टिको. ओ जीजल ...

२) शिकारपुर जूं छोकिरियूं,
तोखे माई माई कनि,
अमा! खीर कटोरा हथनि में,
माता ॾुकंदियूं तो दरि अचनि. ओ जीजल ...

३) अमा! कोट परियां जो कोटड़ी,
जीजल तंहिं परियां खाही,
हिंगलाज में तुंहिंजो दर्शनु थियड़ो,
सेवहण में तुंहिंजी साख. ओ जीजल ...

४) चबूतरो चौगान में, अमा! थले थले तुंहिंजो थांऊ,
अमा अखा बि विझंदसि पेरे बि पवंदसि,
अवलि दर्शनु पोइ दानु. ओ जीजल ...

५) अमा! सींअर जी ॾाढ़ही, सोढल जूं मुछां,
आऊं वेठी देवीअ खां वाटूं पुछां. ओ जीजल ...

६) अमा! नींगर निहाईंअ विच में ड़ी जीजल,
बिलीअ रखिया थमि ॿार,
अमा! ताउ न ॾींदींअ तिनि खे ड़ी जीजल,
सॿाझिड़ी त सतार. ओ जीजल ...

७) अमा! त्रिशूल तुंहिंजे हथ में,
अमा! शींहं ते तुंहिंजी सवारी,

मुटुकु मथे ते, कुंढल कननि में,
शोभा तुंहिंजी न्यारी. ओ जीजल ...

८) अमा! नदीअ किनारे नेनिदीसाइं,
ब॒चड़ा धोई मां वठींदीसाइं,
सिंधुर जा तिलक ड॒ियारीदीसाइं,
तंहिं खां पोइ छड्डींदीसाइं. ओ जीजल ...

९) अमा! सींअर परनाए घर में ओ जीजल,
सोढल करि सैयो,
नवें लखें जो ड॒ाजु ड॒िनाईं,
ड॒ेहु ड॒िसण आयो. ओ जीजल ...

१०) अमा! जोड़ो जोड़ो करे जग॒ खे ड॒िनाईं,
पोरिहियत घुरे पड़ो,
अमा! पोरिहियत चवे मां पड़ो न वठंदसि,
घरियाणी घुरे जोड़ो. ओ जीजल ...

११) अमा! आई थमि घर में ड़ी जीजल,
कहिड़ी करियां मिज़मानी,
पास पटहिड़ा थधिड़ा लोला जिन्दु करियां कुर्बानु. ओ ...

१२) अमा! गायूं ड॒िनड़िअ,
मेंहूं बि ड॒िनड़ीअ,
चाड॒ीअ विलोड़िया ड॒ुधु,
मुंडी त तुंहिंजी मोतियुनि मड़िहियल,
कढां गुलाबी पटु. ओ जीजल ...

१३) अमा! नका तू ज़॒ाईंअ, नका तूं निपनीअं,
कहिड़ी माउ तोखे ज़॒णियो,
परमेश्वर मूंखे पैदा कयड़ो,
मोहन मुख मंझां. ओ जीजल ...

१४) ख़ानचंद वारे खूह ते ड़े जीजल,
ड॒ेवी थी ड॒ंदणु करे,
सोनो लोटो हथ में ड़ी जीजल,
ख़ैर जा छंडिड़ा हणे. ओ जीजल ...

१५) अमा! ब॒चिड़ो विधो थमि तुंहिंजे तड॒े,
धाईं धोईं वठींदीसाइं जग॒ खे अग॒े. ओ जीजल ...

१६) शिकारपुर जो छोकिरियूं,
माई गुण तुंहिंजा ग़ाइनि,
खंडु पताशा माखियूं मिस्रीयूं, खाइनि खाराइनि. ओ जीजल..

१७) पोचो पाए पट ते सुरहियूं,
अगरबतियूं ब़ारियां,
जीउ तूं आईअ, नचु तूं आईअ,
घरु थी सींगारियां. ओ जीजल ...

१८) खीअल वारे खूह तां ड़ी जीजल,
खणी अचां थी जलु,
छंडा हणा थी छोकर खे मां,
ड्रींदीअं तंहिंखे ब़लु. ओ जीजल ...

१९) नंढिड़ो आहे वड़िड़ो जो थींदो,
माई तुंहिंजो चेलो,
घुमी जो ईंदो जेड़नि सां,
माई! तुंहिंजो मेलो. ओ जीजल ...

२०) मासड़ु मुजावर, पिणसि सख़ी,
ड्राड़िहंस विराहींदो धन जी दुखी,
धन जी दखीअ मां लोक विरिहाए,
लोकनि ड़िनी छंढे छले जी वाधाई. ओ जीजल ...

२१) बास थी बासियां तुंहिंजे दरि,
ड्रेई रए खे ग़ुंढि. ओ जीजल ...

## (7)

ठरू ड्रेवी ठरु महर करे, मूं घरि आईअ पेर भरे,
ब़चड़े ते वञु ब़्राझ करे, सिर ते सीतल हथिड़ा धरे!
अमड़ि आयसि - तो शरनि, मुंहिंजी राजनि राणी ड्रेवी तो शरनि,
तो शरनि तो आधार, हीऊ लक लंघे पुट पवंदमु पार.

१) थोड़ी हीर ड्रखण जी ड़े जीजल! थधिड़ी छांव वणनि,
थधिड़ियूं थधिड़ियूं टारियूं निमि जूं, हर हर विञणा हणनि,
थधिड़ी माक असुर जी ड़े आयल! थधिड़ा पिपिरनि पन,

सीतलु सीतलु जलु जमिना जो, सीतलु चंदनु वनु!
सीतलु सीतलु शरदि सहाई, सीतलु सीतलु चंडु,
सीतलु मिस्री, सीतलु मोतियो, सीतल आ सिर खंडु!
ठरीअ ठारियुसि तो शरनि, मुंहिंजी राजनि राणी ड्रेवी तो शरनि,
तो शरनि ड्रेवी तुंहिंजड़ी ई पखे, शल नाईं धोई उथंदमि जग खां अगे.

२) जीउ जीउ आईंअ, निचु निचु आईंअ, जीजल मुंहिंजे घरि,
लाल विधुमि तुंहिंजीअ झोलीअ में, तूं ई कृपा करि,
तुंहिंजे सिर ते ताजु सुन्हरी, मोतियुनि वारो छटु,
मुंहिंजे पुट जो मूंहुं महताबी, वार बि रेशम पटु,
चंड सरीखे चहिरे ते थी, लाल रतियुनि जो छटु,
आबु अखियुनि में, बाहि बदन में, भड़िकनि ज़णु भंभटु,
ठरीअ ठारियुसि तो शरनि, मुंहिंजी राज़न राणी,
तो शरनि ड्रेवी तुंहिंजड़े तड़े, कजि ब्राझ ब्रचे ते सिक मां सड़े.

३) सोनो तुंहिंजो आ सिंहासनु, रोपो तुंहिंजो रथु,
मुंहिंजे पुट जी पेशानी ते, धरिजि महिर जो हथु,
चाऊंठि तुंहिंजी आ चंदन जी, शीशम जा सभु धर,
मुंहिंजे नंढिड़े नींगर ते तूं, निर्मलि धरिजि नज़र,
कंचन जहिड़ी तुंहिंजी काया, माणिक जहिड़ो मुखु,
तूं लहज़े में लाहीं सभ जो, ड्रोलाओ ऐं दुखु,
अमड़ि आयसि - तो शरनि, मुंहिंजी राजनि राणी ड्रेवी तो शरनि,
तो शरनि ड्रेवी तुंहिंजड़ी ओट, नची टपी उथु मुंहिंजा लालण घोट!

४) बूलेमल जे बाग़ीचे में, थधी रसीली डाख,
दादूअ में तुंहिंजो दर्शनु थियड़ो, सेवहण में तुंहिंजी साख,
ख़ानण शाह जे खूह ते ड़ी जीजल, थधिड़ा नार वहनि,
तुंहिंजी महिर मया सां माता, बुत जा बार लहनि,
ब्रालूमल जे खेत ब्रनीअ में, वंगनि वंगियुनि जी वलि,
मांदे मन खे, तोइंसेल तन खे, झोलीअ में तूं झलि!
ठरी ठारीं तो शरनि, मुंहिंजी राज़नि राणी,
तो शरनि ड्रेवी तुंहिंजड़ी द्वार, ब्रालिकिड़ेअ जो तनु मनु ठारि.

## (8)

ब॒ेड़ीअ वारा अदा ड़े मुहिणा लाल ते थी वञा॒ं.
लाल ते थी वञां वञां - मां त अखो पाइण थी वञां.
बासूं बासण थी वञां, पलउ पाइण थी वञां -
गुल चाड़हण थी वञां - ब॒ेड़ीअ वारा .....

१) असांजे लाल ते जोतियूं जे ब॒रंदियूं,
जोतियुनि लाती शमा - शमा शमा जोतियुनि लाती शाम - ब॒ेड़ीअ वारा .....

२) असांजे लाल ते देगियूं जो चड़िहंदियूं,
देगियुनि लाती दमा - दमादम देगियुनि लाती दमा - ब॒ेड़ीअ वारा .....

३) असांजे लाल ते पलउ जो सूहंदो,
लहरुनि लाथी लमा - लमा लमा लहिरुनि लाती लमा - ब॒ेड़ीअ वारा .....

४) असांजे लाल ते बहिराणो जो सूंहदो,
छेज़ियुनि लाती छमा - छमा छमा छेड़िनि लाती छमा - ब॒ेड़ीअ वारा .....

## (9)

तर्ज़ :- छलनि जो जोड़ो मूंखे भाउ आणे ......
थलु :- ब॒ेड़ो त मुंहिंजे लाल जो पाणही तरंदो ईंदो.
पाणही तरंदो ईंदो - तंहिं खे लहर न लोड॒ो ईंदो.

१) वेठी आहियां घर में, लालु घरु घुमण ईंदो,
ख़ाली हिंदोरा - लाल साईं पाणई लोड॒े ड॒ींदो - ब॒ड़ो त ...

२) वेठी आहियां बाग़ में, लालु बाग॒ु घुमण ईंदो,
खटा मेवा बाग़ ज़ा मिठा करे ड॒ींदो - ब॒ड़ो त ...

३) वेठी आहियां खूह ते, लाल खूहु घुमण ईंदो,
खारो पाणी खूह जो मिठो करे ड॒ींदो - ब॒ड़ो त ...

४) वेठी आहियां मंदर में, लालु मंदरु घुमण ईंदो,
मंदरु मुंहिंजो झूनो आ, लाल नओं ठाहे ड॒ींदो - ब॒ड़ो त ...

५) वेठी आहियां समुंड ते, लाल समुंड घुमणु ईंदो,
बीठल ब॒ेड़ा लाल साईं मूंखे पाणेही लोड॒े ड॒ींदो - ब॒ड़ो त ...

## (10)

ताड़ियूं सभई वज॒ाओ झूले लाल ते थी वञां
लाल ते थी वञां, मां त ब॒लिहारी वञां ....

१) लालु असांजो घोड़े वारो, लाल असांजो घोड़े वारो,

वाग॒ वठण थी वञां - ताड़ियूं सभई ....

२) लालु असांजो बहिराणे वारो, जोति जग॒ाइण थी वञां,

वञां-वञां-गुल चाड़हण थी वञां-ताड़ियूं सभई ....

३) लालु असांजो अखनि वारो, अखा पाइण थी वञां,

वञां-वञां - भेरो कीअं भञां - ताड़ियूं सभई ....

४) लालु असांजो ड॒ोंकिनि वारो, छेज॒ि हणण थी वञां,

वञां-वञां-आया ड॒ींहं सभाग॒ा चङा थी वञां-ताड़ियूं सभई ....

५) लालु असांजो आसूं पुज॒ाए, बासूं बासण थी वञां,

वञां-वञां - पलव पाइण थी वञां-ताड़ियूं सभई ....

६) लालु असांजो अर्ज॒ु अघाए, महिर इहा थी मङां,

मां लाल ते थी वञां - ताड़ियूं सभई .......

## (11)

हली आउ, क़ुर्बु करे हली आउ,

अखिड़ियूं आतियूं, पाइनि झातियूं, पंधड़ो नाहे परे, हली आऊ ...

१) जीअ में तो लइ जायूँ जोड़ियमि,

मुंहिंजे नथी जो सरे. हली आऊ ...

२) तोड़ीअ तन में, तोड़ीअ मन में,

पेई थी बाहि ब॒रे. हली आऊ ...

३) तुंहिंजे अचण जूं वाटूं वाझायां,

मुंहिंजी अखि थी फरे. हली आऊ ...

४) पलि पलि वेठी तोखे पुकारियां,

दिलिड़ी दांहूं करे. हली आऊ ...

## (12)

तुंहिंजे द्वारे तां मिले थो साईं सभु कुझु, मां कहिड़ा दर ब॒िया गोलियाँ.

खपे दुनिया में रुग॒ो ब॒ाझ तुंहिंजी, मां कहिड़ा दर ब॒िया ग॒ोलियाँ.

१) हिकिड़ो नामु, ब॒ियो दानु, टियों चरननि जो ध्यानु,

चोथों चाहु कजइं मुंहिंजो चोर - मां कहिड़ा ....

२) पंजों प्रेमु, छहों छिक, सतों सत्गुर जी सिक,
अठों आशिक़नि जा इस्रार - मां कहिड़ा ....

३) नाओं नींहुं, ड॒हों ड॒रां, यारहो प्रेमु अखरु पढ़हां,
ब॒ारिहों ब॒ाझ कजइं ब॒ाझारा - मां कहिड़ा ....

४) तेरिहों तृष्ना खे तड़ियां, चोड॒ों चाह मंझां चड़िहां,
पंधरिहों पुरुषार्थु करियां, सोरिहों सुरति शब्द सां मां जोड़ियां, मां कहिड़ा ....

५) सतरिहों सुहिणी ड॒े सुमति, अरिड़िहों कोरे कडु कुमति,
उणवीहों आत्मा खे लुटि, वींहों वेसाहु कजइं भरपूर - मां कहिड़ा ....

६) इकिवीहों आनंद खे लुटियां, ब॒ावींहों ब॒हिकणु पसां,
टेवीहों टेम ते मां अचां, चोवीहों चितु चेतन सां मां जोड़ियां - मां कहिड़ा ....

७) आहियां दासनि जी दासी, कटियो चकरु चौरासी,
आहियो अमरापुर जा वासी, मूंखे पहुचायो पहिरिये पूरि-मां कहिड़ा ....

## (13)

शुक्रु मुंहिंजा साईं, जीअं तूं हलाईं,
जीअं तूं हलाईं, वड॒ो वस वारो आहीं, ड॒ाढो जोरावरु आहीं.

१) तुंहिंजे हथ में ड॒ोरी, कहिड़ी हलंदी जोरी,
जेड॒ांहु तूं फेराई, ड॒ाढो जोरावरु आहीं. शुक्रु मुंहिंजा ...

२) खट ते विहारीं या पट ते विहारीं,
मान खे वधाईं या शान खे घटाईं. शुक्रु मुंहिंजा ...

३) जिति लिखियलु दाणो, कहिड़ो करियां माणो,
जीअं तूं खाराईं, वड॒ो वस वारो आहीं. शुक्रु मुंहिंजा ...

## (14)

अज॒ु झुमिरियूं ख़ुशीअ में थी पायां,
चंगु दिलि जो सज॒ण थी वज॒ायां,
प्यारी सिंधड़ीअ खे थी ब॒ुधायां,

ओ सारी दुनिया खे थी बधायां,
ओ ग॒ायो जमालो - प्यारो जमालो
ओ मुंहिंजो सज॒णु आयो ख़ैर सां होजमालो
ओ जेको खटी आयो ख़ैर सां होजमालो.
ओ जेको लड़ी आयो लाड़ ड॒ांहं होजमालो.
होजमालो, जानी जमालो,
ओ जमालो, ओ जमालो, ओ जमालो
खटी आयो ख़ैर सां.

१) दुहिल वज॒नि, वज॒नि शरनायूं,
तुंहिंजे अचण सां ख़ुशियूं आयूं -
ख़ुशियूं आयूं.
पंहिंजा गीत मां पाण थी ग॒ायां,
ओ चंगि दिलि जो सज॒ण थी वज॒ायां,
ओ प्यारी सिंधड़ीअ खे थी ब॒ुधायां,
ओ ग॒ायो जमालो - प्यारो जमालो.
जंहिंखे सोनी मुंडी चीच में, होजमालो,
जंहिंखे मोतियुनि जी मुंडी ब॒ाच में, होजमालो,
मुंहिंजो जानी त जहाज़ में होजमालो,
ओ जेको खटी आयो ख़ैर सां होजमालो.

२) अजरक ते सिंधु नाज़ु करे थी,
वेस ड॒िसी तुंहिंजा दिलिड़ी ठरे थी,
दिलिड़ी ठरे थी,
चंगु दिलि जो सज॒ण थी वज॒ायां,
ओ सारी दुनिया खे थी ब॒ुधायां,
ओ प्यारी सिंधड़ीअ खे थी ब॒ुधायां,
ओ ग॒ायो जमालो - प्यारो जमालो
अचो नाचु विझूं नाज़ मां - हो जमालो,
अचो झुमिरियूं विझूं चाह मां होजमालो,

अचो छेज़ु विझूं छोह मां - होजमालो,
जेको खटी आयो ख़ैर सां होजमालो.
३) ख़त्मु थियो फ़र्क़त जो ज़मानो,
लचिकी चवां उल्फ़त जो तरानो, उल्फ़त जो तरानो.
छोन पाण खे पड़ायां,
चंगु दिलि जो सज़ुण थी वज़ुायां,
ओ सारे दुनिया खे थी बुधायां,
ओ प्यारी संधिड़ीअ खे थी बुधायां,
ओ ग़ायो जमालो - प्यारो जमालो.
ओ जंहिंजा डुंद दिलबंदि थिए होजमालो,
ओ जंहिंजा वार घुंडीदार थिईं होजमालो,
ओ जंहिंजूं अखियूं रब रखियूं थिए होजमालो,
ओ जंहिंजा पेर पंज सेर थिईं होजमालो,
ओ जेको खटी आयो ख़ैर सां होजमालो.
होजमालो - जानी जमालो,
ओ जेको - ओ जेको - ओ जेको -
जेको खटी आयो ख़ैर सां होजमालो,
ओ जेको लड़ी आयो लाड़ डुांहं.

## पंजड़ो

अदियूं आरित्वार ते मूं वाझ विधा वेही,
सूमर डुींहुं सधु लधी, मुंहिंजी सांवल संझेई,
मंगल डुींहुं मञियूं हिन मनिथूं मिड़ेई.
बुधर डुींहुं हू बुाझ मां वयो डुान झझा डुेई,
विस्पति डुींहुं बि वड़ कया मूं सा साहिब सभेई,
थारूअ डुींहुं थां में आया पुज़ारी पेही.
छंछर डुींहुं छेज़ियूं लग़ियूं घर घर में घणेई,
ओ साईं सरहा थिया जेके आया दर दातार जे.

## (2)

दूलह साईं दादला, तोखे सारियूं सांझ सवेर,
सुवाल पुज़ाईं संगति जा, ढोलण तूं ढेरऊं ढर,
हाणे अचु रत्नाणी शेर, साणी थीऊ संगति सां.

## (3)

सूमर ड्डींहुं तोखे सारियां सारियां, प्यार मां पंजिड़ा ग़ायां,
दासी बणी दूलह मां तुंहिंजी मंगल ड्डींहुं मनाया,
लाल साईं तोतां वञां कुर्बानु, उड़ेरेलाल तोतां वञां कुर्बानु.
चालीहे वारा तोतां वञां कुर्बानु.....

१) बुधर ड्डींहुं तो तां ब्राझारा, बान्हीं थी ब्राड्डायां,
विस्पति ड्डींहुं मां बहिरो तुंहिंजा बहिराणा त करायां,
लाल ईं तोतां वञां कुर्बानु.....
सूमर ड्डींहुं तोखे सारायां सारायां ...

२) थारूंअ ड्डींहुं अची थां में, मां त झिरिमिर जोति जग़ायां.

### पंजड़ो

अखा पायां दादला, मुंहिंजा दूलह दरियाह शाह,
तो जे मूंहुं मोड़ियो, त लहंदुमि केरु संभाल,
तूं रहिबरु रखपारु, औखीअ में साईं आहीं.
छंछर ड्डींहुं मां बासूं बासियां, तो दरि पलव पारायां,
लाल साईं तोतां वञां कुर्बानु - वञां कुर्बानु....
सूमर ड्डींहुं ...

३)आरित्वार ड्डींहुं दरियाह शाह ते अखा अची दल पायां,
झूलण दाता पलु भी तोखे दिलि तां कीन भुलायां,
लाल साईं तोतां वञां कुर्बानु, उड़ेरालाल तोतां वञां कुर्बानु.
चालीहे वारा तोतां वञां कुर्बानु, महिर वसाईं तोतां वञां कुर्बानु,
सूमर ड्डींहुं ....

## पंजड़ा

बेवाहन जो वाहरो, बे यारनि जो यारु,
झूले लाल जेको चवे, तंहिंजो ब॒ेड़ो पारु.

झूले झूले झूलण मुंहिंजो झूलेलाल, उड॒ेरो झूले,
झूले झूले ....

१) दर तुंहिंजे ते जेकी आया, तिनि जा थीयड़ा लाया सजाया,
झोल भरीं तूं झूले - झूले झूले ....

२) सिंध में तूं, हिंद में भी तूंहीं, रामु बि तूं ऐं शामु बि तूंहीं,
तूं ही शंकरु भोले, झूले झूले .....

३) दुख में सुख में तोखे ध्यायूं, बधी भुलाइ नेकी पायूं,
सिक सदा तोसां झूले - झूले झूले ....

४) महर कंदें साईं रहजी अचे शल - हरिको सिंधी शाद हुजे शल,
जेकी हुजे फूले फूले - झूले झूले.

## (4)

दूलह क़बूलि कर तूं, अखिड़ा सिंधियुनि जा,
अखिड़ा सिंधियुनि जा, दुखड़ा सिंधियुनि जा.
हिकवार ध्यान सां बु॒धु - दुखड़ा सिंधियुनि जा.

१) साईं सिंध में भी तो हुआ, ब॒ेड़ा सिंधियुनि जा तारियां,
हिति हिंद में भी पालीं, थो ब॒चड़ा असां सिंधियुनि जा.
दूलह क़बूल कर ....

२) रहमत सां तुंहिंजी मालिक, महिनत सां पेटु पालियूं,
शल तूं रखीं सलामतु, पखिड़ा असां सिंधियुनि जा,
दूलह क़बूल कर ....

३) दूलह तूं दादिलो आं, वेसह असांजो तो में,

दर्शन तुंहिंजे सां चिमिकनि था, मुखिड़ा असां सिंधियुनि जा,

दूलह क़बूल कर ....

४) तो दरि पलउ जे पाइनि, तिनि जा भरीं भंडारा,

करि माफु सभु मंदायूं मिठिड़ा असां सिंधियुनि जूं,

दूलह क़बूल कर ....

### पंजड़ा

बेवाहन जो वाहरो, बे यारनि जो यारु,
झूले लाल जेको चवे, तंहिंजो ब्रेड़ो पारु.
झूले झूले झूलण मुंहिंजो झूलेलाल, उड़ेरो झूले,
झूले झूले ....

१) दर तुंहिंजे ते जेकी आया, तिनि जा थीयड़ा लाया सजाया,
झोल भरीं तूं झूले - झूले झूले ....

२) सिंध में तूं, हिंद में भी तूंहीं, रामु बि तूं ऐं शामु बि तूंहीं,
तूं ही शंकरु भोले, झूले झूले .....

३) दुख में सुख में तोखे ध्यायूं, बधी भुलाइ नेकी पायूं,
सिक सदा तोसां झूले - झूले झूले ....

४) महर कंदें साईं रहजी अचे शल - हरिको सिंधी शाद हुजे शल,
जेकी हुजे फूले फूले - झूले झूले.

### (4)

दूलह क़बूलि कर तूं, अखिड़ा सिंधियुनि जा,
अखिड़ा सिंधियुनि जा, दुखड़ा सिंधियुनि जा.
हिकवार ध्यान सां ब्रुधु - दुखड़ा सिंधियुनि जा.

१) साईं सिंध में भी तो हुआ, ब्रेड़ा सिंधियुनि जा तारियां,
हिति हिंद में भी पालीं, थो ब्रचड़ा असां सिंधियुनि जा.
दूलह क़बूल कर ....

२) रहमत सां तुंहिंजी मालिक, महिनत सां पेटु पालियूं,
शल तूं रखीं सलामतु, पखिड़ा असां सिंधियुनि जा,
दूलह क़बूल कर ....

३) दूलह तूं दादिलो आं, वेसह असांजो तो में,

दर्शन तुंहिंजे सां चिमिकनि था, मुखिड़ा असां सिंधियुनि जा,

दूलह क़बूल कर ....

४) तो दरि पलउ जे पाइनि, तिनि जा भरीं भंडारा,

करि माफ़ु सभु मंदायूं मिठिड़ा असां सिंधियुनि जूं,

दूलह क़बूल कर ....

## पलउ

१) 'पलउ जे पाइनि, तंहिंजा ख़ावंद ख़ाली न करे
दर त तुंहिंजा सभु, लाल! भिरिया ई आहिनि
आसाऊ आहिनि, वापारी हरिनाम जा.'

२) 'वड़ा वड़ महराज जा, जेको पापी थो तारे
बुडंदड़नि खे ब्राहूं डेई लाल! चक मंझां चाड़िहे
हुंडियूं हज़ारनि लखनि जूं मुंहिंजो सांवल शाह सकारे
कार्ज थो करे, अमर! आश - वंदनि जा.'

३) अमर! आश - वंदनि जा, तंद रसाइजि तोड़ि
रहीं, रत्नाणी राज़िणा, जीअं भावीं तीअं जोड़ि
पाप सभेई ब्रोड़ि लाल! डे का धीर धर्म जी.'

४) 'दूलह तुंहिंजे दर ते आसाऊ बि अचनि
भट ब्रह्मण मंगिता साधू सेवा कनि
आरितियूं अमरलाल जूं अची डेवौ ड्रियनि
परस पुज़ाई तिनि जहिड़ी जंहिं जे मन में.'

५) 'अचनि जे आश करे तो वटि, घोट घणा
ब्रिया भी डातर डेह में तो में मर्द मणिया
ब्रिया जोशी जुंग घणा, क़ाइमु आहीं कलिजुग में.

६) क़ाइमु आहीं कलिजुग में, लाल क़ाइमु तुंहिंजा कम
अथारीं ओड़ाह खां, गामूं लाहीं गम
रखिजांइ लाज शर्म लाल! ढकीअ साणु गुज़ारिजि.'

७) नज़र करि नंग जा धणी! सरितियुनि विच सूंहां,
लाल! रातियां तुंहिंजो राज़िपो, डुख कटियमु ड्रींहां
आऊ संगति जा सूंहां! अथमु तुंहिंजो आसिरो.

८) संगति सभु साई थी, जंहिं में जोड़ जड़िया
वया डोलावा डेह मां, सभेई सुख थिया
पची खेत पिया, नाले ग्रिधे अमरलाल जे.

**कंवर घोट**
**जी भगत झुमर**
**जो आशिकु**
**कंवर जे जामे में...**

भग॒त कंवरराम सिंधु में भग॒ति विझंदो हो (छेरि–जामो ऐं फ़ेरड़ियुनि सां भग॒ति भाव, भज॒न ऐं कहाणियुनि जो बखान थींदो आहे) सज॒ी राति माण्हू वेठा इन जो आनंदु माणींदा हुआ. हिंदु में दादा राम पंजवाणीअ इहो छेरि ऐं जामो पातो त ठही पियो, माण्हू खेसि बि॒यो कुंवर घोटु करे मञण लग॒ा, वरी झुमर बि अहिड़ी पाईंदो हो जो वाह, राग॒ु सां रीझाईंदो बि हो त क़िसन ऐं ग॒ाल्हियुनि में मोहे छड॒ींदो हो. कंवर जे हिन जामे खेसि दुनिया भर जो रटनु करायो ऐं जिते बि दादा भग॒ति विझंदा हुआ, सिंधी तोड़े ग़ैर सिंधी अची उते मेड़नि में मिड़ंदा हुआ. अहिड़ो हो असांजो दिलियुनि ते राज॒ कंदड़ प्रो. दादा राम पंजवाणी.....

# एनि.सी.पी.एसि.एलि पारां...

सिन्धी ब॒ोली साहित्य जे विकास लाइ सिन्धी तैलीम जे चौड॒िसी फहिलाव लाइ इन्सानी वसीला वज़िराति, भारत सरिकार जी ऊचि तैलीम विभाग॒ जे ज़ेरिसाये परीषद् जी स्थापिना थियल आहे. ब॒ोलीअ जे विकास लाइ मक़िसद तइ कयल आहिनि ऐं उन्हनि खे अमिली जामो पहिराइण लाइ जुदा जुदा योजिनाऊँ, नियम घड़ियल आहिनि ऐं अमल में पिणि आंदल आहिनि.

परीषद् जी हरिका योजिना, कार्यकरम बामक़्सद आहे, सिन्धी ब॒ोलीअ जो विकासु. पर असाँ जा उन लाइ जेके तौरि तरीक़ा आहिनि उन्हनि खे अञा बि वधाइणो आहे ऐं इहो दाइरो वसीअ करिगो आहे.

असाँ जी हमेशह इहा मरिज़ी ई रही आहे त सिन्धी साहित्य खे पाणे आणण जी कोशिश कंदा रहूँ. इन करे सिन्धी में अण लभंदड़ किताब जे अग॒ु ई भलि छपियल हुजनि पर हींअर मौजुदि न हुजनि त उन्हनि खे वरी छपाइण जो ओनो रखूँ.

पद्म श्री प्रोफ़ेसर राम पंजवाणीअ जो नायाबु किताबु ''सिक़ जी सौग़ात'' जा ब॒ छापा त अग॒ु ई छपिजी ख़तम बि थी विया आहिनि ऐं ही टियों छापो, असीं ऐनि. सी. पी. एलि. पाराँ छपाइण जो फ़ैसिलो कयो आहे. न सिर्फ़ अरिबी लिपी न पढ़हंदड़, देवनागरी लिपीअ में पढ़ही, हेतिरी कयल महिनत जी मौज माणे सघनि.

सिक जी सौग़ात किताब तियारु करे असाँ ताईं पहुचाइण लाइ सिन्धी ब॒ोलीअ जे बरिख अदीब श्री ठाकुर चावला ऐं भेणु पारू चावला घणी कोशिश कई आहे, परिषद् इन्हनि ब्रिन्हीं जो शुकुरु गुज़ारि आहे साणु गड॒ु भाउ राम लालचंदाणी ऐं भेण शोभा लालचंदाणी जिनि हिन किताब खे वक़्तसिरि शायइ करण में का कसर बाक़ी न छड॒ी आहे, मयारी बणायो आहे. तव्हाँ जे तनिक़ीदी रायनि जे ओसीड़े में...

**रमेश वरिलियाणी**
वाइसि चेअरिमैनि

**निर्मल गोपिलाणी**
डाइरेक्टर